संयुक्तांक - 109-110
जनवरी/2026

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

''पाती -आजीवन सदस्य/संरक्षक''

सतीश त्रिपाठी (अध्यक्ष, 'सेतु' न्यास, मुम्बई) डा० ओम प्रकाश सिंह (भोजपुरिका डाट काम), तुषारकान्त उपाध्याय (पटना, बिहार), डा० शत्रुध्न पाण्डेय (तीखमपुर, बलिया), जे.जे. राजपूत (भड़ूच, गुजरात),राजगुप्त (चौक, बलिया) धीरा प्रसाद यादव (बलिया), देवेन्द्र यादव (सुखपुरा, बलिया) विजय मिश्र (टण्डवा, बलिया), डॉ० अरूणमोहन भारवि (बक्सर), ब्रजेश कुमार द्विवेदी (टैगोरनगर, बलिया), दयाशंकर तिवारी (भीटी, मऊ), श्री कन्हैया पाण्डेय (बलिया), भगवती प्रसाद द्विवेदी (पटना), सरदार बलजीत सिंह (सी० ए०), बलिया, जयन्त कुमार सिंह (खरौनी कोठी) बलिया, डा० (श्रीमती) प्रेमशीला शुक्ल (देवरिया), डा० जयकान्त सिंह 'जय' (मुजफ्फरपुर) एवं डा० कमलेश राय (मऊ), कृष्ण कुमार (आरा), डा० अयोध्या प्रसाद उपाध्याय (कुंवर सिंह वि० वि० आरा), अजय कुमार (पी०एन०बी०, आरा), रामयश अविकल (आरा), डा० ब्रजभूषण मिश्र (मुजफ्फरपुर), हरिद्वार प्रसाद 'किसलय' (भोजपुर), विजयशंकर पाण्डेय (नारायणी विहार, वाराणसी), डा० अमरनाथ शर्मा (बलिया), कौशलेन्द्र कुमार सिन्हा (एसबीआई, बलिया), डा० दिवाकर पाण्डेय (पकड़ी, आरा), गुरूविन्दर सिंह (नई दिल्ली), डा० प्रकाश उदय (वाराणसी), डा० नीरज सिंह (आरा), विक्रम कुमार सिंह (पूर्वी चम्पारन), नागेन्द्र कुमार सिंह (कुतुब बिहार, नई दिल्ली), जलज कुमार मिश्र (बेतिया पं० चम्पारण), श्रीमती इन्दु अजय सिंह (द्वारका, नई दिल्ली), डा० संजय सिंह (करमनटोला, आरा), आनन्द सन्धिदूत (वासलीगंज, मिर्जापुर), नगेन्द्र सिंह एवं राकेश कुमार सिंह, (राजनगर, पालम, नई दिल्ली), डा० हरेश्वर राय (जवाहरनगर, सतना, म० प्र०), केशव मोहन पाण्डेय (कुशीनगर), गुलरेज शहजाद (मोतीहारी), शशि सिंह (राजनगर, नई दिल्ली), जितेन्द्र कुमार (पकडी, आरा), योगेन्द्र प्रसाद सिंह (बोकारो, झारखंड), डा० प्रमोद कुमार तिवारी (गुजरात, विद्यापीठ), महेन्द्र प्रसाद सिंह (रंगश्री, नई दिल्ली), अजीत सिंह (इलाहाबाद), संतोष वर्मा (साधु नगर, नई दिल्ली), संजय कुमार सिंह (राजनगर, नई दिल्ली), श्रीभगवान पाण्डेय (बक्सर, बिहार), सत्येन्द्र नारायण सिंह, (नारायणा, नई दिल्ली), श्री रविन्द्र सिंह, (मेहरम नगर, नई दिल्ली), ई० रामचन्द्र सिंह, (श्रीरामनगर कालोनी, वाराणसी), हीरालाल 'हीरा' (रामपुर उदयभान, नई बस्ती, बलिया), दिनेश पाण्डेय (शास्त्रीनगर, पटना), शिवजी सिंह (द्वारका, नई दिल्ली), डा० जनार्दन राय (भृगुआश्रम, बलिया), विनय कुमार (भाटपारा, छतीसगढ़), अजीत कुमार (बैंक आफ बड़ौदा, पालघर), विपिन बिहारी चौधरी (बूटी मोड़, राँची, झारखंड), अशोक कुमार श्रीवास्तव (गाजियाबाद), शिवपूजन लाल विधार्थी (वाराणसी), डा० पारसनाथ सिंह (चन्द्रशेखर नगर, बलिया), डा० आशारानी लाल (काका नगर, नई दिल्ली), आलोक पाण्डेय अनवद्य (दिल्ली), कुबेरनाथ पाण्डेय (परसा, गाजीपुर, हीरालाल 'हीरा' (बुलापुर, बलिया) विनोद द्विवेदी, (वाराणसी), अरविन्द कुमार सिंह, (आइ.ए.एस, लखनऊ), डा० प्रेमप्रकाश पाण्डेय (वैशाली, गाजियाबाद), डा० दिवाकर प्रसाद तिवारी (देवरिया), शशि प्रेमदेव सिंह (कुं० सिंह इंटर कॉलेज, बलिया), सौरभ पाण्डेय (नैनी, प्रयागराज), घनश्याम सिंह (महावीर घाट, बलिया), डा० (श्रीमती) शारदा पाण्डेय (भारद्वाजपुरम्, प्रयाग-6), राकेश कुमार पाण्डेय (गाजीपुर), कनक किशोर (रांची, झारखंड), अरविन्द कुमार द्विवेदी (नई दिल्ली), रीतू सुरेन्दर सिंह (डुमराँव, बक्सर, बिहार), बिम्मी कुँवर सिंह (लखनऊ), उदय नारायण तिवारी (सुन्दरपुर, वाराणसी)

भोजपुरी-साहित्य के नया पठनीय सृजन/प्रकाशन

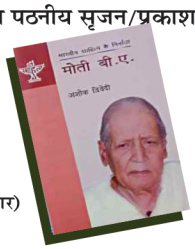

मोती बी०ए०

(जीवन-संघर्ष आ कविता-संसार)

अशोक द्विवेदी

₹ पेपर बैक-50/-

कुछ आग, कुछ राग

(कविता-संकलन)

अशोक द्विवेदी

₹ सजिल्द-350/- पेपर बैक-200/-

भोजपुरी के नया पठनीय उपन्यास

बनचरी

अशोक द्विवेदी

₹ सजिल्द-300/- पेपर बैक-220/-

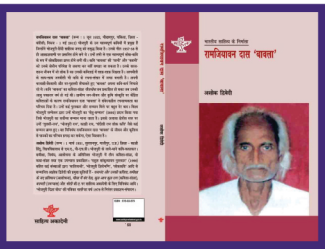

रामजियावन दास 'बावला'

अशोक द्विवेदी

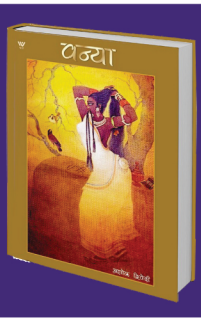

वन्या

अशोक द्विवेदी

(पृष्ठ संख्या-530)

मूल्य-1699/-

पेपरबैक-750

यश पब्लिकेशन

1/11845, पंचशील गार्डन,

नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032,

संपर्क : 9910391887

भोजपुरी रचना आ आलोचना

(पृष्ठ संख्या-404)

डॉ0 अशोक द्विवेदी

मूल्य-500/-

विजया बुक्स

नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

किताब मिलल....

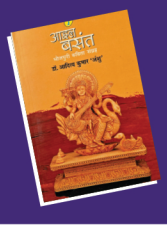

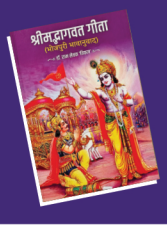

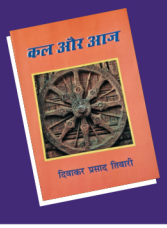

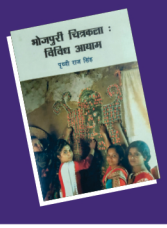

'पाती' कार्यालय- डा0 अशोक द्विवेदी, टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया-277 001 या

एफ-1118, आधार तल, चितरंजन पार्क, नई दिल्ली-110019

Mobile: +91-8004375093, 8707407392, 8373955162, 9919426249,

Email: ashok.dvivedipaati@gmail.com

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

www.bhojpuripaati.com

संयुक्तांकः 109-110 **जनवरी 2026**

(तिमाही पत्रिका)

प्रबन्ध संपादक
प्रगत द्विवेदी

ग्राफिक्स
जितेन्द्र सिंह सिसौदिया

संपादक
डॉ0 अशोक द्विवेदी

कंपोजिंग
अरूण निखंजन

इन्टरनेट मीडिया सहयोगी
डा0 ओम प्रकाश सिंह
अँजोरिया डाट काम

आवरण चित्र
अंतरिक्ष

'पाती'– परिवार (प्रतिनिधि)

हीरालाल 'हीरा', शशि प्रेमदेव, अशोक कुमार तिवारी (बलिया) डा० अरूणमोहन 'भारवि', श्रीभगवान पाण्डेय (बक्सर), कृष्ण कुमार (आरा), विजय शंकर पाण्डेय (वाराणसी), दयाशंकर तिवारी (मऊ), जगदीशनारायण उपाध्याय (देवरिया), गुलरेज शहजाद (मोतिहारी पूर्वी चम्पारण), डा० जयकान्त सिंह, डा० ब्रजभूषण मिश्र (मुजफ्फरपुर), भगवती प्रसाद द्विवेदी, दिनेश पांडेय (शास्त्रीनगर, पटना), आकांक्षा (मुम्बई), अनिल ओझा 'नीरद' (कोलकाता), डा० सुशीलकुमार तिवारी, गुरूविन्द्र सिंह (नई दिल्ली)

संचालन, संपादन
अवैतनिक एवं अव्यावसायिक

e-mail:-ashok.dvivedipaati@gmail.com,

सहयोगः

एह अंक के–110/-
सालाना सहयोग-350/- (डाक व्यय सहित)
तीन वर्ष के सहयोग-1500/-
आजीवन सदस्य सहयोगः न्यूनतम-3000/-

संपादन-कार्यालयः-

- टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया–277001
- बी–1/906, त्रिदेव अपार्टमेन्ट, वाराणसी–5,
- एफ–1118, आधार तल, चितरंजन पार्क, नई दिल्ली–19

मो0– 08707407392, 08004375093

[अशोक कुमार द्विवेदी के नाम से चेक/डी०डी० अथवा SBI A/C No. 31573462087, IFSC Code-SBIN0002517 में नकद/ऑनलाइन सहयोग जमा करके हमें सूचित करें]

(पत्रिका में प्रगट कइल विचार, लेखक लोग के आपन निजी हऽ: दायित्व लेखक के बा, ओसे पत्रिका परिवार के सहमति जरूरी नइखे)

एह अंक में...

हमार पन्ना –
- पछिला साल के इयाद / 3

सरधांजलि / संस्मरन –
- ई त कवनो बात ना भइल / डा0 प्रकाश उदय / 4–14
- हमार आत्म–संघर्ष आ स्व0 अरुणेश 'नीरन' / अशोक द्विवेदी / 15–19
- बलिया में बी.एड्. के पढ़ाई / राजगुप्त / 98–101
- हमार गाँव / स्व0 केदारनाथ सिंह / 109–110

सामयिकी –

महाशिवरात्रि
- भोजपुरी समाज में महादेव / प्रेमशीला शुक्ल / 20–23

कविता खण्ड (एक)– ''पाती–अक्षर–सम्मान'' से सम्मानित कवि
- आनन्द सन्धिदूत / 24–25
- दयाशंकर तिवारी / 26
- स्व0 शम्भुनाथ उपाध्याय / 27
- अनिल ओझा 'नीरद' / 33–34
- कमलेश राय / 35–36
- भगवती प्रसाद द्विवेदी / 37
- ब्रजभूषण मिश्र / 38
- प्रकाश उदय / 39
- स्व0 गंगा प्रसाद 'अरुण' / 40–41
- स्व0 कन्हैया पाण्डेय / 42–43
- हीरालाल 'हीरा' / 43–44
- शिवजी पाण्डेय 'रसराज' / 45
- दिनेश पाण्डेय / 46
- मिथिलेश गहमरी / 47–48
- शशि प्रेमदेव / 49–50
- मनोज भावुक / 51–52
- विजय मिश्र / 52

नाटक –
- महाकवि 'भास' कृत कर्णभार / अनु0– डा0 नन्दकिशोर तिवारी / 28–32

जीवनी का बहाने –
- महेन्द्र मिसिर / कुष्ण कुमार / 102–108

चिन्तना –
- लोक परब / सुभाष पांडेय संगीत / 97

कहानी –
- भोर के किरिन / मीनाधर पाठक / 53–56
- का पर करीं सिंगार.... / कमलेश / 65–70
- सकून / अशोक द्विवेदी / 71–75
- "चालीस साल बाद" / शारदा पाण्डेय / 76–82
- किशुन कली / बिम्मी कुँवर सिंह / 83–86
- परबतिया फुआ / अयोध्या प्रसाद उपाध्याय / 87–88
- तेरही / राम यश 'अविकल' / 89–94

कविता खण्ड (दू)–
- आकृति विज्ञा 'अर्पण' / कवर–पृ0 3
- स्व0 गंगा प्रसाद अरुण / 14
- गुरुविन्द्र सिंह / 56
- हरेश्वर राय / 70
- अनवद्य आलोक / 94
- सौरभ पाण्डेय / 95
- इन्द्र कुमार दीक्षित / 96
- अशोक कुमार तिवारी / 111
- ओम धीरज / 112

किताब–चर्चा / रचनालोचन
- भोजपुरी भाव–भूमि पर 'आखर' / डा0 अशोक द्विवेदी / 113–114

निहोरा
- बिर्हनी का छत्ता पर ढेला / डा0 ओम प्रकाश सिंह / 115–116

सांस्कृतिक गतिविधि – पृ0 57–64

पछिला साल के इयाद

हर नया साल अपना पाछा एगो इतिहास आ कुछ ना भुलाय वाला सुधियन क झँपोली छोड़ि जाला। एस झँपोली में समय के उठान-गिरान का साथ कुछ अन्तरंग आत्मीय जन के बिछोह आ ओकरा सुधियन क संस्मरन रहेला! एकरा साथ, देश काल का अनुसार, घर-परिवार आ समाज के चपल-चाल आ भाव-भंगिमा रहेला! साहित्य कला से जुड़ल, लिखे-पढ़े आ रचनाधर्मी लोगन का विचार दृष्टि से दू गो बात बोझा आवेला। पहिला- बीतल साल में एक का अरजन (उपलब्धि) कइलस आ दुसरा- ऊ का गँवा (खो) दिहलस?

"खाये अरु सोवे" का अकारथ चक्कर से बहरियाइ के, जागत रहला पर "पावे अरु खोवे" वाला महत्वपूर्ण पहलू उजागर होला। साल 2025 का दिसाईं सोचला पर हमरा अतने बुझाइल कि पछिला साल भोजपुरी कवि- लेखकन के बहुत किताब छपल, विमोचन आ प्रचारो-प्रसार भइल, भोजपुरी साहित्य-कला का नाँव पर कुछ उत्साही लोग नया चैनलो सुरू कइलस। भोजपुरी संस्था सब क मंचो सजल, बिचार आ कविता के छोट-बड़ गोष्ठियो भइली सन, बाकि सामूहिक चेतना वाला प्रयास क कवनो प्रभावशाली उतजोग ना लउकल -भोजपुरी बोले बतियावे वाला आम भोजपुरिया लोग, अपना मातृभाषा का सवाल पर, ओइसहीं उदासीन बनल रहि गइल, जवन उछाह आ हिस्सेदारी देखावल जरूरी रहे, ऊ ना लउकल! संविधान का आठवीं अनुसूची में "भोजपुरी" के मान्यता के लेके कुछ ठोस समाचार ना मिलल। आपन पीठ, अपने ठोंके आ अपना-अपना उतजोग के बढ़ा-चढ़ा के बखाने वाला लोगन खातिर ईहो साल खाना पूर्ती वाला साल साबित भइल! सबुर अतने के, कि हमहन के भीतर रचनात्मकता गतिमान बनल रहि गइल।

भाषा के मान्यता के लेके, भोजपुरी बेल्ट के नेता-विधायक, सांसद आदि लोगन के आश्वासन आ वक्तव्य ओसहीं के ओसहीं... ढाक के तीन पात... सोचे-विचारे प मजबूर करत बा!

पछिला साल रचनात्मक सामरथ आ प्रभाव वाला कुछ खास लोगन के बिछोह के पीर जरूर दिहलस....एसे जवन खालीपन पैदा भइल, ऊ जल्दी भरल सरल नइखे। एम्मे सबसे ऊपर एगो नाँव बा --अरूणेश "नीरन" अन्तर्राष्ट्रीय महासचिव (विश्व भोजपुरी सम्मेलन)। दैव जवन चहिहें, तवन होइबे करी। "पाती" परिवार का ओर से "नीरन" जी के विनम्र सरधांजलि!! ●●

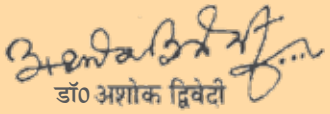

डॉ0 अशोक द्विवेदी

स्व0 अरुणेश ''नीरन''

ई त कवनो बात ना भइल

डा0 प्रकाश उदय

का नाँव रहे उनुकर, से त नइखे इयाद, बाकिर काशी विश्वनाथ मंदिर के सेवादार रहन ऊ, हालाँकि उनुकर सेवकाई अभी पक्का ना भइल रहे। पक्का हो जाय, एकरे खातिर त ना, बाकिर एकरो खातिर, विश्वनाथ जी के अलावा विश्वनाथ मंदिर के तब के मुख्य कार्यपालक अधिकारी जे रहन, उनहूँ के सेवा के मोका ऊ जोहत रहत रहन। तब मुख्य कार्यपालक अधिकारी रहन डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय। पाण्डेय जी भरसक त केहू के अपना सेवा के मोके ना लहावे देस, बाकिर का, कि रउआ हाथ धो के तौलिया–ओर हाथ बढ़ाईं आ केहू ओह तौलिया के खींच के रउआ हाथ में रख देबे, त एह आ अइसन सेवा से बाँच के रउआ कहँवा जाइब! अइसने–अइसन कुछ सेवा–टहल के बले ऊ सेवादार, पाँड़े जी के घरबारी–मतिन हो गइल रहन, बाकिर पाँड़े जी कैदा–कानून के अइसन पक्का कि ऊ पक्कापन उनुका नाक के नोक प झलकल करे, आ ओकरा दँवक के मारे, अपना सेवादारी के पक्का करे के अरदास ऊ बेचारू करे ना पावस; कबो–कबो, कुछ–कुछ, कहे–कहे कइला–लेखा क के रह जास। एही बीचे, बुला बाबा बिसनाथेजी के दया–माया, कि नीरन जी पहुँच गइले अपना मित्र किहाँ, दुचार दिन खातिर। ओही नीरन–काल में सेवादार बेचारू के पहिला बेर पता चलल कि राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय असल में कवनो राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय ना हवन, 'रजिन्नर' हवन, आ अतने ना, ऊ हँसबो करेले ठठा के, मुस्कइबो करेले देर ले, आ खाली झरहेटबे ना करस बेबात के बात प, बेबात के बात प झरहेटइबो करेले। सेवादार अदेर पाण्डेय जी के छोड़ले, आ नीरन जी के पकड़ लेले, आ जवन अचंभा के बात रहे एह कांड में, तवन ई कि उनुका एह पाण्डेय जी के छोड़ला आ नीरन जी के पकड़ लिहला के बात नीरन जी के बाद में पता चलल, सेवादार भाई के अपनहुँओ बादे में पता चलल, पाण्डेय जी के पहिले पता चल गइल। आ एकरा बाद ईहो पता चलल कि पता रहे उनुका कि सेवादार जी के का चाहत रहे, आ केहू कुछ एकरा बारे में उनुका से कहे, एकरा से पहिलहिंए, अपनहिंए ऊ उनुका के नीरन जी के सामने बइठा

के कहले कि चिंता मत करऽ, पक्का बा कि बाबा के तहार सेवकाई पक्का हो जाई। अगिला बेर भइल जब नीरन जी के उनुका किहाँ अवाई, त फेरू कहले, ओसहीं बइठा के कि चिंता मत करऽ तहार पक्का हो जाई। ओकरो अगिलका बेर ईहे कहले, ओसहीं, बाकिर ओकरा अगिलका बेर ना कहे पवले, एह से कि नीरन जी अड़ गइले कि अबकी अपना एह पुनरुक्ति दोष से मुक्ति पावऽ, फेरू से ऊहे वाला 'हो जाई' मत सुनावऽ, साफ–साफ कह द कि 'ना होई',कि ई छोड़स तहार आस, सीधे विस्नाथे जी किहाँ जास, उनुके से लगावस अरदास। पाण्डेय जी एह बात प चार बात सुनइले, चार बात भुनभुनइले, बाकिर ईहो भइल कि सेवादार के सेवादारी पक्का हो गइल। ओही सेवादार भाई से नीरन जी के एगो आउर नाँव सुने के मिलल। मन्दुरुस्ती जी। नीरन जी कबो–कबो चुपचाप बनारस आवस, आ गोदौलिया प गंगा लॉज में टिक जास। एकर जानकारी बनारस के बस तीन जन के होखे, एगो प्रकाश उदय के, दुसरे ओह सेवादार के, आ तिसरे बाबा विश्वनाथ के। बाते–बाते उदय जी पुछले कि एह लॉज के बाथरूम में साबुन बा कि ले आवे के परी, त नीरन जी के जबाब रहे कि 'तन्दुरुस्ती है वहाँ, लाइफब्वाय है जहाँ'। आ सेवादार जी, जिनका साथे उनुका विश्वनाथ जी से भेंट करे जाय के रहे, ऊ एकरा आगे के एगो बात बतवले, 'मन्दुरुस्ती है वहाँ, नीरन नाम है जहाँ'। हालाँकि नीरन जी के एह 'मन्दुरुस्ती जी' वाला नाँव के तीने जन जाने पावल, एगो उदय जी, एगो विश्वनाथ जी के ऊ सेवादार, आ एगो खुद विश्वनाथ जी। ओंइसे, एह मन्दुरुस्ती के तर्ज प नीरन जी एगो आउर पद ईजाद कइले रहन, 'जन्दुरुस्ती'। बलभद्र खातिर। बलभद्र के जुड़ाव जन संस्कृति मंच से, ओही से जोड़ के। नीरन जी उनके मनबो करस बहुत, आ उनसे बहसबो करस मनमान। अपना–अपना वैचारिक प्रतिबद्धता के लेके ई बहसबाजी एह दूनो जन के अपना तरह के आपन मनसायन रहे। ओंइसे, नीरन जी किहाँ अपना बारे में आपन जवन कुछेक सूक्ति रहे ओमें से एगो ईहो रहे कि भाई, प्रतिबद्धता–पीड़ित हम ना हईं। बलभद्र से उनुकर बहस बहस ना रहे, एक तरह के 'बिहँस बहस' रहे, आ ऊ, जइसन जन्दुरुस्त बलभद्र पहिले रहन, आजो, अबहुँओ, ओइसने जन्दुरुस्त बाड़े कि कुछ हिल–डोल आइल बा, ई अंदाजे खातिर रहे। ओंइसे, तन्दुरुस्त भा मनदुरुस्त भा जन्दुरुस्त कुल्हि ऊ अपने रहन, उनुके प ई कुल्हि सोभत रहे। तन्दुरुस्त ऊ अपना के सबका से जादे मानत रहले, स्वास्थ्य के लेके केहू के देल कवनो सलाह कबो सुनले ना, माने के बात त दूर। एगो प्राकृतिक चिकित्सक बतवले कि रउआ हप्ता में एकाध दिन अनघा पानी पीके वमन क लेबे के चाहीं। नीरन जी कहले कि अछा ई बतावऽ, कि मुँह से 'खाइल' प्राकृतिक ह कि 'उल्टी कइल' ? आ जेकरा के जन्दुरुस्ती ऊ कहत रहन, ऊहो उनुकर आपने खासियत। उनुका आपन जन में ऊहो, जे सुर–नर–मुनि–किन्नर–गंधर्व... आ ऊहो जे भूत–प्रेत–बैताल–बूड़ा.। उनुका अपनन में ऊहो लोग जेकर आपस में अनघा अनबन–अबोला। आ मन्दुरुस्ती के ममिला में, हमरा नइखे लागत कि केहू के एह बात से इन्कार होई कि 'मन्दुरुस्ती है वहाँ, नीरन नाम है जहाँ'।

जहाँ नीरन जी, उहाँ मन–मिजाज, असहीं, अनासे, कुछ–कुछ उपराहुत। दीन–दुनिया के दंद–फंद से कुछ ऊपर। लगभग–लगभग चिंता नॉट फिकिर

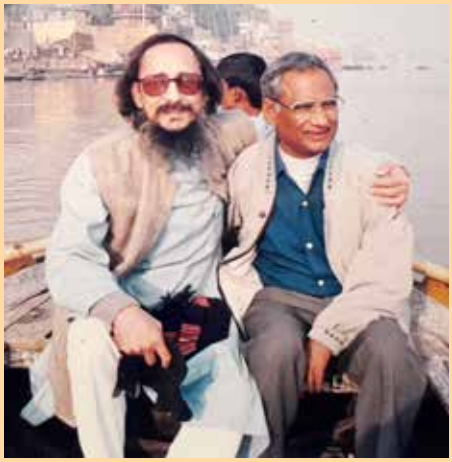

नास्ति वाला आलम। नीरन जी जहाँ, उहाँ बाकी सब, सबकुछ, उनुका इर्द–गिर्द। अगल–बगल। आगे–पीछे। बीच में उनुका अलावा केहू ना दोसर। कुच्छो ना। एह से ना कि ऊ अद–बद के बीच के जगहा चुन लेत रहले, एह से, कि बाकी सब, उनुका अगल–बगल, आगे–पीछे हो लेत रहे, आ एत्तरे, बीच में 'आ' ना जात रहन ऊ, 'हो' जात रहन। सभे बोलल, ऊ ना बोलले, त चर्चा में केकरो बोललका ना ओतना, जतना उनुकर ना बोललका। देवरिया के देन रहन ऊ, त ईहो ना कि बाहर खातिर त ऊ नीरनजी इय्यह, नीरनजी उव्वह; देवरिया खातिर कवन नीरन जी, कहाँ के नीरन जी ! 'घर के जोगी जोगड़ा' वाला कहाउत उनुका खातिर बनले ना रहे बुला। देवरिया में त अइसन, कि 'आन गाँव के सिद्ध' तब्बे सिद्ध मनाइल जब ओकरा सिद्धि प देवरिया के अपना नीरन जी के ठप्पा लाग गइल। हमरा तरफ से त ऊ अपना देवरिया जनपद के मीडिया माफिया मतिन। उनुका अतना त ना, बाकिर कवनो कमो ना, साहित्यिक दुनिया के एगो मीडिया माफिया के हम बनारसो में चिन्हले बानीं। संजोग से ऊहो नीरने जी के हली–जली। डॉ. रामसुधार सिंह। ऊ ओह कुछेकन में से एक, जे नीरन जी से छोट भाई के रूप में जतना नेह–छोह पावल, ओकरा से जादे उनुका तीसे–बत्तिस के उमिर में दिवंगता पत्नी से, देवर के रूप में। आज के कवनो आयोजन के काल्ह के अखबार में आवे वाला रपट में, राउर मन कि राउरो थोबड़ा थोर–बहुत आवे, त कुछ मत करीं, देवरिया में नीरन जी से, बनारस में रामसुधार जी से, बस सटल रहीं, ऊ चाहे आयोजन के चउकी प होखस, चाहे चउक प, चाहे चउका में। तय बा कि रपट के मथेला उनुके वक्तव्य से लियाई, ऊ चाहे वक्तव्य होखे चाहे वक्तुल्ली, आ फोटो अद–बद के उनुके आई, आ उनुकर आई त राउरो आई, सट के सटल रहब त समूचा आई, ना त तिनपइए सही, अधवाड़े सही, डेलिए सही, भरेठे सही! कुछ त रहले रहन नीरनो जी के गुरुजन, गिनती के, जइसे विद्यानिवास जी, शिवप्रसाद जी, बाकिर अपने ऊ केकर–केकर गुरुजी रहन, एकर कवनो गिनती ना रहे। देख के अचंभा होखे कि कवना–कवना बिरादरी के कइसन–कइसन लोग उनुका चेलवाही में! केहू अफसरस्य अफसर बिरादरी के, त केहू ओही अफसर के चपरासियो के चपरासी बिरादरी के। ऊहो जे लिखला के मारे सभत्तर धरती के कागद आ सातो समुंदर के सियाही करे प परल रहत रहे, आ ऊहो जे लिखे के नाँव प लोढ़ा रहे, पढ़े के नाँव प पत्थल। उनुका गुरुआई के

एही जलवा–जलाल में नीके तरी नहा के मनोहर श्याम जोशी आपन उपन्यास 'हरिया हरिक्यूलिस की हैरानी' के प्रति उनुका के, हमरा सामने के बात, कि ई लिख के देले कि "हैरान हूँ गुरू, कि तुम्हारे ही बताए मुताबिक, तुम्हारा मैं गुरु हूँ !" एक दिन, देवरिया में, उनुका घरे, गुरुजी हो गुरुजी के गोहार लगावत एगो अइसन चेला पहुँचले जिनका के नीरन जी चीन्हत ना रहन। नीरन जी ना चीन्हत रहन, से त ठीक बा, एकरो से जादे ठीक बात ई रहे कि ऊहो नीरन जी के ना चीन्हत रहन। उनुका चेला भइला के कहानी ई रहे कि उनुकर मेहरारू, संजोग से, ओही कॉलेज के पढ़ल रही, जवना कॉलेज में नीरन जी पढ़ावत रहन, आ जवना संजोग से ई, तवने संजोग से ईहो कि ऊ ओह विषय के पढ़निहारिन ना रही, जवना विषय के पढ़वनिहार रहन नीरन जी। तब्बो ऊ अपना कॉलेज के एह गुरुजी के अतना बेर, अतना तरह से, अतना बखान कइले रही अपना पतिदेव से, कि पतिदेव मने–मने उनुका के आपनो गुरु मान लेले रहन। एह मने–मने मनला से जतना दिन चलल चलल, एक दिन ना चलल, जाने कवना बात से, घर–परिवार के के–जाने कवना कुफुत से डिप्रेशन में जाय–जाय भइले, कवनो राह–रस्ता ना सूझल, त गुरुजी हो गुरुजी के गोहार लगावत नीरन जी के घरे पहुँच अइले। शुरू भइल गुरु–शिष्य संवाद। एक–से–एक सवाल आ एक–से–एक जबाब। कुछ अइसनो सवाल आइल जवन पूछेवाला पुछलस ना, ओकरा से पुछा गइल, आ जब. बवो में से जाने कतने जबाब, नीरने जी के बतवले हम जनलीं, कि एह से ना आइल कि नीरन जी किहाँ ओह सवाल के जबाब रहे, एह से आइल कि पूछेवाला के भरोसा रहे कि जेकरा से पूछत बानीं ओकरा किहाँ एकर जबाब बा। बहरहाल, सवाल–जबाब खतम भइल आ थोरे घरी खातिर गुरु आ शिष्य दूनो जन, जबाब आ सवाल दूनो से खलियाऽ के अपना–अपना में डूब गइले। गुरुजी के आँख खुलल त देखले कि चुपचाप चेला के दूनो आँख से ढरऽ–ढरऽ लोर चलऽता। गुरुजी के हक–बक बन। कुछ ढाँढ़स–अस बन्हावल चहले त अउरू उपट परल, हिचिकी बन्हा गइल। बहुत बाद में, बहुत पुछला–तछला प, कि कवन अइसन बात जवना से तहार दिल दुखाइल, ऊ अपना एह रुदन–रहस्य से परदा हटवले। बतवले कि गुरुजी, रउरा कवनो बात से ना, अपने मन के एगो अनेसा से। कवना अनेसा से ? बतवले कि एह अनेसा से कि एक दिन रउआ जब ना रहब, मरि जाइब, त हम कहाँ जाइब, केकरा से अतना पूछे पाइब, के अतना बतावे पाई, अतना सरियाऽ के, अतना सझुराऽ के !

के देखले बा कि ओकरा मरला प, के, कतना कइसे रोई! नीरन जी ओह दिन देखले। बाजार से महँगा–से–महँगावाला मिठाई मँगवा के एकर महोच्छव–मतिन मनवले। मिठाई त ठीक बा, काहे अतना महँगा मिठाई ? जबाब रहे उनुकर कि जियते जब मूँए के मोका मिलल, त सोचलीं कि लगे हाथ श्राद्धो सँपरा लीं। त तवना में कइसन चिरकुटाही ! सोच के देखऽ त महँगा ना परल, उल्टे बहुत सस्ते में निपट गइल।

ओंइसे, अउला परोसल उनुका आदत में रहे। रउआ लाख के बात बतियाईं, उनुका करोड़ में पहुँचावत देर नइखे लागे के। चिरकुटाही जवना के कहल जाला, तवना के त ऊ हाले ना जनले। कवनो योजना बनावस त अतना पसार के दसो दिसाईं, कि हदस हो जाय कि समेटाई कइसे ! जवन ना समेटाइल तवन त खैर, नाहिंए समेटाइल, तवनो के गिनती कम नइखे, बाकिर जवन समेटाइल, विश्व भोजपुरी सम्मेलन के देवरिया आ मारिशस आ कोलकाता में आयोजित अंतरराष्ट्रीय अधिवेशन से लेके दिल्ली, मुंबई, भोपाल, भिलाई, आगरा, पटना, बनारस तक के राष्ट्रीय अधिवेशन तक, तवनो के गिनती कवनो कम नइखे। एह कुल्हि में उनुका अपना मशक्कत के, अपना दुइए गो बाँह के हजार–हजार बाँह में बदल देबे वाला जादू के गवाही हमरा से बेसी आदरणीय जगदीश उपाध्याय किहाँ बा। एक बे के बात, कि भइल कि देवरिया में विद्यानिवास जी के नागरिक अभिनंदन कइल जाय। पहिला काम रहे विद्यानिवास जी के एकरा खातिर तइयार कइल। एकर जिम्मा नीरन जी के। विद्यानिवास जी के कहनाम कि सामने से आपन बखान सुने खातिर मंच प बइठ जइहें छँउक के, अतना बँउक तू बुझले बाड़ऽ का अपना गुरु के ? नीरन जी के कहनाम कि अइसन करिहें, अतना बँउक बुझले बानीं का रउआ अपना चेला के ? आ एही बात प अभिनंदन तय हो गइल। तय भइल कि भाषण–भूषण कुछ ना, बस गुरुजी के असिरबादी आ माला–शाल, आउर कवनो ढंढ–कमंडल इचिक ना। एगो गाड़ी क दिआई, बस रउआ आ जाईं। गुरुजी कहलीं कि गाड़ी त ले जाई, लिवा के जाई? नीरन जी कहले कि ईहे उदैवा, दोसर के। आ लोग–लुगाई

से ठसाठस देवरिया के ओह खुला मैदान वाला विशाल मंच प गुरुजी के असिरबादी के बाद माला–शाल से जब अभिनंदन शुरू भइल त पता चलल कि नीरन जी कवना कटेगरी के नीरन जी। जतना संस्था रहे एह जनपद में, तब, का सरकारी, का गैरसरकारी, तवना सबके तरफ से माला–शाल। जेकरा कवनो संस्था के अलम ना मिलल ऊ अपना कुल–खंदान के तरफ से पहिरावल। ना कवनो माला दुकड़िहा, ना कवनो शाल टुटपुँजिया। जे नाँव पुकारत रहे, ओकरा के जाने कतने बेर पानी पीए के परल। खुद गुरुजी के खड़े–खड़े गोड़ बथे लागल, कइक बेर बइठ–बइठ के सुस्ताय परल। दुचार आदमी त खाली ए खातिर खड़ा रहन कि माला आ शाल गरदन आ कान्ह से उतार के एकोर कइले जाय। पहाड़ खड़ा हो गइल। अभिभूत रहे सभे, सब बस एह दृश्य के निहारत रहे। केहू, बुझाय जइसे बोली, त बोली का, रो दी। जब चले के भइल त एगो गाड़ी में भर गाड़ी शॉल। दुसरका गाड़ी में आगे गुरुजी बइठलीं, पीछे हम, ओहू में शाल ठुँसाय लागल त हमार दशा नारी–बीच–सारी–है–कि–सारी–बीच–नारी वाला। गाड़ी चले के तइयार, गुरुजी के मुँह ताकल जाता कि इशारा मिले त चलल जाय, आ गुरुजी के नजर दहिने–बाँवे कि कहाँ बा निरनवा। तले कार के दरवाजा भड़ाक् से खुलल आ नीरन जी भितरे। हई हतना शाल कहाँ लेके जाइब, कवनो शाल के दोकान खोले के बा... हई लीं, उदैवा के कान्हा पर राखीं; हई लीं, डराइबर साहेब के कान्हा प राखीं; आ हई लीं, हमरा कान्हा प राखीं, आ एगो हमरा के दीं, हमहूँ उदैवा के कान्हा प राखीं... आ जइसे प्रगटल रहन नीरन जी, ओसहीं बिलोपित हो गइले, अपना गुरुजी से 'जतना–जनले–रहीं–ओकरा–से–जा दहीं–बँउक–तें–बाड़े–रे–निरनवा' के असीस सहेज के।

नीरन जी के एक आवाहन पर सँउसे देवरिया उपट परल, अपना गुरुजी के गुरुजी के सम्मान में, आपन मकान–दोकान में ताला लगा के, सपरिवार, सज–सँवर के–– सोचीं तनी, कि नीरन जी किहाँ का रहे, ना कद, ना पद। ना ऊ नेता–परेता, ना हाकिम–हुकाम, ना उनुका जर–जजात अफरात। ना ऊ बड़का भारी कवि, कहानीकार, आलोचक। लिखले त कुछ–कुछ कवितो, कहानियो, आलोचनो आ अउरियो कुछ–कुछ, बाकिर कविता लिख के ढाह ना देले, भा कहानी, भा कुछुओ, ढाही मारे भ, खुरछारे भ ना लिखले। एगो उपन्यास लिखल चाहत रहन, कबीर के बीच में राख के, ओकर कुछ हिस्सा लिखलहूँ रहन, बाकिर ऊ कुछ, कुछ से आगे ना बढ़ल। संस्मरण अतना रहे उनुका लगे, कि लिखिते त कमाले लिखिते, बाकिर कुछुए लिखले, ऊहो बड़ा झरहेटला प। ई बा, कि जतने लिखले, जवने, तवन सचहूँ कमाले लिखले। हालाँकि, उनुका ओहू कमाल के लेके साहित्य के इलाका में अइसन कवनो जा. लिम जैजैकार ना भइल, ना अइसन कवनो छूट के छीमानुख–छीमानुख भइल, कि उनुकर नाँव अतना लहराय भा अतना लसराय, कि सुधीजन के कवनो जमात उनुका के सरियावे में सिराय, कवनो जमात उनका के गरियावे में गरमाय। जाहिर बात कि नीरन जी भाषा आ साहित्य के संसार–सागर में कवनो हल्फा उठा के ना गइले, बाकिर ईहो ना कि चुपे–चुपे अइले आ चुपे–चुपे चल गइले। जीनियस जवना के कहल जाला, तवन त ऊ रहन, उनुका लिखा–पढ़ी, उनुका बोली–ब्यवहार, ला. `गन से उनुकर लगाव आ उनुका से लोगन के लगाव–– एह सबसे उनुकर जिनियसई उपरवँछ के आपन हाजिरी जनावे, बाकिर का, कि ई जीनियसई कपार प मत चढ़े पावे, सोरहो घरी के सोहबत में आके दिकदिकावे मत पावे, एकरा खातिर ऊ, ना कुछ अवरू, त मुँह में पान जरूर घुलवले रखले, कि ना बोलब, ना घोंटब। कि ना ना–बोले–लायक के बोलब, ना ना–घोंटे–लायक के घोंटब। कहे के एक माने ईहो कि जेकरा ई लागत होखे कि ऊ नीरन जी के भरमन सुनवले बा, देर ले उनुकर बोल्ती बन्न क के रखले बा, ओकरा ईहो जनले रहे के चाहीं कि ओकरा एह दूनो उपलब्धि के श्रेय नीरन पहिलहिंए से पान भा पान पराग जइसन कवनो जिनिस पदारथ के नाँवे रजिस्ट्री क के, बाकायदा दाखिल–खारिज करवा के रखले रहत रहन। एगो जवन बहसावलंबित विद्वत्ताई होला, तवना के कायल ऊ रहले ना रहन, ना तवना से केहू के कायल करे के कबो कवनो कोशिश ऊ कइले। अपना साहित्यिक जीवन में नीरन जी लिखले बहुत कम, बोलबो कमे कइले, हालाँकि अपना लिखलका से जादे त बोलबे कइले, बाकिर सबसे जादे जवन कइले, जवना के साहित्येतिहास में दर्ज करे के कवनो तरीका अभी तइयार नइखे होखे पावल, तवन ई रहे कि ऊ साहित्य के बतियवले। ईहो ना कि खाली महादेवी वर्मा से, अज्ञेय से, अमृतलाल नागर से, विद्यानिवास मिश्र से, शिवप्रसाद सिंह से, मनोहर श्याम जोशी से, आ अइसन ख्यात–प्रख्यात अनेकन से; ओकरो से जेकरा

साहित्य–वाहित्य से बहुत लेना–देना ना। जइसे कि संजय कानोडिया किहाँ आवा–जाही वाला एगो यादव जी रहन, एक्यूप्रेशर–विशेषज्ञ, ऊ अक्सर नीरनो जी किहाँ आइल करें। हमरो से उनुका घरहीं, कइक बेर भेंट भइल। नीरन जी जब हमरा के उनुकर खासियत बतवले, त ऊ लगले कहे कि इनिका के हमार खासियत बतवलीं, त हमरो के इनिकर खासियत बताईं। नीरन जी पुछले कि कह सुनाईं कि आँखिन देखाईं ? कहले कि आँखिन देखाईं। त धरीक्षण मिसिर के कविता, 'कवना दुखे डोली में रोवत जाली कनिया' निकाल के हमरा सोझा ध देले कि ल, पढ़ के सुनावऽ। पढ़ के सुनवलीं। यादव जी सुनत–सुनत आँख मूँद लिहले। हमरा जनाइल जे बोर हो तारे, लिहाजे सुनत बाड़े, त पढ़ते–पढ़त नीरन जी के तकलीं कि इशारा पाईं त एह बलाते के काव्य–पाठ से निजात पाईं। जबाब में नीरन जी जवन इशारा कइले तवना के पाछा–पाछा जब यादव जी के ध्यान से देखलीं त लोर के दूगो बड़–बड़ बून उनुका गाल प चमकत रहे। आ हमरा जनाइल कि एकरा बाद के हमार पढ़लका ऊहे पढ़लका ना रह गइल, कवितवो ऊहे कवितवा ना रह गइल। बाद में नीरन जी पुछले कि क हो यादव जी, का बा एह कवितवा में कि...। कहले यादव जी कि का बा ई त ना कह सकीं, बाकी जवन बा तवन एह कवितवे में नइखे खाली, इनिका पढ़लको में बा। नीरन जी कहले कि इनिका पढ़लके में नइखे खाली, तहरा सुनलको में बा। आ यादव जी एहू बात के समझले। एहू बात के समझले कि जवन बा कवितवा में, आ कवितवा के पढ़लका में, तवन सुनलका में जवन बा तवने के नाते बा। कहे में का जाता, एहू से, आ सुनले बानीं कि कबो–कबो सरसत्ती सवार हो जाली जीभ प, एहू से, इहँवे एगो ईहो बात कह के आ जतन से चपेत के रख देल चाहत बानीं, कि हमरा कबो सकत भइल, त साहित्यालोचन में नीरन जी के अइसन–जइसन कुल्हि साहित्य–वार्ता के जरूर–से–जरूर शामिल करे के कोशिश करब।

आदमी के कदर रहे नीरन जी किहाँ, आदमी के आदमी समझे वाला आदमी के कदर रहे, कद के कवनो कदर ना रहे, पद के कवनो कदर ना रहे। बड़–बड़ पदस्वी लोग से उनुकर परिचय–बात, बाकिर केहू के ओकरा पद के चलते अतिरिक्त आदर देत उनुका के ना पवलीं। एगो कॉलेज में लेक्चरर भइले, लेक्चरर लोग होत–होत होइए जाला, एकरा चलते रीडर भइले, सिनियरिटी में आ गइले त कुछ दिन खातिर प्राचार्यो हो गइले, बाकिर कुछुओ पावे खाती कबो कवनो उधामत ना कइले, रिज्यूमे बनावे आ ओकरा के मोटवावत रहे के बेमारी से हमेशा दूरे रहले। ओहदेदारी में अपना सर–संघातीलोग के कवनो ऊँचाई से कवनो कमतरी के अहसास में ऊ कबो ना लउकले। राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय उनुका खातिर 'रजिन्नर' से अधिका ना भइले, ना विश्वनाथ प्रसाद तिवारी 'बिस्नाथ' से अधिका भइले। अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में कुछ दिन खातिर अतिथि होके गइले त कुलपति के उनुका नाँव से 'गिरीश्वर' कह के बोलावेवाला पूरा कैम्पस में ऊहे अकेल रहन। सबके त ना, बाकिर केहू–केहू के, हरदम त ना, बाकिर कबो–कबो, उनुकर एह बिना बाँव–दहिन तकले, बिना बिचरले कि अगल–बगल के बा, के ना; ई नान्हे के नाँव से गोहरावल अखड़ियो जाय, भले ऊ आपन ई अखड़लका जनाय ना देबे। नीरन जी के साथे रहत–रहत हमरा जब एकर कुछ अहसास भइल, आ हम एकर कुछ इशारा कइलीं, त कहले कि अब हम त ना सुधरब। आ कहले कि एकरा पीछे एगो तर्क बा। कि हम सबका से तनी ऊँच परींला। होला ई कि हमार कवनो आपन जब कवनो ऊँचाई प पहुँचेला त ओकर ऊँचाई आपरूप हमरा से आके सट जाला। त सोच ले उदैवा, कि सबका लगे त खाली ओकर आपन ऊँचाई बा, हमरा लगे त सबकर ऊँचाई बा, त कइसे ना हम सबका से ऊँच ! उनुका एही अन्यतम ऊँचाई के मेल में रहत रहे उनुकर बग–बग धोती आ शानदारतम कुरता प शानदारतम सदरी आ ता–ऊपर डिजाइनदार उत्तरीय। सबकुछ मेजन मिला के, आ ओही मेजन में अक्सर एगो अइसन बैग, जवना के जे देखे पहिले–पहिल, छू के देखे, आ पूछे जरूर, कि जी, कहँवा से मँगववलीं हा, कतना के परल हा ? उनुका कुरता आ सदरी प हमरो दावा रहत रहे आ अपना दावेदारी के पक्ष में हमरो किहाँ एगो वाजिब तर्क रहे। कि नीरन जी के छोटे गो त घर बा, हमरा लेखा कुछ लोग उनुकर कुरता–सदरी झीटत ना रही बेर–बागर, त घर में कुरता–सदरी के अलावा कुछ राखे के जगहा ना रह जाई। बहरहाल, ई उनुकर अइसन धज रहे, जवना में उनुका के देखे के हमन के लत लाग गइल रहे। मुम्बई में एगो आयोजन रहे, ओमें पाती के यशस्वी संपादक अशोक द्विवेदी आ हमहूँ शामिल रहीं, हमनी के कविता पढ़े के रहे, उनुका भाषण झारे के रहे। होटल से तीनो जन अपना–अपना हिसाब से झार के चललीं जा, आ कार कुछ दूर चल लेलस तले अशोक

भइया के मुँह से निकल गइल कि बाकी सब त ठीक बा, बाकिर आज राउर सदरी, ओतना नइखे दमकत जतना काल्ह वाला दमकत रहे। आ ओकरा बाद त कतनो हमनी के मिल–जुल के कहे के कोशिश कइनी जा कि जी, 'दमकत नइखे' के मतलब ई ना कि 'दमकत नइखे', बस अतनवे कि काल्ह तनी जादे दमकत रहे, बाकिर नीरन जी कार घुमवाइए के मनले, कि अब त कविवरद्वय, ना जो बदलब हम ई सदरी त हमार त भषणवे बिगड़ जाई ! तर्क ई कि झार के ना जाइब, त झार के का आइब ! अपना एह सजग वस्त्र–विन्यास के पीछे उनुकर एगो आउर तर्क रहे। तर्क कि हमार जवन रंग बा, पक्का वाला, ओकर काम पितम्मर से कम में त द्वापरो में ना चलल रहे, त भला कलियुग में कइसे चले पाई ! ई रंग वाला बात एक बे कुछ दूर तक चलल रहे, बाकिर ओकर बात बाद में, पहिले उनुका एह तर्कपारायण भ. इला के एक उदाहरण आउर। एक बे कहलीं कि हमरा तीन बेर फर–फराकित के आदत। रउआ की त कवनो दवा–बिरो बताईं, ई आदत छोड़वाईं, ना त एकरा समर्थन में कवनो जबर्दस्त किस्म के तर्क लहवाईं। त कहले कि आदत त तब छोड़वावे पइतीं जब हम अपने एह आदत से बरी होइतीं। इहाँ त जो हाल तोरा सो हाल मोरा। एक बे त उठि–सुति, दोसरका बे नहाय के पहिले, तिसरका बे कुछ हल्का–फुल्का खइला के बाद। तर्क तोरा चाहीं त ईहे तोरो कामे आई, ईहे हमरो कामे आवेला कि तीतर तिसरके उड़ान में धराला, कि जवना लोक के लोग हमन हईं ओह लोक के काम 'एक बन गइलीं' से ना चले, दोसरको में जाय परेला आ काम बनेला तिसरका बन में–– एक बन गइली, दोसर बन गइलीं, तिसर बनवा...। ओंइसे एक तरीका आउर बा, कि हमरे लेखा तेहूँ एह तीनो के एक मनबे मत कर। पहिलका के नाँव दे 'रुचिकर', दुसरका के 'शुचिकर' आ तिसरका के 'स्वास्थ्यकर' !

आ अब रंग के बात। तब के बात, जब उनुका अपना गुरुजी, पं. विद्यानिवास मिश्र के लेके एगो डाक्यूमेंट्री बनावे के जिम्मा मिलल रहे। साथी लोग के साथे ओकर ताना–बाना तय होत रहे। बात आइल कि गुरुजी के साथे नीरनो जी के एगो बातचीत ओमें रहे के चाहीं, त उनुका परम मित्रन में से एगो, बैरिस्टर तिवारी, कहले कि जरूर रहे के चाहीं, ना देखी दर्शक लोग एह दूनो जन के एक्के साथे, एक्के फ्रेम में, त पता कइसे चली कि कवना गोराई के गोराई कहल जाला आ कवना करियाई के करियाई ! नेचुरल कंट्रास्ट कलर का कहाला, ई त केहू तब्बे जाने पाई जब कैमरा के सोझा, आमने–सामने होके, ऐन नीरने जी बतियइहें आ ऐन गुरुए जी से बतियइहें ! तिवारी जी के ई गोर–करिया वाला बतकही ओह दिन उनुका मित्र–मंडली में देर ले खिंचाइल। बात–बात में जाने कतने लतीफा आइल, उधियाइल। एगो बात हमरो लगे रहे, अपना छोट भाई मुन्ना के, हमहूँ सुनवलीं। मुन्ना के सामने कुछ मेहरारू लोग बतियावत रहे कि अलनिया के गोराई उजरकी गोराई, फलनिया के गोराई पियरकी गोराई, चिलनिया के गोराई ललकी गोराई। त मुन्ना कहले कि तनी हेने देखऽ लोग भाई, हम. रो गोराई, हमार गोराई करियक्की गोराई ! नीरन जी ढेर दिन ले धइले रहले एह 'करियक्की गोराई' के। एक बे सुनलीं कि ऊ, केहू के, कविवर रविकेश मिश्र के बारे में बतावत रहन, कि हमरे कद–काठी के, हमरे अइसन करियक्की गोराई वाला मनई ऊहो हवे, हमरा के मन में राख के उनुका के चिन्हबऽ त चीन्ह जइबऽ! बाकिर, बैरिस्टर तिवारी के एह करिया–गोर के कंट्रास्ट वाला बात के, तिवारी जी के लाख मना कइला के आ मनवला के बावजूद, बावजूद निकहा धिरवला के, तिवारी जी के मौजूदगी में, नीरन जी अपना गुरुवर विद्यानिवास जी के सामने परोस देले, आ जइसन कि उनुका सुभाव में शामिल रहे, अपना ओर से झूठ–साँच अनघा जोड़–घटाऽ के। अपना एह झूठ–साँच के नीरनो जी, आ उनुका एह झूठ–साँच के अउरियो–अउरियो उनुकर हीत–नात 'निरामिष' आ 'अहिंसक' आ 'परम पावन' जइसन कतने विशेषण से सटले–सटवले रहत रहे, आ केहू ना कह सके कि एमें से कवनो विशेषण उनुका झूठ–साँच से कब्बो मिसमैच कइल। बहरहाल, गुरुजी के बादशाह बाग वाला दरबार में, तिवारी जी के एह मौलिक उद्भावना के लेके जवन हँसी–ठाठा होखे के रहे, भइल, आ ओमें नीरन जी के जोड़ला–घटवला प तिवारी जी के जवन एतराज रहे तवनो के सुनल गइल, उनुका एह दुहाई के साथे कि गुरुजी, रउआ–त–नीरन–के–जानते–बानी–कि–कइसन–ई–झुट्ठा–लबार, आ गुरुजी के एह दिलासा के सा. थे कि कहऽ भला, हमहीं–ना–जानब–कि–कइसन–ई–झुट्ठा–लबार ! ई कहबे ना कइलीं उहाँ के, हाथ–के–हाथ साबितो कइलीं। अपना कवनो सद्यः प्रकाशित किताब के एगो प्रति उठवलीं, ओकरा पहिला पेज प तिवारिए जी से कलम लेके कुछ लिखलीं, आ लिख के किताब तिवारी

जी के थमा दिहलीं कि ल, पढ़ ल कि का लिखल बा, आ पढ़ के नीरन के दे द। लिखल रहे 'अनृताचार्य अरुणेश को ससनेह'। बहरहाल, एकरा साथे–साथे बाते–बाते गुरुजी एह रंग–चर्चा के एगो अइसन दिशा दिहलीं कि बाते बदल गइल। कहलीं कि महेन्दर मिसिर के एगो पूरबी ह, "एके गो मटिया के दुइ रे खेलवना, मोर बल. मुआ हो, गढ़े वाला एके गो कोंहार"। ओमें आवेला कि "कवनो खेलवना के अटपट गढ़निया, मोर बलमुआ हो, कवनो खेलवना लहरदार"। आ ओही में ईहो आवेला कि "कवनो खेलवना के रंग बाटे गोर, मोर बलमुआ हो, कवनो खेलवना जिउआमार"। त ई ना भुलाय के चाहीं कि करिया रंग के एगो आउर नाँव ह 'जिउआमार'। आ बाते–बाते बतवलीं गुरुजी, कि केहू बतावत रहे कि हजारी प्रसाद जी के मुँह से उनुका आखिरी समय में जवन एगो बात बेर–बेर सुनाइल, तवन ई रहे कि 'काहे दो करियट्टा आवत नइखे, हलकान क के धइले बा!' आ जे विद्यानिवास जी के जानत बा, ऊ ईहो जानत बा कि राम–चर्चा चले त उहाँ के सम्हर जात रहीं, कृष्ण–चर्चा चले त बह जात रहीं, भरसक त बहक जात रहीं। त भइल ई, कि सामान्य दिन के सामान्य एगो बइठकी, ओह दिन कन्हाई आ उनुकर जिउआमार करियाई के चर्चा में अइसन डूब के नहाइल कि बइठकी के बाद, का नीरन जी आ का आरपी पांडे जी आ का वशिष्ठ मुनि ओझा जी, सभे बैरिस्टर तिवारी के बाकायदा बोल–बोल के आभार जनावल कि भाई, ना तू उठवले रहितऽ ई बात, त आज, कइसे भेंटाइत, बात–बात में बात के अइसन सौगात ! तिवारी जी बाकिर, कहले, कि घामड़ बाड़ऽ लोग तू, ई नइखऽ देखत कि गुरुजी सहित्ते, हमन में से केहू नइखे अइसन जे महेन्दर मिसिर के 'जिउआमार' से जुड़ पावे, एगो नीरन के छोड़ के, त भारी–आभारी जेकरा जवन होखे के होखे, इनिके होखऽ जा, हमार जान छोड़ऽ जा...।

ओंइसे, 'जान छोड़ऽ हमार', नीरन जी के ई अक्सर अपना साथी लोग से सुने के मिले। हँ, त नीरन जी जेकरा जवना बात के पीछे पड़ जास, अँइसे पड़ जास कि कहहीं के पड़े अक्सर कि भाई, जान छोड़ऽ हमार। जइसे, किरपिनाही के जतना किस्सा रहे उनुका किहाँ, आ ओकर कवनो गिनती ना रहे, एह से कि ऊ नित्यप्रति उपजल करे, ओह कुल्हि के ऊ अपना मित्र, उनुका खातिर बिस्नाथ, हमन खातिर आदरणीय प्रोफेसर विश्वनाथ प्रसाद तिवारी जी से सटा देत रहन। ओह कुल्हि कथवन के अनेक में से एक श्रोता अक्सर त खुद तिवारियो जी रहत रहन, एगो स्थायी किसिम के, भुवनमोहन मधुर मुस्कान के साथे। हमरा त एकाध बे के ईहो इयाद बा कि दुचार किस्सा हो जाए त जवन छूटल रहे, तवना में से एकाध गो के इयाद त खुद तिवारिए जी करवावस। ऊ कुल्हि किस्सा त अभी हम नइखीं सुनावत, हालाँकि एकर माने ईहो ना कि अभी नइखीं सुनावत त कभी ना सुनाइब, बाकिर ओमें से एगो त अइसन बा कि अभिए ना सुनाइब, त नीरने जी के ना, तिवारियो जी के कवन मुँह देखाइब ! नीरन जी के सबसे छोटका लइका, जनमेजय, दु–का–दो कीने खातिर नीरन जी से कुछ पइसा मँगले, नीरन जी टरका दिहले, कहले कि काल्ह। अगिला दिन फेरू मँगले, फेरू टरका दिहले, कहले कि काल्ह। जब तिसरको दिन टरकावे लगले त जनमेजय खिसिया गइले, फटकार के कहले कि पापा, तू पापा ना हवऽ, तू बिस्नाथ प्रसाद तिवारी हवऽ! एगो किस्सा त हमरा देखते–देखत, हमरा आँखिन के सामने उपजल। गोरखपुर विश्वविद्यालय में रिफ्रेशर कोर्स चलत रहे, हमहूँ ओमें शामिल रहीं। देवरिया नीरने जी किहाँ रह के, ओइजे से गोरखपुर रोज आईं–जाईं। रिफ्रेशर कोर्स में एक दिन मैनेजर पाण्डेय जी के अवाई भइल। ओह दिन विश्वनाथ जी कवनो बाझ के चलते आवे ना पवले रहन। त पाण्डेय जी, व्याख्यान के बाद उनुका के घेर के ठाढ़ तमाम नवही अध्यापक लोग के शंका–समाधान करत–करत जब उबिया गइले, त कहले कि भाई, तू लोग अब जा, हमहूँ तनी विश्वनाथ जी किहाँ उनसे भेंट करे जाइब। सुने के देर रहे कि नवही अध्यापक लोग तड़–से तइयार, कि चलीं, हमनियो के चलब जा। आ विश्वनाथ जी के खबर क दियाइल, सभे पहुँचल, चाह–पानी भइल, देर ले चलल बतकूचन, आ आज के दिन सचहूँ सभे रिफ्रेश हो गइल। जाहिर बात कि देर से लवटलीं देवरिया, आ नीरन जी से विस्तार से कइलीं एह बतकही के रिपोर्टिंग। पुछले कि चाह पियवले हा बिस्नाथ ? बतवलीं कि चाहे ना खाली, भर थारी मकई के लावा, ऊ ओराइल त एक थारी आउर। तले दु–के–दो नीरन जी से मिले आ गइल, आ नीरन जी हमरे सामने हमरे सुनावल किस्सा उनुको के सुनवले। कि ई प्रकाश उदय हवन। इनिका से बिस्नाथ के किरपिनाही के कथा सुनाईं त हँसत रहन कि रउआ बस बात बनावत बानीं, बाकिर आज जब अपना आँखिन

देखले हा त बुझाइल हा कि हम बढ़ा के ना बतावत रहीं, बलु घटाइए के बतावत रहीं। एने हमार हालत खराब कि ई का नधले महाराज जी, ओने नीरन जी जारी, कि सतरह जने पहुँचले हा मिले बिस्नाथ से, बिस्नाथ के घरे, त बिस्नाथ भर थारी मकई के लावा परोस देले हा। सभे लावा खात रहे, आ साहित्य बतियावत रहे, आ पता बा बिस्नाथ का करत रहन ? जतना मन से साहित्य बतियावत रहन, ओतने मन से जवन लावा दरी प गिर जाय तवना के उठा–उठा के थारी में डलले जात रहन ! आगंतुक जब बिदा हो गइले, त नीरन जी से कहलीं कि ई का कइलीं महाराज, रउआ ओइजा रहीं ना, हम रउआ से अइसन कुछ कहलीं ना, आ रउआ हमरे नाँव प ई दु–का–का कह गइलीं ? कहले कि गलत सवाल। तहरा ई पूछे के चाहीं कि रउआ ओइजा रहलीं ना, आ हम रउआ से कहलीं ना, त रउआ जनलीं कइसे ? हम कहलीं कि ईहे बताईं, रउआ जनलीं कइसे ? कहले कि भाई, बिस्नाथ हमार जिगरी, जनम–जनम के साथ टाइप के हमनी के साथ, हम ना जानब उनुकर रहन–चाल, त के जानीं ! अब तूँ बतावऽ, जवन बतवलीं हा, ओमें कुछ गलती रहे ? दबले जुबान कहलीं हम कि थोर–बहुत गलती त रहले रहे। अइसन ना रहे कि उहाँ के लावा बीन–बीन के थारी में डलले जात रहीं। एक हाथ से उठावत रहीं त दुसरका हाथ में बटोरले जात रहीं, जब भर जात रहे तब जाके थारी में डालत रहीं, खुदरा में बिलकुल ना, थोक में। आ नीरन जी के महानता देखीं, कि आपन गलती मान लेले, बिना कवनो किन्तु–परन्तु के। बाकिर ईहो एगो साँच, कि अइसन कुल्हि कथा–कहानी के चलते तिवारी जी त कम–से–कम कब्बो ना कहले कि भाई, जान छोड़ऽ हमार। कवनो दोसरा बात प कहले होखस, त हमरा ओकर जानकारी नइखे, बाकिर जतना हम जानत बानीं ओकरा बले ई उमेद त कइए सकेलीं कि तिवारी जी मने–मने जवना परमहंस पद के पा लेले बाड़े, शुरुए से, तवना के बाद, नीरने जी के ना, केहुओ के, कवनो बात प, 'जान–छोड़ऽ हमार' जइसन कुछुओ ऊ कहिए ना सकस। अलबत्ता, उनुका दोसर–दोसर मित्रन के मुँहे, आ मित्रेतरन तक के मुँहे हम नीरन जी से 'जान छोड़ऽ हमार' के गोहार लगावत सुनले बानीं। खुद हम, उनुकर पुत्रवत मित्र भइला के नाते, भले कबो ई ना कहलीं, बाकिर ईहो ना कह सकीं कि कहे–कहे कइलीं ना, ना ईहे कह सकीं कि नाहिंयो कह के कबो कहल. ीं ना। बात कइसे 'जान–छोड़ऽ–हमार' तक पहुँच जाय, एकर कुछेक किस्सा। एगो दोसर तिवारी जी, बैरिस्टर तिवारी जी के संस्कृत विश्वविद्यालय वाला आवास में चोरी हो गइल। पुलिस गोड़–प–गोड़ ध के आइल, आ गइल त हाथ–प–हाथ ध के बइठ गइल। नीरन जी देवरिया से फोन क के पुछले कि का हो, का भइल, त तिवारी जी कहले कि हम का बताईं कि का भइल, तूँ बतावऽ, तहार मित्र काशी के कमिश्नर। कमिश्नर रहन तब मनोज कुमार जी। नीरन जी उनुका से बतियवले, ऊ कहले कि तिवारी जी से कह दीं कि एक दिन हमरा से आ के मिल लीं। नीरन जी कह देले कि जा के मिल ल, तिवारी जी कहले कि ठीक बा, जा के मिल लेब। दुचार दिन बाद पुछले कि का हो, मिललऽ? कहले कि अबहीं त ना, काल्ह जाइब। परसों पुछले कि गइल रहऽ ? कहले कि ना हो, गइल त ना रहीं। पुछले कि काहे, त कहले कि पेट खराब हो गइल रहे। कहले कि काल्ह जइबऽ ? कहले कि ठीक हो जाई त जाइब काहे ना ! पेट दुचार दिन खराबे रहल। ओकरा बाद का–दो बोखार लाग गइल। तवना के बाद कहले के गाँवे जाय के बा, उहाँ से लवटि के आइब त जाइब। लवटि के आ गइले, आ नीरन जी लगले फोन प झटहेरे कि आज–के–आज अभी–के–अभी जा, मनोज से हम कह देले बानीं, इंतजार करत बाड़े ऊ तहार। त तिवारी जी कहले कि नीरन, भाई, जान छोड़ऽ हमार, आ जे तहार कमिश्नर इयार, उनुको। जीए द, हमरो के आ जवन के–जाने–कवना संजोग से चोर हो गइल बाड़न स उन्हनियो के, आ जवन के–जाने–कवना संजोग से चोर ना होके पुलिस में बहाल हो गइल बाड़न स, उन्हनियो के...। असहीं, वशिष्ठमुनि ओझा जी, उहाँ के डायरी लिखे के सवख रहे, आ एह ममिला में अतना ईमानदार रहीं उहाँ के, कि डायरी में ईहो लिख दीं कि आज, गुरुजी के यहाँ जाना हुआ, लोक अपने गीतों में कैसे भगवान को अपनी भूमि पर लेकर आता है, इस पर सघन बातचीत हुई, चलते समय गुरुजी की चौकी के नीचे से एक उपन्यास खिसका लिया। आगे उपन्यास के नाम, प्रकाशन, संस्करण वगैरह के पूरा विवरण रहत रहे। नीरन जी के उनुका एह सवख के खबर रहे। ओझा जी तनी भ एहर–ओहर होखस, त नीरन जी उनुकर डायरी निकाल के देख लेस कि कहाँ–कहाँ से कवन–कवन किताब खसकवले बाड़े। आ बाते–बाते ओही में से कवनो माँग देस, कि बसीठ, फलनवा किताब कहिए से जोहत बानीं, मिलत नइखे, तहरा किहाँ होखे

त दे द, पढ़ के लौटा देब। ओझा जी किताब के अपना किहाँ भइला से इन्कार करस त नीरन जी उनुके डायरी उनुका मुँह प खोल देस, आ भलमनसाही में दे देस, त किताब त लौटे से रहल। तूँ उनुका किहाँ से खसकवलऽ, हम तहरा किहाँ से खसकवलीं, अंतर बस अतने कि तूँ चुप्पे, हम डिठार; तूँ लिखतंग में, हम बकतंग में। ई कइक बेर भइल त ओझो जी के एक दिन कहहीं के परल, कि की त तूँ हमार जान छोड़ऽ, ना त कहऽ त हम डायरिए लिखल छोड़ दीं, कहऽ त कुछुओ लिखल छोड़ दीं, जियले छोड़ दीं ! असहीं, विश्व भोजपुरी सम्मेलन के मुखपत्र 'समकालीन भोजपुरी साहित्य' के कार्यभार नीरन जी देवरिया से अपना कपार प उठवले आ बनारस आके अपना मित्र मनोविज्ञान के परम पंडित चंद्रभाल द्विवेदी जी के कपार प पटक दिहले। लागल बइठकी बइठे। चंद्रभाल जी के लगे कहीं आवे–जाय के टाइम नइखे त उनुके घरे, पत्रिका खातिर रेखाचित्र के जिम्मेदारी जे उठवले रहे, ब्रह्मदेव मधुर, उनुका मुँह से निकल गइल कि टाइम नइखे, त उनुके घरे। ओहिजे प्रकाश उदय के बोला लियाइल, पं. हरिराम द्विवेदी के बोला लियाइल, बलभद्र के बोला लियाइल, आ जे सुनल कि नीरन जी आइल बाड़े, ऊ बिना बोलवले आ गइल। बतकूचन चलत बा; चाह–पानी, पोहा–पकौड़ा के लर लागल बा, जे जाइल चाहत बा ओकरो के जाय नइखे दियात, कहाता कि जेकरा से भेंट करे जाए के बा, ओकरो के एहिजे बोला ल। समकालीन भोजपुरी साहित्य के दुचार अंक तक त ई कुल्हि घींचघाँच के चलल, फेर चंद्रभालो जी कहले, ब्रह्मदेवो जी कहले कि जान छोड़ऽ हमार...।

बहुत दिन बाद के बात। नीरन जी अपना किताबाकीर्ण कोठरी में सोफा प गोड़ लटका के बइठल रहन। चुपचाप। चंद्रभाल जी, आरपी पांडे जी, बैरिस्टर तिवारी जी, तिवराइन जी, वशिष्ठमुनि ओझा जी, देवरिया के साथी–संघाती देवी सिंह जी, मन्नन जी, सिद्धेश्वर जी, आमोद जी–– ऊ लगभग सब लोग, जे नीरन जी के नीरन जी ना, नीरन कहे वाला रहे, नीरन जी के छोड़ के जा चुकल रहे। उन्हनिए लोग के बात निकलल रहे, आ नीरन जी सबके बारे में अँइसे बतियवले कि लगबे ना कइल कि ऊ लोग धरा–धाम से विदा हो गइल बा, देवता लोग के जमात में शामिल गइल बा, निंदा–प्रशंसा से परे पहुँच गइल बा। आ बतियावत–बतियावत, बलुक बोलत–बतावत अचक्के चुप हो गइले। थोरे देर बाद कहले कि उदैवा, देख, कि सबकर जान हम छोड़ दिहलीं। आ चुप लगा गइले। आ कहले कि उदैवा, देख सब जना हमरा से जान छोड़वा लिहले। आ चुप लगा गइले। आ कहले कि सब जना जान छोड़ दिहले हमार। आ चुप लगा गइले। ओह दिन के उनुका ओही चुप्पी के, दिल्ली से लौट के देवरिया में, उनुका बिस्तर पकड़ लेला के बाद, दादा के साथे मिले गइलीं तहियो, सत्यदेव जी आ ब्रजेंद्र जी के साथे मिले गइलीं तहियो आ रामसुधार जी के साथे मिले गइलीं तहियो महसूस कइलीं। तीनो बेरा हम भाग के ऊपर उनुका कमरा में गइलीं। आ ओनिए मुँह क के जेने ऊ बइठल रहन, उहँवे बइठलीं जहाँ बइठल रहलीं, आ बारी–बारी से ओह सब लोग के इयाद कइलीं जे. करा बारे में बोलत–बतावत अचक्के एगो चुपचाप में चल गइल रहन ऊ।

आ जवन बात आइल मन में, पता ना कि ओकर का मतलब, बाकिर ऊ खाली अतनवे रहे आ ईहे रहे कि 'ई त कवनो बात ना भइल'। श्राद्ध वाला दिने दादा आ रामसुधार जी के साथे हमहूँ पहुँचल रहीं। असहीं, थकाने मिटावे खातिर बुला, चुपचाप ओह कमरा में पहुँचलीं आ जवना दरी प, के जाने कतने बेर उनका रहता भ में सूतल–परल रहीं, असहीं ओलर गइलीं, कि थोर–बहुत हाथ–गोड़ सोझ हो जाय। आ के जाने कहाँ से, कइसे, काहें, ऊहे बतिया फेरू से आइल आ धँस गइल–– 'ई त कवनो बात ना भइल...'।

अभिधा में त नाहिंए, लक्षणो–व्यंजना में, नीरन जी के हम कबो कहीं रोअत नइखीं देखले। हमरो कबो उनुका सोझा अपना रोअला के नइखे इयाद। ओंइसे, उनुकर कुछ प्रिय कवितन में से एगो ऊहो रहे जवना में रहे कि "मैं रो लेता आसपास जब कोई कहीं नहीं होता है"। मजमा लगावे में माहिर रहन नीरन जी, बाकिर हम, उनुका ओहू महारत के गवाह रहल बानीं, जवना से ऊ आपन एगो एकांत जोह लेत रहन। कबो–कबो त भरल भीड़ में। कॉरिडोर के पहिले वाला विश्वनाथ मंदिर में पिंडी के सोझा वाला एगो देवार में चार–पाँच आदमी के टिक के बइठे लायक एगो ओटा रहे। ओह प नीरन जी बइठ जास त अक्सर आँख मूँद के अकेले कहीं निकल लेस। एक दिन त हद हो गइल। घंटा भ बीत गइल। कवनो हिल–डुल ना, कवनो हरकत ना। मन कइल कि झँझोर

के जगा दीं। हाथ बढ़वलीं, तले एगो बात आ गइल मन में, कि मान लीं कि झँझोरलीं, आ झँझोरलो से ना जगले तब! दहिने से हाथ लगवलीं आ बाँए लोंघड़ गइले तब! सोचिए के सिहरन–अस हो गइल। ऊ त कहऽ कि ठीक ओही घरी ऊ उठ के खड़ा हो गइले कि चल, ना त तोरा घरे जाय में देर हो जाई, लगबे डँटाय।

आ विश्वनाथ गली से निकलत–निकलत एगो अइसन बात ऊ कहले, जवन आज अचक्के इयाद आइल त ऊहे सिहरन–अस जनाइल। कहले कि बढ़िया कइले हा कि हमरा के झँझोर के जगा देले हा, ना त हमार का बिगड़ित, हमरा के के डाँटे वाला, तोरा के तोर मेहरारू अतना देर से अइला खातिर धउरा के मारित। हम कहबो कइलीं कि बाकिर हम झँझोर के जगवलीं हा ना, बाकिर हमरा बात के अइसन ना कि ऊ ना मनले, बाकिर अइसनो ना कि मान लिहले। बतिए बदल देले। आज जब ओह दिन के ई बात इयाद आइल हा त मनवा में आइल हा कि बाबूजी परल रहन सोझा, बहिन परल रहे, भाई परल रहे, नीरन जी परल रहन, हम काहे एक बे झँझोरलीं ना !

पता ना कि एह प्रमाद के कबो, कहीं–कवनो क्षमादान बड़लो बा कि ना !••

❑ शिव 5/41, आर- 2, लक्ष्मणपुर, शिवपुर, वाराणसी- 221002

कविता

स्व0 गंगा प्रसाद अरुण

भोजपुरी दोहा-दसक

अँजुरी भर आदर-अदब, बूके भर बिसवास।
चुटकिन चंचल चातुरी, पसर प्रेम परिहास।।

अजब अभी अंदाज अलि, गजब गुलाली गाल।
आनन अगरु-अबीर अति, मधु मौसमी मलाल।।

अपने के गरिआ रहल, अइसन ई अनरीत।
सिरजत-गावत लाज ना, देवर-भउजी गीत।।

अरज सारदा से सदा, पइतीं राउर साथ।
गुनगुनात गावल करीं, वरद हाथ दीं माथ।।

आँखिन पर बा छोपनी, मुँह जाबे कुल हूब।
कइसे पहिचानल करीं, के मोथा, के दूब।।

डेग-डेग उल्हा हमीं, उनकर दूधा-भात।
पता चले लागल इहाँ, अब आपन अवकात।।

तास-खेल में सीख ले, सातिर सजग समाज।
राजा-पतई गुम भइल, 'जोकर' माथे ताज।।

बोलल मूस बिलार से, पसगइबत के बात।
ढोईं हमीं गनेस के, उनकर का अवकात।।

लउर-लंठ-लंपट लगन, लांगटपन के सोर।
चउका-चउराहा बहे, भोजपुरी पर लोर।।

सभे जान-पहिचान के, सब पर रहे गुमान।
जानल-पहिचानल लगे, दुरदिन में अनजान।।

हमार आत्म-संघर्ष आ स्व0 अरुणेश 'नीरन'

अशोक द्विवेदी

रुचि आ लगाव अछइत, परिस्थितिवश कहीं आवे–जाये के सिलसिला आ संवाद टूट जाला त लिखे–पढ़े वाला कइसे हाशिया पर चल जाला, एकर छछात उदाहरन हम खुदे हईं। दइब क अतने किरपा रहे कि हमार रचनात्मक उर्जा आ उछाह बनल रह गइल। सुदूर एगो छोट जिला में, रोजी–रोजगार विहीन अदिमी के, साधन–सुबिधा आ अर्थाभाव, जमाना का दउड़ में पाछा ढकेल देला। 1972 से 1982 तक हमार इहे स्थिति रहे–एकेडमिक जगत छूट गइल रहे आ हम खेती–बारी आ घरकच तक अझुराइल, कोना–अँतरा में परल, खुद अपने से लड़त–जूझत रहनी। अतने रहे कि मनवा हार ना मनलस आ हमार भितरी रचनात्मक उर्जा आ स्वाभिमान दूनों धीर–धरम से बाँचल रहे।

अरुणेश नीरन जी से हमार चीन्हा–पर्ची पचास बरिस पहिले से रहे– बनारस में पढ़ाई का दौरान हम आचार्य विद्यानिवास मिश्रजी किहाँ उनुका दर्शन खातिर पहिले–पहिल गइल रहनी, तबसे। आचार्य विद्यानिवास जी त भाषा–साहित्य के प्रकाण्ड पण्डित रहले बाकि हमा–सुमा जइसन नवसिखियन का दिसाईं बहुत सरल आ नरम रहले। हमके 'प्रिया नीलकंठी हमके अनासो ओह लोगन से उनकर ललित निबन्ध कबिताइयो से नीक लागे। 'छितवन की छाँह' आ कुबेरनाथ राय के से जोरि देले रहे। 'नीरन' जी आचार्य विद्यानिवास जी के प्रिय रहलन। प्रतिभा संपन्न आ चलबिधर। मिश्र जी का जवरे साहित्यिक–जगत में उनकर सम्पर्क–सम्बन्ध हमा–सुमा जस साधारण लेखक आ विद्यार्थी से बहुत ज्यादा रहे। खास कर हिन्दी लेखक वर्ग में।

1974 में जब हम आपन शोध–प्रबन्ध बी0एच0यू0 में जमा कइला का बाद बनारस छोड़ि के गाजीपुर में अपना गाँवें रहे लगनी त साहित्यिक लोगन से हमार सम्पर्क आ बात–ब्यौहार लगभग टूटि गइल। सुबिधा–विहीन आ अर्थाभाव त कारन रहबे कइल। जियका–जोगाड़ खातिर घर–गृहस्थी में बन्हाइ के रहि गइलीं। 'टेक्स्चुअल' लेखन का कारन नजदीकी जिला–बलिया में गुजर–बसर के कुछ ठेकान जरूर मिलल, बाकि ऊहो स्थायी ना रहे। खेतिए–बारी में अझुराइल, अपना मातृभाषा आ बोली में कहत–सुनत, ओही भाषा में लिखे–पढ़े के सुभाव बन गइल। अइसन ना कि पहिले हम भोजपुरी में ना लिखत रहीं, बनारस में रहलीं त, भोजपुरी कविता पहिलहूँ लिखत रहीं, पत्र–पत्रिकन में प्रकाशन खातिर भेजत ना रहीं। अस्सी घाट वाला हमरा डेरा के एगो मूल्यवान उपलब्धि, जवना के अनुभव हमके बहुत बाद में भइल, ऊ ई रहे कि श्रद्धेय त्रिलोचन शास्त्री प्रायः

सबेर आ साँझ के जरूर बी0एच0यू0 भ्रमण करत आ जासु आ उनका से बात–बतकही में अक्सर 'कविता' आ जाय। एक दिन उनके हम आपन भोजपुरी में लिखल कुछ सानेट सुनवलीं, ऊ बहुत खुश भइले। कहले, "पंडित आप अपनी मातृभाषा में अच्छा लिख लेते हैं। आप ने शेक्सपीरियन सानेट लिखा है, भोजपुरी में श्री मोती बी0ए0 ने अच्छे सानेट लिखे हैं।" हमार उछाह बढ़ल। ऊहे हमके 'मिल्टन', 'स्पेन्सर' आ 'रिल्के' के छन्दविधान बतवले। अपना गाँवें रहत खा हम गीत का अलावा मिल्टन, स्पेन्सर आ रिल्के के छन्द–विधान में कई गो सानेट लिखनीं। कुछ कहानियों लिखाइल। अस्सी वाला डेरा एहू माने में यादगार बनल कि उहें हमके अविनाशचंद्र विद्यार्थी हमरा गाँव में अवधेश प्रधान का सँगे मिलले। ऊ त्रिलोचन जी के खोजत आइल रहे लोग। त्रिलोचन जी हमरे इहाँ बइठल चाय पीयत रहले। एगो अस्त–व्यस्त विद्यार्थी का डेरा में बइठहूँ के सुबिधान साधन ना रहे। ले–देके दू गो एकहरी खटिया। सब बइठल। बाद में मालूम भइल कि अविनाचंद्र जी अपना किताब 'सेवकायन' के भूमिका त्रिलोचन जी से लिखवावे आइल रहले। त्रिलोचन जी का कहला पर हम आपन एगो भोजपुरी सानेट उनके दिहलीं, जवना के ऊ महीना भर बाद 'अँजोर' पत्रिका के पहिल पेज पर प्रकाशित कइले। भोजपुरी में हमार रचना पहिले पहिल "अँजोर" में छपल, ओकर संपादक पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय जी रहले आ उप संपादक विद्यार्थी जी।

त्रिलोचन जी भाषा प्रवीन आ सर्जनात्कता के अनुरागी रहले– अवधी के लोक–संस्कार से संस्कारित, बाकी भोजपुरी, ब्रजी, बुन्देलखण्डी आदि कई लोकभाषा से उनकर प्रेम सहजे लउके। संस्कृत, उर्दू, अंगरेजी आदि अनेक भाषा के जानकार आ उनहन के भाषा प्रयोग के मर्मज्ञ। सहजता आ सादगी के अन्य साधक कवि त्रिलोचन से हमरा बहुत कुछ जाने आ सीखे के मिलल। ओह दौर में हमार भेंट अक्सरहा अउरियो चर्चित कवियन आ लेखक लोगन से होखे बाकिर एगो सीमा में काहेकि हम विश्वविद्यालय के छात्र रहलीं। धूमिल त प्रायः अस्सी आ भदैनी पर मिल जासु बाकि मंचीय कवि लोगन में चन्द्रशेखर मिश्र, हरिराम द्विवेदी, श्रीकृष्ण तिवारी, उमाशंकर तिवारी आदि लोगन से भेंट–मुलाकात आ चीन्हा–पर्ची हमरा के आगा कामे आइल। परमानन्द आनन्द, वशिष्ट मुनि ओझा, बुद्धिनाथ मिश्र आदि लोग त हमरे अस नवहा बाकि उत्साही आ रचनाशील मित्र–बन्धु लोग रहबे कइल। गोरख पाण्डेय ओघरी हमरे नियर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के विद्यार्थी रहले। गाँवें अइला का बाद अइसनका बहुत लोगन से हमार सम्पर्क–संबाद लगभग एकदमे टूटि गइल, जवना के मलाल आ कचोट आजो हमके बेकल कर देला।

कठिन परिस्थिति आ सुबिधाहीनता में अपना मन के सहज संकोच आ लाचारगी आदमी के बहुत अब्बर बना देला ओहू में तब जब लेखक/कवि के, ओकर आपने परिवार कवनो भाव ना देला। हमरा भीतर हीनता के भाव जगबो करे, त हम अपना संघर्षशीलता आदत का कारन हीन भाव के दरकचत आगा बढ़े के कोसिस कइनी। ओघरी भोजपुरी में पत्रिका निकाले के ललसा जोर मारे बाकि आपन सामरथ आ साधनहीनता हमरा के दुतकार देव। इहे ना हमरा मन में भोजपुरी साहित्य प्रकाशन आ ओकरा प्रति भोजपुरिहा लोगन के उदासीनता से उलझन आ खिन्नता रहे। भोजपुरी कवि–लेखकन का नाँव पर गिनल चुनल लोगन से संपर्क रहे। हिन्दी का पत्र–पत्रिकन में प्रकाशित रचनन के पारिश्रमिक (मेहनताना) हमार संबल रहे। ओही घरी भोजपुरी अकादमी पटना में एगो वैकेन्सी पर पटना गइलीं। हमार पहिल भोजपुरी कविता–संग्रह "अढ़ाई आखर" छपल रहे, ओह के कुछ कॉपी लेले गइनी। उहाँ नगेन्द्र प्रसाद सिंह आ जगन्नाथ जी मिलले। जगन्नाथ जी आपन गजल संग्रह "लर मोतिन के" दिहले आ नगेन्द्र जी अपना एक फार्मा के पत्रिका "भोजपुरी उचार" के दू गो अंक दिहले। रात खा हम उनहीं का "जयदुर्गा प्रेस" में रुकलीं, लवटलीं तऽ बलिया जाके "पाती" के तिमाही अंक वाला पत्रिका के रजिस्ट्रेशन–आवेदन कइलीं। एक डेढ़ महीना बाद दिल्ली से हमरा पत्रिका के रजिस्ट्रेशन भइला के सूचना मिलल त बलिया से 'पाती' के पहिला अंक छपववनी। मोबाइल आ फोन वाला सूचना तन्त्र त रहे ना, खाली पोस्टकार्ड आ अन्तर्देशी सहारा रहे ओही का बले रचनाकार आ लेखक लोग संपर्क साधे। संपर्क होइयो जाव, तऽ स्तरीय रचना खातिर छपिटाए के परे। पहिला अंक जइसे–तइसे निकलि गइल बाकि आगा क हाल हमहीं जानत बानी। तब, तवना घरी 'नीरन' जी से हमार कवनो खास संपर्क–संबंध ना रहे। एतने सम्बल हमरा खातिर बहुत रहे कि हमरा संघर्ष में कुछ सुधी–सहृदय यशस्वी साहित्यकार आ गिनती के नेही जन के सहजोग आ असिरबाद हमरा के हारे

ना दिहलस।

एगो लमहर अन्तराल का बाद 1995 में हमके सूचना मिलल कि नीरन जी देवरिया में भोजपुरी साहित्य, कला–संस्कृति खातिर एगो बिराट आयोजन कर रहल बाड़न, ओमे प्रदेश के राज्यपाल आ प्रधानमंत्री चन्द्रशेखर का अलावा देश के नामी गिरामी कहाए वाला विभूतियन के जुटान होई। आचार्य विद्यानिवास मिश्र का अलावा बड़–बड़ लेखक–कवियन के आगमन होई। तब हमरा भीतर अचानक ओइजा जाए के ललसा जागल। कई गो पुरान लेखक आ कवियन से एक बेर मिले के उत्कण्ठा हमके देवरिया खींच ले गइल। हम उहाँ गइलीं आ दू दिन रुकबो कइलीं। साँचो ऊ भोजपुरी के अद्‌भुत आ ना भुलाये वाला विशाल आयोजन रहे। पूरा देवरिया शहर जइसे भोजपुरीमय हो गइल रहे। हर स्कूल, कॉलेज आ सड़क चौराहा विश्व भोजपुरी सम्मेलन का झण्डा बैनर से सजल। जगहे जगह जुटल भोजपुरी प्रेमी लोगन खातिर, जलपान आ भोजन के इन्तजाम सूते–बइठे आ बोले–बतियावे के 'आटोमेटिक' व्यवस्था। जिला प्रशासन, जनपद के शिक्षण–संस्थान आ नगरवासियन का सहजोग के बिना हजारन लोगन के ई सम्मेलन संभव ना रहे। लम्बा समय तक चर्चा में बनल रहे वाला एह आयोजन का पाछा आदरनीय पण्डित परमहंस त्रिपाठी उनकर पुत्र श्री सतीश त्रिपाठी आ डा0 अरूणेश नीरन क अथक प्रयास आ परिश्रम रहे। बड़का मैदान में सभा, जहाँ वक्ता लोगन आ कवि सम्मेलन आदि के मंच बनल रहे। एक ओर भोजपुरी कला आ सांस्कृतिक चीन्हा खातिर डाली–मउनी, सूप–चालन, ओखर–मूसर, दउरा, खाँची, पंखी–पंखा वगैरह के प्रदर्शनी रहे। हमके एक्के जगह भोजपुरिया पहिचान के ई समिलात समागम बड़ा आकर्षक लागल। सुने में आइल कि इहवाँ एगो पुरान भोजपुरी साहित्यकार के भोजपुरी में अप्रतिम योजदान खातिर "सेतु सम्मान" से सम्मानित कइल जाई। हमके अनुमान रहल कि मोती बी0ए0 के 'सेतु सम्मान' मिली, बाकिर बाद में पता लागल कि ई सम्मान आचार्य धरीक्षन मिसिर जी के मिली। देवरिया समागम में, मोती जी साइत अस्वस्थता का कारन ना आइल रहले। कुछ किलोमीटर दूर रहे बरहज। हम उनसे मिले खातिर बरहज पहुँचनी त उहाँ बइठल भाई अनिरुद्ध त्रिपाठी जी क विनम्र सुभाव अनासो खिंचलस। मोती जी से त हमार चिट्‌ठी–चपाती पहिलहीं से चलत रहे। सोझा बइठि के उनका से बतियवला के एगो अलगे सुख–सकून भेंटाइल। बरहज से देवरिया लवटत खा हिन्दी प्रचारिणी सभा देवरिया का गेट पर डा0 विवेकी राय जी भेंटइनी। सलाम–बन्दगी आ कुशल क्षेम का बाद उहाँ का बतवनी कि (स्व0) रामनाथ पाण्डेय जी आपन नवका भोजपुरी उपन्यास "महेन्द्र मि. सिर" हमके देबे खातिर हमरा के खोज रहल बानी। बाद में उनसे हमार भेंट एगो इन्टर कॉलेज का परिसर में भइल। हमार भागि अच्छा रहे कि ओइजे भितरी हाल में हमार देखादेखी आदरनीय चन्द्रशेखर मिश्र, श्रीकृष्ण तिवारी, माहेश्वर तिवारी, हरिराम जी आदि चर्चित कवि लोगन से भइल। ओह लोगन के नेह आ आत्मीय बतकही से जीउ जुड़ा गइल। बाकी हम ओही दिने साँझि खा बलिया लवटि गइनी, एसे कि रात का कवि सम्मेलन में हमार कवनो नाँव भा प्रतिभागिता ना रहे। आ छुट्‌टियो के संकट रहे। 1995 में देवरिया के भोजपुरी सम्मेलन का आयोजन के लेके बिहार के कुछ भोजुपरी–साहित्यकारन के आलोचना एह सम्मेलन के अउरी व्यापक बनवलस। लाखन रुपया खरच कइ के होखे वाला जलसा से आखिर का भेंटाइल भोजपुरिया जगत के? जबाब मिलल कि करोड़न लोगन का मातृभाषा के गौरव बढ़ल उछाह बढ़ल। भोजपुरी साहित्यकारन खातिर भोजपुरी के सर्वोच्च सम्मान "सेतु–सम्मान" आ लोक गायकन कलाकारन खातिर "भिखारी ठाकुर सम्मान" के घोषणा भइल जवना में क्रमशः 21 हजार आ 11 हजार के पुरस्कार राशि देबे के प्रावधान रहे। भोजपुरी साहित्य आ क्षेत्रीय समस्यन के लेके आपुसी विमर्श खातिर सेमिनार आ संवाद–गोष्ठी के दू–दिवसीय आयोजन का साथ, दूनो दिन क्रमशः साँझ खा लोकगायन, नाटक आ कवि सम्मेलन होखे क योजना रहे।

विभिन्न प्रदेश आ स्थलन पर विश्व भोजपुरी सम्मेलन के अइसनका आयोजन के एगो अउर खास प्रयोजन रहे, ऊ ई कि भोजपुरिया लोगन का भीतर अपना मातृभाषा लेके प्रेम–सम्मान आ स्वाभिमान जागे आ हीन भाव खतम होखे।

देवरिया अधिवेशन का कुछ समय बाद श्रीमती राजेश्वरी शाण्डिल्य के एगो साहित्यिक आयोजन में डा0 अरुणेश नीरन से लखनऊ में हमार फेरु भेंट भइल। दिन में एगो मीटिंग रहे– कहे खातिर विश्व भोजपुरी सम्मेलन के कार्यकारिणी के बइठक। उहाँ, देवरिया सम्मेलन का बाद भोजपुरी जगत में भइल टीका–टिप्पनी आ प्रतिक्रिया का विषय में जवन तनी तिक्खर रहे।

नीरन जी के बुझला हमार विचार उपयोगी बुझाइल। ऊ देर रात खा होटल का हमरा कमरा में अइले आ आसन लगा के बइठ गइले। हमार कहनाम रहे कि आयोजन में होखे वाला खर्चा में भलहीं कटौती करे के परे, बाकि सम्मेलन के मुखपत्र का रूप में एगो बढ़िया पत्रिका निकले, भोजपुरी साहित्य के हर विधा में एगो प्रतिनिधि संकलन निकले, भोजपुरी शब्दकोष आ व्याकरण पर काम होखे, भोजपुरी अध्ययन–अध्यापन के लेके विश्वविद्यालय आ अकादमिक स्तर पर प्रयास कइल जाव। नीरन जी देर रात ले हमसे विचार–विमर्श कइले आ हमके आश्वस्त कइले कि जल्दिए एह सब पर काम सुरु होई, बनारस में मीटिंग होई।

कुछ महीना बाद "काशी ग्राफिक्स" बनारस में फेरु हमनी क जुटान भइल। "समकालीन भोजपुरी साहित्य" पत्रिका के अप्रैल 1996 वाला भव्य अंक प्रेस जाए के काम संपन्न भइला का बाद साँझ खा जब हम जाए लगनी त 'नीरन' जी हमार बाँहि धइले हमरा सँगहीं निकललन। बाकि दोसरे मूड में, 'अशोक, चलऽ तनी बाबा क दर्शन कइल जाव!' हम कहनी, 'अरे साँझ हो गइल, छव बजे जाता।' कहले– 'ओसे का असली आनन्द त एही बेरा आई, तूँ चुपचाप चलऽ।' साँचो बड़ा बाबा विश्वनाथ जी के दिव्य दर्शन भइल। आरती भइल, बाद ओकरा बाबा के परसाद आ भर लिलास सुगन्धित चन्न लागल त मन्दिर से बहरियात, विसनाथ गली के झुरझुर चलत हवा लगते मिजाज तर। बुझइबे ना कइल कि गरमी कहाँ गइल? पान खियवले ओकरा बाद हम नमस्ते करत चले के भइनी त टोकले– 'रुकऽ हमहूँ ओहरे चलब।' हम कहनी– 'अरे हमके मडुवाडीह जाए के बा।" त मुस्कियात कहले– 'चलऽ रेक्सवा पर, हमहूँ रथयात्रा तक चलब।'

रेक्सा ऊहे रोकले। रथयात्रा पर हम उतरि गइलीं आ ऊ ओही रेक्सवे से अपना गन्तव्य तक चल गइले। डेढ़–दू घण्टा में अपना प्रति उनकर नेह–छोह हमके अइसन बन्हलस कि हम तमाम तरह के आपुसी कहासुनी आ अन्तर्विरोध के भुला गइनी। अरुणेश नीरन का व्यक्तित्व के ई अइसन नायाब पहलू रहे जवना के अनुभव हमरा के आगा भी विश्व भोजपुरी सम्मेलन के होखे वाला राष्ट्रीय आयोजनन में अनेक बार देखे के मिलल। ऊ तमाम भीड़–भाड़ आ बाझ का बावजूद, हमके अचके बोलाइ के अकेला में बइठ के बतियावसु उघटा पुरान सुनस आ अपना आत्मीयता से बान्हि के जिमवारी सउँपि देसु। "समकालीन भोजपुरी साहित्य" के स्तरीय आ सुन्दर बनावे खातिर 'रचना सामग्री' के अभाव ना होखे, एकरा खातिर हम कई बेर "पाती" खातिर आइल रचना–सामग्री सम्मेलन का एह पत्रिका में भेज दिहल करीं। ई बात दोसर रहे कि फेरु "समकालीन भोजपुरी साहित्य" के प्रिन्टेड प्रति ओमे छपल रचनाकारन के भेजे आ पहुँचावे के मानसिक दबाव हमरे पर आ जाय। हम चौबीस–पचीस अंक तकले एह पत्रिका के सम्पादक मण्डल में आपन भूमिका निभवनी।

वर्ष 1996 में विश्व भोजपुरी सम्मेलन के पटना अधिवेशन तक हमनी के बीच संवाद–सहयोग आ तदनुरुप क्रियाशीलता के सुखद परिणाम मिले शुरू हो गइल रहे। पत्रिका अपना आकर्षक एकेडमिक गेट–अप आ चयनित सामग्री का कारन साहित्यिक जगत में आपन विशेष स्थान बनावे शुरू कर चुकल रहे। एकरा में, अनूदित होके छपे वाली सामग्री हिन्दी के चर्चित यशस्वी कवि–लेखकन के आकर्षित कइलस। आचार्य विद्यानिवास मिश्र, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, शिवप्रसाद सिंह, केदारनाथ सिंह, रामदेव शुक्ल, शुकदेव सिंह आ ज्ञानेन्द्रपति आदि प्रतिष्ठित लोगन के रचना छपल।

विश्व भोजपुरी सम्मेलन के आयोजन सचिव का रूप में हम कार्यालय सचिव आदरनीय जगदीश नारायण उपाध्याय का सँगे पटना, नई दिल्ली, भोपाल, अँधेरी (मुम्बई), भिलाई, नागपुर, थाणे (महाराष्ट्र), कोलकाता, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय बनारस, ऋषीकेश आदि कई जगह सक्रिय भागीदारी कइली। दस से अधिक राष्ट्रीय अधिवेशन में हम हमेशा अपना राष्ट्रीय महासचिव आ बाद में अन्तर्राष्ट्रीय महासचिव नीरनजी के अपना करीब पवनी। ऊ हमेशा आपुसी बिचार–विमर्श का बाद अपना सुझाव/निर्देश का साथ हमहन के एकजुट आ तत्पर कइले रहसु। उनका नेह, आत्मीयंता आ अनौपचारिक बात–बतकही के एगो अलगे प्रभाव रहे। अधिवेशन से हमरा बड़का फायदा ई भइल कि एमे हमरा केदाननाथ सिंह आदरनीय विश्वनाथ प्रसाद तिवारी जी रामदेव शुक्ल जी, चितरंजन मिश्र जी, विमलेश कुमार मिश्र, डा0 ब्रजेन्द्र त्रिपाठी, सत्यदेव त्रिपाठी, प्रेमशीला शुक्ल आदि का साथ–साथ मारीशस के सुचिता रामदीन, सरिता बुद्धू, सूरीनामी जीतनराइन आदि से संबंध गाढ़ भइल। विश्वनाथ प्रसाद तिवारी जी त हमरा आग्रह पर अपना प्रसिद्ध पत्रिका "दस्तावेज" के दू गो अंक (65 आ 67)

भोजपुरी साहित्य पर (केन्द्रित) निकलले। भोजपुरी सा. हित्य के रचनात्मक उठान वाला आन्दोलन खातिर ई सहयोग आ एकजुटता बहुत काम लाएक रहे।

पछिला बीस–बाइस साल के अपना रचनाशील यात्रा में डा0 अरुणेश नीरन जी के संग–साथ दूर–नगीच रहत हमरा इहे बुझाइल कि उनकर सम्पर्क–संवाद आ प्रभाव राष्ट्रीय स्तर पर बड़हन आ प्रभावी रहे। ऊ कई गो समाजिक साहित्यिक संस्था आ लोगन से जुड़ल रहलन। भोजपुरी खातिर ऊ अपना हर सुपरिचित लोगन के मदद लिहलन। कवनो साहित्यकार अपना रचनात्मक लेखन का जोरिये नाम–जस कमा लेव ई बड़ बात नइखे बड़ काम तब होला जब ऊ अपना साथ के लोगन के कवनो बड़ उद्देश्य खातिर जोरि के सामूहिक शक्ति का साथ कवनो रचनात्मक आ संगठनात्मक काम करेला त ओकर सुफल नतीजा निकलबे करेला। डा0 अरुणेश नीरन अइसने साहित्यकार रहलन। पहिल राष्ट्रीय अध्यक्ष परमहंस त्रिपाठी आ अरुणेश नीरन जी का सुझाव पर हम विश्व भोजपुरी सम्मेलन का जनपदीय संगठन खातिर जवन प्रयास कइलीं– ओमे बलिया, गाजीपुर आ मऊ में सम्मेलन का इकाई के गठन कइनी। स्व0 परमहंस त्रिपाठी जी त एह इकाइयन के गठन समारोह में आइ के इकाइयन के मान बढ़वले रहले। ई कहल सही बा कि पछिला तीन दशकन में साहित्य, समाज आ संस्कृति से जुड़ल लोगन में हम विशेष तौर पर– अगर कवनो खास रचनात्मक व्यक्तित्व के सबसे नगीची के संग–साथ पवनी त औह चुम्बकी व्यक्तित्व क नाँव रहे अरुणेश नीरन। एह अदिमी में न जाने कवन जादू रहे कि, उनका जवना बात पर हमार विरोध आ आपत्ति रहे, ओहू के माने खातिर हम अक्सरहा बेबस महसूस करीं। 'नीरन' जी साँचो के चतुर सुजान आ प्रभावपूर्ण बात–ब्योहार वाला जीव रहलन। गुनी आ धुनी। बहुमुखी प्रतिभा के धनी एह अदिमी में सिरजन, संगठन आ सन्तुलन बइठावे के अद्भुत शक्ति रहे। साहित्यिक जगत में, गहिर पइठ वाला नीरन जी देखे में कठिन लागे वाला सब इन्तजामी–समारोह अइसे निपटा देस, जइसे ऊ उनका खातिर छोटहन काम होखे। एह तरह से ऊ अइसन हरफन मौला रहले कि 'नाचीजो' के चीज बना देस, 'मनेजमेन्ट' के 'टेक्टिस' त उनका में रहले कइल, तबे नू ऊ हर तरह के लोगन में आपुसी ताल–मतरा बइठा के कवनो आयोजन सफलता से संपन्न कऽ लेसु।

विगत पनरह–बीस बरिस में, नीरन जी का साथ संगत में हमरा इहे बुझाइल कि उनकर सम्पर्क आ प्रभाव क्षेत्र राष्ट्रीय स्तर पर बहुत बड़ आ विस्तार वाला रहे। ऊ कई गो समाजिक, साहित्यिक संस्था आ ओमे काम करे वाला लोगन से जुड़ल रहलन, तब्बो भोजपुरी खातिर "विश्व भोजपुरी सम्मेलन" का जरिए बहुत कुछ अच्छा आ नया कइला के कोशिश कइलन। कवनो रचनाकार भा लेखक अपना रचना. कर्म से भलहीं बड़ हो जाय, पुरस्कार आ सम्माने पा जाय, बाकिर ओसे बड़हन बात एम्में बा कि ऊ अपना साथ लोगन के जोरि के, प्रेरित क के, रचनात्मक रूप में सामूहिकता का साथ आगे बढ़े खातिर उर्जावान उछाह भरे वाला काम करे। हमके ईहो कहे में कवनो हिचकिचाहट नइखे कि नीरन जी ना खाली हमरा से कई गो रचनात्मक काम करवलन। जब कबो कवनो साहित्यिक भा संगठन कार्य खातिर हम उनसे आग्रह कइलीं, ऊ समय निकाल के सदल–बल हाजिर भइलन। दू–चार बेर उनका सँगे हमके यात्रा के अवसर मिलल, ओम्मे उनकर अनौपचारिक आ सहज–सुभाव के व्यावहारिक रूप लउकल। उनका घरे हम दू–तीन बेर गइलीं, उहवाँ रहलीं आ अपना प्रति उनकर नेह आ अपनाइत से परिचित भइनी। साहित्य अकादमी, नई दिल्ली से प्रकाशित हमरा दू गो मोनोग्राफ (मोती बी0ए0 आ रामजियावन दास बावला) के लेखन खातिर ऊ परोक्षतः प्रेरित कइलन। ऊ जानत रहले कि ई काम हम कर सकेनी। ऊ हमरे से ना, कई एक लोगन का रचनात्मक क्षमता आ जिम्मेदारी उठावे का सामरथ से परिचित रहलन आ सबसे जथाजोग भोजपुरी–साहित्य के संपन्न करावे के कोसिस कइलन। संकलन–सम्पादन, शब्दकोष आदि महत्वपूर्ण काम एकर उदाहरन बा। ●●

भोजपुरी समाज में देवाधिदेव महादेव

प्रेमशीला शुक्ल

देवाधिदेव महादेव शिव अनोखा देवता हवें, तैंतीस कोटि देवता में सबसे अनोखा शिव की लिलार पर दुइज के चान सोऽता, जटा में गंगा बाड़ी, गला में साँप बा। देव पर चिता भस्म,लगवले, मृगछाला लपेटले शिव आँख मूंद के योग की मुद्रा में बइठल रहेलें। शिव महान योगी हवें। एकरा साथे शिव परम परिवारी हवें। पत्नी गवरा, पुत्र गणेश–कार्तिकेय, वाहन नन्दी का साथे अनेक गण शिवजी के परिवार के सदस्य हवें। सब देवी–देवता अकेल चाहे अपना जोड़ा का साथे पुजालें, शिवजी परिवार समेत पुजालें। एतने नाहीं शिवपरिवार के सदस्य एतना विशिष्ट हवें कि उनुकर पूजा अलगो–अलगो होला। गउरा, गणेश आ कार्तिकेय के महिमा जगविदित बा। इ सब अपने आप में पूजनीय ह। शिव जी के खान–पान, पहिरन–ओढ़न, रहन–सुभाव सब बाकी देवता लोगन से अलग ह। सब देवता के बढ़िया भोग लागेला शिव जी के भांग–धतूत चाहीं। सब देवता सुन्दर वस्त्र धारण करिहें शिवजी दिगंबर हईं। क्रोध में शिवजी के जब तीसर आँख खुली त कामदेव जरि जइहें, रति के विलाप से शिव में अस करूणा जागी कि अनंग रूप में कामदेव का जीवन मिलि जाई। शिवजी के जब डमरू बाजी तब नाद के रचना हो जाई, जब ताण्डव होई तब प्रलय आ जाई। ऊपर–ऊपर से देखि के अइसन लागेला कि शिव जी अनेक विरोधन के देवता हवें, जब भीतर तनिका झांकि के देखल जाला तब बुझाला कि विरोध के निरा आभास बा, इहाँ त हर तरह के विरोध के शमन बा, शमन का अबाद आनन्द बा–लहरत, अगाध।

वास्तव में शिव अनोखा देवता हवें। इहे शिव भोजपुरी क्षेत्र के प्रिय देवता हवें जवन महातम अवध क्षेत्र में राम के आ ब्रज क्षेत्र में कृष्ण के बा, उहे महातम भोजपुरी क्षेत्र में महादेव शिव के बा। भोजपुरी क्षेत्र में सबसे ज्यादा मंदिर शिव जी के बा। इहो अनोखापन देखल जाए कि मंदिर में शिव अरधा (पीठम) सहित लिंग रूप में विराजमान रहेलें। शिव परिवार के लोग अलगे–अलगे मूर्त्ति रूप में रहेलें। नन्दी अलगे निवास का ओर विराजमान रहेलें। एह क्षेत्र में शिव आ शिव परिवार के चित्र घर–घर मिलेला। लोक विश्वास का अनुसार शिवलिंग घर में ना राखल जाला, एसे घर में शिवलिंग ना रहेला। अँगना चाहे दुआरे महावीरी धाजा का पास शिव रूप में गोल आ तनी लमाहूत, चिक्कन, विशेष आकार के पुजालें। ई शिव जी नर्मदा से आइल होखें, कवनो जरूरी नइखे। इहाँ बस भक्ति भावना काम करेले। महावीरो जी शिव जी के अंश हवें। हर अँगना में धाजा पर महावीर हनुमानजी विराजमान रहेलें। देखल जाय त शिवजी भोजपुरी समाज आ जीवन में अनेक रूप में विराजमान बाड़े। गौर करेके बात इहो बा कि 'पाथर पूजे हरि मिले तो मैं पूजूँ पहार' कहि के मूर्त्ति पूजा के खुलहा विरोध करेवाला कबीर भोजपुरी समाज के पथ प्रदर्शक हवें बाकी

आजो भोजपुरी लोक जीवन में शिव के महातम आ महत्ता में कवनो कमी नइखे आइल बल्कि आज–कल त 'शिव चर्चा' नाम से एगो नया सामाजिक अनुष्ठान शुरू भइल बा, जवना के फैलाव बहुत शीघ्रता से हो रहल बा। जइसे टोला–मोहल्ला में कबो केहू के घरे, कबो केहू के घरे कीर्त्तन भइल करेला, ओइसे 'शिव चर्चा' होता, जवना में शिव से जुड़ल नया–पुरान गीत–कथा कहल–सुनल जाता। तारीफ ई कि ई गीत–कथा आजकल के समाज के भी अपना दायरा में समेटताड़े सन। एसे भोजपुरी संस्कृति के जीवन्तता के परिचय मिलऽता।

भोजपुरी में लोक साहित्य के अकूत भंडार बा। एहू में गीत आ कथा सबसे ऊपर बा। लोक साहित्य के प्रकृति अइसन ह कि एकरे लेखक के बारे में कुछ ना कहल जा सकेला, इ त पीढ़ी–दर–पीढ़ी चलत आवेला। एकरे प्रचार–प्रसार के बारे में जरूर कहल जा सकेला कि अधिकांश गीत आ कथा स्त्री समाज में गावल आ कहल जाले। लोकगीत में संस्कार संबंधी गीत, पर्व आ व्रत संबंधी गीत अउर श्रम संबंधी गीत त पूरा–के–पूरा स्त्री समाज में गावल जाला। ऋतु संबंधी गीत, भक्ति संबंधी गीत, नाच पर के गीत स्त्री–पुरूष दूनूं समाज में गावल जाला। एहू गीतन में स्त्री समाज में गावे जाए वाला गीतन के संख्या ज्यादा होई। इ बहुत ध्यान देबे वाली बात बा कि स्त्री समाज में जाति संबंधी गीत ना गावल जाला जइसे बिरहा, धोबिअउवा, कहरवा जइसन कवनो गीत माई–बहिन ना गावेली। लोकगीतन में समाज के यथार्थ चित्रण मिलेला। वर्णनात्मकता आ लयात्मकता ए गीतन के मुख्य गुण ह। अनेक लोकगीतन में शास्त्रीय राग उतारले जोग बाड़े। अइसन गीतन के शास्त्रीय संगीत के पंडित लोग गइबो करेलें। कथा–कहानी के बात कइल जाए त दादी–नानी के कथा जग प्रसिद्ध ह। तरह–तरह के केतना कथा दादी–नानी के दिमाग का पेटारी में होला, गिनती नइखे कइल जा सकत। कथा के विविधता सरसता उत्सुकता जगवले के गुण ए कथा–कहानियन में गजब के होला। पेड़–पालो, जीव–जन्तु, राजा–रंग, भूत–परी, देवता–निसाचर का ना होला ए कहानियन में। सबका ऊपर नैतिकता के पाठ–बाल–बच्चन के बहुत कुछ मिलेला इहाँ। पर्व आ व्रत से जुड़ल सब कथा–कहानी के अंत नैतिकता के आदर्श से होला। एगो उदाहरण लिहल जाए भादो की अन्हारी चउथ के बहुरा व्रत कइल जाला, जवना के कथा ह कि बिहुला नाम के एगो गाइ रहे। ऊ रोज अपना बाछा के दूध पिआ के वन का ओर चरे चल जाए। ऊ सांझ के लवटे। एक दिन चरत शिव के निर्गुण रूप सगुण रूप के समझे में मदद करेला आ सगुण रूप निर्गुण रूप को भोजपुरिया समाज में दूनू रूप से जुड़ल कथा–कहानी मिलेला। शिवलिंग निर्गुण ब्रह्म के प्रतीक मानल जाला। अइसन कथा–कहानी में आवेला कि एक बेर ब्रह्म–विष्णु में 'हम बड़–हम बड़' के बहस छिड़ गइल। ए बहस के सझुरावे खातिर भगवान शिव एगो 'अग्निस्तंभ' के रूप में प्रगट भइनी। ए अग्निस्तंभ के कवनो आदि–अंत ना रहे। स्तंभ से ओंकार के ध्वनि निकलत रहे। एही स्तंभ के रूप में मानल गइल।

शिव सगुण रूप में भी अजन्मा, अनादि, अनन्त मानल गइल बा। शिवलिंग के अंडाकार पत्थर आकाश सहित ब्रह्मांड के प्रतीक ह आ पीठम् (अरघा) ब्रह्मांड के आधार देबे वाली, पुष्ट करे वाली शक्ति के प्रतीक ह। स्कंद पुराण का अनुसार अनंत आकाश (ऊ महाशून्य, जेमे सगरो ब्रह्मांड बसल बा शिवलिंग ह आ पृथ्वी ओकर आधार ह। शिवलिंग में शिव आ शक्ति दूनू समाहित बा। शिव चेतना के खाली आकाश हवें, समाधि के अवस्था हवें– गतिहीन, आवेशहीन। शक्ति ऊर्जा हई, क्रिया हई, गति हई। शिव आ शक्ति के सम्मिलित से सृष्टि होले। हर महायुग के बाद प्रलयकाल में सगरो संसार शिवलिंग में समाजाला। फेर एही शिवलिंग से संसार के सृजन होला। वेद में लिंग शब्द सूक्ष्म शरीर खातिर आइल बा। सूक्ष्म शरीर सत्रह तत्व से बनल बा। स्थूल शरीर पाँच तत्व से बनल बा। इहो सब शिवलिंग से जुड़ल बा। दक्षिण भारत में क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर– ये सब पंचतत्व से जुड़ल शिवलिंग के पूजा होला आ अलग–अलग स्थान पर मंदिर बा। तमिलनाड के कांचीपुरम में एकाम्बरेश्वर मंदिर क्षिति तत्व, श्री रंगम में जम्बुकेश्वर मंदिर जल तत्व, थिरूवन्नमलाई में झन्नामलाइथर मंदिर अग्नि तत्व, चिदम्वरम में नटराज मंदिर अकाश तत्व आ आंध्रप्रदेश में चित्तूर जिला के कालहस्ती मंदिर समीर तत्व से संबंधित हवें। मारीशस, फिजी, गुयाना आदि भोजपुरीभाषी देशन में भोजपुरी लोकगीत बहुत प्रेम आ आदर से गावल जाला। मारीशस का पहल पर भोजपुरी लोकगीत गायन के यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज में शामिल कइले बा। भोजपुरी लोकगीत के एतना मान–सम्मान मिलला में गीत गावे वाली सब महिला लोग के योगदान बा। ऊ चाहे ख्यातिलब्ध नामी महिला होखें चाहे गाँव–गिराँव

में बसल पीढ़ी–दर–पीढ़ी गावे वाली साधारण महिला। लिखित साहित्य का क्षेत्र में भी महिला लोग प्रशंसाजोग काम कइले बा। एकर शुरूआत सन् 1325 के आसपास संत कवयित्री सुवचन दासी से मानल जाला। ए समय के दूसर कवयित्री सुंदर वेश्या हई। उन्नीसवीं शताब्दी में राजकुमारी सखी के नाम लेखिका के रूप में लिहल जाला। बीसवीं शताब्दी में जब देश में राष्ट्रीयता के लहर आइल महिला लेखन में बढ़ोत्तरी होखे लागल। विमला देवी आ विन्ध्यवासिनी देवी ए समय महिला लेखन के अगुवा रहल लोग। स्वतंत्रता का बाद महिला लेखन तेज गति से आगे बढ़ल। इक्कीसवीं सदी में एकर रूप निखर के सामने आ गइल। आज देश–विदेश में गद्य–पद्य दूनू में स्तरीय रचना हो रहल बा। कुछ महत्वपूर्ण लेखिका लोगन के नाम बा– **सुधा वर्मा, राधिका देवी, शैलजा श्रीवास्तव, उषा वर्मा, सुभद्रा वीरेन्द्र, आशारानी लाल, चन्द्रकला त्रिपाठी, सरिता बुधु (मारीशस), शारदा पांडेय, सुभद्रा पांडेय, मुधुवाला सिन्हा, सुमन सिंह, संध्या सिन्हा, दिवा, सीमा स्वधा, मीनाधर पाठक, विम्मी कुंवर, ज्योत्सना प्रसाद, लक्ष्मी जयपोल (मारीशस), वीमा सिन्हा (नेपाल), सुभाविनी लता कुमार (फिजी), लीलावती लालाराम हरद्वार सिंह (सूरिनाम) आदि।** बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध तक अभिनय का क्षेत्र में भोजपुरी क्षेत्र के लइकी के, कहल जा सकेला कि प्रवेश तक ना रहे। एक–आध कवनो उदाहरण मिल जाए त मिल जाए।

देश क आजादी के बाद से धीरे–धीरे शुरू होके 21वीं सदी में लइकी अभिनय में भी आपन हुरन देखा रहल बाड़ी। पहिले लइकी लोगन के अभिनय 'जलुवा' बनल रातभर घर के महिला लोग नाचें, गावें, स्वांग करें, तरह–तरह के रूप धरें। इ सब तमाशा भिन्सार होत–होत खतम हो जाए। गोधना पर्व का बाद 'पीडिया' लगे जवन एक महीना में पूरा होखे। रोज रात में नाच–गीत आ नाटक–स्वांग होखे। एकर नाच–गीत आ नाटक–स्वांग 'जलुवा' से अलगे रहे। शहरीकरण का असर से अब धीरे–धीरे जलुवा–पीड़िया भोजपुरी समाज शिव के सनेस के जीवन में उतारे के कोशिश करेला। इ समाज परिग्रही आ वैभव का पीछे भागे वाला ना ह, सहजता से अपना मौज में रहे वाला ह। शिव भोजपुरी समाज की जिनिगी के राहि हवें, ओकरी संस्कृति के हिस्सा हवें। समाज के रीति–रियाज, विश्वास, भाषा, साहित्य सब में शिव बाड़ेः इनकर बात बा, चर्चा बा। इहाँ लइका के तिलक चढ़े के बेरा सबसे पहिले शिव जी के गीत होला, लइकी के मनजोग बर मिलला पर ओकर शिव पुजला के फल मानल जाला 'माटी के महादेव', 'शिव जी कोहबरे ना जात रहेलें आ गइलें त छः महीना कोहबर से निकलबे ना कइलें'– ए तरह के अनिबन मुहाबरा आ लोकोक्ति बा जवन भोजपुरी भाषा के सिंगार हवे।

साहित्य के बात कइल जाए त शिष्ट आ लोक साहित्य–दूनू में शिव के महत्वपूर्ण स्थान बा। विशेष रूप से लोक गीत में शिव बेर–बेर आवेले। शिव से जुड़ल भजन, कजरी, फगुवा, विवाह गीत भोजपुरी क्षेत्र में बहुत लोकप्रिय ह। ये गीतन में कुछ अनेक गीत साहित्य आ संगीत के मानदंड पर एतना खरा उतरेलें कि नामी–गिरामी गायक लोग आपन हिसाब से राग में उतार के गावेलें। शिव से भोजपुरिया आदमी के रिश्ता एतना गाढ़ अपनापा के ह कि जब शिव के उपासना से उठा के भोजपुरिया आदमी अपना जीवन आ संस्कृति में स्थान देला त शिव में अपने जीवन आ समाज के कई रूप डाल देला। शिव गृहस्थ देवता हवें, परिवारी देवता हवें एहसे आदमी का कई स्तर पर ऊ अपने अइसन लागेलें, शिव के चरित्र में अपना समाज के गुण–दोष डाल दिहले में अपने अइसन मान लिहले में आदमी का कवनो ऊँच–नीच सोचे के ना पड़ेला। संस्कृति के विभिन्न घटक जइसे गीतन–कथा, चित्रांकन, हस्तशिल्प कलारूप एक नइहरे से दूसरे नइहर, एक ससुरे से दूसरे ससुरे प्रचारित–प्रसारित होत रहेलें।

अशिक्षा आ अनेक सामाजिक कुरीति से घिरल भोजपुरी स्त्री का धर्म–दर्शन के गंभीर चिन्तन–मनन के अवसर नइखे मिलल। संस्कृति के ए क्षेत्र में ओकर योगदान न के बराबर बा। ऊ शास्त्र नइखे लिखले–पढ़ले लेकिन संस्कृति से ओकर एतना गहरा जुड़ाव बा कि ऊ व्यवहार में शास्त्र के लोक में रूपायित क लेबे के ढंग जानेले। ऊ ना जानेले कि समहुत, कुरमूननि के साइत कब बा, बाकी ऊहे इ जानेले कि एकर विधि का ह आ ए मौका पर का रसोई बने के चाहीं। ऊ बिआह के सप्तपदी के श्लोक ना जानेले बाकी इ जानेले कि ओ समय भाई लाबा बहिन का हाथे में धरेला। भोजपुरिया सामाजिक जीवन में अइसन कई उदाहरण मिली, जवना से ई बात समझल जा सकेला। भोजपुरिया समाज की रीति रिवाज, मान्यता, विश्वास के बनला में स्त्री लोगन के बहुत हाथ बा। हर गाँव–मुहल्ला में ए सब के पूरा जानकारी राखेवाली कुछ विशेष माई–बहिनी होली। ए लोगन के विशेष आदर दिहल जाला। ए लोगन का

बात के ओइसे महत्व मिलेला जइसे पंडित की बात के।

आचार–विचार संस्कृति के महत्वपूर्ण घटक ह। एके संस्कृति की श्रेष्ठता के कसौटी कहल जाए त कवनो अतिशयोक्ति ना होई। आचार संस्कृति के वाह्य पक्ष से जुड़ल ह, जबकि विचार आन्तरिक पक्ष से। इ दूनूं मिलि के समाज के सुसंस्कृत बनावेलें। जब तक विचार जीवन में ना उतरे, आचरण में ना आवे तब तक ऊँच–से ऊँच विचार के कवन मोल, कवन अरथ? लेकिन इ आसान काम ना ह। समाज की भावना, कल्पना, विचार, मान्यता आ विश्वास का अनुरूप समाज के रूप दिहल बहुत जिम्मेदारी के काम ह। एकरा खातिर बहुत संयम आ सात्विकता का साथे अपना के साधे के पड़ेला, विधि–निषेध में अपना के बान्हे के पड़ेला, कुछ नेम–धरम, रीति–नीति बनावे के पड़ेला। शुरूआती समय में इ सब के बनावल, के सब व्यवस्था तय कइल–ए पर बहस हो सकेला। लेकिन आज के भोजपुरिया समाज के देख के निश्चित रूप में कहल जा सकेला कि समाज का ए पक्ष के सम्हारे वाली स्त्री हई। आ इहो कि पहिले के महापुरूष लोग जीवन आ जगत चाहे अध्यात्म आ भौतिकता के बारे में अपना चिन्तन–मनन के जवन निष्कर्ष सामान्य जन के बतावल ओके जनला–समझला में स्त्री कबो पीछे ना रहली, जवना राहि से चलि के जीवन के धरम से जोड़ल जाला, ओ राहि पर चलला में कवनो कोर–कसर ना छोड़ली। परिणाम भइल कि सत्य, अहिंसा, परोपकार, लोकमंगल जइसन श्रेष्ठ मूल्यन के अपने जीवन पद्धति के हिस्सा बनवले में इ लोग सफल भइला बहुत जतन आ सहूर से व्रत, पर्व, रीति–रिवाज का माध्यम से स्त्री अपने आ परिवार के जीवनचर्चा में आपन आदर्श घुला–मिला दिहलस जेके अब ऊ रहेवाली बात ना रहि गइल, बोले–बतिआवे वाली, गावे–बजावे वाली, उत्सव वाली बात हो गइल, ओकरे बिना जीवन के बात कइल ना जा सकत रहे। कवनो आन्ही पानी आइत अपना से अलगा इ होइत कइसे? ई सब बाप–माई से मिलल रहे, बेटा–बेटी के देबे के रहे, पुरूखन के थाती आदि– औलाद के संउँपे के रहे। भोजपुरी संस्कृति के सइहारे–सँवारे में स्त्री के ई बहुत बड़हन योगदान बा। एही बले भारत में भोजपुरी संस्कृति लोक संस्कृति ह। लोक संस्कृति के सुभाव का अनुरूपे इहाँ के जीवन शैली आ रीति–रिबाज बनल। समय का साथ धीरे–धीरे इहाँ लोक परंपरा बनल, जवन शास्त्र के पूरक रहे। लोक परंपरा बनले में समाज के हर आदमी के हाथ रहल होई, चाहे ऊ पुरूष रहल होखे चाहे स्त्री। भोजपुरी क्षेत्र की लोक परंपरा के अध्ययन से समझल जा सकेला कि परंपरा के कुछ अंश अइसन बा, जवना के सूत्रधार स्त्री समाज ही रहल हई। आजुवो एकरी संपादन में स्त्री समाज ही सक्रिय रहेला। जइसे 'बिआह' संस्कार के लिहल जाए।

बिआह का पहिले पंडित का बतावल साइत का दिने सगुन उढेला। इ बिआह के पहिली बिधि (कार्यक्रम) ह। पूरा बिधि मेहरारू लोग करेला एकर गीत ह– "आरे–आरे सगुनी आरे" आरे सगुनी, तू सगुनी, तू सगुन से आब, तोहरे सगुनवें ए सगुनी होइहें बिआह। आरे–आरे कोइरी, आरे–आरे कोइरी तू हरदी ले आव, तोहरे हरदिए ए कोइरी होइहें बिआह।" ए कम में तेली, धोबी, बढ़ई, कुनेली, मांझी, ब्राह्मण सबके निहोरा कइल जाला, सबके सम्मान दिहल जाला, सबके दिहल सामान के उपयोग कइल जाला, सबके सहयोग लिहल जाला, तब बिआह सम्पन्न होला। दूसर बिधि ह 'मानर पुजाई'। ए विधि में दलित वर्ग के आदमी 'मानर' बाद्य बजावेला। विधि करे वाली मेहरारू अपने अँचरा में से एक मुट्ठी अच्छत मानर पर राखेली। मानर बजावे वाला ऊ अच्छत वापस अंचरा में डाल देला। ए समय जवन गीत गावल जाला ओमें पहिले स्वर्गवासी पुरूष के नाम धरला तब जीवित पुरूष के। एकरा बाद माटी कोड़ाला। शिव के त्रिशूल पर बसल, तीनों लोक में नारी काशी भोजपुरी क्षेत्र के गौरव ह। काशी के पांडित्य परंपरा के स्थान भोजपुरी समाज समेत समूचा भारतीय समाज में बहुत ऊँच बा पर जहाँ तक शिव की छवि के बात बा, ई भोजपुरी समाज में पांडित्य परंपरा से अधिका लोक परंपरा से जुड़ल बा। ••

''पाती-अक्षर-सम्मान'' से सम्मानित कवि

आनन्द सन्धिदूत

(एक)

करिया सरीरिया सुखाइ भइली पोखरी
फाटि गइली कनई ओराइ गइली मछरी!

जिउ भइले अल्हरू सिंघड़वा के बीया
जेठवा में बिरथ भइल कुल कीया
लोग फेंको कतनो पिरीत भर दउरी !

लागेला सुखात नयन पउदरिया
बड़ी बउराह बा पिरितिया के पिरिया
तबो गावे अदरा प्रथम दिन कजरी !

जलवे विरह मोर जलवे के किरिया
जिहीं हम जल देव तोहरे फिकिरिया
कवना देसे कउँधे करेजवा में बिजुरी !

शब्द -अरथ = पोखरी छोट तालाब। कनई→कीचड़ । ओराइ→समाप्त/खतम। बिरथ→व्यर्थ । कीया→किया हुआ/ कइल-धइल । भरि दउरी→उरी भर पिरीत/ खूब ढेर प्रेम। पउदरिया→जल भरल गहिर आ चौड़ी नाली/जहाँ देर ले जल बटुराइल रहे। पिरिया→पीर, पीड़ा। अदराझ→आर्द्रा (अषाढ़ वाली)

(दू)

गाँव रहे अपने
भुलाय गइल डहरी

डूबलो सवाद के इयाद परे तितिया
सूखि भइल कँटवा सरीर के पिरितिया
दीया अस जरेली
जरेले जइसे लकड़ी।

छोड़ि-छोड़ि खोजलीं पिंजरवा के नगरी
सोा के कटोरिया इजतिया के टिकरी
नाहीं मिले लोर से
लसोर मोर बखरी।

मटिया के किंलवा खपड़वा के नगरी
चउरी-पिसनवों टपकि परे बदरी
कच्चा-पक्का मेरवा
मकान टोला उत्तरी।

तीर-मीर घाट के विचार भइले सफरी
दूइ गो चुहनिया रहल एक बखरी
बाप कीने साग-सातू
पूत कीने मछरी।

घर में केहू खाली घरवे पड़ल बा
फटली नऽ धरती तबहियों गड़ल बा
ऊँच-ऊँच खोर भइली
नीच भइली बखरी।

अँगुठे बहुत रहे सीता जी का पाँव के
बूआ-फूआ-दिदिया रहल बेटी गाँव के
बीर बने बुझना
बहीन-बेटी मेहरी।

(तीन)

दुनिया सोचले माथ पिराला/
तोहके सोचले लहर थिराय!

का होई बतिया के एतना/एक इसारा बाटे ढेर
सुननिहार के धड़कन जिउ में/कोसन दूर सुनाला टेर
जन जन कइले हँसी हमारी/
तोहसे कहले कहल कहाय !

मन पापी कहवाँ ना दउरे/अलँगे-अलँग संस टूटे
तवन,अन्त में जवन मिलल ऊ/अन्त समय तक जिन छूटे
अगली बगली जलन समाले
अन्दर देखले आँख जुड़ाय !

हुकुम मिले के मिलब, मगर/मिलला-जुलला से का होई
झक्कड़ में मकरा के पथ/मन्तर सियला से का होई
रउरा आँगन सीत चटाई
मन मिलि गइले पलक ओंहाय!

शब्दार्थ= माथ पिराला→कपार दुखाला/सिरदर्द। थिराय→स्थिर भइल/शान्ति मिलना। अलंगे अलँग/शरीर के हर भाग/पोरे -पोर। अगली बगली→अगल-बगल, आसपास। झक्कड़ में मकरा के पथ/झाड़ झंखाड़ में मकड़ा के जाला वाला रास्ता।

(चार)

हरफे - हरफे काजर - टीका अंग - अंग नोक्ता दीहीं
हमरो एगो शेर समय का पहिया पर लिखवा दीहीं

हम का लिखीं वसीयत हमरा आवक-जावक हइए ना
बा खाली बदनामी ओके गंगा में सेरवा दीहीं

चाहीं इहे पसर भर भोजन सूतत बेर पहरभर ठौर
एतनो नाहीं मिली त आगे चाहे जवन सजा दीहीं

पढ़ला पर सत्ता के कहनी दुनियाँ समझ में आइल ना
ओह कहनी में अपनो कहनी हीरा अस जड़वा दीही

रोवत - हसँत अतीत देखि के चक्कर आइल गिर पड़लीं
हमरो आँखी कोल्हू - पशु के दृष्टि - बन्द चढ़वा दीहीं

घृणारेत पर माथ पटक के लवटे लहर मोहब्बत के
एह पटवन में दुइयो पतई कवनो तरे उगा दीहीं

नजर कबूतर के सन्देशा जिन बइठल दउरावल जाव
एह पुतरी पर धइ तरहत्थी उमगल नदी दबा दीहीं

गम पर डाल हँसी के परदा जी लिहला में इज्जत बा
हमरा बाद उदासे केहू, कइ के जतन हँसा दीहीं

भले टमाटर - बैगन नाहीं हम मकोहि का थान नियर
जामत देखि कबारीं बाकिर पकला पर बिनवा दीहीं

''पाती-अक्षर-सम्मान'' से सम्मानित कवि

दयाशंकर तिवारी

(एक)

भुइयाँ से कइसे बटोरी खजाना
छिटाइ गइल चिरई कुरूई के दाना।

उचरेलू सभही के अँगना दुआरे,
जनलू ना के केतना तुहके दुलारे।
छीपल बा ना तुहसे आपन बेगाना।।१।।

बचवन के खातिर खन भुइयां अकासे
दिनवा भर रहि जालू भूखे पिआसे।
बूझे दरदियो ना जालिम जमाना।।२।।

घेरे बदरिया ना लउके डहरिया
घमवाँ में पँखिया जरावे दुपहरिया।
अइलें ना जिनिगी के मौसम सुहाना।।३।।
चरवा पर बा तुहरे सभकर नजरिया

गरवा परलि बा बिपतिया अनेरिया।
घर में ना बहरे बा कवनों ठेकाना।।४।।

कमवाँ न अइहें कवनों सिकवा खोटा,
जनिहऽ जनि केहू के अपने से छोटा।
जोगवत रहिहऽ आपन रिश्ता पुराना।।५।।

छिटाइ गइल चिरई कुरूई के दाना।

(दू)

घन बँसवरिया में बोले रोज सुगना
नई नई बोलिया सुनावेला हिरमना ।।

बरखा में चुवेले पुरनकी मकनियाँ,
खुल जाले अँखिया जगाइ देले बुनियाँ ।
राति भर जागि के जराई रोज दियना ।।

लगेले डरावनी हो राति भदवरिया,
चारु ओर कीच काँच अँगना दुअरिया ।
कइसे दलनिया में बिछिहें बिछवना ।।

कइसे कऽ जड़वा में परिहें पहलिया,
पुअरो जरावे लोग कहि के परलिया ।
जबर जेठनिया मारेले रोज मेहना ।।

कइसे क जीहे घरे लरिका परनियाँ,
कइसे क रोकि पाईं केहू क जबनियाँ ।
राति दिन सुने के परत बा ओरहना ।।

''पाती-अक्षर-सम्मान'' से सम्मानित कवि

स्व0 शम्भुनाथ उपाध्याय

(एक)

अमवा में लगली मोजरिया हो
गावे गीति कोइलरिया।

चम-चम चमके अकासवा में तरई
लेई-लेइ चलि दिहली डाली अउरी कुरई
गँउवा से भोरहीं गुजरिया हो
दुलुकत महुवा बरिया।

फूल के बिछावल बाटे पियार गलइचा
रसवा घोराइल बाटे सउँसे बगइचा
पिपरा डोलावेला चँवरिया हो
सीटी मारे बँसवरिया।

ठावाँ ठईं लागलि बाटे खेतवा में कटिया
मह-मह महके अनाजवा से मटिया
बहे लागलि मातली बयरिया हो
झूमे मस्त हो रहरिया।

माता दाईं झूमे लगली नीमिया के डाली
पचरा गवाला हार लेके आइल माली
नवमी के चढ़ी खीर पूरिया हो
गाँवे-गाँवे घर दुअरिया।

चाना मटर जव गोहूँ आइल खरिहानावा
चिरई चुरुँगवा बटोरे लागल दानवा
जल्दी से होइते दँवरिया हो
भरित कोठिला बखरिया।

(दू)

होख ताटे बरखा गिर्हथ भइले चरखा
किसनिया में ना जुटि गइले किसानवा।

मकई सोहाले कहीं लेउवा कढ़ाला
सठिया छिंटाले कहीं धानवा रोपाला
अँखिया में नाच ताटे साध के सपनवा।

गाँव सुनसान गुलजार बे सरेहिया
धरती पर बदरा लुटावेला सनेहिया
कनई में लोटि-पोटि किलके ललनवा।

फेड़ रूख झूला खातिर खोजेले कन्हइया
राधिका उदास ढूँढ़े बाँसुरी बजइया
काँहा नाचो मोरवा कटाइ गइल बनवा।

बेंग परधान नाहीं लउके कोइलिया
तनिको ना नीक लागे टर-टर बोलिया
इन्हने के आजु कालहु चलता चलनवा।

बाप जूझे इहवाँ सिवानवा पर बेटवा
खाली बतफरोसिये में चानी काटे नेतवा
बूझेला कि अपने हऽ देस के खजनवा।

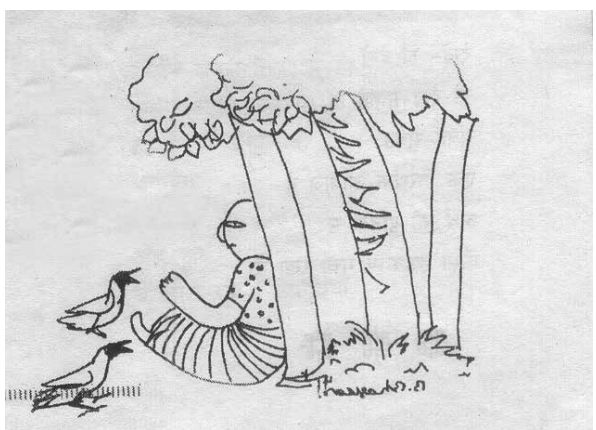

महाकवि 'भास' कृत नाटक
कर्णभार

अनुवादक ✍ डा0 नन्दकिशोर तिवारी

नाटक के पात्र

कर्ण	:	अंगेश्वर, कौरव लोक के सेनापति।
शल्य	:	शल्यराज, कर्ण के सारथी। (रच चलानेवाला)
भट	:	सूचक।
शक	:	ब्रह्मण रूप में इन्द्र
देवदूत	:	इन्द्र के सन्देसवाहक

कथासार

[कर्णभार नाटक में खरा उतरेले कर्ण
बिप्र भेख धइले इन्द्र दान खातिर आवेलन !
अन्तिम ई जुद्ध बाटे, कर्णधार कर्ण बाड़े
कुंडल कवच इन्द्र इन्हिकर उतरवावेलन ।
गुरू के सराप याद कइके अधीर कर्ण
तबो रन हेतु आगा बढ़ते ही जालन ।
कौरवन के हार के समान सभ जूट गइल
जुध के अगिनि में बीर जर-मर खोराएलन ।।

जुद्ध के तइआरी में खूब सरगरमी बा। कर्ण सेनापति बनावल जात बाड़न। लेकिन उनुका जुध स्थल पर पहुँचे के पहिलहीं इन्द्र ब्राह्मन के भेख में आके भिच्छा रूप में कर्ण के जनमे के सा. थे मिलल कवच कुंडल माँग ले जा ताड़न। कर्ण, दान–बीर ठहरलन। एह अमूल्य निधिअन के देके अपने असमर्थ हो जा ताड़न, लेकिन हिम्मत नइखन हारत। एही कथा के भास कवि नाटकीय रूप देले बाड़न। एह में खाली पुरुखे पात्र बाड़न]

(कर्णभार)

¼ukUnh d¢ ckn e¡ l=èkkj d¢ çoš1½

सूत्रधारः श्रीधर हमनी के श्री दीहीं।
दानव कृत बाधा एह जग के कुल्ही जलदी से हर लीहीं।
देव दनुज के द्वन्द्व जगत में होत सदा आइल बा। देवन्ह के पुकार सुनि के कब ना बाहन थाइल बा। हिरण्याच्छ बध कइले पर प्रभुजी नरसिंह कहइलीं।
जइसे हमनीं सुमिरन कइलीं तइसे धउरल अइलीं।

चरन धोइ कइसे ना पीहीं।
श्रीधर हमनी के श्री दीहीं।।

रउआ सभ महानुभाव लोगन के सूचित कइल चाहत बानीं। (घूमिके, कान दीहीं सभे) अरे, कहे के पहिलहीं ई कइसन हल्ला सुनाई पड़ रहल बा। आछा, देखीं तऽ।

(नेपथ्य में)

हे हे! निवेदन कर, निवेदन कर, महाराज अंगराज (कर्ण) से।

सूत्रधारः आछा समुझलीं।

संग्राम-तुमुल छिड़ गइला प
दुर्जोधन जी के आग्याँ से
अँजुरी जोड़ले सुचना देता
जुध के ह सेवक राजा के।

(बाहरी जाता)

प्रस्तावना

(भट प्रवेस करत बा)

भटः हे हे! निवेदन कर महाराज अंगेश्वर से कि जुद्ध के समय हो चलल।

गजरथ, अश्वरथ पर समासी होके
खुशी मन राजा गन सिंहनाद करत।
पार्थ केतु साथे-साथ जुध में उमंग भर
आ रहल बाड़न, जइसे सरप फुफुकारत।
आक्रमन देखि शत्रुनाद ना सहात
नागकेतु दुरजोधन जा ताड़े प्रचारत।
रंग आज जुद्ध के बहुते बदरंग बा
दूनों दल एक दोसरा के नष्ट कइल बा चाहत।।

(घूमिके, देखिके) हे इ अंगराज (कर्ण) जुद्ध भेख के धारन कइले शल्य राज (सारथी) के साथे अपना भवन से निकलिके एनहीं आ रहल बाड़न। अरे! जुद्ध रूपी उत्सव में सभसे प्रमुख सेनापति पराकरमी कर्ण के ई मानसिक परिताप कइसन! ईत –

बहुते बा उग्र दीप्ति भव्य ऊ देखात जे
रहल बराबरे समरन में अग्रगन्य बा।
शौर्य देखलावे जाता रन छेत्र में उहे,
झलकत बा काहें आज शोक भाव नव्य बा।
बदरी में झाँपल निदाघो में सुरूज जइसे
ओइसहीं देखात कर्ण रूचिर अनन्द बा।
तनिको ना छल बड़ुए, सभका से बल बड़ुए,
अचल, अनूप, दान शील इनिकर धन्य बा।

त जाई।

(बहरी जा ताड़न)

(यथानिर्दिष्ट कर्ण आउर शल्य के प्रवेश)

कर्णः बँच ना सकिहें लक्ष्य बन, ऊ हमरा से बीर।
करूअन के हित होइ बस, मिलस धनंजय बीर।।

शल्यराज। जहवाँ भी अर्जुन होखस उहँवे रथ के ले चलऽ।

शल्यः बहुते आछा। (रथ हाँकत बाड़न)

कर्णः अहो– जतना सस्त्र चलावत बानीं
ओतने बाड़न बीर कटात।
अगनित घोड़ा, हाथी, रथ के
रोजे बड़ुए प्रान नसात।
अपना के जमराजे अइसन
समुझत बानीं बीर महान्।
तबहूँ रन में गोड़ पड़त खा
साहस होता अन्तरधान।।

दुख बा–

कुन्ती के पहिला लइका राधेय जनम लेलीं हम।
पांडव कुल्ही छोटका भाई, तबो क्रोध कइलीं हम।।
इहे देखाता अवसर हमरा जे कुछ भी शोभन बा।
इहे देखाता अइसन दिन आइल बा ऊ लोभन बा।।
जबे व्यर्थ अस्त्रन के सिच्छा हमरे होई।
फेनू बात न माताजी के झुठिहा होई।

ऐ शल्यराज! हमरा अस्त्र के कहानी न सुनऽ।

शल्यः एह कहानी के सुने खातिर हमहूँ ललसाइल बानीं।

कर्णः पहिले हम जामदग्न्य (परशुरामजी) के निअरा गइलीं।

शल्यः तब?

कर्णः बिजुरी लता जस तुंग कल्पित जटा कटा रहे
उद्यत प्रभाव लउकत रहे लयकारी सा।
परसु प्रसिद्ध, सिद्ध हाँथ में प्रचंड उहे
छत्र-कुल-नास करे खातिर ब्रतधारी सा।
श्रेष्ठ मुनिअन में लेकिन छात्र धरमधारी उग्र,
भृगबंस केतु, छात्र बंश के महमारी सा,

जाके समीप, अउरीं कइली प्रनाम उनुका,
खड़ा भइलीं शिष्य बने खातिर ब्रतधारी सा।।

शल्यः तब?

कर्णः तब जमदग्नि हमरा के असिरबाद देके पुछलन–तू के हवऽ आउर काहें खातिर आइल बाड़ऽ?

शल्यः तब?

कर्णः तब हम कहलीं कि भगवन्! हम कुल्ही सस्त्र बिद्या सीखल चाहत बानीं।

शल्यः तब?

कर्णः तब भगवान जमदग्नि कहलीं कि हम खाली ब्राह्मनन के उपेदश दीहीला, छत्रियन के नाहीं।

शल्यः भगवान् जम्दग्नि के छत्रियन से पहिले दुसुमनी भी त चल आ रहल बा। तब?

कर्णः तब 'हम छत्रिय ना हईं'? अइसन कहिके अस्त्र विद्या सीखे लगलीं।

शल्यः तब?

कर्णः तब कुछ समया बितला पर एक दिन फल, मूल, जग्य के लकड़ी, कुस, आउर फूल आदि लावे खातिर गुरुजी के संगे हमहूँ हो गइलीं।

शल्यः तब?

कर्णः तब गुरु महाराज बन में घूमत–घामत थाक के हमरा गोदिए में सूत गइलन।

शल्यः तब?

कर्णः तब,

जाँघी में कटलस बजरमुख कीरा जब,
बेगर हम भइलीं हँ बेदना से बेहाल हो।
सानत रहीं सोच के गुरू के नीन टूटे मत
ऊहो हमार भगती के देखिके निहाल हों।
घाव ऊ करत गइल, रकत गरम बहे लागल,
अचके में उठलन गुरू, जाग के बेहाल हो,
कुल्ही अस्त्रशस्त्र तोर समये पर बिफल होई
किरोध में सराप सुनिके भइलीं निढाल हो।।

शल्यः अहो, गुरुजी त ई बड़ा खराब सराप देलन।

कर्णः त हम अस्त्रन के परीच्छा ले लीहीं। (अइसन करऽ) अरे। ई अस्त्र बिना सकती के जइसन देखात बाड़ेसन। आउर भी–

देखऽ न ई घोड़ा रन में मुँह मोड़त बाड़न,
लागत लचार बार-बार गिर जात बा,
सप्तच्छद दान गंधी हथिअन के देखतानी
चलतो त नइखन, बढ़त आगे मचलत बाड़न।
अंकुस लगवला पर दीन स्वर सुनात बा।
सउँसे सरीर जइसे जड़ता जड़ाइल बा।
रन के सभ दृश्य हमरा के काट खात बा।।

संख आ दुँदुंभियन से भी शब्द नइखे निकलत।

शल्यः ई त दुख के बात बा! का हो गइल भला?

कर्णः शल्यराज। अधिका बिषाद मत करऽ?

मू के पावेला सरग, जस पावेला जीत।
रन निस्फल होला कहाँ? बीरन्ह के सुपुनीत।।
ई तुरग कुसल रन में बा, गतिसील सुवर्न सदृश बा।
ई कम्बोजी कहलाला, हय एकरा कवन सरिस बा?
हम रक्षितव्य बानीं लेकिन, अब इनिकर बड़ुए बारी?
दूनो हमनी आपुस में अब सोंची पारा पारी।।

गऊ आउर ब्राह्मनन के कल्यान होखे। परिबरतन के कल्यान होखे। रन से मुँह ना मोड़ेवाला जोधा के कल्यान होखे आउर आजु समय आ गइल प हमार भी नास ना होखे। ल ई हम प्रसन्न बानीं।

करे के प्रवेस पाण्डवन के रनभूमि में बा,
शंका अनेक करत बड़ुए ई छुदुर मन।
जाते बान्ह दीहीं धरमराज महराज के त
काम कौरवन के तुरते में कुल्ही जाई बन।
आउर जे गिराई अरजुन के बान, मारि-मारि
होई प्रवेस रन में सिंह से विहीन बन।
जदिं जगदीस कुल्ही कमना के सिध करस
लूटब बहबाही हमहूँ; कुदिहें जा मित्रगन।।
शल्यराज। त हम अब रथ पर सवार होखीं।

शल्यः बहुत आछा।

(दूनों रथ पर सवार होखे के नाटक करत बाड़न)

कर्णः शल्यराज! जहवाँ ऊ अर्जुन होखस ओहिजे रथ ले चलऽ।

(नेपथ्य में)

ऐ कर्ण! आज एगो बड़ भिच्छा माँग रहल बानीं।

कर्णः (सुनिके) अरे! एह शब्द में त बड़ा बल बा।

दीप्तमान ना कोरा द्विजबर देखात बाड़न
इनिकर प्रभाव कुछ अद्भुते महान् बा।
सुनिके संबोधन के धीर नाद कुन्ही अंग
ठिठकल पिटिकल बा देख जड़ मूर्तिमान बा
घोड़ा कान खड़ा कइले आँख कनखी में गड़ले
मुँह के गरदन ओरे देले बेलकुल बाड़े तान बा।
अचके में रूकल बाड़न, आगे ना डेग पड़े!
अंग बस में नइखे, खाली लउकत परान बा।
बोलावऽ ओह ब्राह्मन के। नाहीं, नाहीं। हम अपने बोलाइब।
भगवन् हेने आई।
(ब्राह्मन रूप में शक्र के प्रवेस)
शक्रः ऐ। सूरूज से निवृत्त होके रउआ सभे जाईं। (कर्ण के निअरा आके) ऐ कर्ण! आजु एगो बड़ भिच्छा माँगत बानीं।
कर्णः भगवन्! एकरा से बहुते प्रसन्न बानीं।

अजुवे जग में भइलीं कृतार्थ
धरते चरनन पर राज माथ
द्विज पद रज सिर पर रख निकाम
अपनो के गनतानीं महान्।
अति हो विनीत उर भगतिधार,
ई कर्ण करत बा नमस्कार।।

शक्रः (मने-मने) का कहब ओकरा से? जदि 'दीर्घायु हो' कहीं त दीर्घायु हो जाई। जदि कुछुओ नइखीं कहत त समुझी कि मुरूख हमरा के ठगे खातिर आइल बा। त ई दूनों छोड़ के औरो का कहीं? आछा, एगो उपाय सूझल। (परगट) ऐ कर्ण सुरूज नीअन, चनरमा नीअन, हिमालय नीअन आउर सागर नीअन तोहार जस अहथिर रहे।
कर्णः भगवन्! का रउआ ई नइखीं कह सकत कि हम दीर्घायु होईं, आछा, ईहो ठीके बा। काहेंकि-

धरम बा सदा जतन से साध्य,
इहे ह मानव के आराध्य,
सरप के जीभ निअन गतिमान
राज श्री के मत अहथिर मान।।
प्रजा पालन कइ देंह तेआग
श्रेय ह, ना इ व्यरथ अनुराग।।
दान आ धरम जोग आ जाप,
रहेला बस एकर भर छाप।।
देंह के होखेला जब नास
किरितिए के होला परकास।।
भगवन्! का चहत बानी रउआ? का दीहीं भला हम?
कर्णः त बड़ भीख हम रउआ के देब। हमरा विभवन के बरनन सुन लीहीं श्रीमान्!
गुनकारी इमरित समान दूध देबेवाली
गइया अनेकन, हे द्विज हमरा पास जी।
ओह लोग के पाछा, बाछा चलत रहेलन आछा
कोई ना रहे कबो तनिको उदास जी।
कुल्हीं उदन्त नाया मन के पसंद सभकर
देवता नीअन सुपवित्र परकास जी।
लीहीं गइआ हजारन, ई आइल अवसर खास जी।
शक्रः का कहत बाड़ऽ हजार गाय? एक मुहूर्त्त दूध पी लीं। नाहीं-नाहीं गाय ना लेब कर्ण।
कर्णः का एकरा के नइखीं चाहत रउआ? त सुनीं।
रवि तुरग निअन गति तीव्र जान।
राजश्री के साधन महान।
सभ छोड़ हवन कम्बोज जात।
सभ नृपति मान्य सब रूचिर गात।
गुन पूर्न अजित गति दृश्यकान।
बा जुद्धवीर बल बेसमान।
दीहब सहस्र हम समुद-बाजि।
होखे ललसा त तुरत आज।।
शक्रः घोड़ा दिहल चाहत बाड़ऽ। कुछ समया तक चढ़ब। नइखीं चाहत घोड़ा, कर्ण। घोड़ा नइखीं चाहत।
कर्णः का रउआ एकरो के नइखीं चाहत? सुनीं।
चूएला कपोलन में हरदम जेकरा से मद
आउर मद लोभी भँवरा नित मँडरालेसन।
गंभीर घोष मेघ नीअन ऊ करेलसन
गिरि के समान तन सुन्दर सुहालसन।
दाँत नख ऊजर मन मुगुध करेलसन बहुत,
रन मघे रिपु वर्ग के जे विनसावेलन।
ओहनी में से चुनके देहिब अनेक अबे,
छोड़ दी सँकोच व्यर्थ मत कदराईसन।।
शक्रः हाथी? थोरिका समय तक एह पर चढ़ लेब। ओह हाथी के ले का करब कर्ण? नइखीं चाहत ई सभ।

कर्णः का इहो नइखीं चाहत रउआ। त आउर भी सुनीं। अनुल सोना दे रहल बानीं।

शक्रः दीहीं लेके जाई (कुछ दूर जाके) सोना हम नइखीं चाहत कर्ण! सोना नइखीं चाहत।

कर्णः त पृथ्वी जीत के देब।

शक्रः पृथिबी लेके का करब?

कर्णः तब (जग्य) अग्निष्टोम के फले दे देत बानीं रउआ के।

शक्रः ओ ! अग्निष्टोम के फल लेके का करब?

कर्णः त आपन ई सिरे (माथ)तोहरा के दे रहल बानीं।

शक्रः राम! राम! ई का करत बाड़ऽ तूँ?

कर्णः डेराई जनि! डेराई जनि! प्रसन्न होखीं। आउर भी सुनी-

तन त्रान ई मिलल जनम के साथ में
देव असुर भी भेद समसना कठिन बा।
अगर चाह बा कुडल जुत भी कवच हो
बिना हिचक के देब, जइसहीं तोष हो।।२१।।

शक्रः (सहर्ष) लाव, दे, दऽ।

कर्णः (मने मन) इहे त ई चाहत बा। ई कपट में पटु कृष्ण के जुगुति ना ह? आछा, इहे सही। अब सोचल बेकार बा। अब एह में संशय कइल ठीक नइखे (परगट) ग्रहन करीं।

शल्यः अंगराज! ई मत दीहीं रउआ। ई कदापि मत दीहीं।

कर्णः रोकऽ मत, रोकऽ मत, हमरा के। देख-
समय पाके सिच्छा भी हमार ध्रुव जाला भूल
वृक्ष खड़ा पृथिवी पर गिर जालन टूटेला मूल।
जल स्थान मरू होला जले जब सूख जाला
तेआग आउर दिहले एक मात्र एहिजा रहि जाला।।

शक्रः (लेके मने मन) आखिर मिलिए गइल ई चीझ। पहिलहीं सभ देव लोग अर्जुन के बिजय के निमित्त जवन जरूरी समुझ रखले रहन जा, आज ऊ हम प्राप्त कई लेलीं। त एरावत पर चढ़िके आज हम अर्जुन आ कर्ण के द्वन्द-जुद्ध देखीं। (बहरी जात बा)

शल्यः अंगराज। आज रउआ ठगा गइलीं।

कर्णः के ठगल?

शल्यः शक्र ठगलन।

कर्णः ना-ना। हमही शक्र के ठगलीं काहेंकि-

करेलन द्विज तर्पित जिनका कई जग्य अउर बहु आहुति से, शुभधार किरीट बा जे मर्दत एह दनवन के दल के दुति से। बहुते कर्कस अँगुरी बा भइल जिनका ऐरावत के जुति से,उहे इन्द्रो आज, कृतार्थ भइल, [एह कर्ण के कुंडल के च्युति से।]

(ब्राह्मन के रूप में प्रवेस कइके)

देवदूतः ऐ कर्ण! कवच आउर कुंडल दे देला से जवन तोहरा पछतावा हो रहल बा ओकरा के देखिके पुरन्दर तोहरा के अनुगृहीत कइलन ह। पाण्डवन में एगो पुरुस के बध करे खातिर ई बिमला नाम के शक्ति रउआ रखीं।

कर्णः धिक्कार बा। हम दिहल पदार्थ ना लीहीं।

देवदूतः त ब्राह्मन के बात मानिके एकरा के ले लऽ।

कर्णः ब्राह्मन के बात मानिके। हँ ब्राह्मन के बात त हम कबो टलले नइखीं। आछा, कब ऊ अस्त्र मिली?

देवदूतः जबे स्मरन करबऽ तबे प्राप्त कर लेबऽ।

कर्णः बहुत ठीक। (बहरी जात बा)

कर्णः शल्यराज! त हम रथ पर सवार होईं।

शल्यः बहुते आछा। (रथारोहन (रथ हाँके के) के नाट्य करत बा)

कर्णः अरे! कइसन शब्द आ रहल बा ई।

शंख धुनी ह प्रलय सिंधु के घोष नियन,
जदुपति होइहें चाहें अर्जुन वीरतम।
आज हरावल बीर जुधिष्ठिर बा भइल।
मजिगर जुद्ध छिड़ी पारथ कोपित भइल।।

"शल्यराज! जहवाँ अरजुन होखस ओहिजे रथ ले चलऽ।"

शल्यः बहुत आछा।••

अनिल कुमार ओझा 'नीरद'

(एक)

हमरा खातिर तोहरा मन में अगर नफरत बा,त बा।
तबो तोहसे मिले खातिर दिल में हसरत बा,त बा।।

सांच के हम सांच कहि के,कवन कइ दिहनी गुनाह?
झूठ वालन के नगर एह से जो उजरत बा,त बा।।

जो जरी दीया,फतिंगा पास त अइबे करी।
प्रेम में कुरबानिये ओकरा जो किस्मत बा,त बा।।

अपने संगहतियनि से धोखा,जाने कतने बेरि मिलल।
चोट खाइल,फेर भरोसा कइल फितरत बा,त बा।।

लाख दूरी बाइ सदियनि से धरा-आकाश में।
क्षितिज पर गलबांहि वाली जो मुहब्बत बा,त बा।।

ऊ त खुशबू ह,हवा में घुलि बिखरि जइबे करी।
फूल अउर बगियनि बदे जो ई बगावत बा,त बा।।

हम त सोचले रहीं,छोटहन घाव ह कबले टिकी?
आजुवो नासूर अस रहि रहि के टभकत बा,त बा।।

आधा दुनियाँ आजुवो बारूद पर बाटे खड़ा।
अउर आधा के करेजा भरल दहशत बा,त बा।।

(दू)

जरत करेजा के लावा तक, एक दिन खंजर हो जाला।
जहंवा से मुंह मोड़ि ले नदिया, साहिल बंजर हो जाला।।

आपन कथा बयान करे के, सइ-सइ गो साधन होला।
मौन साधि जो लेला ज्ञानी, मस्त कलंदर हो जाला।।

केकर बाइ तलाश बतावऽ, केकरा के खोजत बाड़ऽ?
आत्म-तत्व बस साधि ल ना तूँ, बूंद समुन्दर हो जाला।।

गर्व करऽ अपना धरती पर, एह माटी के तिलक करऽ।
इहंवा से जे हारि के जाला, उहो सिकन्दर हो जाला।।

चउदह रतन देव-दानव का, मिलल समुन्दर मंथन से।
अमृत शीश कटा देला, विषपाई शंकर हो जाला।।

जीयल ना आसान हवे, मानुष तन पाके दुनियां में।
चौसर के पासा तक के, परिणाम भयंकर हो जाला।।

वेद, पुराण, उपनिषद का संग, कतने बा गौरव गाथा।
इतिहास से सबक ना लिहले, भूगोल खंडहर हो जाला।।

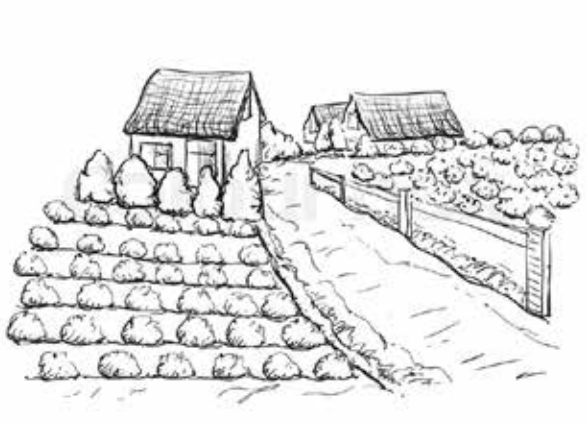

(तीन)

दीया अब खुशी के जराईं ना साहेब।
दरद में दिवाली,मनाईं ना साहेब।।

अकेले का लंका विजय राम कइले?
त भाई के भाई,बनाईं ना साहेब।।

बा दुनिया पटाखा नियर बम जे फोरत।
त धरती ह माई,बताईं ना साहेब।।

ना संग केहू आइल ना संग केहू जाई।
त आतंक जग से,मिटाईं ना साहेब।।

जे बरबाद होता जे बाटे उदासल।
हंसी ओकरा मुखड़ा,खिलाईं ना साहेब।।

ई पूरब से पछिम लगल आगि बाटे।
समझदार बानीं,बुताईं ना साहेब।।

ई हर साल पुतला जरा के का होई।
अपना भीतर के रावण,जराईं ना साहेब।।

मुफत के ई बिजली आ राशन का होई।
कुछु रोजगार सभके,दिआईं ना साहेब।।

जनम लेले बानीं जो मानुष के इहंवा।
त माई के करजा,चुकाईं ना साहेब।।

(चार)

ई जिनिगी त बा,जिन्दगानी कहाँ बा?
इहा केहू के मेहरबानी कहाँ बा??

दरद पी के जिनिगी कटत बा मजे में।
ई राजा त बा, राजधानी कहाँ बा??

कतल होत बा बेगुनाहन के जहँवा।
उहां केकरो आंखी में, पानी कहाँ बा??

ई रौ रौ नरक काजी होला अइसने?
त सुघ्घर सरग के,कहानी कहाँ बा??

कहत लोग बाटे कि हिम्मति तूँ राखऽ।
ए हिम्मति के अब,कवनो मानी कहां बा??

उजड़ि गइल खेती,बिखरि गइल कुनबा।
किसानन के घर अब,किसानी कहाँ बा??

चलीं गाँव में तऽ,कहाँ गाँव बाटे?
पुरनियनि के एकहू,निसानी कहाँ बा??

❑ 28/4, भैरबदत्ता लेन, नन्दी बगान सलकिया,
हाबड़ा-711106 (प०ब०) 9830057686

''पाती'' अक्षर-सम्मान से सम्मानित कवि

कमलेश राय

(एक)

नीन में अब कहीं नयन नइखे
का कहीं कतहूं जागरन नइखे

अब त हरदम मिले पलक भींजल
ए घरी आंख में सपन नइखे

जाने केतना तंवा गइल जिनगी
उनका खातिर कहीं तपन नइखे

ई करिश्मा बा हाथ क उनका
आंकड़ा में कहीं गबन नइखे

जबसे आइल बजार में रौनक
आईना क ऊ आचरन नइखे

(दू)

किनारा खाड़ बा मझधार बनके
सम्हारी के भला पतवार बनके

उहे लागल बा अब असबाब लूटे
घरे में जे रहल रखवार बनके

पता ना पांव के राहत मिली कब
सफर बा रह गइल अखबार बनके

कहां फरियाद क अर्जी लगाईं
सभे बइठल इहां सरकार बनके

मिलत बा हर कदम खाएके ठोकर
जियल मुश्किल बा अब खुद्दार बनके

(तीन)

जहां बा हाथ में पाथर उंहें शीशा क घर बाटे
न जाने आज ई हमरा बदे कइसन सफर बाटे

करीं केकरा से हम अबके रुन्हाइल राह क चर्चा
चले खातिर मुनासिब अब कहां कवनो डहर बाटे

पहाड़न पर फटे बदरी परल बा खेत में सूखा
बताईं त भला केकरा जहर क ई असर बाटे

भला कइसे पढ़ल जाई दरद क पीर क भाषा
मरत बा आंख क पानी भइल छाती बजर बाटे

धुंआ से धुंध से अइसन भइल बा बेसुरा मौसम
समय क हर गजल लागेले जइसे बे बहर बाटे

(चार)

पूस क टुसार कहीं जेठ क दुपहरी
पाँव भला कहवाँ पनाह बदे ठहरी

ना जाने कइसन ए जुग क असर बा
पाथर के पहरा में सीसा क घर बा
उतरलि बा पथराइल सोच क भोरहरी

दरपन पर चेहरा क दोस मढ़ल जाता
चाक बा ईमान क फरेब गढ़ल जाता
मुजरिम के माथे क छाँह बा कचहरी

घर लूटे क साजिस होत बा दुआरे
मुखिया चुपचाप कहीं बइठल पिछवारे
अँगना क लोग भइल काठ क गिलहरी

कइसे के टूटत एहसास हम बचाईं
कहवाँ अब पीर क गोहार करे जाईं?
दहकत अँगार बिछल बा डहरी-डहरी

(पाँच)

पह फाटल सुरुज उगल
घाम उतरि आइल
तोहरा बिन भोर कबो भोर ना बुझाइल।

हवा में सबेरे कऽ सुनगुन संग
मिसिरी अस चिरइन कऽ बोली
फूलन पर भौंरन के गुनगुन संग
सतरंगी किरिन कऽ रंगोली
लागे जस पुरइन से पानी बिछलाइल/तोहराबिन

सूझे ना धूप दीप तुलसीदास
अछत ना रोरी ना चन्नन
अवले बा पूजाघर सून परल
ना कतहूँ पूजा ना अरचन
भोरे कऽ सूरुज के अरघ ना दियाइल/तोहराबिन

सुधियन के फूल अस बिछावन पर
तन सोवे बेकल मन जागे
ना जाने आज उहें आँगन घर
कहि दो अनचीन्हल लागे
घरहीं में घर जोहे अँखिया अकुलाइल/तोहराबिन

(छः)

गीत अनासे उठे हिया में
थिरके बिछुवा पाँव में
सगुन कऽ पाती लेके आइल
फागुन हमरे गाँव में।

गंवे-गंवे गदराइल
मद में मातल महुबाबारी
लागे आज सोहागिन
पहिर सितारन वाली सारी
थम-थम जाय पथिक पंछी
जेकरा घुघटा के छाँव में।

कलियन के अथखुलल रूप पर
भौंरा आस लगावे
एकसर विहंसि विहंसि के मन
कुछ अपने से बतियावे
बेसुध हवा चिकोटी काटे
बरबस ठाँव-कुठाँव में।

पिहके जब बेपीर पपीहा
पिया-पिया गोहरा के
विहंसे कबो लजाये गोरी
सुधियन रंग रंगाके
लागे सगरी रंग भरल बा
परदेसी के नांव में।

(सात)

बिगारल सब केहू चाहीं त ई मौसम बनाई के
सभे जे चुप रही त ए समय क गीत गाई के

उठाके हाथ जब लागी सभे विरुदावली बांचे
समय क ओ सिकन्दर के बतावऽ आजमाई के

करे लागी उठल आन्हीं क जब अंचरे तरफदारी
अन्हारेसे से लड़त दीया क आखिर लौ बचाई के

लगाके आज बइठल बा जहां चेहरा प चेहरा लोग
जुहाईं हम कवन ऐना ,असल चेहरा देखाई के

जहां देखीं उहें अब हो रहल असमान के चर्चा
सही आवाज धरती क भला सच में उठाई के

❑ खण्डेलवाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मऊ (उ०प्र०)

भगवती प्रसाद द्विवेदी

(एक)

नेह-छोह
बनल रहे राउर!
आँचर में दूब-धान
का चाहीं आउर!!

आलता
महावर के लाली,
दिनभर लागे फगुआ
रातभर दिवाली,
हरदी में रँगल-रँगल चाउर!

अल्हड़पन
हँसी आ ठिठोली,
देवर के भाभी आ
ननद के चबोली,
गलदोदल लागे ना बाउर!

अचके लागे केहू आइल,
कसमसात पोर-पोर
नेह में नहाइल,
ओढ़न अँकवार के दनाउर!

(दू)

नयनवा में
जब से केहू समाइल।

बंजर ऊसर लागे
हरियर बगइचा
लेवा आ टाट भइल मसनद गलइचा
पनसोखा के झुलुहा
सोझे टँगाइल।

चम्पा चमेली
बेली जुही गमके,
मावस के रतियो में चाननिया दमके
दिने में अँखिया में
सपना फुलाइल।

सरग-नरग पाप-पुन्न
किछऊ ना सूझे
मन उन्हुका सुमिरन के वृन्दावन बूझे
फेरु तुलसी चउरा प
दियना बराइल।

ब्रजभूषण मिश्र

(एक)
भइल जब मन से मन के प्रीत
गीत मन गावे लागल
छिड़ल भीतर ऊ नव-संगीत
गीत मन भावे लागल।

सुखाइल हृदय तनी सरिसल
नेह के बूनी बरिसल
हवा में घोरल जइसे सीत
हिया हरसावे लागल!

मिलल जब प्रेम-दीठि के छाँव
थिराइल मनवाँ चंचल
भेंटाइल जबसे मन के मीत
धजा फहरावे लागल!

न लागल पता कुछ, उनका संग
समय कुछ अइसे बीतल
खुसी से हारल, लागे जीत
नया धुन आवे लागल!

छिड़ल भीतर ऊ नवसंगीत
गीत मन भावे लागल!

(दू)
तूँ त भोरहीं सपनवाँ में आइ गइलू!
मोर सुतल सनेहिया जगाइ गइलू!!

आके पुछल कुसल-क्षेम
बतियो कइलू सपरेम
धरि हथवा में हथवा दबाइ गइलू!

तोहर बाटे अइसन रूप
जइसे फागुन के हो धूप
खिलल फुलवा क गंध बिखराइ गइलू!

भेंट होई कब छछात
करबू मीठी-मीठी बात
तूँ त मनवाँ हमार छछनाइ गइलू!

मोर सुतल सनेहिया जगाइ गइलू
तूँ त भोरहीं सपनवाँ में आइ गइलू!

कइसे निबही साथ
अब ई कइसन नाता बाटे, आ बाटे अपनापन
साथ रहे के मजबूरी बा, आ काटे के जीवन

एने परबत ओने खाई,
जिनगी लागे घाटी,
कवन मोल कइला धइला के
कइल धइल सब माटी
बलजोरी कारिख मल देवे, दिखलावे फिर दरपन

जवन काम करबे ना कइलीं
लागल उहे लांछन
तंतर मंतर टोना जादू
होखीं जइसे डायन
भरम जाल में पड़ल रहे जे, करे उहे आरोपन

कइसे निबही साथ, राख के
मन में अतना शंका
कवनो हनुमत जरा सकित गर
ई शंका के लंका
कूच करे के समय बा आइल, तब काहे खट्टापन

आदर्श ग्राम, रोड न०1, कोल्हुआ, पैगम्बरपुर,
मुजफरपुर-843108, मो0 — 9905030520

प्रकाश उदय

घूस जो पूत समन्दर में

लाख लगा कोचिंग करववलीं
दसहन लाख पढ़ाई में
ए बबुओ, तें आस पुजइहे
पैकेजदार कमाई के

करजा से त गतरे-गत्तर
लदले बानीं अपना के
तोरा के त बबुओ खाली
ए...गो अपना सपना से

सपना कतना सुन्दर रे....
घुस जो पूत समन्दर में
नाक मूँद के बूड़ी मरिहे
पर टँगरी तर मूड़ी करिहे
मोती पइबे अन्दर में
घुस जो पूत समन्दर में

तनिका नीचे घोंघा-घोंघी
तेकरा नीचे हीरा-मोती
कस के गाँठ लगइहे धोती
खरके ना अभडंगर रे
घुस जो पूत समन्दर में

ऊ मोती बाजारे जइहें
लाख टका में उहाँ बिकइहें
लाख टका नौ लाख कमइहें
नौ से नौ-नौ लाख कमइहें
दुख-दारिद छू-मन्तर रे
घुस जो पूत समन्दर में

पूता लाल लँगौटा कसले
दस-बिस देवी-देवता भखले
आगे-पीछे अगले-बगले
उपरे-नीचे तकले-झँकले
हँस के रोअले रो के हँसले
कुदले ताड़ भ ऊपर से
घुसले पूत समन्दर में
होड़ लगवले हूब...हूब भर

जोर लगवले खूब...खूब, पर
केहू कहल कि ऊब गइल जब
केहू कहल कि डूब गइल, तब

"बेटवो गँववलीं, लँगोटवो गँववलीं
तोरो के गँववली रे धो-ति-या
घोतिया के तहे-तहे मो-ति-या
मोतिया में लाख टका
लाख में नौ लाख टका
नौ में नौ-नौ लाख टका
तवना में लाल मोरा
खेललीं-खेलवलीं...
पिठइयाँ प, कन्हइया-कोरा...."

जियरा झोराय गइल
अँखिया लोराय गइल
मोतिया त मछरी में, पानी में घोराय गइल

नाथ खोलऽ, पाल तानऽ
जाल-महाजाल डालऽ
मछरी धराय गइल
गाँव में बिकाय गइल
नून...तेल...लकड़ी...
लइका खाती कँकड़ी...
हाली-हाली खो

बाप गइले नाव लेके
खाय लेके जो
जो, जो रे लला
ताकत त बा केहू तोरा के
जो, जो रे लला
लपक के उठा ली जे कोरा में
जो, जो रे लला...

स्व0 गंगा प्रसाद 'अरुण'

(एक)

अचरज का
परधाने इहवाँ
रेंड़ भइल।

बनल जात
मरजाद दुहाई सबका पर
लागे जइसे
भइल बिखाइल मधु-आखर
माहुर पानी पटवल बिरवा
फेंड़ भइल।

बानी बकुला
चरन-धूरि पर लोटत बाटे
निरगुनिया
लीं अरथ-पूत के तरवा चाटे
अपनइती कुल-रिश्ता-आँगन
गेंड़ गइल।

टनके सुर
कठपुतरी के बा मन मरजी
तिरिछ चाल
अब चले पियादा बन फरजी
ई धसान में सबके सब अब
भेंड़ भइल।

(दू)

जिनिगी में चारू ओरि पहरा अमावसे के
असरा के फाटे कबो पह ना
एही रे नगरिया में केहि विधि रहना!

जहाँ नाहीं ओठ के गुलाब कबो बिगसे
झुरुके ना मधुरी बयार,
जहवाँ उमंग के गगरिया ना छलके
आस के ना खिले कचनार।
सूरुजा के तेज के ना होत पइसार जहाँ
चाननी भी लागे टह-टह ना
एही रे नगरिया में केहि विधि रहना।

खिलहीं के पहिले कुसुम मुरझाये
जहाँ कबो आवे ना बहार
संझा-पराती जहाँ गावे ना चिरइयाँ
मौसम बनावे बटमार।
जहवाँ के लोग रूप-देह के भुखाइल
अपना के बाँचे के जगह ना
एही रे नगरिया में केहि विधि रहना!

कुल-खानदान के बखान-मरजाद जहाँ
कला के ना पूछ-पहिचान,
बड़का के मान, अपमान सदा छोटका के
एके बात जानेला जहान।
गीत-सूर-सरगम-कला के कठिन लागे
जहाँ पर बेचना-बेसहना
एही रे नगरिया में केहि विधि रहना!

धरती-आकाश के गरासे लोग निस दिन
जिनिगी जहर होई जाय
सोना के चिरईंयाँ, आ सोन रे मछरिया
उड़त-बूड़त अकुलाय
असरा के दियना के जोत धुँधराये हाय
मन के महलिया के ढहना
एही रे नगरिया में केहि विधि रहना।

(तीन)

जीअन-मरन सनातन, सुख-दुख रीत,
सिरजल बहुत कठिन पर, बरवै-गीत।

बूढ़ नचनिया कइसे, छोड़े छाव
अपनइती के नांवे, पास-दुराव।
नीक-जबून जुटाने, का परहेज
मुदई खोजे हरदम, आपन दाँव
धरम-नेह के नाता, नीक पुनीत
सिरजल बहुत कठिन पर, बरवै-गीत।

सुख में आन सराहे, बोले बाप
दुरदिन परले अपनो, करइत साँप
सुख-दुख जइसे चकरी, साँझ-सबेर
पर, परमादी जाने, धन परताप
ई दुनिया में सबकर, मुदई-हीत,
सिरजल बहुत कठिन पर, बरवै-गीत।

पोथी पढ़ीं-पढ़ाईं पंथ परेम
सबकर कुसल मनाईं, सबकर छेम
अपने मन से बूझीं, अनकर बात
धरती धजा लहरिया, धरमें-नेम
आखर-आखर इस्सर, धन परतीत
सिरजल बहुत कठिन पर, बरवै-गीत।

(चार)

देह-मन करिया कहीं, ना समय के पहिया कहीं।
बोल बहिरा-गूँग-आन्हर, आज तोके का कहीं।

का कहीं धृतराष्ट्र के आ भीष्म-द्रोणाचार्य के,
ना कहीं मुदई, त का ए लोग के दहिया कहीं।

भरल महफिल द्रोपदी के लंग के, अपमान के,
आज ना, तेंही बतादे, फेरु हम कहिया कहीं।

हम बहब उहे, जे मन के बात बाटे, साँच बा,
बात भल, ना नीक लागी, जब कहीं, जहिया कहीं।

कुल सहारा पक्षधरमा कौरवी अंदाज के,
सब कहीं, तहिया कहीं, थहिया कहीं, बहिया कहीं।

❑ 21 बी, जोन-4, संडे मार्केट, बिरसानगर टेल्को,
जमशेदपुर 831019, मो० - 9234872041

स्व0 कन्हैया पाण्डेय

(एक)

धरती लड़ी सजवले बाड़ी, चूनर धानी में
केकरा ई अगवानी में ना!

जबसे सुनले बाड़ी हाला
देंहिया रोज-रोज पियराला
नित उठि धोवे मुँहवाँ, ठंढा-ठंढा पानी में,
केकरा ई अगवानी में ना

दिन में सूरुज तपि-तपि जाले
रतिया दूधे चान नहाले
झुर-झुर लगे पवनवा, कूलर नियर पलानी में
केकरा ई अगवानी में ना!

भोरवा कुहुकति रहे कोइलिया
अजबे सालति रहे उमिरिया
मिसिरी घोरल रहुवे केतना ओकरा बानी में
केकरा ई अगवानी में ना!

अमवा बन्दनवान सजवलस
महुवा रस टप-टप टपकवलस
हियरा तरबर होखल बहुते बूनी-आन्ही में
केकरा ई अगवानी में ना!

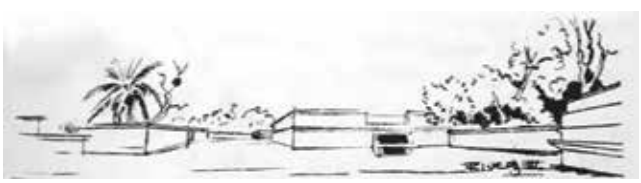

(दू)

भेजनी बलमुआ के लिखि-लिखि पतिया
पिया परदेशे गइलें, कइसे कार्टी रतिया?

दिनवा त कटि जाला घरवा-अँगनवा
रतिया खा उलकेला उनकर सपनवा
भितरा बसल बाटे पिया के सुरतिया!

बोलिया कोइलिया के हुकवा उठावे
विरह अगिनिया के खून धधकावे
धउँके करेजा जस लोहरा के भथिया।

माघ के मघेसि चुवे काँपेला बदनिया
रहिते बलमुआ त बिहँसित पलनियाँ
हमहूँ धधाइ उनके बान्हि लेतीं गँतिया!

अब त सहात नइखे उनकर बियोगवा
दस मुँह दस बात करे इहाँ लोगवा
कबले जोगाईं हम संइचल थतिया?

आइल मधुमसवा रंगाए लालग चुनरी
मन करे बनि जइतीं हमहूँ कबुतरी
धई अँकवरिया जुड़ाइ लेती छतिया!

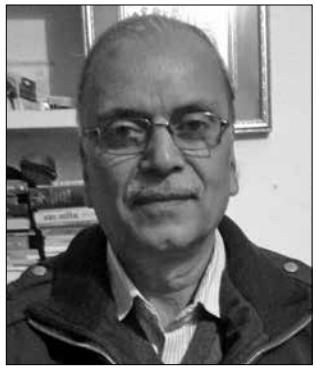

हीरालाल 'हीरा'

(एक)

अचके में कइसन ई
छोह उभरि आइल।
छुट्टा चिरइया के,
गोड़वे बन्हाइल

अपने नियर देखि दूसर सजीली
ठोरवा से पँखिया खुजावे लजीली,
तनिकी भर साथ मिलल हियरा जुड़ाइल।।

चाहे कि उड़ीं बाकि उड़ि नहीं पावे,
सँगे सटि बइठे में मन सुख पावे,
बन्हलस सनेहिया, डहरिये भुलाइल।।

चिरई-चिरइया के भासा समुझलस
एक सँग रहीं अभिलासा के बुझलस
गरवा में गर साटि अँखिया मुनाइल।।

(तीन)

अँटक गइल बा मनवाँ
उनका सुधियन का अँगनाई में
कहल न माने जिद में अपना
लागल बा पहुनाई में!

हरियर चुनरी, पीयर अँचरा
झाँके रूप निखारल
तहरा रूप रंग पर सजनी
चनवो रहि-रहि हारल
उतरि चाँदनी रहे हेराइल
तोहरे ओह सुघराई में।

आगम जानि तहरा बुझाइल
पुहुप केंवड़िया खोले
गुन-गुन करत भँवरवा जइसे
कनवाँ में रस घोले
सकुचि भइल बा लाल ललाई
बिहँसे लगल गोराई में।

चैन न आवे तोहरा बिन
मन के कुछऊ ना भावे
बहुत दिनन के बिछुड़ल फेरू
मिलले पर सुख पावे
आजु बुझाइल, सोरि नेह के
केतना बा गहिराई में।

ग्रा० पो० - मैरीटार, बलिया।

(दू)

बनजारा मन जइसे कतहूँ, अचके ठहर गइल
उनका ओह चितवन के, दिल पर कइसन असर भइल।

परिभाषा ना प्रेम के जनलीं, हम रहनी नादान
रसे-रसे ऊ पीर उठल कि, निकले जइसे प्रान
दवा बिरो कुछ काम न आइल सब बे असर भइल।

मन तड़पे मिलितीं बाकिर फिर उभरे तर्क हजार
दरस-परस का बेचैनी में, दाबे लोक-बिचार
साँप छुछुन्नर के गति, जिनिगी लागे जहर भइल।

पैकड़ बन्हले नाचि रहल बा, मन मयूर आँगन में
भूख-पियास न लागे जइसे, डाढ़ा लेसले तन में
एह पिरीत का चलते, तन में मन दर-बदर भइल।

(तीन)

कबों न सोचले खेतिहर काका
का बा एह जिनगानी में !

बरखा होखे , चाहे घाम
फुरसत कहवाँ , हरदम काम
लिहले लाठी अउरी टारच, चलि दिहले निगरानी में!
खेत अगोरत राति कटेले पाझा अउरि पलानी में!!

पूख -माघ के पाला - ठार
खेती के पटवनि के मार
भय से भागे जाड़ो - पाला , जब ढुकि जालें पानी में!

अनगिन सपना बिघिन हजार
सबकर चिन्ता लदल कपार
रहि- रहि सूखा - बाढ़ सतावे , जिउ हाँफे हलकानी में!

कतनो नाच नचा ले भाग
घटे न खेती से अनुराग
माटी सँग मनवाँ के डोरी , जा अँटके खरिहानी में!

खेत अगोरत राति कटेले पाझा अउर पलानी में !
का बा एह जिनगानी में!!

❑ बुलापुर पो० शिवरामपुर, बलिया

शिवजी पाण्डेय 'रसराज'

(एक)

चढ़लि छान्हि पर लतर प्रीति के, पसरल भरि ओरियानी
हम भइलीं दीवाना सजनी, तूँ भइलू दीवानी।।

कबो भुलाई ना हमरा ऊ, चोरी मधुर मिलन के,
नेह बन्हाइल रहे अनोखा, हमनी के तन-मन के,
होत बिहाने फुसफुसाय सब, चर्चा चलल जुबानी।
हम भइलीं दीवाना...!!

तोहके ना बिसरवलीं, ना तूँ हमके बिसरवलू,
अँखियन-अँखियन के जरिये, मन के बतिया बतियवलू,
अँगुरी में मुनरी हमरा ई, तोहरे नेह निसानी।
हम भइलीं दीवाना...!!

हम तहरा दियना के बाती, निसि-दिन बरल करीलें
हर पर सुधि के अँगना तहरा, आ के रहल करीलें,
साँच तऽ ई बा तूँ हमरा में, हम तहरा में बानी।
हम भइलीं दीवाना...!!

(दू)

जाने के रात भर जगावेला।
मन में रहि-रहि के गुदगुदावेला।।

राग बिन आजु रागिनी कइसन
बिन चनरमा के, चाँदनी कइसन,
रूप ऊहे जे प्रिय के भावेला।।

का भइल कब कहाँ जनाइल ना,
हम हेरइनी कहाँ, बुझाइल ना,
केहू तनिकी ना कुछु बतावेला।

जब खिलल फूल, पँखुरियो विहसल,
रंग ले-ले के तितिलियो मचलल,
गंध भँवरा के, सुगबुगावेला।

उनका अइला के जइसे भान भइल,
बहल बयार त ई गुमान भइल,
हमके उनकर इयाद आवेला।

ग्रा० पो० - मैरीटार, बलिया।

''पाती'' अक्षर-सम्मान से सम्मानित कवि

दिनेश पाण्डेय

आज काहें आँखि भर आइल सखी
ढेर दिन पर सुधि उभर आइल सखी

पातरी पैड़ी किनारे पाँव दे
चान भुइँएं बा उतर आइल सखी

थिर टिके के साधना में लीन जे
आज कइसे ए, डगर आइल सखी

चौघड़ी के पाहुना से का गिला
बात निकलल भिनसहर आइल सखी

बेअरथ मनुहार इनसे का करीं
गाँव में लँगटा शहर आइल सखी

बान्ह दीं तनिका कलेवा - पोटरी
भोर वाली बस नजर आइल सखी !

ए हरि !

ए हरि कवन लाभ पग परले !

आँखि अछइते रूप न सूझल , जगत बोध ना निपजल
कवन साँच ई कहाँ बुझाइल , भाफ , तुहिन, अँगरत जल
मति के सब मगरूरी झरलसि आँतरजोत न बरले!

एक नदी अबिरल जलधारा, माँकत चलीं कछारे
ना लँघान , ना नाइ , न माँझी के बिधि जाइबि पारे
अनगिन चान नयन में पवँरल , अमृत बून न झरले!

राखे बदे बजूद आपनो, मरि-मरि जोग जुगाईं
आन जोग हम कइसे साधीं , सोचि -सोचि अझुराईं
ना हम आइब, ना हम जाइब, का फिर पचइ-पचइ मरले!
ए हरि , कवन लाभ पग परले !

धोख - पुतुल

साधो सगरी धोख -पुतुल बा !
'देखब नाहिं बेजायँ' कठिन ब्रत कबहूँ ठनले रहलन
ऊ कइसे अनगिन कुकांड के सोझे आँखी सहलन?
'कहब न कुछ स्खलदंस' रात-दिन ,करे हक्कर पारल
होते इचि बिपरीत हाल के , सब सिद्वान्त बिसारल।
शाक मिलल मरजाद बात के ,क्को करम न छूटल
मानुस मुख से जहर वमन के कीर्तिमान सब टूटल ।
'सुनी न ऊ सब बात, जवन ना होखी जन हितकारी।
भेद खुलल भीखम- हठ के होखल बात उघारी।
आला पर जे बनरा बइठल अब ले रहल स्खुलाटी।
होखे ना परतीति सहज में सब धोखा के टाटी ।

❑ दिनेश पाण्डेय, सरकारी आवास 100/400 राजवंशीनगर,
रोड़ नं०2 पो० शास्त्रीनगर, पटना-23

मिथिलेश गहमरी

फेरु आइल मुँहनोंचवा

फेरु आइल बा मुँहनोंचवा
गाँवे-गाँव-,गली-गली
लागल बा अगलगी
बाज रहल बा डुगडुगी
फेरु आइल बा मुँहनोंचवा,
जाग रहल बा लोग
हाँफ रहल बा लोग
फेरु आइल बा मुँहनोंचवा,
एगो अनचाहा डर से
सब नुकाइल बा घर में
फेरु आइल बा मुँहनोंचवा,
अपना के झार रहल बा लोग
अन्हारा में हाथ मार रहल बा लोग
फेरु आइल बा मुँहनोंचवा,
सबकर करेजा धक-धक
अपना परछइयों प' शक
फेरु आइल बा मुँहनोंचवा,
मुँह नोंची कि, गर्दन धऽरी
रामे जानस,-- का कऽरी
फेरु आइल बा मुँहनोंचवा,
ई,फेरु ना चिन्हाई
आँखि में बालू झोंकाई
फेरु आइल बा मुँहनोंचवा---
बाकिर, ओइसन ना,--
ओकरो से जब्बर-- मुँहनोंचवा !!

काला पहाड़

जंगल का बीचो बीच
केतना दिन से
खाड़ बा, काला पहाड़--
जीया-जन्तु, बनमानुख के
असरा बनिके,
तनि के----
खाड़ बा काला पहाड़!

आइल केतनो
मुसीबत के आन्ही-पानी,
डिगल ना राह से
अपना निर्बाह से, उछाह से,
सभकर मान-सम्मान,
जंगल के बनिके शान-गुमान
खाड़ बा केतना दिन से
काला पहाड़-----!
सभकर दुख सम्हारत-सँजोरत,
मर्यादा कऽ थाती अगोरत,
ठूँठ होत जंगल के देखत,
मंगल में अमंगल निरेखत--
भीतरे-भीतर,
गतरे-गतर,
गँवें-गँवें--
ढह रहल बा
काला पहाड़---
केतना दिन से !!

अब का करिहें 'चेखुर'

एह डाल से ओह डाल,
ओह डाल से- ओह डाल ,
कबो नाहीं केहू से धरात रहली चेखुर,
कुदुक-फुदुक-- चिरइन का संगे-संगे
आहो-धाहो नेह जोरस मने-मने,
खुर्र-खुर्र, कुर्र-कुर्र, कुतुर-कुतुर
फल-फूल खात रहली सबका से पहले,
आवे जो सीत-घाम
ओढि लेस ड़ाढि-पात,
आगम देख कवनो संकट के

नुका जास खोंड़रा में-
सबका के जीभ बिरावत-धिरावत-
चकमा प' चकमा देत,
चोन्हा प' चोन्हा करत-
परान ले अधिका अगरात रहली चेखुर,
बाकी एक दिन अनचितले-
आइल एगो आन्ही-बतास,
जऽरी ले कटा गइल
चेखुर क'ऽ सपना, गाछ-असरा-निवास,
चेखुर बाड़ी तहियेले उदास--बदहवास ,
हई--टाँगी, आरी से
अब हम का पूछीं--
कि कहाँ जइहें,-
अब का करिहें 'चेखुर' ?

दूध के माँछी

पहाड़ काट के
सगरे नहर बहा दिहलीं,
रहे जमीन जे बंजर,
हँसत अबाद भइल,
हमार खून-पसेना मिलल
त' बाग खिलल,
महल, शिवाला अटारी ,
कि होके राजभवन,
सभे के नेंव में
जाँगर बली हमार चढ़ल,
मिलल मजूरी का
हमरा के मेंहंताना में,
हिसाब जोड़ के
अपना के गढ़ रहल बानीं
पियास, भूख ,लचारी से
लड़ रहल बानीं--
कि हतना कइलो प'
आने तरे त' माने लन,
कि आजो, दूध के माँछी--
ऊ हमके जाने लन !!

करिया गइली 'बुचिया'

हमरा नन्हकी बुचिया के-
चाहत रहे एगो झंडा--
गीत आजादी के गावे खातिर,
देश बा आजाद, --बतलावे खातिर,
ओह लोगन के एहसान जतावे खातिर
जे मर-खप गइल--
ये देश के --सरग बनावे खातिर,
बाकी, अब का करो बुचिया--
सउँसे बजार में गाँजल बा
दुकाने-दुकाने--बस,
जाति कऽ झंडा, धरम कऽ झंडा,
बड़का कऽ झंडा, छोटका कऽ झंडा,
हिंदू कऽ झंडा, हई मुस्लिम कऽ झंडा,
पाटी कऽ झंडा, परिपाटी कऽ झंडा,
भाषा-बोली-भेष कऽ झंडा
अलग राज- प्रदेश कऽ झंडा,
ललका झंडा, हरियरका झंडा,
पियरका झंडा, उजरका झंडा--
जेने देखीं,--किसिम-किसिम के
झंडे-झंडा--,
एतना झंडा देखलो के बावजूद
करिखा गइली बुचिया,
ना भइल उनुकर मन चंगा,
ऊ तऽ हिर-फिर खोजत रहली--
अपना देश कऽ 'तिरंगा--
पनरह अगस्त के दिन--
स्कूल में फहरावे खातिर,
अपना आजादी कऽ कीरति
गावे--सुनावे--खातिर ।।

मिथिलेश गहमरी
गहमर,ग़ाज़ीपुर (उ०-प्र०)

शशि प्रेमदेव

(एक)

जइसे कवनो चित्र के, प्रभु जी! ओकर फ्रेम ।
बहके ना दिहलस कबो, हमके राउर प्रेम ।।

अइलन एह् संसार में, एक-सेक धनवान ।
बखरा में सबका परल, ऊहे सूरुज-चान ।।

कुस्ती नीक-जबून में, भइल हजारन बार ।
तब्बो ना साबित भइल, के बाटे बरियार ।।

फींचल गमछा गोड़ के, अँगुठा में अझुराइ ।
झटपट सातू सानिके, अब के खाता, भाइ ।।

घोड़ा-गाड़ी-असलहा, कोठी नियन मकान ।
बाकिर सब्सिडी बदे, हमहूँ निबल किसान ।।

जेकरे के मोका मिली, ऊहे करी अनेति ।
जनता के विस्वास के, दिही नरेटी रेति ।।

ना छत्री, ना चउधुरी, ना बाभन-भुमिहार ।
पावर जेकरा हाथ में, अब ऊहे जिमदार ।।

साम्यवाद के तूँ, गुरू ! केतनो करऽ बखान ।
के बाटे जे करि सकै, सबके एक समान ।।

जातिवाद, धर्मान्धता, भ्रष्टाचार, दहेज...।
असली दुस्मन रहि गइल,भागि गइल अंग्रेज ।।

छींक ना आई सार के, अइसन धाँसी बाँस ।
इजराइल का सामने, कबले टिकी हमास ।।

(दू)

अखिल जगत-कल्याण के, फइलावे संदेस ।
तब्बो रहे सनातनी, साँसत में हरमेस ।।

जाति-पंथ में बा बँटल, जबले बड़का गाँव ।
हारी ना छोटका कबो, कवनो आपन दाँव ।।

जड़ होखे भा जीव, ऊ सबकर चाहे खैर ।
हिन्दू के खलिसा मियाँ, गद्दारन् से बैर ।।

बा अजीज एह् देस ले, जेके आपन दीन ।
नीक रही ओकरा बदे, तुर्की भा बहरीन ।।

फूहर-पातर चीझु के, गँहकी कई करोड़ ।
बा तरसत 'लाइक' बदे, कविताई बे-जोड़ ।।

सुमिरे चाहे राम के, चाहे पढ़े नमाज ।
मातृभूमि के तूँ मगर पहिले करे लिहाज ।।

बढ़ते जाता पीठ पर, आबादी के बोझ ।
देंहि बेचारा देस के, कइसे होई सोझ ।।

(तीन)

भले ऊ डकइती करत खा मराई।
शहीदे क ओकरो के दर्जा दिआई।

रहल जे कसाई, इलेक्शन का पहिले
इलेक्शन का बादो रही ऊ कसाई।

मुहब्बत अयोध्या क झगड़ा त हऽ ना
कि राजा से परजा ले फैदा उठाई।

बइठि के जो खाई त कहिया ले केहू
नवरसा का बल पऽ 'बड़कवा' कहाई।

बजट तऽ सितम्बर में जारी भइल बा
मई में, गरीबन ले पहुँची रजाई।

देखइहऽ कबो जिन उ दिन, ए विधाता
जरीं देखि के, आन कऽ हम कमाई।

बना के 'शशी', फेरु जनता के उल्लू
सियासत, तवायफ-मतिन मुस्कियाई।

(चार)

'समाजवाद साइकिल प' कबले ढोवाई?
मीलल बा मोका त फैदा उठा लऽ!
कीनि लऽ ना सइयाँ, जहजिए-हवाई!
-समाजवाद साइकिल प' कबले ढोवाई?

साइकिल बा अब्बर, निकसि जाई हावा!
नेता जी, एकरा के रखि दऽ फलाँवा!
-साइकिल के अब्बो जो करबऽ सवारी
बाड़ऽ विधायक- इ कइसे जनाई?

जिप्सी, बुलेरो, पजेरो, सफारी...!
पलड़ा जहजिया क 'सबका प' भारी!
-गँउवां निहारी, नगरिया निहारी
मूँहे देआदन के करिखा पोताई!

सरधा पुरावे क ईहे बा मोका!
करबऽ जो देरी त हो जाई धोखा!
-बेरि-बेरि किरपा ना करिहें भवानी
फेर-फेर अइसन सुतार ना भेंटाई!

कुर्सी के तूहूँ कलपबृच्छ बूझऽ!
गाँधी के छोड़ऽ, तिजोरी के पूजऽ!
-बनि जा बे-सरम, 'शशी', दूनो हाथे
लूटऽ बिटोरऽ कि सात पुश्त खाई!
-समाजवाद सइकिल प' कबले ढोवाई!

प्राचार्य, कुवरसिंह इ० कालेज, बलिया

मनोज भावुक'

(एक)

राम राम भाई जी
आईं हेने आईं जी
आईं हेने बइठीं
डभकता चाह जी
करीं वाह वाह जी
केकरा के वोट देम
केकरा से नोट लेम
केने के हवा बही
पुरुआ कि पछुआ
के अबकी जीती
खरगोश कि कछुआ
डाल रे रमुआ
चाहपत्ती डाल
चीनी तनी बेसी डाल
मन तनी तीत बा
लूटता ऊहे
जे आपन हीत बा
जे आपन हीत बा -!

खउले दे चाह के
तबे सवाद आई
रउरा से का कहीं
कहले बिना कइसे रहीं
रउरा त भाई बानी
आपन जवारी
बोलीं ना, केकरा के
भर पेट मारीं
बाबूजी मर गइलें
दवा के बिना
माई के माँग भइल
नये में सूना
रहबे ना कइल कवनो
ढंग के अस्पताल

नब्बे के बात ह, नब्बे के हाल
जंगल राज रहे
के पूछो सवाल।

आजो त उहे बा
पढ़े खातिर कोटा जाईं
जाब खातिर दिल्ली
गाँवे खाली हम बानी
आ हमार पोसल पिल्ली

जा, जा, जा
चाह त गिर गइल
सार कथा सुनतारऽ
हमार व्यथा सुनतारऽ
साला, केतना साल से
अइसहीं डभकता आ गिरता
केहू नइखे संभरनिहार
लोग भटकता
कहीं नइखे रोजगार
चुनाव होता, लोग जीतता
दिल्ली जाके खाता मुर्गा-भात
आ बिहार में आके करता
जात-पात

आदिमियो एगो जात होला
ई केहू के नइखे बुझात
हमनी से बढ़िया कुकुरा
एकनी में नइखे जात-पात
आ हमनी के कुकुर लेखां
जात-पात पर लड़त बानी
बात-बात पर अड़त बानी
हर चुनाव में मरत बानी
गाँव में सड़त बानी।

अरे बइठीं, फेर से चाह चढ़ाव रे
फेर आइल बा चुनाव
बढ़ल बा हमनी के भाव
कागज पर स्विट्जरलैंड बनी
आपन गाँव
सपना में लउकत बा स्वर्ग
आहि रे सपना
हमहूँ त देखते बानी सपना
चाह बेंच के बने के पीएम
बाकिर ई पता नइखे कि
दमा से हाँफत-हाँफत
कब ले जीएम -?

(दू)

तू बन जा घना जंगल कवनो
हम ओही में कतहूँ हेरा जाईं
तहरे में भटकीं शाम-सुबह
तहरे में उमिर बिता जाईं

तू बन जा नदी उमड़ल कवनो
हम धारा बन के साथ बहीं
तोहरा अँचरा के छोर पकड़
तोहरे संघवा दिन-रात रहीं
तोहरे प लहर बन लहराईं
तोहरे में फेर समा जाईं
तहरे में भटकीं शाम-सुबह
तहरे में उमिर बिता जाईं

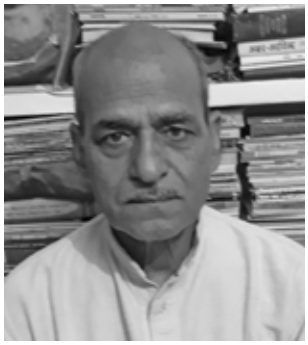

विजय मिश्र

तू बन जा उपजाऊ माटी
तोहरा भीतर में अँकुरी हम
हमरा के पाके निखरऽ तू
तोहरा के पाके निखरीं हम
फल-फूल खिले तोहरे साथे
तोहरे में असहीं ओरा जाईं
तहरे में भटकीं शाम-सुबह
तहरे में उमिर बिता जाईं

हमरा खातिर हर मौसम के
तूँही बन जा सँगहरिया हो
हमरा दिनवा के भिनुसहरा
हमरा रतिया के अँजोरिया हो
तोहरा के पाईं अइसे की
खुद हम अपनो के भुला जाईं
तहरे में भटकीं शाम-सुबह
तहरे में उमिर बिता जाईं

तहरा बँहिया के तकिया पर
जइसे चाहीं सूतीं- जागीं
तहरा कान्हा पर सर रख के
जिनगी के सब दुख-सुख बांटी
तोहरा सुख में हम खिल जाईं
तोहरा दुख में मुरझा जाईं
तहरे में भटकीं शाम-सुबह
तहरे में उमिर बिता जाईं

फ्लैट 3017, टावर-17 महागुन माइवुड्स
ग्रेटर नोएडा-वेस्ट, गौतमबुद्ध नगर 201306,
मो. 8291633629

नीमन बाउर आ भूल-चूक
जहिया ई साँच बुझाइ गइल
समुझीं चउथापन आइ गइल।

लेखा-जोखा जिनिगी भरिके
जब लोग आगा से सरके
अपने बनवल मजबूत किला
बालू लेखा भिहिलाइ गइल
समझीं चउथापन आइ गइल

जबले रउरे भर आस रहे
जवने कइनी, विश्वास रहे
सेवल-सँइचल जामा-पूँजी
सब मिलिके जब खाइ गइल
समझीं चउथापन आइ गइल

'बइठऽ चुपचाप'। हुकुम होखे
बिचहीं में बतिया सब लोके
लागी जाबी मुँह पर कतनो
जगइा पर असल कहाइ गइल
समझीं चउथापन आइ गइल

घरवे में केहू बात न माने
तहरे के सब बुड़बक जाने
मानल लोहा भलहीं दुनिया
घरवे में अकिल भुलाइ गइल
समझीं चउथापन आइ गइल

कबहूँ तनिको चैन ना पवलऽ
लागि-लागि के काम बनवलऽ
जिनिगी के ताना-बाना सब
सझुरवले में अझुराइ गइल
जानीं समझीं चउथापन आइ गइल।

भोर के किरिन

मीनाधर पाठक

फरवरी महीना के बसन्ती बयार बहत रहे। अदित के ताप ओस के नमी सोखत रहे। प्रबल भोरे में सैर खातिर निकल गइल रहलें। हम नहा धो, पूजा पाठ क के बालकनी में बइठ गइनी आ ओहिजा धइल गमला के पौधा कुल निहारे लगनी। झिर–झिर बहत बयार के साथे पौधा कुल डोलत रहे। गेंदा फूल के कुप्पा भइल रहे। रंग–बेरंग के डेहलिया अपने रूप–रंग पर अगरात रहे। फूल से लदरल कनइल आ सदाबहार दीन दुनिया से बेखबर अपने में मगन रहे।

गुड़हल के ललाई मन मोहत रहे। हम ए सब के देखि–देखि धधात रहनी। आपन लगावल, सेवल, पालल पेड़–पौधा आ बिरवाई के बढ़त आ फूलत–फलत देखि के केकर मन ना जुड़ा जाला। हमहूँ जुड़ात रहनी कि तबे एकदम से हँसला के आवाज से घूम के देखनी त सामने सड़क पर कुछ लइकनी लोग स्कूल के युनिफॉम में पीठ पर बस्ता लदले कवनों बाति पर खूब ठठा के हँसत स्कूटी से फुर्र हो गइल रहे। देखि के हमहूँ मुस्किया दिहनी।

आज समय केतना बदल गइल बा ! बेटी के पढ़ावे–लिखावे खातिर घर–परिवार, समाज में कवनो अवरोध नइखे। स्कूल से लेके कॉलेज आ कॉलेज से लेके बड़े–बड़े इंस्टीट्यूट ले लइकनिन के भरमार बा। धरती से लेके आसमान ले सब जगह आपन पहुँच बना लेले बाड़ी लोग आ एगो ऊ समय रहे जब लइकनी लोग पर केतना रोक–टोक रहत रहे। पढ़वला से बेसी लोग बेटिय के गुन ढंग सिखावत रहे आ तब गाँव–गिराँव में आज के तरे इस्कूलो कहाँ रहे?

पढ़े आवे–जाए के कवनो बर–बेवस्थो त ना रहे। चोर–चाई के डर अलगे रहे। हमार अपने पढ़ाई में केतना ब्यवधान आइल। जो महतारी हठल ना रहिती त हमरो के अक्षर ज्ञान ना हो सकत रहे।

महतारी के इयाद से आँखि पसीज गइल। हम कुर्सी पर माथ टिका के धीरे से आँखि मून लिहनी। एकहगो क के महतारी के मुँहे सुनल सब बाति कथा–कहानी नियर हमरे भीतर उमड़े लागल आ धीरे–धीरे हम सुधि का लोक में उतर गइनी।''

कछार में अपनी बिआह के लेके सौदामिनी के अपने बाबूजी से शिकाइत रहे। बाकिर उनकी बिआहे के बरिस बितते बाबूजी के स्वर्गवास हो गइल। भाई दू बरिस छोट रहे आ महतारी से कुछ कहि के उनके दुःख ना बढ़ावल चाहत रहली। अइसन ना रहे कि ससुरा में उनके कुछ कमी रहे। घर–दुआर, बाग– बगइचा आ खेती–बारी से समृद्ध परिवार रहे। ऊ सबसे छोट रहली, ए से सभे जानत–मानत रहे। ननद लोग अपने–अपने घरे रहे लोग। कमी कवनों ना रहे बाकिर एहिजा के लोग के मन में बेटी–बेटा के लेके बड़ा अंतर रहे। गाँव के लड़की लोग पढ़े ना जाव। घर के काम धाम के बाद रंग–बिरंग के डलिया–मउनी बीने आ कि दुसुती पर बेलबूटा, तितली आ सुग्गा–सुग्गी काढ़ल करे।

कई बेर ई लोग सौदामिनी लगे दुसूती के डिजाइन पूछे आवे।

"ए बबुनी, रउरा लोग पढ़े काहें ना जानीं? जब देखा तब बस कढ़ाई–बिनाई में लागल रहेनीं सब।" एक दिन अचके सौदामिनी पूछ लिहली। सुनते आँख लोरिया गइल दुनू जनी के।

"ए गाँव के बेटी लोग के भागि में अक्षर से भेंट नइखे भउजी।" "देखीं, मन छोट ना करे के चाहीं बाकिर तनी अपनों कहे सुने के चाहीं। का जाने घर के लोग मान जाव। हमरी नइहरो में सब ना, बाकिर तबो बेटी लोग स्कूले जाली। एहिजा त हम देखतानी कि सब कुआँ में भाँग घोराइल बा।"

"गाँव में कवनों स्कूलो त नइखे न भउजी!"

"त आस–पास गाँव में होई।"

"बाकिर हमनी के नदी पार जाए के साफ मनाही बा नू !"

"ऊ काहें?"

"ई त केहू न बतावेला। बस एतने कि नदी का ओर मुँह नइखे करे के।"

"कइसन लोग बा ए गाँव के !" सोचि के सौदामिनी के मन उदास हो गइल। ओही दिने ओ लोग के गइला के बाद अपनी सास से पुछली सौदामिनी त ऊ जवन बतवली, सुन के सौदामिनी के जीउ धक् से रहि गइल। "ए गाँव के बेटी लोग काँस के जंगल आ नदी पार क के पढ़े ना जाली। लइका लोग जाला।" ऊ बतवली कि "कई गो लइकनी ओ काँस के बन में बिला गइल रहे लोग। का जाने कि कवनों जिनावर खींच ले गइल, नदी लील लिहलस आ कि अजगर घोंट गइल। आज ले कुछ पता ना चलल। तबसे ए गाँव में बेटी–पतोह के ओने चाहे नदी पार पढ़े जाए खातिर एकदम्में मनाही हो गइल। घर के काम–काज आ गुन–ढंग सिखा के बियहि दिहल जाला। ओकरी बाद ऊ जानें आ उनके भागि।" कहत–कहत उनके आँखि से दू ठोप लोर बहि गइल रहे। सुन के सौदा मिनी सन्न रह गइली। बाकिर जबसे कली के जनम भइल आ धीरे–धीरे ऊ गोड़े–गोड़े चले लागल तबसे उनका अपनी बेटी के पढ़ाई के लेके चिंता हो गइल। ऊ ना चाहत रहली कि उनका बेटियो के अक्षर से भेंट ना होखे आ ऊ चूल्हा–चउका आ डलिया–मउनी ले रही जाव। हाथ में कलम के जगह छेदनी आ सुई–डोरा थाम ले। दिन–राति उनका इहे सोच रहत रहे। कबो उनका के कली रंग–रंग में रंगल मूँज से डलिया बीनत लउके त कबो दुसुती पर मोर काढ़त। ऊ चिहा के आँखि मलकावे लागें त देखें कि कली ईया के गोदी में खेलतिया चाहे बाबा लगे गइल बिया। कबो–कबो त राति–राति भर नीन ना पड़े। दिन–रात बस एके सोच कि कली के पढ़ाई कइसे होई!

समय बीतल आ धीरे–धीरे कली चार बरिस के हो गइल। अबले का जाने केतना बेर सौदा अपनी दुलहा रतन से आपन चिंता जता भइल रहली बाकिर रतन ओही समाज के हिस्सा रहलें। कहें कि "तोहार बेटी गाँव के बेटी से अलगे नइखे।"

ई बाति सुनत–सुनत उनके कान दुखा गइल रहे। बाकिर जइसे कली के पाँचवाँ बरिस लागल ऊ अपनी नइहर जाए के रट लगा दिहली। एकरी अलावा उनके लगे अउरी कवनों राहि ना देखात रहे। रतन से कई बेर कहली कि अपनी माई–बाबूजी के आगे ई बाति राखें बाकिर रतन सन्न गन्न मरले रहलें आ कि उनके अपनी माई–बाबूजी से ई बाति कहे के हिम्मत ना पड़त रहे। हारि–पाछि के सौदा खुदे अपने सास–ससुर से बात करे के ठान लिहली। काहेंसे कि कली अब इस्कूल जाए लाएक हो गइल रहली। "कली पाँच बरिस के हो गइली। उनके पढ़ाई–लिखाई खातिर रउवा लोग कुछ सोचतानी कि ना?" परोसल थरिया ओ लोग के आगे धरत कहली सौदा। सुन के सभे एक दुसरा के मुँह ताके लागल। बाकिर बोलल केहू ना। ऊ घूँघुट के भीतरे से सबकी ओर देखली। सास के तियुरी चढ़ि गइल रहे।

"हम सोचतानी कि बबुनिया के लेके अपनी अम्मा घरे चल जाईं। ओहिजा लगहीं गाँव में इस्कूल बा। गाँव भर के लइका लइकनी ओहिजा पढ़े जाला। एहिजा जइसन कवनों डर के बाति ओहिजा नइखे।" हिम्मत क के ऊ दोबारा कहली आ निगाह रतन पर गड़ा दिहली।

"तोहके कली के स्कूल भेजे के बा त भेजा नदी पार। चाचा के नाती कुल जालें, उनकी साथे लगा देब हम। एकरा खातिर नइहर गइला के कवन गरज बा ?" जब रतन देखलें कि सौदा जिद पर अड़ गइल बाड़ी त झनकत कहलें। उनके चेहरा–मोहरा आ हाव–भाव सब बदल गइल रहे।

"हम त सपनों ना सोच सकत रहनी कि रउआ अइसन कहब। बाकिर अब त कहिये दिहनीं त हमरो सुन लीं, हम कली के नदी पार पढ़े खातिर कबो ना भेजब। कबो ना। उनके लेके नइहर जाइब। सुन लीं सभे।" मेहरारू के दू टूक सुन के रतन चउका छोड़

दिहलें। ई देखि के सौदामिनी के रोआई छूटि गइल।

"कहाँ जातानीं जी? जो कली के पढ़ाई के ब्यवस्था ना भइल त पेटे सिलवट बान्हि के कली के लेके नदी में समा जाएब। जान लीं।" आपन घूँघट उलट के चिल्ला के कहली सौदामिनी। चौकठ लाँघत रतन के काने ले उनके आवाज पहुँच गइल रहे। ऊ अपना कमरा में आ के सुसुके लगली। चउका पर सास–ससुर के मुँहे कवर ना गइल। ओदिन से दुनू मर्द मेहरारू में अबोलता ठना गइल। ओही दिन से सास के ब्यवहारो बदल गइल। जेकर दुलहिन–दुलहिन कहत मुँह ना खियात रहे ऊ अब उनके देखि के कगरिया जास। देखते–देखत घर के भीतर के हवा बदल गइल। बाकिर सौदा अपनी निर्णय पर अडिग रहली। ऊ जानत रहली कि आजु ना त काल्हि, घर के भीतर के हवा सोझ बहे लागी बाकिर जदि ऊ एकरी फेर में पड़ गइली त कली के जिनगी के दसा आ दिसा कबो ना बदली।''

ओ दिने पानी के लोटा लिहले सास के कमरा के ओर बढ़त सौदामिनी के डेग अचके रुकि गइल। देवाल से सटल ऊ भीतर से आवत आवाज का ओर कान लगा दिहली।

"हमरे चार गो बेटी में से एको जनी इस्कूल के मुँह ना देखली। एगो करिया अछर से भेंट ना भइल एको जनी के। हमके त नइहर ना जाए दिहल गइल ! जबकि हमार बाबूजी इस्कूल के प्रिंसपल रहनीं। कई बेर उहाँ के कहबो कइनीं कि अपनी बेटिन के भेज दे सुगंधी। एहिजा नाँव लिखवा देतानी, बाकिर ई कइसे होइत? बेटी लोग त रसोई के सोभा होली न! उनके गुन ढंग सिखावा नाहीं त जहाँ जइहें, नाँव धरइहें। इहे कहनीं न अम्मा जी?" ओरहन देत कहली ऊ।

"त का चाहताडू ? तोहार बेटी ना पढ़ली त अब घर के दुसरो बेटी ना पढ़े? जवन कार पुरनिया लोग कइल, उहे हमनियो के कइल जाव? ई ठीक बाति होई?" खिसियात कहलें मधुबन पाण्डे।

"हम कवन कलट्टर बनावे खातिर कहत रहनीं। अरे तनी चिट्ठी–पतरी लिखे–बाँचे लायक हो गइल रहित लोग त केहू दुसरे से त ना लिखवावे के पड़ित। केहू के मन बा त लिख दिहल, ना त निहोरा करत घुमल करा उनकी पाछे।" कहत–कहत ऊ भरभरा के रो दिहली। मेहरारू के आँसू देखि के मधुबन पाण्डे के बोली नरमा गइल रहे। ई बाति के लेके करेजा त उनहूँ के करके बाकिर अब जवन हो गइल, ऊ हो गइल। ऊहो का करतें। अपने बाबूजी के देखलही ना रहलें। महतारी जिनगी भर जर–जमीन के लेके पटिदार लोग से जूझत रहली। उनके बेईमानी आ चार सौ बीसी के सामना करत रहली। का जाने एहिसे ऊ मेहरारू कम आ मर्द ढेर हो गइल रहली। महतारी के कहले से बहरा जाए के हिम्मत उनके जिनगी भर ना भइल।

"का चाहताडू ? ईहे न कि तोहरो पतोह तोहके जिनगी भर कोसे, गरिआवे ?" अपनी मन में उपजल सोच के धकिआवत कहलें ऊ। ससुर के कहल सुन के सौदा के आँखिन लोर भर गइल। ए घर में केहू त बा, जे उनके मन के बाति बुझता। ऊ धीरे से गोड़ दबा के हटते रहली कि रतन के आवाज उनके काने पड़ल।
"समझल करा अम्मा! दिदिया लोग के तरे कलियो अनपढ़ रहि जाव? ईहे चाहताडू का?" सुन के सौदामिनी के मन से सब शिकाइत दूर हो गइल।''

फगुआ बितला के बाद से सौदा के जाए के तइयारी होखे लागल। कली खातिर नया कपड़ा–लत्ता, बस्ता, स्लेट, खढ़िया ले किना गइल रहे। सौदा अपनी आवे के सूचना चिट्ठी लिखी के नइहर भेज दिहले रहली।
"अब त खुश बाडू न ?" रतन गहिर नींद में सुत्तल कली के माथ सुधरावत कहलन।

"रउआ खुश नइखीं का जी?" कहत सौदा लालटेन के बत्ती बढ़ा दिहली। कमरा अन्हार से भर गइल।

"बहुत खुश बानी। बाकिर तोहरा लोग बिना कइसे रहब एतना दिन ले?" बेटी के भविष्य खातिर एतना बिछोह त सहहीं के पड़ी जी। आ कवन बिदेश जातानी
हमनी का? जब मन करे तब जीप मिसरौली की ओर घुमा देब।" पलंग पर बइठ के सौदा कहली आ रतन के हाथ पर आपन हाथ ध दिहली। ओही समय चंदा मामा खिड़की से झँकलन आ कमरा रेशमी उजास से भर गइल।''

बहरा जीप तइयार रहे। सब सामान धरा गइल रहे। कली तइयार होके जीप लगे बाबा के हाथ पकड़ के ठाड़ रहली। सौदा देवकरी में गोड़ लागि के अइली आ अपनी सास के आगे निहुर गइली। सुगंधा उनका के बीचे में थाम के अँकवार में भर लिहली। सौदा उनके बेआवाज

बिसुरल बूझत रहली। उनहूँ के आँखी लोर भर गइल। एगो महतारी के मन महतारिए बूझेली। दुनू जनी आँसू गिरावत रहली कि तबे बहरा से पुकार उठल। सुगंधा पतोह के अपनी अँकवार से आजाद क दिहली।

"बबुनिया तनी बड़ हो जाई त हम लवटि आएब अम्मा जी। ओकर नानी ओकरा के देखि लीहें।"

"ना ना दुलहिन। एकदन निश्चिन्त हो के जा बाबू। हँ, बबुनिया के ख्याल रखिहा। जुग जबाना बड़ा खराब बा आ चिट्ठी पत्री भेजत रहिहा। जेसे तोह लोग के खोज–खबर एहिजा मिलत रहे।"

"हँ अम्मा जी!" कहि के सौदामिनी मुख्य दुआरि के चौकठ लाँघ के बहरा निकल गइली। सुगंधा उनका के जात देखत रहली। मन के अतल में आजु कुछ बुलबुला फूटत रहे। बहुत गहिर में दबल आवाज आजु मुखर हो के जइसे उनसे कहत रहे, "सुगंधा, काश कि तूहूँ अपनी बेटिन खातिर एहिंगा हिम्मत जुटवले रहितू!"उनकी आँखी सावन भादों के झड़ी लाग गइल रहे।''

चिक चिक के आवाज से हम चिहा के आँखि खोल लिहनी। देखनी त कईगो चिखुरी टैरिस पर आ के पानी भरल नदुली पर बइठ के अपनी बोली में कुछ बतियावत रहे लोग। का बतियावता लोग ? मन में बिचार उठल कि तबे एगो भागलि। रिसिया के कादो। दोसरकी
उनका पाछे भागल। शायद उनका के मनावे। तिसरकी बड़का गमला में लागल अमरूद पर चढ़ गइल आ चौथी चिखुरी नदुली से घूँट–घूँट पानी पीए लागलि।

"कालिंदी! चाय ठंढा हो रहल बा। ज़ल्दी आवा भाई।" प्रबल के आवाज़ से हम चिहा के उठ के ठाड़ हो गइनी। तबे छत पर गौरइया लोग उतर के चहकल, फुदकल शुरू क दिहल। उनकी चहकला में हमके अम्मा, ईया, आ फुआ लोग के खिलखिलाहट सुनाई देत रहे। ई सब देखि के हमरी ओठे पर मुस्की आके थम गइल रहे।••

❑ 437–दामोदर नगर, बर्रा, कानपुर 208027, मो०. 9838944718

कविता

गुरुविन्द्र सिंह

जइसे गँहकी के घेरेलन दलाल भइया
ढेर यारी होई जिउ के जंजाल भइया !!

कमवाँ बनाइ देई तहरे के धोखा
कइ के बेमार फेरू बन जाई सोखा
रही कउआ, चली हंसन के चाल भइया!!

बनि के इयार,करी आपन कारोबार
जोड़ि तहरे से तार,देखी आपन सुतार
होई तहरे से सगरी सवाल भइया !!

बाँचे कुकुरझोंझ से,अकेल रहे भाई
बचले में आजकल बड्डुवे भलाई
तबे करिया ना होई तोहर दाल भइया !!

इहाँ तीन–पाँच काम, होइबा तूहूँ बदनाम
ए इयारन से होइ जाई जियलो हराम
संगी–साथी –फरजी जिउआ के काल भइया

❑ ई–67 ए, गली नं० 6, ब्लाक–ई,
कुतुब बिहार गोयल डेयरी, नई दिल्ली

विश्व भोजपुरी सम्मेलन के दिल्ली अधिवेशन के कुछ झलकी

विश्व भोजपुरी सम्मेलन के राष्ट्रीय अधिवेशन में सर्वसम्मति से नई कार्यकारिणी का गठन

अजीत दुबे
राष्ट्रीय अध्यक्ष

अशोक द्विवेदी
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

अपूर्व नारायण तिवारी
राष्ट्रीय समन्वयक

नई दिल्ली। विश्व भोजपुरी सम्मेलन के 18वें राष्ट्रीय अधिवेशन का आयोजन नई दिल्ली में एक भव्य समारोह के साथ संपन्न हुआ। इस अधिवेशन में सर्वसम्मति से नई कार्यकारिणी का गठन किया गया। सम्मेलन में भोजपुरी भाषा, साहित्य, लोक संगीत और संस्कृति के संरक्षण पर विशेष जोर दिया गया। राष्ट्रीय और प्रांतीय स्तर पर पदाधिकारियों के नामों की घोषणा की गई, जिसमें श्री अजीत दुबे को पुनः राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में चुना गया। दिल्ली इकाई के अध्यक्ष का दायित्व श्री विनयमणि त्रिपाठी और महासचिव की जिम्मेदारी डॉ. मनीष कुमार चौधरी को फिर से दी गई। सम्मेलन के संरक्षक के रूप में श्री सतीश त्रिपाठी और डॉ.अरुणेश नीरन को नियुक्त किया गया। राष्ट्रीय महासचिव का दायित्व डॉ.अशोक कुमार सिंह को सौंपा गया। उपाध्यक्ष पद पर डॉ.अशोक द्विवेदी (बलिया),जयप्रकाश सिंह (एडिशनल डीजीपी, हिमाचल प्रदेश,छपरा), प्रो. संजीव तिवारी (दिल्ली), प्रो. गुरु चरण सिंह, (सासाराम) डॉ.प्रेमशीला शुक्ल (देवरिया) को चुना गया। सचिव मंडल में श्री जगदीश नारायण उपाध्याय (कार्यालय), डॉ.देवेन्द्र नाथ तिवारी (संगठन), केशव मोहन पांडेय (संगठन),श्री सुल्तान शहरयार खान (आयोजन),श्री भरत चतुर्वेदी और श्री मुन्ना पाठक (सूचना/प्रसार) को शामिल किया गया। राष्ट्रीय समन्वयक के रूप में डॉ. अपूर्व नारायण तिवारी और अंतराष्ट्रीय समन्वयक के रूप में श्री दिलीप गिरि को नियुक्त किया गया। आर्थिक प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में श्री पंकज जायसवाल और युवा मामलों के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में श्री अजीत सिंह को चुना गया। शोध एवं संवर्धन समिति में श्री देवकान्त पाण्डेय और श्री जलज मिश्रा को शामिल किया गया। नवगठित त्रिपुरा इकाई के अध्यक्ष का दायित्व प्रो. विनोद मिश्र और डॉ.आलोक को महासचिव की जिम्मेदारी दी गई। इस अवसर पर भोजपुरी भाषा और संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए कई महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किए गए। सम्मेलन में उपस्थित सभी सदस्यों ने भोजपुरी की वैश्विक पहचान को मजबूत करने और इसे संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल कराने के लिए एकजुट होकर कार्य करने का संकल्प लिया।

अशोक द्विवेदी के उपन्यास ''वन्या'' के साहित्य अकादमी रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली में विमोचन/विचार गोष्ठी

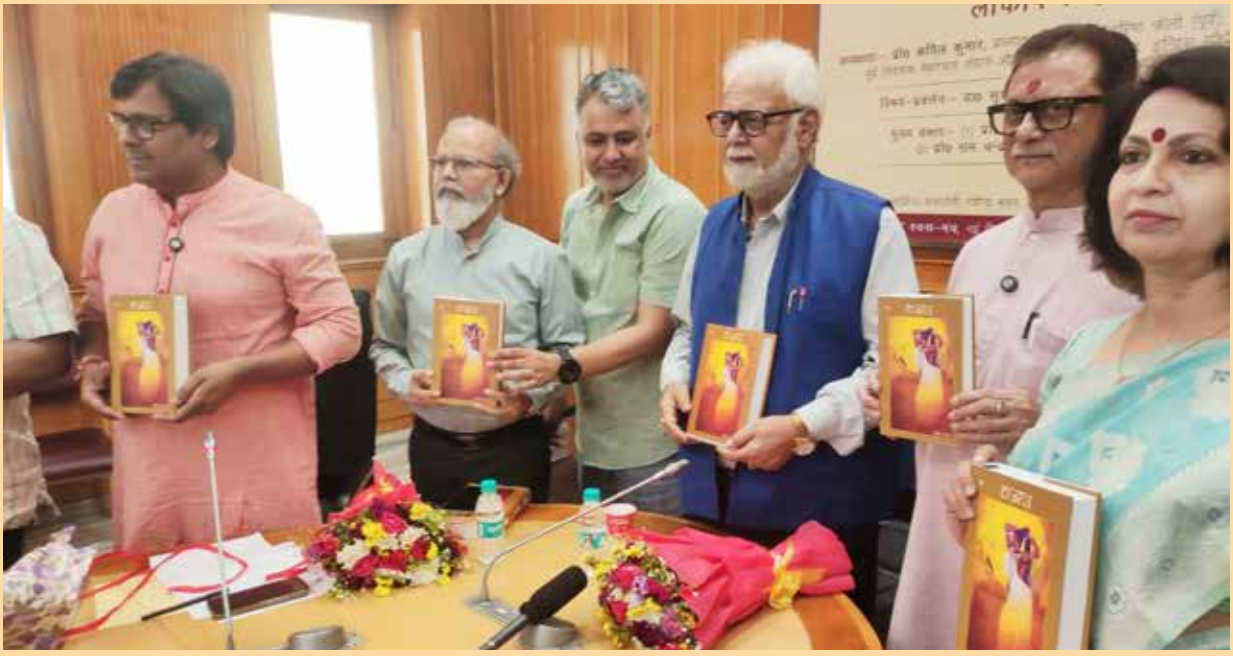

प्रो0 रामचन्द्र (जे0एन0यू0), प्रो0 अल्पना मिश्र (दिल्ली विश्व विद्यालय), प्रो0 कपिल कुमार (प्रख्यात इतिहासकार एवं वरि0फेलो), डा0 प्रमोद कुमार तिवारी, अजित दुबे, डा0 सुशील कुमार तिवारी, डा0 सान्त्वना एवं प्रख्यात कवि बुद्धिनाथ मिश्र आदि

विश्व भोजपुरी सम्मेलन, बलिया अधिवेशन आ ''पाती-अक्षर-सम्मान'' समारोह 2025

बापूभवन, टाउनहाल, बलिया

विशिष्ट अतिथि : डा0 सुधाकर तिवारी, श्री जगदीश उपाध्याय, डा0 जयकान्त सिंह,विजय मिश्र, प्रो0 सदानन्द शाही, प्रो0 दिवाकर पाण्डेय, प्रो0 राम सुधार सिंह, प्रो0 दिवाकर तिवारी, डा0 प्रकाश उदय,

प्रो० पृथ्वीराज सिंह के किताब ''भोजपुरी भाषा और कैथी लिपि के विमोचन

हिन्दुस्त

'पाती अक्षर' से सम्मानित किए गए चार रचनाकार

- बापू भवन में भोजपुरी साहित्यकार सम्मेलन
- कवियों ने एक से एक बढ़कर रचनाएं सुनाईं

वरि0 पत्रकार विनय बिहारी सिंह एवं विनोद द्विवेदी को हिन्दी-सेवा सम्मान

पं0 विजयशंकर पाण्डेय के वाराणसी आवास पर कवि-संगोष्ठी

का पर करीं सिंगार....

कमलेश

पिया गइले कलकतवा उदास कइले ना.....

गीत के बोल सुनाते बुझाइल जे केहू खउलत तेल कान में एकदम हरहरा के डाल देले होखे। सुतलो में सिहर गइली निरमला। देह एकदम छटपट। गीत के बोल धक दे करेजा में लागल। बुझाइल जे गोड़ भीरी चढ़ल सुरसुरी मए देह में दउरत सीधे करेजा प चढ़ गइल होखे। सांस अइसन हाली–हाली चले लागल जइसे हंफनी चढ़ल होखे। सांस के थिर करे के खातिर उठ के बइठ गइली। बइठते आंखिन का कोरा ले लोर के एगो बून ढरकल। पोछे खातिर हाथ लगवली त बुझाइल कि गाल से गरदन तक भींजल बा। मने सुतलो में रोवत रहली हा का? का जाने कवन राम–राम के बेरा में इ गीत गवलस। एकदम बिरह में तड़पत आवाज। सुन के उनुकर मन कुहूक गइल। तकिया के बगल में हाथ लगवली आ खींच के निकलली मोबाइल फोन। टोवत–टोवत एगो बटन दबली आ भक दे अंजोर हो गइल। एह अंजोर में देखली आ चिहुंक के उठली– अरे बाप। अभी तुरत्ते त सुतनी हा। एतना जल्दी भोर के चार बज गईल? कब नहाए जाइब आ कब लउट के बाकी काम होई? इ पूस के जाड़ में ओढ़ना के नीचे से निकले के मनो त ना करे।

अचके में बिछौना छोड़ के उठ गइली निरमला। बगल में बिछल खटिया प नजर पड़ल त मुस्की छूट गइल। बारह साल के सुरेन्दर अपना ओढ़ना में एकदम किकुर के सुतल रहे। दूनो हाथ के बान्ह के दूनो गोड़ के नीचे अइसन दबइले रहे कि एकदम पांच साल के छोट बच्चा नियन लागत रहे। बुझाता जे एगो कम्मर से एकर जाड़ नइखे भागत। उ उठली आ आपन ओढ़ना ओकरा कम्मर प डाल दिहली। सुरेन्दर कुनमुनाइल। निरमला के जीउ ना मानल। उ अपना खटिया प जवन लेदरी बिछवले रही उहो उठा के सुरेन्दर के कम्मर प डाल दिहली। एकरा बाद ओकर माथा सोहरावे लगली। सुरेन्दर के मुंह प हंसी नियन आ गइल। बुझाता जे कवनो नीक सपना देखता। छौंड़ा के मुंह देखला प बुझाला जे बाप के मुंह साट दिहल होखे। बोले आ चले के तरीको एकदम बापे लेखा सीख लिहले बा। ओकर माथा चूम लिहली आ धीरे से बोललीं– "बहेंगवा।"

एक्के झटका में खाड़ भइली आ देह प एगो चादर डाल के बहरी निकल गइली। अभी एकदम करिया अन्हार। एगो त हाड़ कंपा देबे वाला जाड़ा आ ऊपर से भकसावन अन्हरिया। एह में घर से बाहर निकले में केहू के हालत खराब हो जाए। बाकिर निरमला के त जइसे देह लोहा के होखे। उ अइसन आराम से अपना कोठरी के बाहर निकलली जइसे उनका अन्हारो में लउकत होखे। बड़ी आसानी से दीयरी बार के एक ओरि रख दिहली। गांव में बिजली त आ गइल बिया बाकिर छव महीना पहिले चोर–चुहाड़ तार काट ले गइलन स। एकरा बाद जवन बिजली कटल त दुबारा ना आइल। बिजली विभाग के अफसरन के कहनाम बा कि टोला के लोग पइसा जुटावे आ तार खरीद के देबे। एकरा बादे फेनू लाइन दियाई। अब ना नौ मन तेल होई आ ना राधा नचिहन।

दीया जरल त भक दे निरमला के मुँह पर अँजोर हो गईल। सांवर रंग, बड़–बड़ आँख, लमहर नाक आ भरल–भरल ओठ। केस पीछे कमर तक अइसन लटकल जइसे देह प नागिन लपटल होखे। निरमला के उमिर त पैंतीस बरिस से जादा होखी बाकिर देह धाजा आ मुँह प पानी अइसन कि कबो तीस से जादा के ना लागस। आपन कहे के नाम प एक धूर जमीन आ ओही प माटी के कोठरी जवना प टीन के छप्पर। एह कोठरी में रहे वाला खाली दू गो परानी– निरमला आ उनुकर बारह साल के बेटा सुरेन्दर। मरद सुदरसन यादव पांच साल पहिले कलकत्ता गइले। ओहिजा कवनो बड़का घर में गारड के नोकरी। पहिले त छठ आ होली में आ जात रहन बाकिर दू साल ले दरसन मोहाल बा। बातचीत करे के खातिर मोबाइल फोन कीन के दे देले बाड़न। रात–बिरात बात हो जाला। अबकी छठ में घरे ना अइलन त टोला के मेहरारू सब केतना अल–बल बोलत रही स। गोतिया–दयाद के लोग सब जनलो के बाद तरह–तरह के सवाल पूछेला। अब एही छठ में खरना के परसादी खाये निरमला सुशीला चाची के घरे गइल रहली। चाची उनुका माँग में सेनुर डलला का बाद पुछली– ''सुदरसन छठो में ना अइलन हा दुलहिन?''

''ना। छुट्टी ना मिलल हा अबकी।'' निरमला के आंख नीचे हो गईल।

''अबकी होलियो में ना आइल रहले। अरे एतना कमा के का करिहें सुदरसन? आके आपन घर परिवार देख लेबे के चाहीं। जुग–जमाना ठीक नइखे चलत।''

एतना बोलला के बाद सुशीला चाची निरमला के दूनो कान्ह ध के असीसली– ''जीय, जाग, दुआर प खूब लइका–लइकी खेल स।''

निरमला किछुओ ना बोललली। उ सुशीला चाची के गोड़ छुए के खातिर निहुरली तले पीछे से सिधनाथ बो हंस के कहली– ''मरद रही बाहर त लइका उधार–पईंचा से आके खेलिहन स चाची? एहिजा त इहे डर बा कि कहीं भिखारी ठाकुर के नाटक बिदेसिया वाला खेला मत हो जाव।''

निरमला तनी आंखि तरेर के सिधनाथ बो का ओरि देखली। सिधनाथ बो के साथे मजाक के नाता बा। बाकिर मजाके– मजाक में उ अइसन बात बोल देबेली कि खचाक दे करेजा में लाग जाला। निरमला के खिसिया के देखला के बादो उ अपना धुन में रही– ''अरे कलकत्ता में मए जादोगरनी भरल बाड़ी स। कहीं कवनो सुदरसन भइया के बान्हि के रख लेलस त निरमला भउजी के कवनो बटोहियो ना मिली जवन उनुका के लवटा के ले आव।'' उनुकर बात प मए मेहरारू ठठा के हंसे लगली स। निरमला के आंख डबडबा गइल। उ चुपचाप अपना अंचरा में रोटी–रसियाव के परसादी लिहली आ निकल गईली।

उरेब बोले वाला के का पता जे उ अकेले कइसे जिनगी के काट रहल बाड़ी। जब से सुदरसन यादव गइल बाड़े कलकत्ता तब से रोज सीतला माई के गोहरावेली– ''एहवात के गांवे लउटाव ए माई।''

सुदरसन यादव के छोट परिवार। कुल्हि जमा तीन गो परानी। गांव में उनुका खाये–पीये आ रहे के कवनो कमी ना रहे। बाकिर सुदरसन के कहनाम रहे कि खाली खइले–पीयले से जिनगी ना नू कटे। आगा का बारे में भी सोचे के चाहीं। सुरेन्दर बड़ होखता। ओकरा के बगसर भेज के पढ़ावे के होई। ना बढ़िया से पढ़ी त बड़ आदमी कइसे बनी। रात–दिन बस एही फिकिर में पड़ल रहस। ओह साल कलकत्ता से अइले निहोरा यादव आ ओहिजा के कमाई के खूब बखान कइले। गांव के कतने नवहा कलकत्ता जाए खातिर पगलाइल रहन स। सुदरसन यादव कमाई का बारे में सुन के बउरा गइलन। धइलन निहोरा यादव के हाथ आ चल दिहले कलकत्ता। केतना रोकली निरमला। खूब रोअली–गवली। बाकिर सुदरसन ना रुकलन। ओहिजा जाके पहिले एगो कपड़ा के मिल में काम करे लगलन। बाकिर किस्मत के मार। एगो रात में करम फूटल आ मिल में आग लाग गइल। मिल बंद हो गईल आ काम करे वाला मए जाना सड़क प। एन्ने–ओन्ने खूब दउगलन सुदरसन त एगो बड़का घर में गारड के काम मिलल। रहे आ खाए के त फिकिर नइखे बाकिर इ चौबीस घंटा के काम बा। एही ले अब उनुका छुट्टी ना मिले।

परब–तिउहार प सुदरसन के ना अइला प कबो–कबो निरमला अल–बल सोचे लागेली। कहीं सचहूं बिदेसिया वाला गत मत हो जाव उनुकर मरद के। एक हाली फोन प उ सुदरसन से खूब लड़ली। कहे लगली चाहे उ उनुकरो के कलकत्ता बोलावस आ ना त उ गाँवही आ के रहस।

सुदरसन खूब समझवलन– ''पगला गइलू का तू? तहरा के एहिजा ले आइब त का खाइब आ का बचाइब? आ तुहू कलकत्ता आ जइबू त गाँव के घर–दुआर

के देखी? गोतिया–दयाद अइसहीं नजर गड़वले रहेलन स। काल्हुए दखल क लिहन स।'' उनुकर बात सुन के ओह घरी त निरमला चुप हो गइली बाकिर बाद में खूब रोअली।

घर में मेहरारू के आपन मरद ना रहे त गाँव भर के मरदन के इहे बुझाला कि उ केहू के बिछौना प आ के सुत सकेले। निरमला जब घर से बहरी निकलस त बूढ़ से लेके जवान तक सभ अइसे देखे जइसे अंखिये से उनुकर देहिया के नाप ले लीही लोग। अब एक दिन निरमला टोला के अउरतन का साथे मिसिरजी के खेत में काम करत रही तले ओने से टघरत अइलन बिन्देसरी महतो। उमिर पचास पार हो गइल बा बाकिर जवानी के आदत नइखे छूटल। कुंआर लइकी से लेके बियाहल मेहरारू तक सभ के उरेब बोल देस। ओह दिन निहुर के काम करत रही निरमला। अचक्के में उनुका बुझाइल जे पीछे केहू खाड़ बा। करेजा धक दे कइलस। तुरत पीछे घुमली। बिन्देसरी महतो पीछे खड़ा होके खइनी मसलत रहन। निरमला के त जइसे मए देह में आग लाग गइल। बिन्देसरी महतो मुसका के कहलन– ''रात दिन काम करत रहेलू। कबो आपन देहियो के बारे में सोचऽ भउजी।''

''भउजी कहत लाज नइखे लागत महतो। हमरा उमिर के तहार बेटी–पतोह बाड़ी स। उमर राम–राम करे के भ गइल बाकिर अभियो अपना से कम उमिर के मेहरारूअन के भउजी कहत चलताड़।'' निरमला अइसन चिचिया के कहली कि अगल–बगल काम करत दोसर मेहरारू भी खाड़ हो गईली स।

''अरे खिसिया काहे गइलू। हम त अइसहीं..।'' बिन्देसरी महतो अइसन जवाब सुने खातिर तइयार ना रहन।

''चुपचाप एहिजा ले चल जा। अबरा के मउगी भर गाँव के भउजी वाला खिस्सा एहिजा ना चली।'' निरमला कड़क के कहली। बिन्देसरी महतो जल्दी से खइनी ओठ के नीचे दबा के चले लगलन।

''आ सुन ल बिन्देसरी महतो। दुबारा हमरा के भउजी कहल त तहार एक्को करम बाकी ना छोड़ब।'' निरमला आपन हाथ में धइल हंसिया हवा में लहरवली। बिन्देसरी महतो के त जइसे पानी उतर गईल। अइसन भगलें जइसे चोर जगरम होखला प भागेलन स। एकरा बाद निरमला के मन काम करे में ना लागल। उनुकर मन एकदम बेचौन हो गईल। घरे आके फूट–फूट के रोए लगली। घर में आपन आदमी नइखे एही से नू कोई दू गो बोल कह के निकल जाता। सुदरसन रहितन त केहू के बेंवत रहे जे अइसन कुबोल कह के निकल जाइत। उबकुरिये खटिया प गिर के रोवत–रोवत कब सुत गइली पता ना लागल। नींद टूटल जब बएना लेके पहुँचली सुन्दरी चाची। उनुका बेटी के ससुरार से मिठाई आईल रहे। निरमला के मुँह देखते उनुका मए बात बिना कहले बुझा गइल। दरद के भाखा बूझे में मेहरारूअन के कवनो जोड़ ना होखे। उ निरमला के अपना करेजा से सटा लिहली– ''रोअ मत दुलहिन। चुप रह। हमरो आदमी नौ साल दिल्ली में रहलन। बुचिया के करेजा में साट के कइसे दिन कटलीं हमहीं बुझतानी। बाकिर सीतला माई के किरपा। समय प लउट अइलन दिल्ली से। तुहू उहे उपाय कर जवन हम कईनी। रोज किरन उगे के पहिले नदी के किनारे सीतला माई के पिंड बना के पूजा करऽ। साल बीतत ना बीतत माई तहरा अहिवात के लवटा दीहन।''

तब से रोज अन्हारही निकल जाली निरमला। आजुओ किरिन फूटे के पहिले निकल गइली सिकरौल घाट। घाट टोला से जादा दूर नइखे। जादा से जादा आधा कोस। जाड़ा, गरमी भा बरसात। कवनो अंतर ना पड़े। हाथ में डोलची आ डोलची में चार–पांच गो डिबिया। कवनो में सेनूर त कवनो में रोरी आ कवनो में लिचीदाना। साथे एगो अगरबत्ती के डिब्बा आ माचिस। कान्ह प नहइला के बाद पहिने के खातिर लूगा–साया आ कुरती। निरमला नदी के किनारे पहुँचली त एकदम सन्नाटा। आदमी त दूर कवनो चिरियो–चुरूंग ना। बाकिर निरमला के देह में ना ठंडा के असर आ ना कवनो डर–भय। किनारे पहुँच के डोलची आ कपड़ा रख दिहली। नदी में गोड डलला के पहिले चुरूआ में पानी ले के कपार प डलली आ दूनो हाथ जोड़ लिहली। एकरा बाद धीरे–धीरे गोड़ बढ़ावत कमर भर पानी में जा के खाड़ हो गइली। पानी त अइसन जइसे बरफ होखे। बुझाइल जे कमर के नीचे के मए देह एकदम सुन्न हो गईल होखे।

माथा प अँचरा डाल के दूगो डुबुकी। देह अइसन काँपे लागल कि खाड़ भइल मुसकिल। दाँत के कटकटइला से होखे वाला आवाज जइसे दू बाँस दूर से सुना जाए। निरमला पूरा देह कड़ा कइली आ दूनो हाथ फइला के पूरब ओरि मुँह क के खाड़ हो गइली। एकरा बाद दूनो हाथ जोड़ली आ ओठ प बुदबुदी। का जाने कवनो मंतर पढ़त रही कि दोहा। एही तरे तब

ले खाड़ रहली जब ले पूरब में ललछिहूं ना हो गइल। नदी से बाहर निकलला के बाद भींजले साड़ी में बइठ गइली किनारे। नदी के भीतर से गील माटी निकलली आ किनारे गोल पिंड लेखा बना दिहली। एह पिंड प पहिले रोरी के टीका, फेनू सेनूर आ दू गो फूल। एकरा बाद अगरबत्ती जरा के पिंड के चारो ओर देखा के ओहिजे खोंस दिहली। लिचीदाना के चार गो दाना चढ़वली आ पिंड का सोझा पटक दिहली आपन माथा– ''एहबात बना के रखिह ए माई। उनुकर मति बदल द। फेनू उनुका के गाँव में लउटा के ले आव। सुरेन्दर के पीठी सहाय होखिह माई। उनुकर अरुदवाय बढ़इह।''

आपन माथा उठवली। पूरा माथा में नदी के किनारे के माटी सट गइल रहे। अबकी हाथ जोड़ लिहली– ''मए गाँव–जवार सुखी रहे माई। अब कवनो रोग बलाय ना फइले।''

एकरा बाद डबडबाइल आँखिन ले नदी के ओर तकली आ दूनो हाथ जोड़ के मूड़ी नवा दिहली– ''तोहरो से निहोरा बा ए माई। सुरेन्दरा के बाबू के अब कलकत्ता से बोलावऽ ए माई। पाँच बरिस हो गइल। अब कबले घर सून रखबू। तू मए गाँव के मान के रखवाला हऊ। हमरो सेनूर के देखिह ए माई।''

एकरा बाद पीपर का फेड़ के आड़ में जाके भींजल लूगा खोल के दोसर पहिन लेली। तले सूरज नारायन के किरिन फूट गईल रहे। दूनो हाथ जोड़ के सुरुज नारायन के गोड़ लगली आ डोलची उठा के घर का ओर जल्दी–जल्दी चले लगली। घरे पहुँच के रोटी सेंके के होई। जल्दी से रोटी ना सेंकाई त सुरेन्दर बिना खइले इसकूल भाग जाई। पढ़े के ओकर लगन देख के निरमला के जीउ जुड़ा जाला। जब उ अंगरेजी में धाँय–धाँय बोले लागेला त उनुका इहे बुझाला कि उनुकर मए मेहनत के फल मिल गइल होखे।

गाँव के सीवान में ढुकबे कइली कि एगो चहकल बोली कान में पड़ल– ''का ए दीदी। खाली सिकरौले घाट प नहइबू कि गंगो जी के पानी डलबू देह प।''

पलट के देखली निरमला। सोझा सुमेर के मेहरारू कान्ह प पुआर रखले आवत रही। सुमेर के बियाह पांच साल पहिलही भइल रहे। सुदरसन के छोट भाई लागेलन सुमेर। एहि से उनुकर मेहरारू उनुका के दीदी कहेली।

''पगलाइल बाड़ू का कनिया? गंगाजी नहाय के माने बगसर जाए के पड़ी। आ बगसर गइला के माने पूरा दिन के झंझट। बाकी के काम कब होई?'' निरमला के बोली में दुलार छलकल।

सुमेर के मेहरारू कान्ह प के पुआर नीचे पटक दिहली– ''खाली कामे–काम होई दीदी? हमनी के जिनगी के कवनो सवख बा कि ना?''

''इहे त अउरत के जिनगी ह कनिया। बियाह के पहिले माई–बाप के खूंटा से आ बियाह के बाद भतार–पूत का खूंटा में। बन्हइले कट जाले जिनगी।'' निरमला कान्ह प रखल भींजल लुगा हाथ में ले लेली।

सुमेर के कनिया निरमला के कान्ह पर हाथ धइली– ''कबो–कबो खूंटा से पगहा तूड़ के निकलहू के बारे में सोच दीदी।''

निरमला किछुओ ना बोललली। बस धीरे से हंस दिहली। 'सुन ना दीदी। अगिला सोमार के खिचड़ी के मेला लागी बगसर में गंगाजी का किनारे। चल ना गंगाजी नहाइल जाई आ मेला घूम–घाम के सांझ ले लउट आवल जाई। तू चलबू त हमरो गइला प केहू बोली ना।" सुमेर के कनिया निहोरा कईली बाकिर उनुकर आवाज में कवनो छोट लइकी लेखा जिद झलकत रहे।

''आछा। देखतानी। सुरेन्दर के इसकुल ना रही त चले के बारे में सोच सकीला।'' कह के फेनु उहे तेजी से अपना घर का ओरि बढ़ गइली निरमला।

साँझ के इसकुल से आवते सुरेन्दर बस्ता खटिया पर पटकलस आ निरमला के गला में हाथ डाल के झूले लागल। निरमला ओकर माथा सोहरवली– ''आज बड़ा दुलार देखावल जाता माई से। भूख नइखे लागल का?'' ''जानताड़े माई। एतवार के त इसकुल बंद रहेला आ अबकी सोमारो के छुट्टी बा।'' सुरेन्दर के आवाज से खुशी छलकत रहे।

जइसे सुरेन्दर इ बात कहलस निरमला के सुमेर के कनिया के बात इयाद आ गइल। उ सुरेन्दर के मुँह आपन दूनो हाथ मे ले लेली– ''त चल बेटा, सोमार के बगसर चलल जाव। खिचड़ी के मेला घूमल जाई। सांझ ले गाँवे लउट आवल जाई।''

''सांचो माई?'' सुरेन्दर आपन माई के चेहरा अइसे देखलस जइसे ओकरा सोझा निरमला ना कवनो अउर मेहरारू होखे।'

''सांचो ना त झूठ बोलतानी हम? चल, जल्दी से रोटी खा ले।'' कह के थरिया में सुरेन्दर खातिर खाना निकाले लगली। साँझ डूबत–डूबत उ सुमेर के घरे पहुँच के

कनिया के इ बात बता चुकल रही। दूनो घर में बगसर जा के गंगा असनान करे आ मेला घूमे के तइयारी सुरू हो गइल रहे। सुरेन्दर त अंगुरी प दिन गिने लागल रहे। गाँवे से बगसर गईल कवनो आसान काम थोड़े बा? गाँवे से तीन कोस पैदल चलला प मिलेले बस। इ बस दू घंटा में रघुनाथपुर पहुँचा देबेले। ओहिजा ले रेल पकड़ के आवे के पड़ेला बगसर। एहू में दू घंटा त लागिये जाला। निरमला कबो–कबो सोचेली कि मए नहान के मेला सहरिए में काहे लागेला? एकाध दूगो मेला उनुका गाँवहू में लागित। ओहिजो उमड़ित भीड़।

गाँवे से भोरे पाँचे बजे निकलल लोग। निरमला का साथे सुरेन्दर आ सुमेर के कनिया। गाँव–टोला के दस–बारह गो आउर मेहरारू। एकाध गो बूढ़ पुरनिया लोग भी चलल। होखल जय–जयकार कस के– गंगिया महरानी की जै।

बस में त कवनो तकलीफ ना भइल बाकिर रघुनाथपुर में ठेलमठेल। रेल में चढे में त निरमला के मए करम हो गईल। बाप रे बाप। केतना आलम। सभके बगसर जाए के बा। सकरात के दिन गंगाजी में असनान के पुन सबके चाहीं। निरमला केहू तरे सुरेन्दर के रेल में बइठा दिहली आ अपने खिड़की के अलम ले के खाड़ हो गइली। टिकसो कटावे के जगहा ना मिलल। कवनो बात ना। एह भीड़ में टिकस के देखे आवता? बगसर में उतरली त पहिले धांय देना आपन मुड़ी जमीन प पटक दिहली– सियाबर रामचंदर भगवान की जय। रामजी आइल रहिले एहिजा। ताडिका के एहिजे बध कइले। माटी उठा के सुरेन्दर के माथा प लगवली। गाँव के मए लोग आगा–पीछा होखत चल दिहल गंगाजी के किनारे। साथे चलत राम अवधेस चाचा बतवले– ''टिसन से सोझ रास्ता बा रामरेखा घाट। एकदम पवित्तर घाट। रामजी एहिजे नहइले रहन।'' सड़क प भीड़ अइसन कि चले के कवनो जरूरत नइखे। आदमी धंसोरात–धंसोरात घाट प पहुँच जाई। सड़क के किनारे जगहे–जगहे तेलहा जलेबी छनात बिया। साथे पूड़ी–कचौड़ी आ तरकारी भी बिकाता। फुलौना आ खेलवना के दोकान सभ अइसन सजल बाड़ी स कि कवनो लइका के मन मचल जाई। सुरेन्दरो के मन मचलल– ''माई, खेलवना का दोकान प चल ना।''

''बहेंगवा के टाटी मत बन। चुपचाप पहिले घाट प चल। नहा–धोआ के पूजा पाठ का बाद पहिले दही–चूरा खा लिहे। ओकरा बादे कवनो दोसर काम।'' सजाव दही, चूरा आ गुड़ गांवे से लेके चलल बाड़ी निरमला। बगसर में कइसन दही मिली कवन भरोसा? घाट के भीरी पहुँच के त उनुकरो मन अटपटा गइल। केतना सिंगार–पटार के दोकान। का नइखे बिकात। चूड़ी, कंगन, सेनूर, गोर बनावे वाली कीरिम, महकउवा पौडर। सब सड़के के किनारे। सुमेर के कनिया के त बुझाए जे उनुकर बगसर आइल सफल हो गइल। उनुकर बस चले त मए दोकाने उठा के गाँवे चल जास। बार–बार निरमला का ओरि ताकस–''दीदीया, खाइल–पीयल बाद में जाई। पहिले त हम भर हाथ चूड़ी पहिनब। किरिम आ पाउडर सभ लेब। तुहू ले लीह। अरे दुल्हा अइहे त लगा के बइठबू त उनुकरो मन हरियरा जाई।''

उनुकर पीठ प धीरे से थाप लगवली निरमला– ''अरे कनिया, पहिले जवन काम करे आइल बाडू उ क ल।''

रामरेखा घाट। निरमला पहुंचते हाथ जोड़ के गोड़ लगली। केतना बड़–बड़ मंदिर। आ गंगाजी के पाट। बाप रे। अइसन बुझाए जे खाली पानीए पानी। एगो पंडाजी का भीरी मए सामान रखाइल आ गंगाजी के पानी में उतरल लोग। खूब प्रेम से असनान भइल। सुरेन्दर त मन भर पवरलन। एहिजा काहे के ठंडा लागो। नहइला के बाद पूजा–पाठ। किनारे भिखमंगन के लाइन। आजु के दान–पुन ऊपर काम आई। एकरा बाद घाटे प बइठ के चूरा दही आ गुड़। तनिके–तनिके खाइल लोग। तेलहा जलेबियो त खाए के बा अबहीं।

खा–पी के अब चल मेला घूमे। सुरेन्दर आ सुमेर के कनिया के गोड़ में जइसे पहिया लागल होखे। धइले नइखे धरात लोग। निरमला जानत रही जे मेला देख के लइकन का हाल होखेला। एह से उ बचावल पइसा में से थोड़े ले लेले रही। सुरेन्दर फुलवना, गाड़ी आ बाजा खरीद के खूबे खुश। तेलहा जलेबी आ पूड़ी खा के अघा गइलन। सुमेर के कनिया के एगो दोकान से जीउ नइखे भरत। कबो एह दोकान प त कबो दोसर दोकान प। कबो पौडर सुँघस त कबो कीरिम लगा के देखस। निरमला चुपचाप देखत रही। आखिर एगो दोकान प जाके भर हाथ चूड़ी आ लहठी पहिनली। निरमला मुसकइली– ''तनी कमे पहिनतू। भीड़–भाड़ में जाए के बा।''

कनिया ठठा के हँसली– ''हम त एक्के गो बात जानीला दीदी। भर हाथ चूड़ी ना त कच्च दे राँड़।

आ अब तुहू पहिन चूड़ी। आवऽ बइठ एहिजा।''

निरमला के इयाद पड़ल। पछिलका होली के पहिले पहिनले रही नया चूड़ी। एकरा बाद ना सुदरसन अइलन आ ना उनुकर कवनो सरधा पुराइल।

कनिया केहुनी मरली– ''भर हाथ चूड़ी–लहठी पहिन के आ कीरिम पौडर लगा के चलबू त स्साला कतने लोग बेहोस हो जाई। देखनिहार के धरनिहार लागी ए दीदी।''

चूड़ीहार मुसुका के कहलस– ''टह–टह लाल चूड़ी रउवा हाथ में सोभी। एह में हरियर रंग के लहठी मिला दे तानी। जे देखी देखते रह जाई।''

थथम के खाड़ हो गइली निरमला। केकरा के देखावे खातिर उ चूड़ी–लहठी पहिनस? कीरिम–पौडर लगा के केकरा प गमक उड़इहन? सिंगार–पटार केकरा खातिर करस? बिन्देसरी महतो के देखावे खातिर कि गाँव के लंठ लपाडी के देखावे खातिर? जेकरा के देखावे खातिर उनुका सजे के चाही उ त जाके कलकत्ता बइठल बा। अचके में दोकान प से उठ के खाड़ हो गइली निरमला। फेनू दू कदम पाछे हट गइली। कनिया अचकचा के पूछली– ''का भइल दीदी? अरे पहिन ल चूड़ी। ले ल कीरिम पौडर।''

निरमला धीरे से कहली– ''ना कनिया। हमरा अभी इ सब नइखे लेबे के।'' कहत सुरेन्दर के हाथ पकड़ली आ मेला के बाहर निकल गइली। कनिया चकाइल आंखिन से उनुका के जात देखली आ फेनू दउर के उनुका साथे हो गइली।••

❑ फ्लैट नं. 301, निरंजन अपार्टमेंट, आकाशवाणी मार्ग,
खाजपुरा बेली रोड, पटना, बिहार। मो.- 09934994603

कविता

हरेश्वर राय

❑ बी-37, सिटी होम्स कालोनी,
जवाहरनगर सतना, म.प्र., 09425887079

अन्हरिया के
छोड़ीं मत, छाँटीं
उजास बाँटी।

उँघाईं मत
जागीं, जगाईं
डेराईं मत
बढ़ीं, बढ़ाईं
डहरिया के
कोड़ीं मत, पाटीं
सुबास बाँटीं।

उबियाईं मत
पढीं, पढ़ाईं
सुस्ताईं मत
लिखीं, लिखाईं
भोजपुरिया के
फोड़ीं मत, साटीं
मिठास बाँटीं।

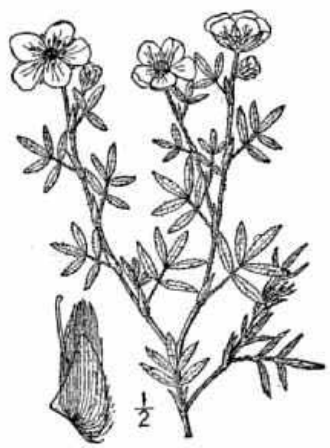

सकून

अशोक द्विवेदी

तिवारी जी अक्सरे साढ़े छव बजे उठेलन। आँखि खुलते उनकर नजर सबसे पहिले छत पर घूमत, घरघरात पंखा पर परेला, फेरु खटर–पटर का शोर में लइकन के जगावत धरमपत्नी पर। ऊ छिन भर खातिर भउँ सिकोरि के उनके देखेलन तब कुछ बोलेलन। उनकर मेहरारू ई जानेली कि अगर एह बेरा ऊ कवनो लड़िका के सूतल देखि लिहन त झउँझिया जइहन। आजुओ छोटका लड़िका के हिला–हिला के जगावत देखिके उनकर मुँह खुलिये गइल, 'इन्हन के टाइम से उठाइयो ना सकेलू का? कूल्हि खराब हो रहल बाड़न स!'

– 'आ रउवाँ काहें खराब हो तानी?' उनकर मेहरारू मुस्कियात उल्टे उनहीं से पूछि बइठली। ऊ कुछ लजइला अस लमहर उसाँस छोड़त कहलन, 'हमार, इन्हनी से कवन तुलना? काम से अतना थकि जाईला कि चाहियो के टाइम से ना उठ पाईलां।' उनकर मेहरारू लड़िका के बाँहि धइले अँगना में चल गइली।

–'चाय बनल बा कि ना?' ऊ खटिया प उठि के बइठत चिचियइलन।

– 'पहिले मुँह त धोइ लीं!' ऊ अँगोछी से लड़िका के मुँह पोंछत ओही जा भइल बोललीं फेरु किचन में दुकत कहली, 'चीनिये ना रहल हा आजु, लालाजी का घर से एक कटोरी उधार मँगववनी हाँ, रउवा तबले मुँह धोईं, बना के लियवते बानी।'

– कुछ न कुछ इंतजाम करहीं के परी आजु!' तिवारी जी खटिया से उठत भुनभुनइलन, फेर मुंह हाथ धोइ के जब लवटलन त स्टूल प चाय धइल रहे। गमछी से मुँह हाथ पोंछत ऊ फेरु खटिया पर बइठ गइलन। रासन कार्ड पर अढ़ाइये किलो चीनी मिली, ऊहो तीनि घंटा धक्का खइला पर। हुँ ऊँट का मुँह में जीरा.....दसे दिन में ओरा जाई फेरू मँगनी चुँगनी ना त राधेसाम बनिया के दोकान। 'बुझाता एहू महीना में उधार लेबहीं के परी...।' ऊ बुदबुदइलन।

उधार के खेयाल अवते उनका आँखी का सोझा आफिस के एक–एक चेहरा आवे लगुवे..... अपना–अपना दुख तकलीफ से लदाइल, रोआँ गिरवले, फेतुरत पसारत चेहरा। देबे के नाँव प अउरी गुवलाह हो जाई, माँगे के पहिले बात गरे में अँटक के रहि जाला।

–फेरु चाय सेरा गइल। अरे इनका सोचला के बेमारी से त हम परेसान हो गइल बानी। आज आफिस नइखे जाए के का?' मेहरारू के झनझनात बोली सुनते उनके करेन्ट लेखा लागल। ऊ उनका हाथ से चाय के गिलास झपटि लिहलन आ खड़ा होके सुरुके लगलन। मेहरारु हँ हँ करते रहि गइली। घड़ी के सूई आठ का ओर जाते का जाने काहें तिवारी जी हड़बड़ा जालन। बुझला ए फुर्ती आ हड़बड़ाहट के वजह ऊ 'डर' बा जवन सात बरिस पहिले से उनका भीतर जगह बना के बइठ गइल बा। टाइम से ना जासु त मेमो मिल जाई। साहब के मूड बिगड़ल त 'सेलरी' कटि जाई। कतने क कटिये गइल बा। उनका अपना ऑफिस के अफसर आ बाबुअन से बड़ा चिढ़ होला। बेमतलब डँटइला आ दाँत चियरला के आदी हो गइल बाड़न स। एकरा बावजूदो उन्हनी का पास अइसन कला बा कि उनहन के कुछ ना बिगड़ेला । उल्टे ऊहे दोसरा के 'ईमेज' बिगाड़ दीहें स। तिवारी जी कान्ही प गमछी आ लुंगी धइले अँगना में अइलन आ बाल्टी लेके दियँका

खाइल केवाड़ी वाला अपना नहानघर में ढुकि गइलन। नल के टोंटी खोललन त पनिये नदारद! ओही जा भइल चिचियइलन, 'बेटी देखु त, लाइन बा कि ना?

कोठरी में बइठि के किताब पढ़त उनकर छोट लइकी स्टूल खींच के देवाल काल ले गइल आ चढ़ि के स्विच दबवलस। बलब ना जरत देखि के चिचियाइल, 'लाइन चल गइल।'

–ई ससुरी त अउर नाक में दम कइले बिया। रोजे साँझ–सबेरे गायब हो जाले।' ऊ नहानघर से बाल्टी आ गमछी लेले बहरा निकलि अइलन, 'ओझा जी का चाँपाकल प जा तानी। नहा धोइ के एक बाल्टी पानियो लेले आइब।' ऊ बहरा जात जइसे मेहरारू के सूचना दिहलन कि ऊ खाना–वाना निकाल के तइयार रहसु। थोरहीं देर बाद जब ऊ भिंजले देंह, बाल्टी लेले घर में घुसलन त करिहाँव में साड़ी खुँटियवले, आँचर से माथ के पसेना पोंछत मेहरारू लउकली। उनके ओह दशा में देखि के उनका मुस्की छूटि गइल, 'बुझाता कि अखाड़ा में उतरे के तइयारी बा?'

– 'खाना स्टूल पर ध देले बानी, नौ बज गइल बा!' उनकर मेहरारू भउँ सिकोरले बोललली। तिवारी जी बाल्टी ध के भगलन आ ताबरतोर कपड़ा पहिरत घड़ी का ओर तकलन, सँचहूँ, सवा नौ बजत रहे। स्टूल आगा घींच के कटोरी के कुल्हि दाल एके बेर भात में डललन आ तनी मनी तरकारी मिला के हाली–हाली कवर डाले लगलन। ओघरी उनकर निगाह भले थरिया में धइल खाना पर रहे बाकि दिमाग में घड़ी तेज भागत सुई आ आफिस नाचत रहे।

–'कतना बेर कहलीं कि ए जी, सेकराहे नहाइ धोइ के चैन से खाइल करीं बाकि काहें के माने जासु। हेंतरे हाबुर–ताबुर खाइल भला अंगे लागी? उनकर मेहरारू फटही पंखी डोलावत कहली। तिवारी जी के जइसे कुछ सुनइबे ना कइलन। ऊ मशीनी ढंग से खाली कटोरी में अँचवत उठि गइलन। बहरा निकलत खा उनकर मेहरारू पाछा–पाछा धवरत कहली. 'दलियो ओरा गइल बा। ना होई त आधा किलो बेसन लेले आइब। मुनवो के बोखार हमेशा तनीमनी रहते बा, आ. फिस से लवटत खा तनी डाक्टर साहेब से भेंट क लेब।' तिवारी जी रुकि गइलन। पाछा घूमि के अपना मेहरारु के अइसे देखलन, जइसे कहत होखसु. 'घबड़ा जिन, कुछ न कुछ त इंतजाम करबे करब।' ऊ मूड़ी नीचे क लिहली। सोचली, कि उनके ए बेरा अउरी चिन्तित ना करे के चाहत रहल हा। मरुवाइल मन लिहले धीरे धीरे घर में लवटि अइली। आफिस पहुँचते तिवारी जी माथ प चुहचुहाइल पसेना पोंछलन। साहब का कमरा के पर्दा गिरल रहे आ पल्ला ओठघावल रहे। उनके तसल्ली मिलल। पैदल अइला आ हाली हाली सीढ़ी चढ़ला से ऊ हाँफि गइल रहलन। अनमनाहे अपना टेबुल का ओर बढ़ गइलन। कुर्सी झारत खा सोझा वाला बाबू नमस्ते कइलस, शर्माजी हलो कहलन बाकि तिवारी जी के ध्यान बड़े बाबू के चश्मा से फिसलत डेलीवेज चपरासी नरेश प रुकि गइल। रोज लेखा आजुओ ऊ ओकरा से पानी मँगलन। ऊ पानी के गिलास लेके आइल आ सलाम कइलस।

–'का बात ह भाई? मुँह काहें लटकवले बाड़े?' तिवारी जी ओकरा से पुछलन– 'बस अइसहीं' ऊ अपना भीतर के गाँठ अउर कस लिहलस।

– बात त कवनो न कवनो बटले बा। तूँ त अतना उदास रहे वाला ना हउवऽ! केहू कुछ बोलल हा का?

– ना साहेब, ई बात ना हऽ. पहिले पानी त पी लीहीं।' नरेश जइसे गाँठ ढील क के खोले के मन बना लेले रहे बाकि बड़े बाबू बोला लिहलन। तिवारी जी पानी पी के रैक में धइल एगो भारी भरकम रजिस्टर उतरलन आ मेज पर धइ के अहथिरे सुर्ती मले लगलन। उनकर निगाह फेर रोवाइन मुँह बनवले नरेशवे प जाके टिक गइल। अजब जीव बा ई। दिन भर आफिस में एह टेबुल से ओह टेबुल नाचत रही आ साँझ खा बड़का साहब से लगाइत छोटका–छोटका साहबन का घर के साग–सब्जी आ समान लियाई। डेली वेज पर बीस पचीस रूपया रोज के हिसाब से महीना का आखिरी में ओकर हिसाब होला।

खइनी दू हाली ठोंकि के उ जल्दी से ओठ में दबवलन फेर आफिस में एखाली चारू ओर नजर दउरवलन। अग्रवाल, शर्मा, बर्मा सब पर होत उनकर नजर बड़े बाबू पर आके ज्योंही रुकल, उनहीं कावर ताकत बड़े बाबू हड़बड़ा के दोसरा ओर ताके लगलन। उनका हँसी बरि गइल बाकि हँसलन ना। दिमाग में त मेहरारु के फरमा. इस घुमड़त रहे आ ऊ एही फेर में कवनो मुर्गा तलासत रहलन, जेकरा से आज लंच में ऊ दू अढ़ाई सौ उधार माँग सकसु। साहब आ गइल रहलन आ सभ अपना अपना काम में मशगूल हो गइल रहे। तिवारी जी काल्हु के वाउचर लेके रजिस्टर में पोस्टिंग करे लगलन। एकाउन्टेन्ट एक पोथा अउरी वाउचर लिया के उनका

मेज प धरत बोलल, 'तिवारी जी एह कूल्हि के पोस्टिंग छूटल बा। का बात ह, एघरी राउर काम ढेर 'पेंडिंग' रहऽता?'

– 'ठीक बा जी, आज हो जाई पूरा। अरे हमहूँ आदमी हईं। आखिर कवन कवन काम करीं?' तिवारी जी झुंझलाइल कहलन। डेढ़ बजत रहे। तिवारी जी फाइल आ वाउचर हटा के रजिस्टर बन कइलन आ मूड़ी उठाइ के गरदन के दरद मेटावे खातिर मुड़ी हिला–हिला एक्सरसाइज करे लगलन। सोझा सेन बैलेन्स मिलावत रहे। पुछलन, 'यार सेन, का भइल तहरा छुट्टी के? बहिन के बियाह होखे वाला रहे नऽ?'

–अगिला हफ्ता का बाद छुट्टी लेबे वाला बानी। बड़ा झंझट बा शादी बियाह में।

–काहें? अभिन त तहार बाबूजी आ भइया कमाते बा लोग!

–कमइला से का होला? शादी त शादी हऽ। केहू तरे छव सात हजार जुटवले बानी। ऐडवान्स खातिर दरखास्त देले बानी। देखीं ऊहो मंजूर होला कि ना? हमरा त बड़ा फिकिर हो गइल बा!' –बेइ मरदे। फिकिर ओकिर ओकरा होला जेकरा पाछा मेहरारू लइका के जिमवारी होला। तँ त अभी नया नोचर बाड़ऽ बाप आ बड़ भाई के छाँह बा तहरा पर।' तिवारी जी कहलन

– 'एही से त हम बियाह नइखीं करत!'सेन हँसत बोलल

–'काहें भाई काहे नहीं कर रहे हो? हम भी तो सुनें!' साहब हाल से गुजरत टोकलन। उनुका सँगे पूरा आ. फिस मुस्कियाये लागल। सेन कुछ झेंपि के मूड़ी नीचे क लिहलस। ओकरा आभासे ना रहे कि साहब एही बीच में आ जइहें। 'अच्छा भाई, मैं ही तुम्हारे बाबूजी से बात करता हूँ!' साहब फेरू हँसत कहलन

–'ना साहेब, ई बात नइखे!' सेन लजात सफाई दिहलस

–'अभी त इनका बड़ भाई के शादी नइखे भइल!'एकाउन्टेंट श्रीवास्तवो टुकड़ा लगवलन–

–शादी त इहाँ कई लोगन के नइखे भइल।' सेनो चुटकी लिहलस/श्रीवास्तव जी झेंप गइलन कहें कि ऊ अभी खुदे कुँवार रहलन। पैंतीस के उमिर हो गइल रहे उनकर।

– तुम शादी क्यों नहीं कर रहे हो?' साहबो बुझला आज पूरा मूड में रहलन। सेन झेंपत आखिरस बोलिए दिहलस, 'जी, एतना कम तनखाह में केहू का शादी करी? तिवारी जी के हाल देखि के हमार हालत खराब हो जाता।' एह कडवा सचाई के उगिलते पूरा आफिस का मुस्की पर अचके ब्रेक लाग गइल। साहबो कन्नी काटि के अपना कमरा कावर चल दिहलन। तिवारी जी मुस्कियात सेन के साबासी दिहलन, 'बाह बेटा, हमरे माथे तूं त बहुत गहिरे काट क दिहले!' फेर गम्हीर होत, छत का ओरी ताकत जइसे जथारथ के टीस महसूस करत कहलन, 'सहिये कहले हा भाई! हम त आधे महीना में खूंखा हो जात बानी। हमनियो के कहाँ आके फँसि गइनी जा? सुबिधान घरो सम्हारे लायक नइखीं जा कमात।' बड़े बाबू देरी से ई कुल्हि सुनत रहलन। अपना नाक पर ढरकि आइल चश्मा ऊपर सरकावत बीखि ढकचलन, 'तिवारी जी, आपके त इहाँ केहू जबरदस्ती बोलावल ना।' कतने लोग त एही नोकरिया खातिर नाक रगरत बा। आप हमेशा रोवते रहीले। उपधियो जी रोवेलन कि मजबूरी में फँसि गइनी। अरे भाई, अतना परेशानी बा त छोड़ द जा इ नोकरी। केहू रोके तब न?'

–'नोकरी के कीमत त सड़क पर न पता चलेला!' एकाउन्टेन्ट श्रीवास्तव फेरू छीप कटलस तिवारी जी के ताव आ गइल। लहक उठलन, 'आन्हर के अन्ह. ारे नीक लागेला। मेंगुचा कुइँयें के संसार समझेला। हमरा इ. नइखे बुझात कि अन्हार के अन्हार कहला में तहरा काहें मरिचा लागत बा? बुझाता हमन के तनखहयवा तूँ ही अपना टेंट से देलऽ। अरे कर्मचारियन के दुख–परेसानी समझऽ जा भाई, बोलबाजी कइ के जरला पर नून मत दरऽ जा।' बड़े बाबू खीसिन ओठ काटत रहि गइलन। श्रीवास्तव के चेहरा का जाने कइसन हो गइल रहे। मने मन बड़े बाबू एगो गाँठ दिहलन, 'समुझब ससुर तहरो के। ना सस्पेन्ड करवनी त हमार नाँव रतनबि. हारी ना।' फेर ऊपर से बोललन, 'तिवारी जी ई नान आफिसियल तरीका हमके पसन ना परे, कम से कम आपन भाषा त ठीक करीं।'

– का? हम का कहि दिहनीं हाँ? सचाई तीत लगबे करेले। वर्तमान से भविष्य के सभे अच्छा देखल चाहेला। हम त इहे न कहल चाहत रहनी हाँ।' तिवारी जी अलमारी पर धइल दोसर रजिस्टर उतारि के आपन काम करे लगलन घंटा भर बाद जब तिवारी जी रुमाल से माथ के पसेना पोंछत रहलन सेन उनका ओरि पान बढ़वलस। ऊ बायाँ हाथे दुखात गरदन के पछिला हिस्सा दबावत, टाइप राइटर पर जाके बइठि गइलन। टाइप पर अँगुरी धरत खा उनकर नजर मिस कंचन प परल जवन एकाउन्टेन्ट आ बड़े–बाबू से कुछ खुसुर फुसुर करत रहली। 'जरूर ई हमरा खिलाफ कवनो फंदा

तइयार करत बाड़न सऽ। अब इ बिलार साहब से हमार सिकाइत करी।' उनका भीतर शंका के बीया कुनमुनाए लागल।

–यार तिवारी जी तोहसे कई बेर कहनी कि पान–वान छोड़ दऽ। खामखा, 'दोसरो के एकर लत डालत बाड़ऽ।' एकाउन्टेन्ट उनका बिचार के डोरी तूरत, थेथर अस फेरू टोकलस।

–बात त रउवा ठीक कहत बानी, बाकि कबो फुर्सत से सोचले बानी कि बीड़ी, पान, सुर्ती, चाय के आदत क्लर्क के काहें पड़ेला? रउवा के त खाली दसखत करे आ बिल सइहारे में साँझि हो जाला। जे पाँच–पाँच किलो के रजिस्टर आ बीसन गो फाइल में दबाइल रहेला ओकरा गरदन आ पीठ में दरद हो जाला। हर अधिका मेहनत करे वाला आ बोरियत का काम में अझुराइल रहे वाला, ई कूल्हि नसा खाइ के आपन दुख दरद आ चिन्ता फिकिर के बहँटियावेला, थोरिकी देर खातिर काम का बोझा से निजात पावेला।' तिवारी जी टाइप राइटर पर कागज कार्बन चढ़ावत एगो लमहर भाषने दे दिहलन।

–'बाह गुरु! का सटीक बात कहले बाड़ऽ? तोहके त कहीं एह विषय के अध्यापक रहे के चाहीं।' सेन हँसत मस्का मरलस।

–चुप रहऽ भाई, ढेर मक्खन मत लगावऽ!' तिवारी जी अपनाइत से ओके झिड़िकलन, फेरू टाइप करे सुरू क दिहलन। बड़े बाबू मने मन एगो दूसर गाँठ दिहलन, 'सबसे पहिले ससुर सेन तहरे प गाज गिरी, तिवारी से त हम बाद में निपटब। ससुर बहुत पिटिर–पिटिर बोलत बाड़न।' लंच से बाबुअन का संगे लवटत खा तिवारी जी का पाकिट में दू सौ रूपया आ चुकल रहे; जवन ऊ थोड़ी देर पहिले अग्रवाल से उधार मँगले रहलन। आफिस के सीढ़ी चढ़त खा मने मन प्लान तइयार होत रहे, तीन किलो चीनी, एक पाव चाय, एक किलो बेसन, मुन्ना के दवाई आ टानिक.....

–'गुरू, एक बात ना समझ में आइल हा, रोज चहकत रहे वाला नरेसवा, आजु का जाने काहें मुँह लटकवले रहल हा। कहीं बड़े बबुअवा भा एकाउन्टेन्टवा डँटले 'नइखन स न?' सेन तिवारी जी का मन में दउरत गाड़ी के जइसे ब्रेक लगा दिहलस

–हँ यार; तिवारी जी बस अतने कहलन। हाल में घुसत खा उनकर नजर परि गइल। ऊ ओनिये घूमि कोना में बइठल नरेश के उदास चेहरा पर अदबदा गइलन फेर गुमसुम बइठल नरेश का कान्ही पर हाथ धरत पुछलन, 'का उदासल बाड़े भाई? ऊ चिहुंकि गइल। बुझाइल जइसे थोरी देर पहिले ऊ अपना में रहबे ना कइल होखे। मुँह से बोल ना फूटल। तकलस, त आँखि डब. डबा गइल।

–'बोलु भाई। बोलबे तबे न हमनी का कुछ करे के! तिवारी जी अधीर हो उठलन।

– रउवा जानते बानी साहब हमनी का छोट–मोट कर्मचारी हईं जा। काल्हु अचके माई के तबियत ढेर बिगड़ गउवे। सिनहा डाक्टर किहाँ देखउवीं, ऊ पर्चियो लिखुवन बाकिर फीस देबे के बेर हमरा लगे खाली बीसे रूपया रहुवे। साहब ऊ पर्चियो फारि देहुवन आ लगुवन बुरा भला कहे। हम लाख कहुवीं कि डाक्टर साहब खिझियाई मत, हमके मालुम ना रहल हा। माई के देखि लेईं, हम काल्हु बीस रूपया अउरी पहुँचा देब बाकि उ लगुवन डाँटे।' नरेश के गर रून्हा गउवे। मूड़ी नीचे गाड़त, भीतर आँस रोकत धीरे से बोलुवे, गरीब अदिमी के कवनो इज्जत आ कवनो से उमड़त सुनवाई नइखे न साहेब!'

–बेइ मरदे, बस अतने बात बा! तूँ अब्बे घरे जो, अभी साढ़े तीन बजत बा। चार बजे ले माई के लिया के सिनहा डाक्टर किहाँ ले आउ, हम देखाइब। अब बइठु से बोल के, जल्दी जो। 'तिवारी जी आखिरी लाइन तनी जोर से बोलुवन मत बड़े ताकि बड़े बाबू सुन लेस।

बड़े बाबू मूड़ी उठवलन। उनकर उड़त नजर एकाउन्टेन्ट श्रीवास्तव से मिलल । फेरु खँखारत ऊ तिवारी जी से सीधे कहलन, 'जवन बात होखे, ओके खुदे कहे के चाहीं।"

–'साहब हमार माई बहुत बेमार बिया। देखावे खातिर छुट्टी चाहीं।' नरेशवा भटक तूरत फरियाद कइलस।

–'जा, भा रहऽ! तिवारी जी कहते बाड़न!' मने मन कुढ़त ऊ बोललन। बड़े बाबू के 'ईगो' घाही होत रहे।

नरेश चल गइल त तिवारी जी अपना सीट पर आके बइठ गइलन। सेन कूल्हि देखत समझत रहे। मुस्कियात बोलल, 'का जी, रउवा खुदे साहब बन जा तानी। रउवा हमदरदी त देखा दिहनी, अब काल्हु, भोगी बेचारा नरेशवा।'

–तूहूँ इयार गजब बाड़ऽ। इन्सानियतो त कुछ चीजु होला। अरे ओकरा माई के हालत खराब बा, आ तहन लोग के दोसरे कुछ सूझत बा।' तिवारी जी फेरू सबके सुनावत कहलन। बड़े बाबू के चेहरा प तनाव बढ़ि गइल रहे। साफे बुझात रहे कि ऊ अपना भीतर उमड़त खीसि

के कइसहूँ कइसहूँ दबावत रहलन। तिवारी जी कूल्हि बूझि के अनजान बनत अपना काम में लागि गइलन। साँझि खा आफिस से निकल के तिवारी जी जब घर का बजाय, अस्पताल के राह धइलन त अग्रवाल टोकलस, 'का गुरूजी, घरे नइखे जाए के का?'

–'तनी नरेशवा के माई के देखावे के बा!' कहत ऊ जल्दी जल्दी डेग डालत पैदले बढ़ि गइलन.....पहिले ओकरा माई के देखा देइब, तब ओ ससुर के पाहि लगाइब। हत्यार कहीं का, डाक्टर भइल बाड़न स्सार! तिवारी जी भितरे भीतर डाक्टर सिनहा प गरम होत रहलन सिनहा डाक्टर किहाँ पहिलहीं से तीन–चार गो मरीज बइठल रहलन स। बेंच प बइठत खा उनकर नजर गेट का ओर बेचैनी से घूमल। नरेशवा अपना माई के दूनो हाथे धइले आवत रहे। उनका तसल्ली भइल कि ऊ टाइम से पहुँचि गइल। जब नरेश के माई के नम्बर आइल त ऊ खुदे ओके टेकावत डाक्टर का लगे धइल स्टूल प ले गइलन आ सौ के नोट डाक्टर का मेज पर धरत कहलन, पहिले आपन फीस काटि लिहीं।' डाक्टर कुछ झेंप के चुपचाप आला लगवलस आ मरीज के देखे लागल। दवाई लिखला का बाद पर्ची बढ़ावत तिवारी जी से कहलस, "घबड़ाए के बात नइखे, वायरल बोखार ह! दवाई तीन चार दिन खियाई, फेरू देखा देइब। फेर ऊ दराज खोललस आ साठ गो रूपया निकाल के तिवारी जी कावर बढ़ावत पुछलस, 'ई राउर का लगिहें?"

'माई।' आ तिवारी जी व्यंग से मुस्कियात डाक्टर के देखलन, फेरु नरेश का माई के अँकवारी में धइ के उठावे लगलन। नरेश का माई के आँख ढबढबा गइल। नरेश के त पहिलहीं से ढबढबाइल रहे।

गेट पर नरेश से रेक्सा ठीक करे के कहि के तिवारी जी दवाई का दोकान पर बढ़ि गइलन।

दवाई कीनि के जब लवटलन त नरेश रेक्सा कइ के ओपर अपना माई के बइठा चुकल रहे। ओके दवाई के ठोंगा धरावत ऊ पचास रूपया निकललन आ ओकरा हाथ में जबरन धरावत कहलन, 'हई लऽ! अकाज सुकाज खातिर धइले रहऽ।..हँ तनी दवाई द! बता दीं कि कब कब कइसे खाये के बा।' नरेश भकुवाइल, दवाई के ठोंगा उनका ओर बढ़ा दिहलस । तिवारी जी एक–एक दवाई के निकाल–निकाल के खियावे के तरीका समझावे लगुवन। नरेश कृतज्ञ भाव से टुकुर–टुकुर उनकर मुँह ताकत रहे। जब तिवारी जी समझा चुकलन त जाये का बेर, छलछलाइल आँख पोंछत नरेश खाली अतने कहि पवलस, 'हमरा आजुए बुझाइल हा ए साहेब कि हमरा आफिस में अइसन लोग बा, जे आपन दुख परेसानी के भुलाइ के हमरा अस लतमरुवो के अतना खयाल करत बा!'

–'पागल कहीं का, अरे अतनो खतम हो जाई त अब ओह आफिस में बाँची का?' आ तिवारी जी हँसत चल दिहलन। नरेश देर ले उनके जात देखत रहल। जइसे अपना के परतीति करावत होखे कि अइसनो माहौल में, लोगन के इन्सानियत अभी जीयत बा।

एन ओने डँउड़ियात, अन्हार भइला जब तिवारी जी घर का निगिचा पहुँचलन त इयाद परल कि उनकर मेहरारू चीनी, चाय, बेसन आ छोटका लइका के दवाई लियावे खातिर कहले रहुवी। एक छन खातिर एगो फीका मुस्कान उनका ओठ प आइल, फेरु बिला गइल। ऊ अपना गली में घुसरत भुनभुनइलन, 'जाए द तिवारी, एह बाबुई बेवस्था में, जहाँ खाली खुदगर्जियत आ जरतपन बा, तूँ खाली अपने स्वाभिमान नइखऽ बचवलऽ, दोसरो के भिहिलात, टूटत स्वाभिमान के जियावे के उतजोग कइले बाड़ऽ। एकरा आगे तहार कूल्हि दुख आ परेसानी छोट बा। ई ऊ सकून ना हऽ जेवना अफसर आ डाइरेक्टर छोट कर्मचारियन के, दबाइ–डाँटि के पावेलन स– जवन दोसरा के दुख के दुख ना मानेलन स। ई सकून ओह सकून से बहुत बड़ बा।'

घर में ढुकते जब उनकर मेहरारू उनके खाली हाथ देखली त कुछ पूछल चहली बाकि ऊ उनके अनदेखा करत चुपचाप जाके खटिया पर बइठ गइलन –'तबियत ठीक बा नऽ?' उनकर मेहरारू भभतल पुछली फेर तनी रुकि के कहली, 'रूकीं पहिले चाय बना के ले आवे तानी, अभी थोरिकी भर चीनी बाँचल बा!'

तिवारी जी हँस के मना क दिहलन आ खटिया पर सूतल मुन्ना का माथ पर हाथ फेरत पुछलन, बबुआ के तबियत ढेर नइखे न खराब?'

–आज बोखार त नइखे बाकि बड़ा खोंखत बा जी!' ऊ अँगना भइल बोललीं

–'अच्छा काल्हु खाँसी के दवाई लेले आइब।' ऊ मुन्ना के कपार सुहरावत कहलन। फेर बिना कपड़ा खोलले खटिया का ओनचना चित्ते ओठँगि के आँख बन क लिहलन। उनके बुझाइल जइसे उनकर कूल्हि भूखि–पियास चिन्ता–फिकिर थोड़ी देर खातिर कतहूँ अलोता लुका गइल होखे। आज बहुत अरसा बाद ऊ अपना के बहुत हल्लुक महसूस कइलन।। ••

"पाती" वर्ष-1999 से उद्धृत

"चालीस साल बाद"

शारदा पाण्डेय

बगुला के पाँख नियर ऊजर मर्सराइज्ड पूरा बाँहि के कुरता आ नेनगुप्ता किनारीदार धोती में गोर स्वस्थ देहि वाला एगो छः फुटा गौढ़ व्यक्ति जन खमिहा में आइ के बइसल जेकरा संगे एगो काँवर लेले कहाँरो रहल तऽ अचके कुल्ही घर दमदमा गइल। बहरा से संदेश आइल कि बड़का राजपुर के हित आइल बाड़न। सुनते मउसी फूले के लोटा में पानी आ तश्तरी में नगवा मोर पर से आइल टिकरी आ पटउरा भेजली। मुँहा–मुँहे हमरा बुझाइल कि हमार मामा आइल बाड़े। अब ले हम अपना मामा के देखले ना रहनी खाली माई आ मउसी से उनुका बारे में सुनले रहनी। सात आठ बरिस के रहल होखब। दउरि के दुअरा खमिहा में चहुँपनी आ माम के गोड़ छू लिहनी। मामा हमरा के देखलन, आ कोरा में बइठा लिहलन। काका उनुका से कहलन कि 'ई सभले छोटकी बुचिया हऽ। सहर में पढ़तो बिआ। किताब पढ़ि लेले आ खूब कविता सुनावेले।' अतना कहि के काका बड़ा गर्व से आपन गर्दन कड़ा कऽ लिहलन उनुका आँखि में ओह घरी कतना अँजोर आ स्नेह भाव लहरा गइल रहे ओकरा के बतावल बड़ा कठिन बा। बाकिर हमरा ई जरूरे बुझाइल कि ई हमार अइसन बड़ाई बा कि मामा जइसे अचरज से भरि गइलन। हमार बार सहराबे लगलन आ हम काक के कहला पर एगो कविता जवन बाबू जी कवितावली के गावत गुनगुनात रहले सुनवनी का जानी उनुका बुझाइल कि ना; बाकिर ऊ हमरा के अपना छाती से सटा लिहले।

हम कहनी कि 'ए मामा अब हम जाइ के माइयो के बता दीं।' आ कोरा से उठि के घर के ओर चले के भइनी। मामा अपन पसीना पोंछत काका जी से पुछलन 'पाहुन कहाँ बानी लउकत नइखीं।;काका कहलन कि 'नहाइ के तनी भगवान जी के नाँव ले तानी, कहत ऊ कोठरी के ओर देखवलन जहाँ बाबूजी धोती से का तोपले धोती के भीतर–भीतर 'नाम–जप' करत रहनी। अब ले काँवर घरे पहुँच गइल रहे आ संगे आइल कहाँर मीठा पानी पी के मामा के बेना डोलावत रहे। हम छन भर खातिर मामा के देखनी आ सोचत गइनी कि साचो हमार मामा कतने सुन्नर बाड़न, राजा नियर।

बाबूजी के सोझा काका जी कम बोलत रहलीन। मामा से हाल–चाल पूछि के नहाये–धोये के बेवस्था कइलन आ भीतर आ के मइया–मउसी से बतिअवलन। मामा के फेरू भीतरे बोला लिहल गइल। मउसी तऽ ना बाकिर माई महीने रोवे लागल त मउसी पीठि पर हाथ धऽइ के कहलसि कि 'रोवे के कवन काम बा? भाई आइल बाड़न चलऽ गोड़ धोवऽ।' सोसिला बहिनिया तऽले पीतर के परात में पानी हो आइ के धड दिहलस माई मामा के गोड़ धोवत रहे आ आँखि में आँस ढरत रहे। मामा माई के माथ पर हाथ धऽइ दिहलन तऽ आँचर से उनुकर गोड़ लागत माई के हिचकी बन्हा गइल। अब मामा–मउसी दूनू जना के आँखि डबडबा गइल। मामा अपना अँगौछी से आ मउसी अपना आँचर से लोर पोंछे लागल। हम मामा के लगे खाटी पर बइठि के ई दृश्य देखत रहनी। फेरू मउसी मामा से गाँव घर के हाल–चाल पूछे लागल। मामा जी माई से लेके छोटकी मामी, उनुका बेटा रामदेव तक के हाल बता दिहलन। राममूरत भइया के हाल पुछला पर कहलन कि 'तहरा राजपुर अइला तीन–चार बरिस बीति गइल बां काहें नइखू चलि कि देख लेत?'

मउसी कुछ ना कहलस। हम सोचे लगनी कि अना दिन से मउसी काहें ना गइल? आ माई तऽ हमरा जाने गइबे ना कइलस। माई के पिअरकी गोराई रहे। रोवला से ओकर मुँह लाल हो गइल रहे। मामा माई के माथ पर हाथ धइ के कहलन कि 'जा बलेसर नाथ? आपन मुँह धोइ आवऽ। ढेर रोइबू तऽ कपार बथे लागी। पाहुन के परेसानी हो जाई।' माई चुपचाप उठि गइल। हम माई के कवनो बात के केहू के उत्तर दीहल कबो ना देखनी, खाली चुपचाप बात मानल देखले रहनी। आजुओ ऊहे भइल। बाकिर मउसी आ मामा आपुस में कतना नया–पुरान बात, खेत–खरिहान के चर्चा करे लागल लोग, भुला गइल लोग के ओजू हमहूँ बइठल बानी। हमरा कुछ बात ना बुझाइल, बाकिर उठहूँ के मन ना करे। अपना मामा के रूप–प्रभाव देखत रहनी। कतना भाई–बहिन में लगाव बा अनुभव करत रहनी। ओइसे आजु मउसियो तनी बदलल–बदलल लागल। अतना बतिआवत ओकरा के पहिले कबो ना देखले रहनी। तनिकिये देर में माई आइ के फेरू बइठलि तऽ मामा के आँख डबडबा गइल। मउसी के कहलन कि "का बचिया! बलेसर नाथ के राजपुर गइला कतना बरिस हो गइल? मउसियो के आँखि में लोर छलकि आइल कहलस,"चालीस बरिस ले अधिका हो गइल।" हम अकबका गइनी कि अतना साल ले माई मामा किहाँ ना गइल। मामो जल्दी आवत ना रहलन। हम तऽ पहिली बेर देखनी। ओइसे हमरा मामा के अभाव कबो ना अखरल। काहें कि इलाहाबाद में हमार तीन गो मामा अउरी रहल लोग। माइये अइसन गोर सुन्नर। प्रेम से पागल। हर तीज त्योहार पर माइ के तीनू भउजाई करनी धरनी लेके आई लोग आ हमार तऽ तनी बिशेषे मान–जान होई। हम भैने रहनी। तऽ जब मामी लोगन किहाँ कवनो बिआह–जनेऊ होई भा लइका होई तऽ हमरा के अलगा से बड़ फूल के कटोरा हलुआ के भरल आ ओमे एगो चानी के रूपया संगे अउरू समान मिली। हम ओतने में अगराइ जाइब। एसे हमार मन कवनो अवरू मामा खातिर कबो ना कलपल। हाँ! अपना–परनाना के बात सुनब कबो–कबो उत्सुकता होई। एसे ढेर अवरू कुछ ना। आजु ऊहे मामा आइल बाड़न तऽ देखि के मन में एगो गर्व के भावना आइल। मामा के बेटा राममूर्त्तियो भइया बड़ा सुन्नर सुभेष बाड़न छः फुट के होइहें, बड–बड़ आँखि, अँगुठिया बार। हँसमुख चेहरा, बोली तऽ अतना मीठ कि मन होई सुनते रहीं। ऊ हर साल गरमी में अइहें जब हमनिके गाँव जाइब जा। बाकिर मामा के तऽ बाते दोसर बा। बड़ा प्रभावशाली, गम्भीर, अँजोर से नहाइल चेहरा। ए बुचिया मने मन हम ई सोचते रहनी कि काका के मँझली बेटी सोसिला अइली। पुछली कि, 'बड़का बाबू जी के आ मामा के अइया एके संगे मँगाई?'

मउसी कइलस कि, 'हँ! पीढ़ा पानी राखऽ हम आवतानी। बाबू जी आ मामा दूनू जना एहिजे खाई लोग।'

पीढ़ा–पानी रखाइल। दूनू जना खाए बइसल लोग। तनिकी भर हाल–चाल भइल फेरू चुप्पी परि गइल। माई केबाड़ी के आड़ा रहल आ मउसी उहनी लोग के बेना डोलावत रहल। खा लिहला पर बाबू जी आगा आ मामा पाछा रहलन। मउसी कुछु बोले के रहल। ना बोल पवलस। दूनू जना चलि गइल लोग। दुअरा चहुँपला पर मामा आ बाबू जी अलगा खाटी पर आमने सामने बइठल लोग। माई हमरा से इलायची लँवग भेजववलस। हम लेके गइनी तऽ सुननी कि मामा बाबू जी से कहत रहलन कि, "पाहुन जी! ह रउआ से कुछ कहे के चाहतानी।" बाबू जी कहनी कि, "कहीं।"

मामा बोलते, चालीसन बरिस भइल छोटकी बचिया नइहर के मुँह ना देखलस। ना भतीजन के जनम पर गइल ना जनेउ आ बिआह पर। गंगाजी में कना पानपी आइल गइल ऊ ना जनलस। रउआ सभे के सेवा में रहल। अब एहूजू बबुआ बचिया बड़ भइली सँ। बिआह–गवन भइल। कवनो बड़ जिम्मेदारी नइखे। यदि हो सके तऽ हम हाथ जोरि के रउआ से माँगतानी कि एह बेर बचिया के भेज दीं। ओकर पाँव–फेरूआ हो जाउ। हम अब कतना दिन अउरी बानी? महतारी बाप–भउजाई के सगरे गइला पर ना गइल कम से कम अपना भतिज पतोह के तऽ देखि लेउ! कहत–कहत मामा के आँखि में लोर आ गइल। आवाज भारी हो गइल। अँगौछी से लोर पोंछि के ऊ बड़ा निहारा वाली आँखि से बाबू जी के देखलन। बाबू जी निर्विकार भाव से कहलन, "हमरा ओर से कवनो रोक नइखे, मउसी (मइया) से पूछि लीं। ऊहे घर के मालिक हऽ।" हम दूनू जना के बात सुनत रहनी। मन में भइल कि कहीं कि 'हम हूँ जाइब।"

मामा हमरा ओर देखि के कइलन कि, "ए बचिया! जाइके अपना मइया से कहु कि घरे आवे चाहतानी।" हमरा तऽ गोड़ में जइसे पंख लागि गइल। बरधन आ गाइ के बचावत दउरि गइनी। ओतने में हाँकि गइनी। माई कहलस कि 'बुचिया! का भइल?'
हम कहनी कि, "मइया से बताइब।" मइया से कहनी तऽ

मइया कहली, 'जो बोला लेआउ।'
मामा भीतर अइले आ मइया के गोड़ पर सिर धऽ दिहलन। मइया उनुका माथ पर हाथ फेरत आशीर्वाद दिहली आ अपना खटिया पर बइठाइ लिहली। हाल–चाल पूछि के कहली, "का कहे बा ए बबुआ कहऽ।"
मामा कहल कि, "ए माई! राउर किरपा चाहतानी। एह बेर छोटकी बचिया के राजपुर भेजि दीं। कई जुग बीति गइल नइहर के मुँह ना देखलस।"
मइया तनिकी देर चुप रहली। फेरू कहली कि, 'बबुआ से पूछे के परी। साइतियो देखे के होई आ कुछु तेआरियो तऽ करे के परी? अइसे कइसे अचके भेजि दीं? बबुआ तहार बात तऽ सोरह आना ठीक बा। अब पहिले वाली बात नइखे ना ऊ लोग जिअते बा। बहुरियो मने मन कलपत होइहें बाकिर आजु ले मुँह से एकहू लकार ना कहली।"

मामा कहले कि, "पाहुन के ओर से कवनो रोक नइखे दिन शुभ बा ई हम देखि लेले बानी आ तइयारी का करे के बा। ओहिजा कुल्ह बा। बस रउरा के भेजि दीं, संगे ई छोटकी बचियो जाई।"

मइया मानि गइली। माई मउसी से लपिटाइ के रोवे लागल। मउसियो रोवे लागल। मइयो लोर पोंछे लगली। बुझात रहे जइसे माई अपना नइहर ना ससुरा जातिया। छोटकी माई संगे ले जाए खातिर पकवान छाने लगली आ माई मउसी बक्सा साजे लागल लोग; जेमे हमार आ माई के कपड़ा रहे आ दूनू पतोह खातिर साड़ी बेलाउज के कपड़ा, टिकुली सेनुर धराइल। माई मउसी से पुछलस कि, "ए बहिनिया हमरा ओजू जाइ के का करे के होई?"
मउसी के बक्सा में ओइसहीं कँकही सेनुर राखत हाथ चलत रहे बाकिर एक बेर माई के ओर देखलस, बुआ नाहिंए देखलस काहें कि आँखि में लोर उतराइल रहल कहलस कि, "कुछु ना। तूँ ओहिजा सभले बड़ रहबू। तहार रहन–सहन बदलि गइल बा। उहनिये में घुल–मिल जइहऽ। कुल्ही सँगेराइ जाई।"
माई कहलस कि, "ए बहिनिया! मुँह देखाई का देबि?"
मउसी तनी चिहुँकल। फेरू कहलसि, "कुछु ना। बूढ़ पतोहियन के का देबू?"
माई चुप हो गइल बाकिर अशांत रहल। ओकर हाथ खुलल रहे। ऊ अइसे कइसे जाई? कवनो ना जाए के बात रहे ना तेयारी के। एसे ऊ कुछ बुझि ना पवलस। मउसी माई के सुभाब जानत रहल। नबाब के बेटी, बड़ घर के पतोहि, चालीस पैंतीस बरिस पर पहिली बेर नइहर जातिया, खाली हाथ कइसे जाई? महतारी–बाप बिदा कइले रहल अब उनुका ना रहला पर जाई। ओकरा केहू आपन पुरनका अदिमी ना लउकी। घर दुआर बदलल लउकी। सभे नया अपरिचित लागी। अपना नइहर में ऊ अपना के नया जानी। मउसी हाथ रोकि के तनिकी भर माई के देखलस। फेरू उठल आ झाँपी में से दू जोड़ी पछुआ आ छागल निकाल के एगो एकरंगा में लपेट के कपड़न के बीच में धऽइ के माई से कहलस कि "देखि लऽ। मुँह देखाई धऽ देले बानी। एजू केहू से कुछ कहे के काम नइखे।"
माई देखलस ऊ भारी–भारी पछुआ–छागल मउसी के रहल। माई कहलस कि, "बहिनिया! तू रहे दे। हम अपना में से ले लेब।'
मउसी बोललि कि, "तूँ जिनिगी भर बउराहिने रहबे। हमरा खातिर ई कुल्ही माटी बा। हम का कऽरब। आ पहिरे वाला कुल्ह पहिरलहीं बानी। हँसुली, बेरा आ गोड़ में अतना भारी कड़ा परल बा। इहे भार लागेला। तहरा आगा अबहीं पूरा जिनिगी बा का जाने कब कवन जरूरत पड़ी। अबहीं ई छोटकी बुचिया सोझा बिया। अनागत के के जानी?"

हम ओहिजे खड़ा रहनी। माई चुप हो गइल बाकिर ओकरा आँखि से लगाता लोर ढरत रहल। मउसी के पूरा त्याग भरल जिनिगी ओकरा आगा डोल गइल। एक बेर ऊ बतवलस कि मउसी बाल–विधवा रहल। ओकर जिनिगी नइहर–सासुर के सँगेरते बीतल ओकर बल पर माई के ससुरा के जीवन बड़ा सरलता से बीतल बहरा से कहाव आइल कि तुरंते चले के साइत बा देर नइखे करे के। महँगू से अँसवारी ले आवे के कहल बा ऊ आवते होइहें। अब ले मइया अपना के कइसहूँ सम्हरले रहली। अब माई के घर में अइली। कहली कि, "का हो कुल्ही तेयारी हो गइल बा?"
मउसी बोलिलि कि, "हँ! होइये गइल बा। अतना जल्दी कवन तेयारी होई बचिया आ बुचिया के कपड़ा धरा गइल बा।"
मइया कहली कि, "का रामकुपाल बो! बबुआ बो पहिली बेर नइहर जा तारी खालिये हाथ जइहें? ओहिजा दू–दू गो पतोह बाड़ी स।"
मउसी कुछु बोलल ना, खाली चुपचाप मइया के देखलसि। मइया अपना अँचरा में से एगो छोट डिबिया निकलली आ मउसी के देके कहली कि, 'देखऽ एमें एगो झुलनी आ एगो नकबुल्ली बा। दूनू पतोहिअन के दे दीहऽ। आवऽ हमरा झाँपी में देखि तऽ जवन सारी पसन्द पड़े ले लऽ।

पहिली बेर नइहर जातारू अइसहीं चलि जइबू, तऽ लोग का कहीं?" माई मउसी के ओर देखलस तऽ मउसी मइया के संगे गइल। मइया कहली कि, "देखऽ मन खोलि के जवन नीक लागे दूगो निकाल लऽ।"

मउसी दूगो टसर के साड़ी निकाल लिहली। मइया दूगो चानी के सिन्होरी संगे दिहली त मइसी अनासे मइया के गोड़ दू लिहली। मइया के मन के ई कोमलता आ विशालता मउसी देखली तऽ उनुका ई ना बुझाइल कि आपन आदर कइसे बतावसु? मइया मउसी के अपना पँजरा बइसा के कहली कि, "तूँ ही तबावऽ बबुआ बो आजु ले कबो मुँह ना खोललीं, भीतरे–भीतर कतना कलपत होइहें। बिना देष के अतना बड़ दण्ड मेहरारूये सहि सकेले।"

मउसी मइया के लगे से आइ के माई के समुझावे लगली। दूगो सिन्होरी देखि के माई चिंउकल त मउसी कहली कि, "एगो सिन्होरी भीम मइया के पतोह रामदेव बो के दे दीहऽ। खुस होइ जइहें। वितिआउत हई त का भइली अँगनवा त एक ही बा। तूँ पहिली बेर जातारू तहरा संगे नीके से रही लोग। झाँझो फुआ जवन कइली करववली तवन मत सोचिहऽ।"

मामा बहरा से कहाव भेजववले कि अँसबारी आ गइल बा। टोला के आस–पास के लोगन में बात भइल कि अँसवारी पंड़िताइन किहाँ जा तिया। के आइल कि जाता? कुछ मेहरारू–लइकी आ गइल लोग।

जब बात भइल कि मउसी–चाची चालीस बरिस पर नइहर जातारी। मामा विदा करावे आइल बाड़े तऽ कतना तरह के बतरस पसरल का कहाउ? अँसवारी अँगना में लागि गइल। माई–मउसी के अँकवारी में सभा के रोवे लागल। मउसी लोर पोंछत–पोंछत कहलस कि, "जा खुसी–खुसी; हम पनरह दिन में बोला लेबी। ओजू तहार कपरबथी उठी तऽ के सम्हारी? मइया का करिहें। पतोहियन के बेटी नीयर जनिहऽ तऽ उहनी के अपरिचो ना लागी।"

भाई मइया के गोड़ लागे गइल तऽ मइया अँकवी में बान्हि के हँकरत लगली, "बछिया हो बछिया। तहरा बिनु कइसे रहबि हो सुगिया?"

उनुकर रोआई सुनि के सभे रोवे लागल। दृश्य बड़ा करुण हो गइल। बुझाइल कि मइया पहिली बेर आपन बेअी भेजतारी। माइयो उनुका के छोड़त ना रहल। काकी–चाची– नूनू बो सभे आइ के गोड़ छुवे लागल। मउसी अँसवारी में बइसवली, पानी पिअवलसि। मइया फेरू पहुँच गइली। कहल– 'नीके रहिहऽ। हम बबुआ के भेजि के तुरंते बोला लेब। एजू के कवनो चिंता जनि करिहऽ।"

अँसवारी उठल। आँगन खाली होखे लागल तऽ मइया अपना घर में जाइ के लकार धऽइ के रोवे लगली। मउसी जाइ के समुझवलसि। मइया कहली कि, "अपना बेटी पनकुँअरा के बिदाई पर अइसन ना लागल। आजु बुझाता केहू हमार करेजा निकाल ले जाता।" मामा गोड़ पर मइया के आपन सिर राखि दिहलन। रोइ के कहलन, "माई तहार पतोह के पाँव फेर कऽइ के जब कबहू भेजि देब।"

मइया उनुका माथ पर हाथ फेरत हिचकी लेत रहली। कब ऊ सासु से महतारी बनि गइल रहली, समय के प्रवाह में उनुका बुझइबे ना कइल।

माई के संगे अँसवारी में बइठल हम तिरवाहीं पर अइनी त मामा से कहनी कि "मामा! का नाँव से चलबऽ, हमरा कि झिझिनी खेलवा दऽ।"

मामा अँसवारी ओइजे रुकवा दिहलन आ कहाँरन के कहलन, "तहनी दुलुकी लेत रास्ता से जा के ओह पार तीर पर खड़ा रहिहऽ। हम बुचिया के नाँव से गंगा जी के पार कइके आवातानी।"

हमनिके नाँव पर बइसनी तऽ मामा मल्लाह से कहलन कि "तनी नाव नचा दऽ लोग। ई बहिरवासू लइकी हऽ कबो झिझिनी नइखे देखले।" मल्लाह आपन गीत गावत गोलाई में घूमि के नाव नचा दिहले। मामा कइले अब घाम तेज हो जाई, जल्दी करऽ। ओने कहार चहुँप जइहेंसन। गंगा जी के उज्ज्वलता देखत, लहरन में मछरियन के छपकल खेल देखत बीच धार में अइला पर मन भइल कि गंगा जी अतना निर्मल बाड़ी कि ओह जल के दर्पणे कहल ठीक कहाई; उतरि जाईं, आपन मुँह, सभके परिछाहीं एकदम स्पष्ट लउकत रहे। मन आनन्द से भरि गइल। मन होखे माई से बतिआईं। बाकिर ऊ आ मामा त चुपचाप बइठल रहे लोग। माई का जाने का सोचत रहल? मलाहो छपाक–छपाक पतवार चलावे लगलन।

ओह पार उतरला पर बलुधस तीर पार कऽइ के जब आगा चलनीजा तऽ बड़–बऽड़ दरार पड़ल। मामा कहलन, कि "बचिया–बुचिया तनी सम्हरि के अइहऽ, कहीं दरार में गोड़ जन परो। एक फर्लांग ले अइसहीं रही। पार करते अँसवारी भेंटा जाई।"

सावधानी से चलत हमनीका अइनी जा तऽ अँसवारी ओही घरी आ के खड़ा भइल। कहाँर पसीना में डूबल रहलन। माई हमरा से कइलस, "तनी मामा के बोलाउ।"

मामा अइलन तऽ माई कइलस कि 'भइया बेगवा में मिठाई, बताशा आ पकवान बा। इहनी के पानी पिया दऽ। थाकल बाड़सन।

कहाँरन के मुँह संतोष से भरल देखे जोग रहे। मामा त माई के देखि के भीतर तक गर्व से भरल कहलन कि, "बचिया! तूँ साचो नबाब, बैजू बाबा के बेटी हवे।"

सिवान पर आवते माई के मेंही रोवाई के राग फूट परल। मामा सुनते कहलन कि, "बलेसर नाथ रोवऽ जनि। केकरा खातिर रोवतारु? के सुनी? माई, बाबू भउजाई, एगो गबरु भतीज सभ चलि गइल। तूँ ना देखि पवलू। अब के बा जे तहरा के चीन्ही? जे बा ऊ तहरा के चीन्हत जातन नइखे। नइहर तहरा खातिर अनजान अनचीन्ह हो गइल बा। हमरा तहरा के चिन्हावे–बतावे के परी। कतना दिन से मन में होत रहल कि एक बेर बचिया के पाँइत फिरि जाइत। नइहर के माटी छू लीहित। बखार, खेत, खरिहान, टोला, मोहल्ला जहाँ ऊ बढ़ल, खेलत रहल देखि लीहित, तऽ हम भाई के रीन से उरिन हो जइतीं। आजू पाहुन आ माई के कारन ऊ लालसा पूजि गइल।

बचिया ओहिजा सभ तहरा से छोट बा। केहू अँकवारी ना बान्ही, भीम बो के छोड़ि के। सभे तहार गोड़ लागी। रोइहऽ जनि। तेरह के गइल तिरपन बरिस पर आइल बाडू। के तहरा के धऽइ के के रोई।" कहत–कहत मामा के आवाज भरभरा गइल। माइयो अपना के सम्हारे लागल।

अँसवारी दुअरा लागल। आस–पड़ोस के लोग बहरा निकलि आइल। साँझि होखे के रहल। सभे अचभ्यो में रहे। अर्जुन बाबा के बहिन चालीस बरिस पर नइहर आइल बाड़ी। माई के आँखि से लोर ढरत रहल। बाकिर राग ना निकसल। भीम बो भउजी अपना अनजान अनदेखल ननद के उतरली। पतोह लोग परात में पानी लेके गोड़ धोवे लागल। माई मिठाई, बताशा लेके सभे के बँटवा दिहलस।

मामा अँगना में आइ के कहलन, "अब सभे लोग जा। गंगा जी के पार कऽइ के आइल बाड़ी थाकि गइल होइहें। तनी आराम करे दऽ लोग।"
सभे के आँखि में एगो अबूझ आ आश्चर्य के भाव रहल। चलत–चलत केहू आपुस में कहत रहे, "कतना सुन्नर बाड़ी इहे सभले छोट रहली।" सुनि के हमार मन गर्व से भरि गइल। खाली एगो जना कहली कि संगे उनुका एगो छोट लइकियो बिआ। बुला उनुकर बेटी हऽ। मुखार तनी–तनी ओइसने लागता।

तऽले लाठदी टेकत जी माई आ गइली। एकदम गोर दूध नीयर। बार सन नियर उज्जर। झक् उज्जर सूती साड़ी पहिरले। कहली– "सुनत बानी कि अर्जुन के छोटकी बहिन आइल बाड़ी। जुगन बीति गइल एह जू केहू के ओकर इयादो नइखे।"

माई उठलि आ जीमाई के अँकवारी बान्हि लिहलस। रोआई फूटल जइसे कवनो सोता धरती से फूटि परल। जीमाइयो रोवे लगली। "देखे के बऽदल रहल, नाहीं तऽ कवनो आस ना रहल। तेरह बरिस के गइल बेटी बूढ़ होके नइहर के चउखट पर आइल बिआ। के चीन्हल? आजु बबुआ बो रहिती त का अइसहीं होइत?"

मामा अँगना में आ गइलन। माई भइया दूनू जना के खाटी पर बइठाइ के अपनो ओहिजे बइठ गइलन। जी माई माई के पीठि सहरावत, मुँहवे निहारत रहली। कहलीं, "हमार बचिया के कइसन कञचन नीयर काया रहल। अबहीं तऽ खेलहीं खाये के उमिर रहल। कबो खेलहू में केहू से रार ना कइले होई।"

पतोह लोग एक ओर होके भुँइये बइठि गइल। मामा कहे लगलन, "बचिया! रोउ जनि। ओह घरी तहरा गइला के बाद घर पर कइसन आपत आइल रहल। समय आ हाल ई रहल कि हमनी के तहरा ससुरा पर दबाव कइसे डलतीं। बेटिहा रहनी। तूँ तऽ सभ दिन के सुधुआ रहलू; ना एजू कुछु देखलू ना ओजू कुछु बोललू। पुतरी नीयर चलत रहि गइलू, जे जइसन कहल–कइल। सोचला पर मन भीतरे–भीतर सींझे लागेला। माई बाबूजी रहिते त का अइसहीं बीतित? ऊ तऽ दुलारो रहली कि अपना हिम्मत पर नइहर सम्हार बसाइ दिहली। झाँझों के जहर तहरे सहे के परल।" मामा के आँखि से लोर बहि गइल, ऊ अँगौछा से पोंछि लिहलन। माई के सिसकी बन्हा गइल।

जी भाई घर के कूल्ही हाल जानत बूझत रहली। कहली, "अब भाई–बहिन मत रोवऽ जा। बीतल ना लवटी। अब तूँ जा। हम तनी बचिया से बतिआ लीं। कुछु दिन रहबू नू?" माई हँ में सिर हिला दिहलस। मइया तनिकी देर में चलि गइली। अतने में थाकि गइल रहली।

अब माई चारों ओर घर आँगन की ओर आँखि भर देखलस। घर आँगन परिवेश पुरान बाकिर अनजानता के रंग में रंगल। केहू आपन ना। पतोह लगे अइली सन पहिले भकुआइल फेरु अतिथि रूप

में देखे जाने के प्रयास। घर में चर्चा तऽ होते रहल होई। सेवा टहल में लागल लोग। माई के हाथे पर राखल लोग। गँवे–गँवे भाई के व्यवहार से, बोली के मिठास से अतना प्रभावित कि हर क्षण भाइये के निहारस, अबटन–तेल, टिकुली, सेनुर अपनही करे लागल लोग। गाँव–घर के बचपन के चर्चा शहर के विकसित आराम के जिनिगी के चर्चा में कब दस–बारह दिन सरकि गइल बुझइबे ना कइल। भउजी हमरा के बइठाइ के बार बान्हस तऽ हम शहर के बारे में बतवनी कि ओजू इनार ना रहे। कल रहेला जेकरा के 'नल' कहल जाला, तनिकी भर अँइठि दऽ त पानी हरहरा के गिरे लागी। रेडियो में गीत बाजत रही। लोग कीनि लेला। घर बइसले घर–जवार, गाँव देश के समाचार जानि लेला। ओहिजा के बैलगाड़ी अलगा ढंग के होखेला। ओह गाड़ी पर बइठि के बीसन लइकी एकट्ठा पढ़े जाली। एक्का, रेक्सा, टाँगा होखेला। कवनो मेहनत ना लागे। अतना घूघ मेहरारु ना काढ़ेली। छोटकी भउजी सुनसु त कहसु कि, "ए बुच्ची पढ़ि लीहऽ नोकरी करिहऽ त हमरा के अपना संगही राखि लीहऽ। हम तहार कूल्ही काम करबि।" हम सँकारि लिहनी। ऊ हमार विशेष ध्यान राखसु। साँवर रहली, बाकिर चेहरा पर चमक रहे, लाल बऽड़ टिकुली लगावसु। कबो–कबो गीत सुनावसु। हम मामा के अँगुरी धइले खेत–बारी देखि आईं। मामा अपना गाँव के राजा कह जासु। जे घर के आगा से निकले चबूतरा के छू के 'पृथिवीनाथ प्रणाम' कहि के जाय। माई केहू के घरे ना गइल, बाकिर ओकरा के देखे मिले खातिर खूब लोग–मेहरारु, बेटी आवसु।

एक दिन भीम बो मामी हमरा के लगे बइसाइ के कहली कि, "तहार माई कतना बरिस अपना नइहर ना अइली। जा के पूछऽ कि "का तहार माई–बाबू कलम–दुआत हऽ?" हम सोझे कहि दिहनी कि "ना, कलम दुआत से हम आपन पढ़लका लीखिले।"

ओही घरी जीमाई जेकरा के हम मइया कहीं आ गइली। सुनली त मामी के कड़ेर होइ के कहली, "का हो अतना छोट लइकिनी से अइसे बोलल जाला?"

माई चुप रहल बाकिर मइया कहली कि, "अइसने बोल के झाँझों अपना घर में दूनू बहिनियन के साँसत करत रहलीं, ऊ तऽ दुलारो रहली कि उनुकर कवनो दाँव बचिया पर ना चले दिहली। कहे के फूआ रहली, सासु बनि गइली तऽ खूबे शासन चलवली। बातावरण गम्भीर हो गइल। हमरा कुछु ना बुझाइल तऽ हम ओहिजा से टसकि गइनी। एक दिन मामा खात रहले। माई बेना डोलावत रहलि, कहलस कि, "बुचिया के एहजू कूल्ही पढ़ाई भुलाइल जाता।"

मामा माई के देखले; कहले, "हँ! ई बात त बा। बाकिर बिना पाहुन के अइले हम तहनी के अपने से कइसे भेजि सकीले। अवरु कवनो बात के कमी तऽ नइखे होत? एहजू कूल्ही तहरा के बेगाना लागत होई। केहू बतिआवहूँ जोग नइखे। का करीं हमरा तनी बाहरो के काम देखे के होता। बबुआ बो! तनी दाल दे जा, आ फूआ के धियान राखऽ। दू–दिन बादे इनिका जाए के बा। फगुअवा कहि गइल हा। पाहुन आवतारे। हम कहि के आइल रहनी कि पाहुने के अइला पर बचिया के भेजब।"

माई नीचे ताके लागल। मामा जइसे अपना आपे से कहलन कि, "जानकियो जी बुला एकहू बेर नइहर ना गइल होइहें। जिनिगी तऽ घर–बाहरे कि दो बने में बीति गइल होई। केकर बस बा? ऊ तऽ राजा के बेटी रहली। जवन आ जतना भागि में होला ऊहे होई।"

मामा बाबू जी के आगमन के उत्सव बना दिहले। हलुवाई बइठाइ के खाझा, टिकरी, नमकीन बनववले, खजूर बनववले, जे पनरहियन सुरक्षित रही। हमरा के बजास किहाँ ले जा के बइठवलनि। कहलन कि, "बुचिया के जवन कपड़ा फराक सलवार के जतना पसन्द आवे कूल्ही बान्हि दऽ, बचिया के सभले नीमन पाँच–सात जतना साड़ी पसन्द आवे दे दऽ। बलुक नोकर से उठवा के घरे ले जा के पसन्द करवा लऽ। हम काल्हुये, बलिया भा बनारस जाइ के ओकरा लायक बनारसी, तनचोई ले आइब।" हमार त चानी हो गइल। कई गो बन्हवा लिहनी। बाबू जी अइलन त उनुका खातिर सेनगुप्ता के जोड़ा धोती, सिल्क के कुरता, चद्दर मँगववलन। माई के गाँठि जोड़वा के कऽया करववलन। गाँवे के लोगन के नेवति लिहलन। गवनहरियन के बोला के बाबू जी के खात समय देर तक गारी–गीत गववलन। बुझात रहल घर में बऽड़ परोजन के लहर जागि गइल। जी माई सभसे आगा–आगा चलि के जइसन बतावसु मामा कूल्ही कइलन। पतोहिन के तनिको बेंबत ना रहे। बुझाय कि उनुका देह में कतना बल आ उत्साह भरि गइल। घर के उदासी खोजलो ना लउकल। राममूरति भइया के कवनो सन्तान ना तब ले भइल रहे। इहे एगो कलक रहे। बाकिर जी माई आ मामा कहल लोग कि वंश आ घर भगवाने के हाथ में बा। जब समय आई भगवान दीहें। अतने दिन में माई आ मामी–पतोह लोग घुल–मिल गइल रहे। जीमाई तऽ माई के मुँहे

देखत ना अघासु। सालन के कहानी–किस्सा–सुख–दुख के पिटारी खोल देसु। मामा के कहली कि, "ए बबुआ! मन के कूल्ही साध पुरा लऽ। 'फिरु कब राम जनकपुर अइहें'। ई जानऽ कि पहिली बेर चालीस बरिस पर अइली त अब कब अइहें ई अंतिये बुझिहऽ।"

मामा–माई के मुँह पर क्षन भर खातिर एगो उदास छाँह उतरल फेरु अपने में हो गइल लोग। मामा दू काँवर सामान गाँवे भेजवा दिहलन। सुख–दुख दूनू भाव के अइसन संगम हमरा तब तक ना बुझाइल रहे। हम तऽ अतना सामान पाइ के अपना घरे जाये के सूचने से प्रसन्न रहनी। बाकिर मामा के प्यार दुलार के कवनो सीमा ना रहे। जब अँसवारी आइल आ माई के विदाई भइल त माई पहिली बेर खुल के रोअल। पतोह गोड़ ना छोड़त रहली, मामा अँकवारी में ले लिहली। गाँव के लोग उमड़ि आइल रहे। एह समारोह के देखे। जी माई रोवत–रोवत काँपे लगली, उनुका गोड़ में बुझाइल कि दम नइखे। माई मामा के गोड़ धरे गइल तऽ मामा माई के अपना कोरा में बन्हि के फोंकरि के रोवलें। कहलें, 'फेरु कब राम जनकपुर अइहें? पाहुन आ तूँ आइके नइहर के पवित्र कइ दिहलू। महतारी–बाप के चउखट पर जवन दया कइलू, हमार जिनिगी भर के भार दुख बिला गइल। रोवऽ जनि, एह घर के आशीर्वाद दऽ। अपना घरे सुख–सोहाग से भरल–पूरल रहऽ।" माई चउखट पर सिर धऽइ के प्रणाम कइलस। लोग अक्षत छिरकल। बाबू जी के छाती से लगा के मामा कहलन, "पाहनु। जवन कमी–बेसी भइल होखे क्षमा करबि। अपना लक्ष्मी के सम्हारी। हमरा पढ़े लिखे ना आवे। हम का कहीं। राउर उपकार, प्रेम, आदर इहे हमार सभले बड़ धन हऽ।"

हमरा के कोरा उठा के मामा रोअत कहले, "बचिया! अपना बाबूजी से कहि के फिरु अपना मामा किहाँ अइहे। खूब पढ़ लिख के साहब बनि जइहे।"

सभे के आँखि भींजल रहे। हम अचानके देखनी बाबुओ जी अपना रुमाल से आँखि पोंछत रहले। माई के संगे हम अँसवारी पर बइठि गइनी। माई रोवत जाए, ओहार उठा के अपना घर के ओर देखे मामा के संगे कुछ लोग सिवान तक आइल। मामा अँसवारी रोकवा के माई के पानी पिअवले आ माई एक बेर फेरु जइसे डँकरि के कहलसि 'भइया हो भइया।'

मामा ओही स्वर में, 'आरे हमार बचिया! रोउ जनि। खुस रहु। भगवान सोहागिन राखसु' कहलन। विदाई भइल चालीस बरिस बाद।

इ कऽथा कहत–कहत राजेश्वरी मइया के आँखि से लोर झरे लागल।••

❑ 142, बाघम्बरी गृहयोजना,
भारद्वाजपुरम्, प्रयागराज

किशुन कली

बिम्मी कुँवर सिंह

गाँव के लोग बाग कहत रहलें – " कि किशुन कली भगवान के भक्ति में अइसन पगलाइल रहेली कि कबो कबो त बैकल–बउराहिन बन जाली!!

सयान होत रहली, बाकिर सादी–बिआह के नामे सुनत उनकर दाँत प दाँत लाग जात रहें। बड़ा जतन पूजा पाठ से इहे एगो बेटी वैद जी के भइल रहली।

वृंदावन में वैद जी दूनों बेकत जा जा के खूब पूजा करस जा ऐही से बेटी के नाँव किशुन कली रख दिहल गइल।

किशुन कली लइकाईं से ही कृष्ण भक्ति में खूब मन लगावस। पढ़ाई लिखाई में कम पूजा–पाठ में बेसी रहस। वैद जी त बिटिया के बिआह के बाट जोहते परलोक सिधार गइले। वैद जी के पत्नी मोतियाबिंद आ गोविंद नाम रटत बेटी संगे जिनगी काटत रहली।

किशुन कली के भोर से रात तक के काम रहें, शालिग्राम जी के नहवावल, नया वस्त्र आभूसन पेहना के आ माखन मिसरी के भोग लगावस, सांझि खा तुलसी चउरा पर दीया जरावल आ, "राधे–श्याम" के नाम जप करत, आ ओकरे बाद घंटों गोविंद गान सुनस।

एतना प्रेम भगवान से कि लागे जइसे साँस के साथ–साथ हरिनाम भी चलत होखे।

बाकी, जसहीं घर से बहरी निकलत रहली, पूरा रूप बदल जात रहे बोलत एतना तेज रहली कि जइसे माथा में से आवाज निकले। बड़ा–बुजुर्ग से बहस, पड़ोसी से ताना, आ आंगन पटीदारी के बहिन–भौजाई से चुगलखोरी– सब ओकरे नेचर में समाइल रहे।

कभो व्रत–उपवास क के दिन भर अन्न के दाना न छूअत रहली त कभी–कभार अचानके रसोई में जा के मिठाई, हलुआ आ गुलगुला बना के सरिहार के खा के बइठ जात रहली। लोग कहे – "कि आहि हो दादा, ए माई, तोहार भक्ति आ भूख दुनो के हिसाब भगवान ही रखले बाड़न।"

बिलार आ चिरई से बहुत मोह रहे। बिलरी के गोदी में बइठा के जब दुलार करस त ओकरा आँख में ममता के चमक साफे लउकत रहें। बाकिर आदमी के चेहरा देखते ही उ ममता झाग बन के उड़ जात रहें। सावन, भादो, कार्तिक, चैती – हर महीना ओकरे पास व्रत के बहाना रहें। कहे कि "ई महीना त गोविंद के प्रिय बा, हम त अन्न न खाइब।"

बाकी, ओही दिन संझा में, भोग लगवावे के नाम पर मिठाई के पूरा थरिया साफ। गरदन में तुलसी माला, माथा पर चंदन के टीका, पर जइसे ही गाँव में मेला भा तीज–त्योहार–बिआह लागे– किसुनी अइसन सजे–सँवरे जइसे गोपियन के सगरी आभा ओकरे में समा गइल होखें।

ओकरे नाच आ ठुमका से गाँव के जवान–बरियार मय लोग ओकरे तरफ खिंचाइल चल आवत रहले। लोग कहे कि– "ई लक्षन में भक्ति इचिको नइखे, ई त मोह के जाल हऽ!"

पर साँच ई रहल कि किशुनी के भीतर कुछ टूट–फूट चलत रहे। कभो त उ खुद के समुंदर

लेखा गहिरे में डूबवले रहत रहली, त कभी दुनिया के धारा में बह जात रहली। उनकरा के समझ बूझ पावल– जइसे पानी के मुट्ठी में पकड़ल– असंभव रहें।

किशुनी के अंतर–द्वंद्व चलत रहें, गाँव भर खातिर उ एगो अबूझ पहेली रहली! रात के गहिर अन्हार में भी किशुनी के अंगना से गते गते "राधे–श्याम...राधे–श्याम... ." के स्वर उठत रहें।

लोग कहे– "देखऽ, फिर ओकरे मन में भगवान समा गइल हउवन।" बाकिर साँच ई रहल कि उ आवाज भगवान खातिर ना, कवनो अधूरा प्रेम के तड़प से उठत रहल।

उ जब सयान भइली त गाँव के स्कूल में एगो नया मास्टर अइले– माधव सर। धपधप गोर रंग, मद्धिम मीठ बोली, आँख में अपनापन के रेशा।

किशुनी ओही रेशा में अइसन अझुरइली कि पूजा के थरिआ में अब गोविंद के मूर्ति के साथ–साथ माधव के चेहरा लउके लागल।

हर संझा जब मास्टरजी स्कूल से घरे लवटे लागस त, किशुनकली तुलसी चौरा पर दीया जलावत रहस, बाकिर उनकर नजर सड़क प टिकल रहत रहें– कि एक नजर माधव सर के मिल जाइ। धीरही–धीरे दूनों बेकत में बात बिचार बढ़ल!! कभो भक्ति के बहाने, कभो कथा के बहाने, त कभो किताब के पन्ना पलट–पलट के नयन मिले लगल।

एक दिन किशुनी पूछली–

"सर, ई राधा–श्याम के प्रेम के मोल का हऽ?"

माधव सर मुस्कुरा के कहले–

"जे प्रेम निष्काम होखेला, उहे भक्ति बन जाला..."

किशुनकली ओहि दिन से सोचली दृ

"हम राधा हईं, अउर माधव सर हमार श्याम।"

बाकिर समय के खेल कुछ अउर रहल।

माधव सर के ट्रांसफर भ गइल –उ गाँव छोड़ के सहर चल गइले।

ना कवनो वादा, ना कोई पत्र, बस अधूरा सपना छोड़ गइले।

ओहि दिन से किशुन कली के भीतर एगो आगि जरे लागल। भक्ति के लौ में अपना के झोंक के उ आग के शांत करे लगली। बाकिर उ आग बुताइल त ना, बलुक राखि बन के भीतरी दबा गइल। कबो व्रत–उपवास से उ खुद के तपावत रहली,

कभी सज–धज के माधव के परछाईं के खोजे निकल जात रहली। लोग बाग कहे – "किशुनी सनकी भइल बिया।" पर साँच ई रहल – उ भक्ति ना, आपन अधूरा प्रेम खोजत रहली।

हर बार जब उ तुलसी के माला गरदन में डाल के नाम जपस त उनकरा मन में एकही आवाज उठे "कृष्ण...कि माधव?"

असहीं समय बीतत रहें आ उ द्वंद्व में जीए लगली – कभी भगवान के चरण में, कभी अपना चाहत के छाँह में। अउर धीरे–धीरे दुनो में फरक मिटत चल गइल। कबो कबो पूरा रात भजन कीर्तन में लीन रहस आ दिन में मंदिर के भीतर दीवाल से पीठ टेक के सूत जात रहली।

उनकर इस दसा देख के गाँव भर में चर्चा होत रहें। जतने मुँह ओतने बात!

केहू कहें–

"ए माई, ई भक्ति के नाम पर पागल भइल बिया।"

त केहू–

कि ई पागलपन एगो अधूरा प्रेम, एगो छूटल सपना ह। आ ऐमे भक्ति के छलावा छिपल बा। भक्ति के बहाने, इ मोह के रंग ह। गाँव के पंच परमेश्वर वैद जी के पत्नी से जाके मिलल लोग, कि सयान लड़की असही रात बिरात मंदिर आ गाँव के गली गूचा में घूमी त कभो ऊच नीच भी हो सकेला, ना होखे त कवनो लइका देख के बिआह क दीं। किशुनी इ बात सुनते पागल लेखा करे लागल।

उ चिचिआ चिचिआ के कहत रहे कि हम माधव के बिआहुत हई, रौरा सभे हमरे घर से जाईं। इज्जत बचा के पंच लोग अपना घरे चल गइले।

सावन के महीना बीत गइल रहल, कृष्ण जन्माष्टमी के धूम रहें गाँव में हर ओर हरियाली, मंदिर में भजन–कीर्तन के गूँज। किशुनी रोज जइसे सवेरे नहा के कान्हा के मूर्ति पर फूल, माखन आ तुलसीदल चढ़वली। साँझ के तुलसी चौरा प घीउ के दिआ बार के परनाम क लेली । बाकिर अउर दिन से ओह दिन कुछ अलग रहल।

कृष्णमयी पीयर बनारसी साड़ी, माथे पर बिंदी, कान में झुमका, आ आँख में काजर के घेरा – जइसे खुद राधा उतर आइल होखस धरती प।

लोग कहे – "का बात हऽ! आज त किशुन कली पूरा रंग में बिया!" पर केहू ना बूझ पावल कि ई रंग भक्ति के ना, भीतर के उदासी के रहल।

ऊ मंदिर गइल – भजन के बीच झूम–झूम के नाच करे

लागल। ढोलक के थाप पर ओकर पाँव धरती से उठ के खूबे थिरकत रहें। आ ओकर नयन लोरा के बंद हो गइल। जइसे कान्हा के सामने अपना के समर्पित कर रहल होखे।

पर लोगन के नजर में भक्ति ना, बस नारी देह के नशा रह गइल। पुरुष मन ओकरे नाच में भक्ति ना, मोह खोजे लागल। गाँव के कुछ औरत कुल फुसफुसाते बोललीं–

"आही हो राम जी !भक्ति त बहाना बा, इ त कवनो दूसरे खेल, खेल रहल बिया।"

किशुनी के कान में भी ई बात पहुँचल, बाकिर उ मुस्कुरा दिहली –"जे ना बूझल भक्ति के गहराई, ओकरा हर ओर मोह के रंग ही लउकी।"

ओह दिन आधी रात के बाद जब अकेली रहली दीया के लौ में आईना में उ आपन चेहरा देखली। ओकरे आँख में माधव के छवि फेर से चमक उठल, अउर होंठ काँप गइल– "कृष्ण...कि माधव?..."

उ धीरे से बुदबुदात बोललीं –

"भगवान त सबके हउवन... बाकि रउरा हमरा कें छोड़ के काहे चल गइली?"

ओकरे आँखि से लोर के धारा बह निकलल, माथा के चंदन बह गइल, आ तुलसी माला के डोरी टूट के बिखर गइल। ओहि बिखरल माला के मणिका बीनत उ फेर बुदबुदात रहली –

"हर मणिका में एगो याद बा... हर याद में रउरा बसल बानी..."

अब किशुनी ना भक्ति में रहल, ना मोह में।

उ बस अपना भीतर के सन्नाटा सुनत रहे।

लोग कहे –"ए माई, ई त पूरा पगली हो गइल बिया।"

पर भगवान जाने – कि उ पगलपंथी में भी एगो गूढ़ सच्चाई छिपल रहें, भक्ति आ प्रेम के बीच एगो महीन डोर, जे टूट के भी जुड़ल रहल।

रात आधा बीत गइल रहे, शिशिर के चाँद अधमुँह मुस्कुरात रहले, आ आसमान साफ रहें, आस–पास झींगुरन के झनझनाहट गूँजत रहल।

किशुनी मंदिर के चौखट प बइठल रहली, हाथ में तुलसीमाला के दाना गिनत, मन में ऊहे धुन– "राधे... श्याम..."

अचानक, मंदिर के ओर से एगो परछाईं लउकल!

दीया के अंजोरिया में उ चेहरा कुछ जानल पहिचानल लगल। गते गते अउर निगचा अइला प उ चिंहा के बोललीं!!

माधव सर! घबराहट से उनकर साँस अटक गइल रहें!! उ ठिठक के खड़ा भइली आ उनकर आँख फाटल के फाटले रह गइल। कुछ छन बाद उ बोललीं "सर... रउरा?"

माधव मुस्कुरा दिहलन, "हाँ कृष्णमयी... बहुत साल बाद... तोहरा भक्ति के चुम्बक से गाँव में फेर से लौटल बानी।"

किशुनी के देह थर–थर काँपत रहें, आगे कुछ बोली बोल ना पावत रहली! हिम्मत जुटा के अतने कह पवली– "रउरा गइला के बाद हमरा मन में रउआ भगवान बन के विराजमान भ गइल रहली.."माधव चुप रहलन।

उनकरे आँख में पछतावा के लोर छलकत रहें।

धीरे से कहलन –

"कृष्णमयी... हम त सहर जाके भी तोहसे दूर ना भइनी। हर मंदिर में, हर आरती में, तोहरे आवाज गूजत रहें। बाकी अब लवट के आ गइनी, तहरा के अपना संगे ले जाएं खातिर!!

"तू चलबू ना?"

उ ठठा के हँसली फेर छने में फफक–फफक के रोवे लगली!! उ रोवते मंदिर के ढाबा में दउरे लगली आ चि. चिंआ चिचिआ के बतावें लगली कि देखा गाँव के लोग साक्षात हमार माधव हमके लेबे आइल बानी!!

हम अब अपने माधव के दुल्हिन बनब।

थोड़े देरी में बादल उमड़े घुमड़े लागल, आ घनघोर बूनी सुरू भ गइल। माधव आगे बढ़ के दूनों हाथ से कृष्णमयी के अपना अँकवारी में ध लिहले!!

तनिक देर दुनो चुप हो के एक दूसरा के साँस के लय के सुनत रहले।

मंदिर के दीया बुता गइल रहें। हवा आ बूनी के झोंका से तुलसीदल के गंध ओकरे ओढ़नी में समा गइल।

माधव धीरे से बोललन –

"तोहार भक्ति अब मोह में बदल गइल बा कृष्णमयी..."

"ना सर... ई मोह ना हऽ, ई अधूरा प्रेम के तपस्या हऽ।" उ माधव के आँख में ताकते बोललीं, आ एतना कह के उ अपना के अँकवारी से छोड़ा के मंदिर के सीढ़ी पर बइठ गइली।

माधव ओकरे सामने खड़ा रहलन।

कुछ देर तक दूनो लोग एक–दूसरा के देखत रहले

भक्ति आ प्रेम, राधा आ श्याम, मानव आ भगवान – सब एक हो गइल।

फेर अचानक हवा के झोंका चलल, किशुनी के आंख बंद हो गइल आ जब उ आंख खोललीं त सोंझा माधव

ना रहलन, पहिले त उ अचंभित भइली फेर उ खुद से फुसफुसात बोलली –" ई सपना रहल कि साक्षात दर्शन माधव?"
उ उठ के मंदिर में गइली, मूर्तिके सामने माथा टेकली आ बोलली– "श्याम... अब हमरा कुछ ना चाहीं।
रउरा माधव बन के अइली, या माधव राउर रूप ध के अइले!!
अब हम दुनो में भेद ना करब...।
ओ दिन से किशुनी बदल गइली
अब उ ना भक्ति में पागल रहली, ना मोह में उलझल।
बस एक शांति, एक स्थिरता ओकरे चेहरा पर बस गइल रहें गाँव के लोग कहे –"अब किशुनी सांच में भगवान से मिल गइल बिया।"
कार्तिक के पूनम के रात रहल।
पूरा गाँव दीया से जगमग।
हर आँगन में तुलसी चौरा पर दीया जलत रहे
भजन के स्वर गूँजत रहल –"हरि नाम सुमिर ले मनवा, हरि नाम सुमिर ले..."
मंदिर के भीतर उ फिर से आरती के थाल सजा रहल बाड़ी।
पीयर साड़ी, माथा प चंदन, हाथ में दीया।
बाकी आज ओकरे चेहरा पर कुछ अलग तेज रहल –
ना वैराग्य, ना पागलपन – बस एगो घनघोर शांति।
गाँव के लोगन के अचरज लागल – "किशुनी आज त कइसन चमक रहल बिया! जइसे भगवान ओकरा भीतर बस गइल होखस।"
उ आरती शुरू कइली।
दीया उठावली आ उनकर स्वर गूँज उठल – "जय जय श्री राधे श्याम..."
हवा गते गते चलत रहें, दीया के लौ थरथराइल, पर बुताइल ना। उनकरा चेहरा प मुस्कुराहट के संगे आँख में लोर रहें, पर चेहरा पर अद्भुत आभा। आरती के बाद उ मंदिर के सीढ़ी पर बइठ गइली।
आ धीरे से बोलली –
"ए कान्हा, रउरा दरबार में सब कुछ समर्पित क देनी। अब ना भक्ति बचल, ना मोह... बस रउरा अउर हम।"
उ तुलसी के माला के दाना प कृष्ण के नाम जपत रहली!!
दीया के अंजोरिया में उनकर चेहरा खूब सुघ्घर देवी जइसन लागत रहें।
हवा के झोका से उनकर चेहरा कबो कबो थरथराए लागत रहें। दीया के लौ भी आकाश की ओर लहराइल आ फिर शांत हो गइल।
भोर के बेरा जब मंदिर के पुजारी जी अइलन त किशुनी तुलसी चौरा के पास चुपचाप पड़ल रहली। चेहरा पर हलुक मुस्कान, तुलसी माला हाथ में। जइसे भक्ति आ मोह के बीच उधिआत–पँवरत उनकरा के मोक्ष मिल गइल होखे।
गाँव के लोगन के भीड़ इकट्ठा हो गइल। लोग कहे लगले कि "किशुनी मूअल नइखी उ त अपना माधव में समा गइली।" कहल जाला, कि, मंदिर में आज तलक रात के जे दीया बारल जाला त भोर ले उ टिमटिम करत देखल जाला !!
कृष्णमयी के आत्मा के प्रकाश बन के!!••

पता– Mr sanjay kumar singh] (commandanta)
150 bn Mandir wala gate Alamganj]
District&Dhubri- Assam -783339
8160492100, sanjaybimmi@gmail-com

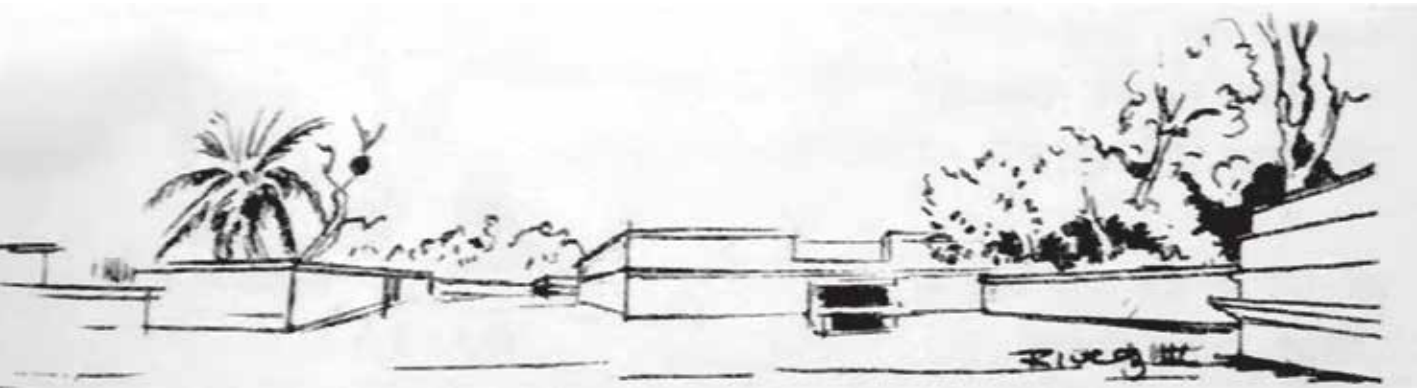

परबतिया फुआ

अयोध्या प्रसाद उपाध्याय

केहू कतनो अपना के बड़ समझत रहे एकर फिकिर ना करत रही। जवन कह देत रहली ओह से इचिको एने ओने ना होखस। रहली त ऽ ऊ औरत बाकी मरदन के कान काटत रही। एक नंबर के हाजिर जबाबी। दुख सुख के साथी। साहसी, मिलनसार आ जुझारु रही। रात बिरात कबो कतहूँ चलि जासु। खेत खरिहान चाहे बाग बगइचा चाहे अस्पताल भा श्मशान हर जगह जरुरत प ऽ हाजिर होखे वाली परबतिया फुआ के कहानी पढ़ के,सुन के लोग दाँते अँगुरी काटे लागेला।

हम त ऽ उनुका के देखले ना रहीं बाकी गाँवघर आ माई बाबुजी से जवन सुनलीं ओही आधार प ऽ हमार मन में उनुकर जवन रूप बनल उहे आज ले बनल बा।

हम एक दिन सूतल रहीं तबले परबतिया फुआ के रूप सामने आ गइल। उठ के बइठ गइनीं आ कहनीं 'फुआ आज भ हमरा के मौका द काल्ह नीमन चाहे बाउर तोहरा के हम आपन कहानी में जगह देब। तोहरा के नायिका बनाइब आ जे ना जानत होखि उहो लोग जान जाई। अतने ना फुआ तू अमर हो जइबू। ई बात सुन के खूब ठठा के हँसली आ जुग जुग जीव रे मोर बबुआ'! आशीर्वाद दिहली। अतने ना ऊ हमरा से कहली– "तू हमार कहानी नइख जानत। ओह समय तोहार जनमो ना भइल रहे। जवन कुछ जानतो बाड़ ऊ दोसरे के सुनल। त ऽ हमार ई बुझात बा कि जवन तू कहानी लिखबऽ ओह में बहुते बात छूट जाई। हम चाहत बानीं कि हम बोलत जात बानीं आ तू लिखत जा। जल्दी लिखाइओ जाई आ सहियो लिखाई।"

हम कबो मन में सोचीं आ कबो फुआ के मुँह प ऽ देखीं। अचरज भइल। हम ढेर कहानी लिखलीं बाकी अइसन कवनो चरित्र से भेंट ना भइल रहे। अइसन त ऽ शायद महाभारते लिखे के बेरा गणेश जी आ व्यासजी के साथ भइल रहे। लेकिन एगो शर्त लागल रहे।

साँच पूछीं त ऽ एहिजो त ऽ बात उहे बा। सही आ गलत के। खैर कवनो तरह से तैयार हो गइनीं। परबतिया फुआ बोले लगली आ हम लिखे लगनीं–– "हमार बाबू मनबोध आ माई रधिया। हमार नाम पार्बती। बिगड़ के परबतिया ठीक ओसहीं हो गइल जइसे माई के नाम राधिका से रधिया हो गइल। पढ़ाई लिखाई के कबो घर में सिलसिला ना रहे। गाय भइँस के चरवाही आ खाये पानी के इंतजाम करे के रहे। बिआह लइकाइयें में हो गइल रहे।

अबहीं गवनो ना भइल रहे कि हमार मालिक सोन में डूब गइले। एकरा बाद हम एहिजे माइये बाबू भाई संगे रह गइनीं। हमनीं के एकजनमिया हईं जा।एकर मतलब ई भइल कि दोसर बिआह ना होखे।जिनगी भ बिधवा भा राँड़ बन के रह जाये के पड़ेला।"

हम अइसन जिनगी के बारे में पूछनीं त ऽ उनुकर आँखि लोरा गइल। फिर कहानी कहे लगली–– "एक बेर के बात ह ऽ बाबू हरनाथपुर गइल रहले। हमार ससुर देवीलाल से कहले रहले बाकी हमरा के ले जाय खातिर तइयार नाहिंये भइले। बाबू इहो कहले आपन

छोटका लइकवा से बिआह कर दीं बाकी सुनबे ना करसु।
गाँवो घर के लोग बाबुये के कहस भला अइसनो कतहूँ होला। राम राम छिछि।
ई बात मुँह से निकालत रउआ भारी नइखे बुझात। ई सभ सुन सुन के दुखी आ उदास हो गइले। मन में सोचत आ गइलन। भगवान के जवन मरजी होखी उहे होई । हमहुँ सेयान आ समझदार होखे लगनीं। भाई एगो रहले जेकर शादी बिआह हो गइल रहे। भउजी ख्याल राखत रही बाकी ———।"
आगे कुछ कहत कहत ठहर गइली।आपन माथ खजुआवे लगली। हमरा बुझाइल ढील चाहे लीख काटत बाड़ी सन। हम कहनी फुआ आगे का भइल ———— "बबुआ! हमहूँ सोच लीहलीं अब हरनाथपुर का जाये के बा। बाबू से कहनीं हमरा खातिर तनिको चिंता मत कर। ईश्वर मालिक बाड़न। जे आपन चाल चरित्र ठीक राखी ओकर केहू कवन चीज बिगाड़ ली। हम सोन में रोज जाईं आ एक बोझा मूँज ले आईं। बहुत एकठा हो गइल। ओकरा के सूखा के सभ भुआ निकाल देनीं। ओकर बरुआ बना के लाल,हरीअर,करिया आ पीयर रंग में रँग दिहलीं। ओहि से तरह तरह के ओड़ी दउरी डगरा डगरी खेलवना बीन बीन के बाजार में बेचे लगनीं। आमदनी होखे लागल। बाबू के घर के खरचा चले लागल। हमरा के ई काम करे से मना करत रहन। बाकी हम कहनीं मउनी, दउरी त माइयो बीनत रहे। एह में कवनो शिकायत बा।
एगो अइसन समय आइल सरकार के धेआन घरेलू उद्योग धंधा प ऽ गइल आ सरकारी अनुदान मिले लागल। हमरो मिलल। हम नाम रखनीं 'परबतिया फुआ कुटीर उद्योग'। सगरो प्रचार प्रसार होखे लागल। खूब बढ़िया पइसा कमाय लगनीं।"
एक दिन के बात ह ऽ देवी लाल जी हमरा बाबू भीरी आइल रहले आ आपन छोटका लइकवा से बिआह करे के कहत रहले। बाबू पुछले लइकवा का करत बा। कुछुओ नइखे करत। देवीलाल जी कहले आ चुप हो गइले।"
फुआ एकरा बाद का भइल————"तनी धेआन से सुनिह। समय बड़ा बलवान होला। ओकरा सोझा राजा महाराजा के मूँड़ी झुक जाला। आ उहे होला जवन ऊ चाहेला। बाबू देवीलाल से इहे कहले अब समय बीत गइल बा। हम विचार क के बाद में बताइब। बाबू कहले ——'परबतिया अब तू आपन परिवार बसा के आराम के जिनगी जीअ आ रोजगार के विकास कर। जे केहू हमार शुभचिंतक रहे सभ लोग एही तरह से कहत रहे। हमहूँ सोचनीं भाई भउजाई के परिवार होइये गइल। माई बाबू के सहारा लोग बड़ले बा। काहे ना आपन शादी बिआह कर लीं। हमार मन मिज़ाज देख के बाबू हमार बिआह बगले के गाँव श्रीपालपुर के रहे वाला विनोद से कर देले। विनोद के भी छड़ गिट्टी के कारोबार रहे।"
हँ फुआ फेर का भइल———"बबुआ हम आपन जिनगी के दुख विनोद जी से सुनवलीं। उहाँ के सुन के चुपचाप रहनीं। हम कुछ सुनल आ समझल चाहत रहीं। ओइसे इहाँ के समझदार आ सुलझल इंसान बानीं। हमनीं के बीच तालमेल बा। कवनो समस्या नइखे। एक दिन हम आपन मन के बात विनोद जी से कहनीं। उहाँ के आपन सहमति दिहलीं कि एह सामाजिक बुराई के समाप्त करे के चाहीं।
लइकाईं में बिआह ना होखे के चाहीं। कम उमिर बिधवा बिआह होखे के चाहीं। हमरा बल मिलल। हम आस पास घरे घरे जा के आपन बात कहनीं। सभ केहू सहमत भइल। एक दिन एगो बइठक भइल जवना में पंद्रह बीस गो महिला लोग आइल रहे। ओह दिन एह मुद्दा प ऽ चर्चा भइल। इहो निर्णय लेल गइल कि अगिला बइठक में एह संस्था के कवनो नाम रख दिआई। इहे भइल। एह बइठक में पचास से अधिका महिला लोग के उपस्थिति रहे। समिति के सदस्य के चुनाव भइल। सदस्य सभ मिल के एगो संस्था बनावल। जेकर नाम रखाइल ——"महिला उत्थान समिति, श्रीपालपुर" एह समिति से महिला लोग के कवना उपाय से विकास हो सकत बा। समाज में कवन कवन बुराई बा जवन नारी विकास में बाधक बा। एह तरह से सामाजिक कार्यकर्ता के संख्या बढ़े लागल। न्याय मिले लागल। महिला में आत्मविश्वास जागे लागल। आपन कर्तव्य आ अधिकार के बोध होखे लागल। आ हम सभ लोग के चेता दिहलीं कि केहू केकरो नाम के, काम के बिगाड़े के कोशिश मत करो। लइकिन के पढावल जरुरी बा। हम पढ़ल लिखल रहतीं त ऽ हमरा बाबू के देवीलाल भीरी बेमतलब के माथ नवावे के ना परितऽ।"••

तेरही

राम यश 'अविकल'

सपना मोड़ के मुख्य सड़क से तनि भीतरे दूमहला पुरान मकान। कतही कतही से प्लास्टर झरल। दरवाजा खटखटाते खुलल। साधारणे साड़ी में मकान मालकिन। ऊ समझ गइली, ई किरायादार हवें ।

ऊ कहली–––"अभी ओनिये रहिहऽ बबुआ।"

दुआरिये प से अपना आदमी से तनि टांठें आवाज में पुछलीं–"आरे... सुनऽ तानी जी– इनिकर जात पुछले रहीं.।"

"ना... हो... जात त ना पुछले रहीं। रंगरूप से गोर–गार आ पहिनाव बढ़िया पेन्हेंलें। त का जात पूछी? जरूर कवनो बड़े जात होइहें।"

"हाय दइया–––! जात ना पुछले रहीं? बिना जात जनले घर भाड़ा ले ले रहीं.। कवनों जात के घर में किरायादार रख लेब?"

"आरे–त– अभी कवन बिगड़ल बा... पूछ ना ल।"

उदय से पूछली –"बताव बबुआ पंड़ी जी हव नू...?"

सकपका गइलें, उदय। दोविधा में। सोचले बिना बतवलें गुंजाइश नईखे–––"हम पंडी जी ना हईं।"

"तब त जरूर राजपुत होइब ?"

"ना, हम राजपुत ना हईं।"

"त का लाला जी हव ?"

"ना– हम ललोजी ना हई।"

"त का डोम, मेहतर हव ?"

"मेहतर ना, हम डोम हईं।"

ई सुनते मालकिन के चेहरा के भाव बदल गइल। नाक भंव सिकुड़ा के कहली – राम–राम हमरा घर में डोम रही...? सब घर भरभंड हो जाई। ई हमरा दुआरी पर चढ़ गइल। कुल्ही गंगाजल से धोवे के परी।

उदय के मान–सम्मान पर चोट पहुँचल, तिलमिला गइले। कहलें – जल्दी हमार पइसा लवटावऽ। पइसा लेत छूत ना लागत रहे...? तोहरा से बढ़िया घर मिली। भइल बाड़ी घर वाली ...?

"आ...जी... सुन तानी आई ना ,पइसा लेले बानी तवन दे दीं। डोम से पड़सा लेवे चलल रहीं? पहिलही ना पूछ लेवे ला कवन जात ह। मकान मालिक अइलें –– "कइसन पइसा ...? अतना दिन घर खाली रखनी, ओकर दंड के दी...?"

उदय कहले––––"हम पइसा लेके जाइब...।"

"पइसा... तुही पइसा लेबेऽ ...भाग ना त जूता निकाल के मारत मारत खराब कर देब। मुंह लगबे ...?"

उदय ममस के रह गइलें। उहाँ से हट गइलें। हटले समझदारी रहे। अब बरियार अफदरा में। अझुराह आ भारी समान लेके के कहाँ जाइब? शहर में केहू पहचान के बा ना। साँझ बेरा भइल। गाँव लवटे के अब साधनों ना मिली। रात भर टिकब कहां..? आखिर स्टेशन पर आ गइले। एगो चाय दुकान के नियरा बइठ गइलें। सोंच में डूबल, उदास। आँख से लोर ढरक गइल। एगो आदमी बइठ के चाय पीअत रहन। उनुकर नजर उदय पर रहे। ऊ सोचलें ई लइका जरूर कवनो दिकत में बा।

ऊ पूछलें———"काहे तोहार आँख डबडबाइल बा, कवनो बड़ दिकत का बा...?"

"जी, सर! किराया के घर पढे खातिर ठीक कइले रही, समता नगर में। नाम त समता नगर बाकिर खांटी विषमता नगर बा। तय किराया में आधा चुका देले रहीं। जब समान लेके अइनी, त मकान मालकिन दुअरिये पर पहिले जात पूछ देली। हम साँच साँच बता देनी,डोम हईं। ई सुनते हमरा के भगा देल गइल। हमार पइसवों ना देलस मकान मालिक। पइसा मांगला पर जूता से मारे के कहत बा। अकेले बानी का कर सकत बानी...? अफदरा में। कहाँ जाईं...? शहर में केहू पहचान के नइखे। अन्हार हो गइल। ई सुनते ऊ आदमी के दिमाग में अपने प बितल घटना इयाद आ गइल। हमरो के एक दिन असहीं भगावल गइल रहे। ओह लड़का के नाम गाँव पूछले त उ आपन नाम उदय आ गाँव आजादीपुर बतवलस। फेर ऊ आदमी आपन नाम श्रेयांश बतवले आ कहले हम एहिजे आरा में गौतम नगर में घर बना के रही लाँ। आजादीपुर के दखिनवारी टोला में हमार हीत बानी श्याम मोहन जी।

उदय बतवले———"हँ–हँ हम जानत बानी उनुका के। चाचा लागेलन।"

श्रेयांश कहले ———चल हमरा घरे। तोहरा के छोडल ठीक नइखे। हित–नाता के बात बा। जब तक कवनो व्यवस्था नइखे हो जात. तब तक हमरा घरे रहिहऽ।"

उदय खुश भइले। बिना मंगले जरूरत पूरा हो गइल। आ कहले———"बहुत–बहुत आभार एह अफदरा में मदद खातिर। जिनिगी भर ना भूलब ई दिन।"

अपना घरे लिआ के आ गइलें श्रेयांश। चाय–पानी पीयला के बाद उदय के आर्थिक हालात जानल चहलें।

उदय बतवलें ———"हमार बाबूजी एगो प्राइवेट कम्पनी में लेबर। कसहूँ घर के खरच आ हमार पढ़ाई होला। मैट्रिक पास कके शहर में पढ़े खातिर कॉलेज में नाम लिखा लेनी। ऊ ना चाहत रहन हमार लइका कम्पनी में लेबर बनो। पढ़ा–लिखा के कवनों नोकरी करावे के उनुकर इच्छा। गाँवों में दबंगई कम ना। गरीब, आ दलित लोग के कवनो मोल ना। हम अब तक इहें जानत रही कि खाली गाँवें में भेदभाव बा। अब पता चलल कि शहरो एह बेमारी से बांचल नइखे। जइसे हमनी के आदमी हइए ना हईं जा। जात जानते नाक सिकुड़ावे के शुरू। जइसे आदमी फरकहीं से बसात होखे।"

————"तब अपना बाबूजी के लगे काहे ना चल गइलऽ...? ओही शहर में कवनो कॉलेज में नाम लिखवा लेते।"

कारखाना के निअरा डेरा ना मिलल। ऊ चाहत रहन घर मिल जाई त एहिजे पढ़ाइब। लाचारी में झुग्गी में शरण लेलें। झुग्गी के जिनिगी बद से बदतर। साँझ के बेरा दारू शराब पी के गाली–गलौज। आपस में झगड़ा झंझट रोज के। छोट–छोट लड़का नशा के शिकार। गंजा–भांग से लेले सब किसिम के नशाखोरी। पढ़ाई–लिखाई के नामे ना। केहू के समझावल आसान ना। जे समझावे के कोशिश कइल, सब गति हो गइल। कमाय–खाय आ नशा से आगे के सोच ना। लाचारी हमरा गाँवे रहे के परल।"

"जब कॉलेज में नाम लिखा गइल त। होस्टल में काहे ना रहे के कोशिश कइलऽ। किराया के घर काहे ?"———श्रेयांश पूछले।

"शहर के दूनो होस्टल में बहुत कोशिश कइनी। बाकिर उहाँ कवनो जोगाड़ ना हो पावल। पता चलल कि होस्टल के भीतर जातीय गुट बा। ओहिजो बड़–छोट के लड़ाई बा। सब जात के छात्र अपना से नीचा जात खोज के टाइट। ई त महका देवे वाला हालात बा सर। फलाना जात से हम ऊँचा, फलाना जात से ऊ नीचा। आपस में तनिको मेल–मिलाप ना। होस्टल डॉ.आंबेडकर के नाम पर। बाकिर सोच डॉ. आंबेडकर के ठीक उल्टा।'

"ठीक बा। हम अपना स्तर से प्रयास करब। प्रीफेट से बात करब। का जाने काम बन जाय।" श्रेयांश कहले।

एक दिन बाद प्रीफेट से श्रेयांश बात कइले त पहिले ओह लड़का के जात पुछलें। पहिले से परिचय रहे के चलते काम बन गइल। बाकिर अनमने मन से तइयार भइलें। ओही दिन उदय के होस्टल में लेके चल अइले श्रेयांश। चौकी के व्यवस्था करा देलें। उदय अब होस्टल के सदस्य बन गइलें। उहाँ के छात्र पहिले उदय के जात पता कइलें। उनुकर जात मालूम होते ऊ लोग कनी काटे लागल। उदय के जात के एको छात्र अलग–थलग पड़ गइलें। इंटर के इंतिहान में जब कॉलेज टॉपर भइलें। तब कुछ लइकन के कान खड़ा भइल। अब गते गते कुछ छात्र उनुका नजदीक आवे लगलन। बाकिर अभियो ढेर छात्र उनुका से दूरे।

उदय सोचले आ तजबिजले त ई बुझाइल, होस्टल में सब गाँव के लइकन। अभी गाँवन में लोग के पढ़ाई–लिखाई के ओरे ओतना ध्यान नइखे। ढेर कम लोग पढ़ाई पर ध्यान देता। गंवई समाज में शिक्षा के अभाव के कारण जातीय बिखराव। कुछ लइकन पढ़त बाड़े आ होस्टल में आइल त गंवई रेवाज लेके आइल। एगो अउरी कारण बुझाइल। लइकन के महापुरुषन के बारे में जानकारी के अभाव। महापुरूषन के पढ़ले बिना वैचारिक बदलाव संभव नइखे।

उदय कुछ छात्रन के सहयोग से महापुरुषन के जयन्ती मनावे लगलें। एह अवसर प महापुरुषन के विचार आ संघर्ष विस्तार से बतावस। गते गते जागरुकता आवे लागल छात्रन में। कुछे समय में सुधार लउके लागल। अब छात्र अपने से बढ़चढ़ के महापुरुषन के जयन्ती मनावे के जोर शोर से पहल करे लगलें। उदय के बड़ी सकून मिलल ।

उदय एम० ए० क के पी०एचडी कर लेते रहन। नेट के इंतिहान देले रहन। रिजल्ट भइल त सलेक्सन हो गइल। सिवान के एगो बढ़िया कॉलेज में सहायक प्रोफेसर के पद पर योगदान करे के चिट्ठी मिलल ।

उदय के बड़ी सम्मान के साथ सब छात्र मिलके विदाई समारोह के आयोजन कके विदाई देलें।

उदय होस्टल छोड़े से पहिले श्रेयांश के घरे जाके भेंट कइलें। श्रेयांश बधाई देलें आ कहले – तोहरे अइसन घटना हमरो सँगे भइल रहे। आपन जात छिपा के एगो घर में किरायादार के रूप में रहे लगनी। बाकिर कवनो माध्यम से मकान मालिक के हमार जात पता चल गइल। हमार सब समान सड़क पर फेंक दिआइल। एही शहर में नोकरी कइनी आ आपन घर एहिजे बना के रहत बानी। तब से हमार मन में भाव जागल। तब से दलित छात्रन के दर्द आपन बुझाला। गरीब लइकन के बड़ी दिकत होला। हमरा संपर्क के जवन लड़का मिलल सबके भर इम्तिहान अपना घर राखी ला एह से ओकर कुछ मदद हो जाला। आजों गाँव–गाँव घूम के जवन लइका पढ़े में तेज बा ओइसन लइकन के कॉपी किताब हम खरीद दे दिइला। उदय सुन के बड़ा प्रभावित भइले। कहले जतना हो सकी हम हूँ ई काम करबऽ।

उदय कॉलेज में योगदान कइलें। आपन छुट्टी के जादे उपयोग शहर के दलित मोहल्ला आ गाँव में जाके शिक्षा के अलख जगावस। संगही समाज में फइलल अंधविश्वास, नशाखोरी से दूर रहे आ आपसी सौहार्द बना के रहे के सीख देस। कुछ समय त लागल जरूर। कुछ बदलाव लउकल त अउरी हौसला बढ़ल। अउरी मेहनत करे लगलें उदय। कुछे साल में ढेर बदलाव भइल। लोग इनिकर बात समझे लागल। अब पहिले से लोग लइकन के पढ़ावें के जोर देवे लगलें। लइका के संगे लइकियों पढ़ें लगली। उदय अपना से भरपूर सहयोग करस आ एगो एन. जी. ओ. से मदद करवा देस। ढेर लोग इनिका से जुड़े लगलें। जहाँ लइका ना पढ़त रहन उहाँ अब लइकी पढ़ें लगली। मीडिया में रिपोटिंग होखे लागल दूरदर्शन आ अउरी मीडिया के माध्यम से इनिकर विचार प्रसारित होखे लागल। इनिकर सामाजिक काम देख के राज्य सरकार के पंसन परल। आ राज्य सरकार इनिका के सम्मानित कइलस। ओही समय संगीता नाम के एगो सहायक प्रोफेसर उदय के विभाग में योगदान कइली। उदय पुछलें–––"कहाँ घर ह संगीता जी...?"

"आरा घर ह सर ।"

"हमहूँ आरा के जैन कॉलेज से पढ़ल बानी। हमार घर देहात में बा। बाकिर जिला मुख्यालय आरा ह।"

"बड़ा बढ़िया संयोग बा सर।

"केहू पहचान के होखे त ठीक, ना त केहू से बोल के हम रहे खातिर डेरा खोजवा देम।"

"डेरा खोजवा देम त बड़ा मदद हो जाई सर।"———संगीता कहली।

जवन मोहल्ला में रहत रहन उदय, ओही मोहल्ला में डेरा मिलल संगीता के।

संगीता उदय के काम से प्रभावित भइली। आ संगे काम करे के इच्छा जतवली।

उदय कहलें ———— "देहात में घूम–घूम के काम कइलस आसान ना ह। घाम में, लुक–लहर में जाय के परेला। कॉलेज में पंखा के नीचे पढ़ा देल आसान बा। बाक्किर ई सब काम जाड़ा, गरमी, बरसात सब मौसम में काम करे परेला। तू एगो लइकी बाडू, तोहरा खातिर कठिन काम बा,सकान ना होई।"

मौका दे के त देखीं।"

संगीता के हिम्मत आ काम करे सवख देख के खुश भइलें उदय। अब जब देहात में जास, इनिको के संगे ले जास। कुछ महीना संगे जाय–आवे से काम के समझ बढ़ गइल। आ का–का समस्या बा देहात में देखे समझे के मौका मिलल। अब अकेलहूँ चल जास देहात में। घूम घूम के काम करस। संगीता के केंद्र में अधेड़ उमिर के औरत रही। देखली कि एह लोग में पढ़ल नाहिये के बराबर बा। एहि चलते ई लोग में जादे अंधविश्वास बा। ई लोग के कुछ बाँचे भर पढ़ा तिखा दिआव त ढ़ेर सुधार हो जाई। पढ़ाई के मोल समझ में आ जाई त आपन लईका लइकी के पढ़ावें प जोर देवे लागी लोग। संगीता खूब मेहनत कइल. ी। लइकिनों के अपना संगे जोड़ली आ कुछ लइकिनों के जवना के पढ़वली आ पढ़ल रहे, ओह लोग के जिम्मेवारी दे देली। शिक्षा के लव जरावे लगली संगीता। कुछ साल समय लागल त एकर परिणाम बढ़िया मिले लागल। अब इनिको नाम के चर्चा होखे लागल। दूरदर्शन अउरी मीडिया में इनिकर विचार दर्शन प्रसारित होखे लागल – गते गते इहो प्रदेश भर में छा गइली।

उदय के संगे मिल के काम करे आ संगे जाय आवे से ढ़ेर लोग के शक के बेमारी घेरे लागल। ई बात के लेके के दूनी आदमी के पहिलहीं से शक बनल रहे अछरंग लागे के। साँच बात रहे कि दूनो आदमी के बीच अइसन बात ना रहे। खाली अपना काम से लगाव रहे। दोसर कुछो ना।

एक बेर विदेश में व्याख्यान देवे खातिर उदय आ संगीता के नेवता मिलल। एह काम खातिर सब प्रक्रिया सँगही पूरा भइल। पासपोर्ट वीजा से लेले हवाई जहाज के टिकट सँगही भइल। दूनों लोग विदेश के धरती प पहिला बेर उतरलें। दूनो लोग के एके होटल में अलगे–अलगे कमरा के व्यवस्था भइल रहे।
एने अफवाह के बाजार अउरी गरम। दुनो कुँआर आ जवान संगीता सुनर सुभेख लाम लहकार रहले रही। विदेश में कोई देखे –टोके वाला हइये ना। लोग के मन में शक अउरी गहिर।

रात में खाय के टेबुल प बतकहियो होते रहे। एही बीच संगीता कहली ——— अब त हमनी के बिआह कर लेवे के चाहीं।"

उदय कहलें ———"हमरा त मिशन से प्यार बा। हम सोचले नइखीं। तोहार मन बा त कर लऽ।"

"जवन मिशन से प्यार रउवा बा, ओही मिशन से हमरो प्यार बा। जब दूनो आदमी के मिशन एके बा त काहे ना हमनी के जिनिगी भर के एक हो जाईं जा। एह से समाज में जवन भरम फइलल बा ओह प रोक लाग जाव। राउर व्यवहार आ काम से अतना लगाव हो गइल बा कि हम चाहत बानी जीवन साथी हो जाईं जा।"

उदय दोविधा में सोचें लगले। इनिका बारे में हमरा कवनो जानकारी नइखे। खाली अतने जानत बानी कि इनकर घर आरा में बा। कवन जात विरादर हई कुछुओं मालूम ना। साथे इहो बात बा, ऊ हमरा के कतना जानत बाड़ी। हमार जात उनुका मालूम बा कि ना? बिआह के बेरा समाज जात खोजेला। एह ममिला में बड़ी कटरपन आजो परजात से बिआह करे के समाज तइयार नइखे।

संगीता के बाबूजी इनिकर बिआह खातिर धाव–धूप करस। संगीता प बिआह करे के दबाव बनावस।

बाकिर संगीता सोचत रही ———हम गाँव–गाँव घूम के जात–पात भेदभाव खतम करे खातिर काम करीं, आ हमहीं आपन जात के घेरा में रहीं...? आ अपने जात में बिआह करी...? समाज का कही? अपने बिआह करे के बेरा जात देख के बिआह कइली। आ दोसरा के उपदेस देत बाड़ी...। हम ई ना होखे देम। आगे जवन होई तवन देखल जाई संगीता अपना मन में संकल्प कइली। हम कवनो हालत में आपन जात में बिआह ना करब।

अबतक संगीता या उदय एक दोसरा के जात ना जनले। अब जात जाने के फेर में लाग गइलें उदय।

संगीता एह चलते जात पता लगावत रही, कहीं उदय जी हमरे जात ना नू हईं! अगर हमरे जात होइब त बड़का फेरा हो जाई। फेर हमार संकल्प टूट जाई। बाकिर हम संकल्प कवनो हालत में ना तूरब। भले हम उदय जी के त्याग देम। एगो सहकर्मी तक नाता रही।

जल्दीये जात पता लाग गइल। संगीता जान गइली, उदय जी डोम हईं। बड़ी सकून के लमहर सांस लेली। शायद ऊपरवाले सुनत रहन आ हमार संकल्प टूटे से बाँच गइल। कहली, बुझात बा कि हमनी के जोड़ी ऊपरहीं से बन के आइल बा। अब ठान लेली बिआह हर हाल में इनिके से करब ।

उदय जानत रहन कि इनिका संगे बिआह इनिकर माई बाबूजी ना होखे दिहे। समाज अतना उदार नइखे।

एक दिन संगीता अनसो. हातो कहली–––"हमनी के मिशन में जात–पात , भेदभाव खतम करे के जोर रहेला। त ....का...ई खाली दोसरे प लागू होई ? पहिले अपना प लागू कर के समाज के सोझा मिशाल पेश करे के परी। रउवे कहींला परजातीय बिआह से जात–पात खतम होई। का... रउवा ई बिआह खातिर मन बनवले बानी कि अपने जात में करम...?"

उदय कहले –––"ना हो, हमहूँ दोसरे जात में बिआह करम। बाकिर केहू करे के तइयार होई तब नूँ।"

"जब दूनी आदमी के सोच एके बा, तब काहे ना हमनी के दूनो आदमी बिआह क लीं जा।" ––– संगीता कहली।

"तोहार बाबूजी कबो तइयार ना होइहे, लिख ल संगीता ।"

"हम अपना बाबूजी आ भाई के जानत बानी, कहाँ तक जाई लोग। कवनो अपराधी किसिम के आदमी से लगाव नहखे। जादे से जादे थोरे दिन रूसी–फूली लोग।"

"अतना आसान नइखे संगीता। ओह घरी जातिआँव होखे लागी। लोग जात के नाम पर एकजुट हो जाई।"

बिआह करे खातिर संगीता हरमेश आग्रह करस उदय से।

"जिद ठीक ना ह संगीता, समझदारी से काम करे के चाही।"

संगीता समझे के तइयार ना। कहली–––"हम बिआह करम त रउवे से। ना त हम कुँआरे रह जाइम। माई–बाबूजी कतनो दबाव बनइहें, हम दोसरा से बिआह ना करम।"

आखिर में जीत संगीता के भइल। उदय हार गइले। तइयार हो गइलें संगीता से बिआह करे खातिर। दूनों जना कोर्ट में जाके बिआह कइले।

बिआह कइला के बाद संगीता अपना बाबूजी से फोन प बतवली ,अब हमरा खातिर बर मत खोजम। हम बिआह कर लेनी।"

बाबूजी खीसी डपटले –––"अपने मने कइसे बिआह कर लेले तू? हमनी के मर गइल रहीं जा... ? हमनी के कवनो आरमान ना। एगो बेटी रहिस, कतना धूमधाम से बिआह होइत ?"

"जाय दीं बाबूजी, गलती हो गइल। माफ कर दीं। जवन हो गइल त बदलाई ना नू। राउर गोड़ परत बानी माफ कर दीं। दमाद देख के मन खुश हो जाई। एक दिन ले के आइब उनुका के।"

"हमार बाबूजी मान गइनी। रउवा के देखल चाहत बानी।" संगीता उदय से कहली।

"का....मान गइनी...? हमरा बारे में सब कुछ बतवलू हा।"

"कुछ ना, अब चलीं हमार नईहर।"

उदय संगीता संगे जाय खातिर तइयार हो गइलें।

बस से आरा बस पड़ाव उतर के संगीता रिक्सा ठीक कइली। आ समता नगर चले के कहली।

ई सुनते उदय के ऊ घटना इयाद आ गइल। ओही मोहल्ला से भगावल गइल रहीं। माथा थोरे देर खातिर ठनकल। बाकिर सोचलें ओह मोहल्ला में ढेरे लोग बा। खाली उनके घर थोरे बा। थोरहीं देरी में रिक्सा आ गइल ओह मोहल्ला में। ओही दुआरी पर रिक्सा खाड़ करे के कहली। अब त उदय के ओह दिन के घटना दिमाग में झनाक दे लागल। सोचे लगले एही दुआरी से दुत्कार के भगावल गइल। आज ओही घर में जाय के परी।

कहीं चीन्ह जाई लोग त कुछो हो सकेला। मन में हिचक बनल रहे। तबले एगो उपाय उनुका दिमाग में आइल। पानी पी के जल्दी एह घर से कवनो बहाना बना के निकल गइल ठीक रही।

अभी पानी पिअते रहन, तले फोन आइल। बात कइले। फेर संगीता से बतवले ———"अभी तुरंत हमरा घरे जाय के परी। बाबूजी के तबियत जादे खराब हो गइल।"अभी ससुराल में केहू से बतकही ना भइल। उदय उहाँ से निकल गइलें। सिवान लवट गइलें। संगीता रात भर रहली। होत बिहान उहो वापस लवट गइली। संगीता से उनुकर बाबूजी उदय के बारे पुछले। बाकिर संगीता कुछ खास खोल के ना बतवली ।

उनुकर बाबूजी के शक भइल। जरूर कुछ छिपावत बिया बेटी। उहो लाग गइलें उदय के बारे में पता करे के। पता चलल त उनुकर पाँव तले जमीन घसक गइल। सिरे से उखड़ गडलें। अगर संगीता भिरी रहती त मार देते। फोने प संगीता के खूब गरिअवलें। कहले ———"हमरे जमलका...आ हमरे से छल .. त... का जानत बाड़े पता ना लागी ..? तोरा अपने पसन से बिआह करे के रहे त आपन जात के लइका मर ओरा गइल रहन स का...? एकदम नरके में गिर गइले। हमार खानदान के नाम डुबा देले। हमार मुड़ी गड़वा देले। एगो बात सुन ले। आज के बाद हमार दुआरी प मत अइहे। हमरा खातिर तू मर–ओरा गइले। हमार कवनो हित–नाता से ना बात करिहे ना मिले के कोशिश। चेता दे तानी। हम तोर क्रिया करम जल्दीय करब। साँचहूं संगीता के बाईक दुर्घटना में मुअला के अफवाह उड़ा देले। शोक संदेश के कार्ड छपवा के बाँट देलें। मरनी के क्रिया करम तेरहीं करके संगीता से छुटकारा पा गइलें। एगो शोक संदेश के कार्ड संगीता के नाम से भेज देले रहन डाक से। संगीता के कार्ड मिलल जीव भर के रोअली।••

❑ पकड़ी गैस एजेन्सी के दक्षिण,
पो० - पकड़ी आरा, बिहार–802301

कविता

अनवद्य आलोक

निमिया-बबुरवा

माटी के अंगना।
तोड़ द पिंजरवा, के उड़ जा रे सुगना।

देहे नाहीं लागी तहरा इ मैदा मलाई हो
चूस जाई खून विरथ सगरी कमाई हो
कुहुकत बा नीड़, कहीं साथी तोर ललना।
तोड़ द पिंजरवा, के उड़ जा रे सुगना।

तन बा रँगाइल बाकी मन ना रंगाइल हो
दिन भर हंफलो प' रात मुरझाइल हो
गँउवें मे अपना तू बन गइलऽ पहुना
तोड़ द पिंजरवा, के उड़ जा रे सुगना।

गमला में आम तोहर चान के मचान टूटल
क्षितिज पार जाए वाला मन के उड़ान रुकल
बिखिया के बाढ़ भइली हाय तोहर जमुना यमुना
तोड़ द पिंजरवा, के उड़ जा रे सुगना।

❑ सी-6/354 यमुना बिहार, दिल्ली-110053

दू गो गजल

सौरभ पाण्डेय

एक)

सोचसु आपन, नाता पाछा
गइनीं नाहक उनका पाछा

का दइबा ई कइसन आङन
राहू-केतू आगा-पाछा

कवना बाग-बगइचा जाई
पतझड़ लागल जेकरा पाछा

सावन-भादों पानी-पानी
अँखिया कइलस, बदरा पाछा

रूप-सिङार करीं का कइसे
सीसा टूटल रउआ पाछा

पहिले परदा में हलचल के
दुनिया जानल, पल्ला पाछा

मंच सजल बा गजब भाव से
पढ़ीं लतीफा कविता पाछा

दू)

जवन घाव पाकी उहे दी दवाई
निभत बा दरद से निभे दीं मिताई

भले खून माथे चढ़ावत बजर लीं
कइलका भइल सब अलाई-बलाई

बहाना बनावत कटावत बा कन्नी
गुनीं अब मने मन का कइनीं भलाई

ई कवना घड़ी में कवन जोग जागल
जमुन-गंग के बीच लउकत बा खाई

धरा बन गगन जन-बसाहट में बा ऊ
जे बाटे गते गत त के अब लुकाई ?

भले हम ना बोलीं मगर सभ बुझाला
कहाँ से बा राउर ई पदवी-कमाई

दलानी के पल्ला का खड़कल तनिक में
उठल डेग दुअरा से दियरी मिझाई

इसऽरे इसऽरे में बरिसल ऊ बादर
चढ़ल बाढ़ि देही में चटकल कलाई

❑ एम-2 / ए-17, पी०डी०ए० कालोनी,
नैनी, प्रयागराज - 211008, मोबाइल - 9919889911

इन्द्र कुमार दीक्षित

बताव का करब हे राम!

कोड़त खनत कतक दिन बीतल
कबों न मिलल आराम,
बताव का करब हे राम।।

ना बँचलीं कागद के पोथी,
कलम न धइलीं हाथ
धूरी माटी खेलत कूदत
मोटरी चढ़ि गइल माथ।।
कान्ह कुदारी हाथे हँसुआ
खेती के बस काम, बताव का करब हे राम।।

रात दिना जाँगर के पेरत
जाड़ा गरमी बीते
तरसत रहे परान जिनिस
ना कवनो मिले सुबहिते।।
तर-तिउहारो के सुध हमके
खाइल भइल हराम।। बताव का करब हे राम

कर्जा दिहल गइल सरकारी
सबके समझल गइल भिखारी
पेट काटि के रहले पर भी
चले न नून तेल तरकारी।।
कुकुरा के कवरा अस देके
कइलन काम तमाम।। बताव का करब हे राम।।

बड़- बड़कुआ से जब आँटी
तब ना केहू गरीब के बाँटी
आरत आ मजलूम जानिके
पहिले नाम वोही के काटी।।
मुसुक बान्हि के बैंक वसूले
सूदि सहित्ते दाम।। बताव का करब हे राम।।

मुनुआ गइल पढ़े पठसाला
भइल वजीफा गड़बड़ झाला,
ऊप्पर नीचे बाँटि लिहल सब
पता न लागल ऊ घोटाला।।
केतनों कोसिस कइला पर भी
मिलल न एक छ्दाम। बताव का करब हे राम।।

मुनिया चउका-बासन कइलसि,
मेहरी कइसो माड़ पसवलसि
चउका पर खाएके बेरा,
विधना आपन चाल देखवलसि ।।
जोर से आइल आन्हीं-पानी
छान्हीं गिरल धड़ाम।। बताव का करब हे राम।।

थुन्हीं-खम्भा सब भहराइल
दियरी-बाती तुरत बुताइल,
मेहरी लइका सभे चताइल
केहू बचावे तक ना आइल।।
इहे गरीबन के जिनिगी बा
आगे कउन मुकाम।। बताव का करब हे राम।।

5/45 मुंसिफ कालोनी रामनाथ देवरिया (उत्तरी)
देवरिया 274001, मोबाइल : 9455724573

रुनुकि झुनुकि बेटी माँगिले के लोक परब

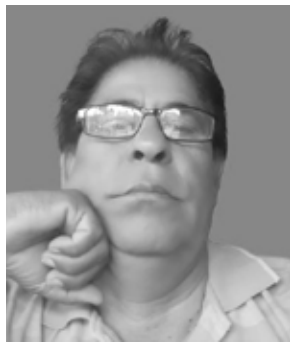

सुभाष पांडेय संगीत

"रुनुकि– झुनुकि बेटी मांगिले, पढ़ल पंडितवा दामाद, हे छठी मइया दरसन दीहीं ना अपान।" छठ गीतन में बेटी खातिर ई आदरभाव साफ– साफ लउकेला। छठ बरियार महिला आ पढ़ल– लिखल समाज के सपना देखावेला लेकिन छठ परब के ए पक्ष के चरचा ओतना ना होला, जेतना अउरी पक्षके होला। इहाँ त गरभे में लइकी के मार दिहल जाता। ए पुरूष प्रधान समाज में बेटी की परवरिस में अनादर के भाव साफ लउकेला। इहे कारन बा कि लइकिन के संख्या लगातार घट रहल बा आ ओकरा साथे भेदभाव हो रहल बा। एही समाज के लोग चार दिन का कठोर बरत का बाद सूरूज भगवान से बेटी के माँग करत बा। छठ गीतन पर ध्यान दिहल जा त साफ बुझा जाला कि ई बेटी माँगे के परब ह आ मरद– मेहरारू के भेद–भाव मेंटावे के परब ह।

बयना बाँटे खातिर बेटी मांगिले कि पढ़ल पंडित दामाद... मतलब, हे सुरूज भगवान! हम रउआँ से बेटी मांगऽतानीं कि हमरा दुआर पर बारात आवे आ हम ओकर इज्जति करीं। एकरे साथे सुन्नर आ हुँसियार दामादो माँगल जाला। छठी मइया से निहोरा करत गावल जाला– साँझिके देबो अरघिया, अउर कुछ मंगबो जरूर, पाँच पूत, एकहीं गो धियवा, धियवा मंगिया जरूर। ए गीत में लिंगानुपात आ सिछित समाज के कामना कइल बा। असल में सूरूज भगवान की पूजा में छठी मिया के स्थापिते कइल, मेहरारू के बरियार बनावे की भावना के परिचायक ह।

बहुत पहिलहीं से ए लोक परब में सूरूज भगवान के बहिन छठी मइया की महिमा के एतना बखान बा कि ए परब के नाँव छठ जबान पर आ जाला। भाई सूरूज केन्द्र में आ सब आयोजन बहिन छठी मइया (षष्ठी) का अगल– बगल घूमत रहेला। एसे मरद– मेहरारू की बरोबरी के भाव बरियार होला। अगर सूरूज भगवान का लगे सगरे सक्ती बा त बिना छठी मइया की किरपा के लोक कल्यान नइखे हो सकत।

छठ परब में ए समाज के ओ लोग खातिर सबक बा जे बेटा खातिर मंदिर, मजार, ओझा– गुनी के चक्कर लगावऽता आ बेटी के बलि चढ़ा देता। छठ परब सिखावता कि बेटा आ बेटी दुनू बरोबर बाड़ें। समाज के ताना– बाना त बेटी के दूसरा नमर पर रखले बा। एकरा बादो कनियादान बिना रउरा करजा से मुकुत नइखीं हो सकत। ई परब बतावेला कि बेटा अगर घर के गौरव बाड़ें त बेटी घर के सोभा हई आ दामाद इज्जति हउअन। छठ परब एगो बड़हन कुरीति आ बुराई से लड़ाई ह।

छठ परब में सामाजिक सदभाव के सनेस बा। "छोटी रे मोटी डोमिन रे बेटी, लामी– लामी रे केस। सूपवा ले अइहे रे डोमिन अरघे की बेर। छोटी रे मोटी मालिन रे बेटी लामी– लामी रे केस। फुलवा ले अइहे रे मालिन अरघ की बेर।" ए गीतन में ऊँच– नीच, छोट– बड़ सबके भेद– भाव टूटि जाला। छठ परब में हर जाति आ समाज के महत्व बा। अइसन जातिविहीन आ सामूहिकता वाला छठ परबके सबके बधाई। छठी मइया सबके सरधा पूरा करीं।••

बलिया में बी.एड्. के पढ़ाई

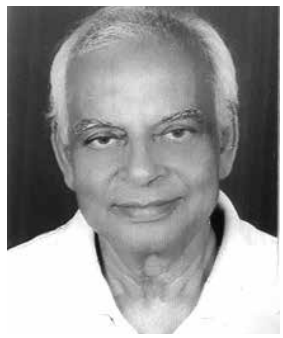

राजगुप्त

जइसे अण्डा से आपरूपी बच्चा निकलि आवेला, पचास बरीस पहिले के बाति आजु अचकले में इयाद आवे लागल हऽ। एतना दिन के बाति अचकले में इयाद आवते मन बेचैनी लेसि दिहलसि। मन परते मन घबडाये लागल। कमोबेश कपारो दुखाये; लागल। विद्वान लोग कहेला कि मन घबडाऊ तऽ कुछ लिखे–पढे से उफनत मन पटा जाई। जवन सुर बान्हि लेइब घबडाहट ओही समुन्दर में बिला जाई। कबो–कबो मन बेलगाम हो जाला अइसन में मन पर लगाम लगावे खातिर कुछ कइल–धइल जरूरी हो जाला कहानी–कविता अइसने दशा के देन हवे।

सन् ओनइस सौ चउसठ–पैंसठ के बाति नीक से मन परता। जब हम बी0एससी0 (कृषि) से पास हो गइलीं तऽ ,एम.एससी में नाँव लिखवावे खातिर खुबे दउड–घूप कइलीं बाकिर कवनो विश्वविद्यालय में नाँव ना लिखा पावल। खुबे नीक से पछतइलीं। खेल–कूद में समय बर्बाद ना क के मन लगा के पढले रहतीं त इ दिन देखे ना मिलल रहित। खेल–कूद के दिवाना रहली एह से आजु पछतात बानी। खेल–ओल कवनो कामे ना नू आइल। बी0,ए0 कऽ के घरे बइठि के का करबि?

ओही समय के बाति ह एगो हमार चिन्हार राई दिहले। एक बरिस बेकार कइला से बढिया बा बी0,एड0 कइ लऽ। एक सौ बीस रूपया के मास्टरी बॉव ना जाई। ट्रेन्ड ग्रेजुएट कहइबऽ, का इ कम खुशी के बाति बा? एक बरिस के कोर्स बा, खेलि–कूद के कटा जाई। बी0,एड में कहाँ नाम लिखाई? सोचत सोचत अपने टाउन डिग्री कालेज इयाद पड़ि गइल।

कालेज गइलीं। पता चलल ढेर अबेर हो गइल बा। नाँव ना लिखा पाई। धोबी के कुकुर ना घर में ना घाट के। मन मारि के घरे लवटत रहली त बीच रास्ता में, एन.सी.सी. के अपना अफसर इन्टोमालजी के प्रोफेसर डॉ0 श्रीराम सिंह आ एन.सी.सी. के प्रोफे0 अंग्रेजी के डॉ0 वरमेश्वर पाण्डे जी करेजा में उतरि अइले। सोचली दू–दू गो प्रोफेसर मन माफिक रहला के बादो अपना घर के ढुके के ना मिली? इ कइसे हो सकेला। आधा रस्ता से आपस लौट गइलीं। कालेज चोहँपली समनहीं डॉ0 श्रीराम सिंह लउकि गइले। हम अपना मन के बाति उहाँ से बतवली। उहाँ का जबाब देत कहली, "आ हो रजेसर! बी0,एड0 में दाखिला के कहियने से बन्द बा। सीट से अधिका नाँव लिखा गइल बा।"

हम कहलीं अपने कालेज में हमार नांव ना लिखाई? ताज्जुब के बाति बा। तू कुछ दिन सबुर करऽ। हम पन्डी जी (आचार्य; पंडित सीताराम चतुर्वेदी) से बात क के बताइब। डॉ0 श्रीराम सिंह के बाति से मन छटपटा गइल। रास्ते में प्रोफेसर बरमेश्वर पाण्डे; क्लास में पढावे जात रहले। लाचार होके आपन बाति उहाँ से कहली। पाण्डेय जी साफे कहलीं। एन.सी.सी. के वेस्ट कैडेट के इनाम तोहरा के मिलल बा। तोहरा कवन सोर्स–सिफारिस लगवला के जरूरत बा। पंडी जी तोहरा के नीक से जानते बानीं। घर के लड़िका केअपना

घर में जाये से के रोकी? बेधडक आफिस में घुसि जा। पांडे जी के बाति सुनि मन वासन उछरे लागल। जवन लरूआइल रहली, देहि में फूर्ति आ गइल। लागल सज्जी बगइचा के फूल हमरे करेजा में खिल गइल होखे।

दर्जनों विषय से एमे आचार्य; पंडित सीताराम चतुर्वेदी अपने आप में एगो उदाहरण रहली। बालू के मैदान में अकेला अलबेला फेड़ रहलीं। कवनो अवतार ले के पिरथवी पर आइल रहली। जइसे भगीरथ मुनि गंगा जी के धरती पर लिआइल रहले। शहर के सबसे बडका नामी गिरामी वकील मुरली बाबू चलनी से चालि के उहाँ के लिआइल रहले। टाउन डिग्री कालेज में प्रिंसिपल के पद पर बइठवले रहले। जेकर जोड–तोड जिला जवार में ना रहे। ओ घडी मुरली बाबू के नांव के डंका जिला जवार में बाजत रहे। कई हाली सांसद रहि चुकल रहलीं। बलिया के मालवीय मुरली बाबू रहलीं। आना पाई जोड़ि–जोड़ि टाउन कालेज बनवले रहलीं। एन.सी.सी. में सीनियर अण्डर अफसर रहली। एतना मीठ आवाज में कर्कस कासन बोली कि सभे हमार बढाई करें। ओही कारन से पंडित जी के नाटक में हमरा के राजा के पाट करे के मिलो आ डॉ0 श्रीराम सिंह आ डॉ0 बरमेश्वर पाण्डे; हमार दरवान रहत रहे लोग। बरिस में दू–तीन गो नाटक जरूरे करे के होखे। पंडित जी कईगो नाटक के किताब लिखले रहलीं। ओही में समय के अनुसार देखि नाटक खेले के रहे। मुरली बाबू के एक जाना भतीजा डॉ0 ललिता प्रसाद श्रीवास्तव रहलीं। एकदम से ठाट–बाट से सुघ्घर साफ सुथरा रहत रहलीं। कपडा के क्रीज ना बिगडे अइसन सोच–विचार के रहली। सांवरे त रहली बाकिर उहाँ के मुँह पर एतना आब रहे कि गोर के गोराइयों लजा जाई। पंडित जी के नाटक के रिहलसल उहें के घरे होखे। बीच बीच में पण्डिजी किहाँ जाके सवाचि आईं जा। उहाँ का एक्टिंग क के हाव भाव समुझा देईं। ओही गने करे के रहे।

एन0सी0सी0 के एक घंटा के परेड में दू–दू गो समोसा आ दू–दू गो मोतीचूर के लड्डू मिले। नाटक के दू–दू घंटा के रिहलसल में बडी मजा आवे। हमार त अउरी सीना तनेन हो जा कि हम राजा के पार्ट करीं? जवानी के देहिं, मोछिओ राखत रहनीं। एह से अउरी रूआब में रहीं। ओह जमाना में कालेज में हमार नाँव रहे। अपना सोझा केहू के लगावत ना रहलीं।

एक हाली के बाति ह। कइगो कालेजन के हॉकी मैच यू0पी0 कालेज, बनारस में होखे के रहे। बलिया से हमनियों के टीम रामजनम गुप्ता के कप्तानी में बनारस गइल रहे। हमनी का गाजीपुर आ आजमगढ के टीम के हरा के सेमी फाइनल में पहुँचल रहलीं जा। एगो कालेज के टीमे ना आइल त बाकओवर हमनी के मिलल आ बलिया फाइनल में पहुँचल रहे। फाइनल में; यू0पी0 कालेज से मैच भइल। यू0पी0 कालेज जीते खातिर कुछ उठाइ ना रखले आ हमनी का हार से बांचे खातिर जीउ–जान लगा दिहलीं जा। यू0पी0 कालेज के खिलाडी बहुते मन सरहंग रहले, रांग साइड पर चढा के मारि दें सऽ। गोड धवाही कइ देले रहले। राति का सूते के बेरा दरद बाथा के मारे कहंरि जा। दू हाली मैच बराबरी पर छूटल। तीसरा मैच एक दिन बाद रहे। राम जनम हमार कप्तान हमसे सांझि का कहले। रजेसरा तें चलि जो आजे बलिया। पंडी जी से कुछ पइसा माँगि के लिआऊ। सज्जी हाल बता दीहे। आपन फूलल घवाही गोडो देखा दीहे। बनारसे के रहे वाला हई उहाँ का। यू0पी0 कालेज के बारे में नीक से जानत बानीं। प्रिंसपल साहेब तोरा के माने–जानेले। टीम के दुर्दशा के बारे में बता दीहे। दू दू हाली ;यू0पी0 कालेज के बराबरी पर रोकि दिहलीं जा। इ बहुते बड बाति बा।

अपना कप्तान के इचिका सा बतावल हम ढेर समुझि गइलीं। सांझि का गाडी पकडि लीहलीं। राति का बलिया चोहंपलीं। ओ घडी एगो लाइन रहे आ एकही दूगो गाडी बलिया आवे जाव। पाकिट में दाम त रहे ना कि टीसन पर कुछ कीनि–ओनि के खा लेतीं। बलिया चोहँपते भूखि त लागले रहे, बाकिर सबसे पहिल प्रिंसपल साहब कीहाँ चोहँपली। सुत्ता पडि गइल रहे। हिम्मति बान्हि के केवाड़ी में झूलत झिटमिनी बजवलीं। कुछ देर बाद केवाडी खुलल। लालटेन ले के नोकर बहरी आइल। नोकर नीक से चिन्हत रहे। ओ से कहली। साहब से जाके बता द कि बनारस से राजेश्वर आइल बाडे। बहुत जरूरी काम बा।

बोलहटा आइल भीतर गइलीं। बुझाइल कवनो पेट पर देवकुरे बानी। पण्डी जी पाकिट वाला आधा वाँहि के गंजी धोती पहिर के सोझा अइलीं। हम पैर छू के प्रणाम कइलीं। पैर में चटाकी रहे। छूटते उहां का पुछली। खेल का हालचाल बताओ? कैसे आये हो? रोवां गिरा के सज्जी बाति संजय के दिव्य दृष्टि वाला बयान क दीहलीं। प्रिंसपल साहब बहुते खुश भइले। कुछ

पइसा खातिर आइल बानी, जेसे दवाई आ काल्हु खातिर खाना खोराकी हो जाव।

प्रिंसपल साहब सिरहाना हाथ डललीं। बेगर गिनले हमरा के रूपया दिहली। हमरा बुझा गइल। गिन के कवनो काम खातिर रखले होखब उहे उठा के दे दिहलीं।

हम खुशी खुशी प्रणाम क के घरे लवटि अइली। घरे आके खाना खा के, उल्टे गोड़ टीसन चोहँपली, गाडी मिलि गइल। संजोग नीक रहे। फजिरही बनारस चोहँपि गइलीं। मैच सबेरही समय से शुरू भइल। एक घंटा चलल। तीसरका हाली मैच बराबरी पर छूटल। पाँच–पाँच गो गोल मारे के आधा घंटा के मोका मिलल। हमनी का ओरि से चारगो गोल मराइल। उनकर दूगो गेना पोल से टकरा के वापस हो गइल। हमनी का चार–तीन से मैच जीति गइलीं जा। यू0पी0 कालेज से जीतल अकासे से जोन्ही तूरला के बराबर रहे। पंडित जी के पइसा से दवाई, बहुत दरद बाथा हरि हनले रहे। पंडित जी जीत सुनि के बहुते खुश भइल रहले। हमनी का जीत के आसिरवाद लेबे पंडित जी के आफिस में गइल रहलीं जा। पीछे बहुत लडिका रहले।

उहे उत्साह उमंग लेके पं.डित जी के आफिस में पहुँचलीं। प्रिसिपल साहब देखते कहले, "क्या बात है?"
"बी.एड. में दाखिला चाहऽतानी।"

प्रिंसिपल साहब हमार बाति सुनि एक पुर्जा लिखि के दिहले।

"ले जाओ, बनारसी बाबू (बडे बाबू) को दे देना।"

बडे बाबू कहले। काल्हु बी.एससी. (कृषि) के मार्कसीट आ एन.सी.सी. के 'बी' सर्टिफिकेट ले अइहऽ, नाँव लिखा जाई।

हम पुर्जा ना पढली कि पण्डित जी का लिखले बानीं। बहुत कम पइसा में नांव लिखा गइल आ फीसियो माफ।

आचार्य पडित सीताराम चतुर्वेदी बहुते विद्वान रहली। एक्टिंग आ डान्स उहाँ के रग–रग में रहे। एतना उहाँ के शरीर में लोच रहे। छव फुट्टा दारा सिंह अइसन कसरती, भरल–पुरल शरीर लिलार पर चन्दन के टीका, कपार पर गाँधी टोपी। कुर्त्ता–धोती आ सदरी, गोड+ में सफेद नियाग्राम जूता, पंचरगी छाता ले जब घर से बहरिआईं त देखवइया के आँखि चन्हरिया जाउ। एतना तनेन होके चलीं कि अनमन जनाऊ कि लोहा के कवनो मशीन होखे। मनोरंजन हाल में घइली उल्टा कइ के लटका देले रहलीं। जे में आवाज गूँजे ना। अपना में रहे। बे माइक के बोली। बोलीं अइसन कि कवनो शरबत लजा जाई। जइसे उहां के कण्ठ आ जीभ पर आपरूपी सरस्वती जी बइठल होखस। उहाँ के पढावल लडिकन के केतना केतना दिन ले इयाद रहे। ऊहाँ के मुँह पर एतना आब रहे कि पाउ. डरो के चमक झूठ हो जा। आजु उहाँ के पहिनावा, बोली, चाल–ढाल, मुस्किआई के बतिआवल सोचि–सोचि के देहि सिहरि उठता। रोवाँ–रोवाँ गनगना जाता। आजु तकले हमके उहाँ के जोड–तोड के आदमी ना लउकल। रहली त सांवर बाकिर गोर में ऐनक देखाई। एतना तेजस्वी पुरूष रहली कि उहाँ के बडाई कइल कवनो रिषि–मुनि के लजवावल कहाई? आजुवो उहाँ के प्रताप से टाउन डिग्री कालेज आपन चमक–दमक बरकरार रखले बा। कॉलेज के नाँव के बडाई बा। जवना घर में रहत रहली ओह मकान में कवनो रद्दो बदल ना भइल। आजुवो घरबो ओइसहीं चमकत बा, जइसे गरमी, सरदी आ बरसात के कवनो प्रभावे ना। कालीदास के 'मेघदूत' की तरे। हमार बाति आ बरनन उहाँ तकले पहुँची जरूर, हमरा एतना अपना पर सच्चा मन के असर बा। जइसे सच्चा मन से भगवानो के इयाद कइल जा तऽ उहाँ नरसिंहा अवतार एगो उदाहरण सोझा परगट हो जाइब। आपन छाप छोड़ि आ लड़िकन के दिल में उतरला के बाद उहाँ का बनारस लवटि गइली। बनारसे के रहे वाला रहलीं। जइसे उडि जहाज के पंछी फेरू जहाज पर आवे। उहाँ के जाते पूर्णमासी के अमवस्या हो गइल। आन्ही आवे के पहिले जइसे अन्हार हो जाला, कालेज में मुरदनी छा गइल। सभे हक्का–बक्का रहि गइल। अचकले इ का हो गइल? उहाँ का रहली त क्लास एतना बढिया से, शान्ति से चले कि चिउँटा–चिउँटी के चलला के आवाज मिल जात रहे।

एही गने ,क जाना विपिन बिहारी राय, नरही के रहले। आर्ट साइड में नांव लिखवले रहले। का बडाई करी उनकर कि पण्डित जी उनका के कत्थक नृत्य अइसन सिखा दइले रहलीं। कालेज के कवनो कार्यक्रम में एतना उछरि कूदि के नाचस कि लडिका थपरी बजावत बजावत थाकि जा स। विपिन मोटहन, गोर रहला के बादो उनका शरीर में एतना ना लोच रहे कि नचनियों फेल।

ओह समय वंश बहादुर सिंह नामी गिरामी रहले। कालेज में गाइयो से जेयादा सोझवक बाकिर अवांर–जवार में उनकर दबंगई के बडी शोर रहे। जइसे गुडा से केहु डेराला ओइसही बाहर के लोग वंश बहादुर सिंह से डेराउ, कालेज में अपना सिधवापन से पण्डित जी के असली चेला रहले। कहीं बहुत जबरदस्त मार पीट कइले रहले। जे से वंश बहादुर पर कचहरी में केस चलत रहे। कई हाली वारंट आवे बाकिर मुरली बाबू तीन–पाँच कइके वारंट वापस करा देसु। एह पारी गैरजमानत वारंट रहे। एह पारी गिरफ्तारी से बाँचल मुस्किल रहे। संजोग नीक रहे कि ओही घडी हमनी के एन.सी.सी. के कैम्प चुनार जात रहे। मुरली बाबू डॉ0 श्रीराम सिंह आ हमरा के घरे बोलवले। कहले कवनो लडिका के नाव काटि के वंशबहादुर के नाव जोडि दीं। मुरलीबाबू के कहला के अनुसार नया लिस्ट बनल। जेमे वंश बहादुर के नाव जोडाइल। प्रिंसिपल लिखि के दे दीहले कि वंश बहादुर सिंह एन.सी.सी. कैम्प करने चुनार गया है। से बाति ले के उनकर गिरफ्तारी टरि गइल। प्रिसिंपल साहब के गइला के ढेर दिन बाद प्रेक्टिकल शुरू भइल। टाउन कालेज के सटले इण्टर कालेज रहे। ओही में हाईस्कूल के लडिकन के पढावे के तरीका देखे। जहाँ गलती सही होखे ओइजा समुझावे, बतावे। पन्दरह दिन में लडिकन के पढावे में महारथ मिल गइल। ओकरी बाद एक दिन खातिर कालेज से दूर कहीं कैम्प करें के रहे। ओमे पाँच–पाँच लडिकन के समूह बना के कैम्प करे के रहे। आपन आपन करतब कला देखावे के रहे। आपन आपन प्रस्तुति प्रस्तुत करे के रहे। नाटक–नौटंकी प्रहसन, चुटकुला सुनावे के रहे। नाचे गावे के रहे।

हमनी के क्लास में एगो जज साहेब के लडकी नकबी रहली। उहे खाली सलवार–समीज पहिरे बाकी सज्जा मेहरारू साड़ी वाली रहली। एक दू लडिका के महतारियों रहली। ओ सम; के मेहरारू केतना लजकोकर रहली। ऊ दिन केतना नीक रहे। आजु के जमाना में ओह दिन के सुमिरन करतानी। मेहरारू के बारे में हमनी का सोचली जाँ, नाची गाई लोग बाकिर खीर–पूडी–हलुआ, किसिम–किसिम के बजका–पकौडी बना के प्रोफेसर साहब लोगन के खिआ के वाह–वाहि लूटि लिहल। खुबे हुमचि के खाइल लोग। खाना के महक से हमनियों के मन जुडा गइल।

हमनी के समुह में शोभनाथ लाल, रामसुन्दर राय, बृज बिहारी चौबे, हरि नारायण सिंह रहले। हरिनारायन पण्डित जी के सिखावल–पढावल चेला रहले। नाचल नीक से जानत रहले। लडिकि;न के बडा. ई सुनि हमनी के मुँह लटकि गइल। अइसना में हरि नारायण हमनी में सिकन्दर के साहस भरले। लडकी जवन ना कइली हमनी के देखावल जाई। हम नाचब। तोहन लोग खाली हमार नकल करिह जा। रामसुन्दर राय हँ में हँ मिला के कहले हम ढोलक आ तबला दूनू पारा पारी बजा देइब। राजेसर आ हमनी के नाचब जा आ शोभनाथ झाल बजा दीहें। हारि ना मानल जाई। जीउ जान लगा दिहल जाई। आधा घण्टा में हमनी से राई बाति सेट हो गइल। राम सुन्दर राय के घरे निगीचा रहे। उनका ढोलक–तबला–हरमुनिया बजावे के रपटा रहे।

घरे जाके तुरूते सब साज–बाज लिया दिहले। सभे देखि के चिहाँ गइल। जनानी के काम मरदानी करी? राम सुन्दर राय ढोलक बजवले कि लँगडी चले लागल बहिरो बोले लागल। चइता नीयर खूबे नचलीं जा। हरि नरायन के नाच पर लडिकन के साथे–साथे लडकियो थपरी बजावे लगली स त हमनी में अउरी जान आ जोश भरि गइल। अइसन नचली जा कि बगइचा के बालुओ में हमनी के गोड़ के छाप पडि गइल। प्रोफेसरों लोग थपरी (ताली) बजा के अइसन उत्साह उमंग भरि दिहल लोग कि चरखी हो गइली जा। केतना देरी तकले एक सुर से ताली बाजते रहि गइल। धान के खेत जइसे पुऊरा से चिन्हाला। थपरी बाजल रुकल ना, आ हमनी के समूह मैदान मारि लिहलसि। अउरी लडिका दउडि दउडि के आके हमनी से हाथ मिला के बडाई कइले। इ सज्जी आचार्य पण्डित सीताराम चतुर्वेदी प्रिंसिपल के आसिरवाद रहल। कहीं कबही कवनो जीत ना मिलल तऽ कुछ हारलो नइखी। उहें के आसिरवाद से हमरा के एन. सी.सी. के अच्छा सैनिक होखला खातिर गोल्ड मेडल सोने के तगमा मिलल रहे। हम उहाँ से आपन कविता सुधरवाईं, उहाँ के कविता के गीत बना देईं (जवना के हम साहित्यिक गोष्ठियन में सुनाईं, जेसे हमरा के साहित्यिक सम्मान भी खूब मिलल।

उहाँ सभ के स्मृति के प्रणाम।••

❑ राज साड़ी घर, चौक कटरा, बलिया,
मो०. : 7985409070

अथक संघर्ष आ अमर आशा के भुलावा के लेखा जोखा: महेन्द्र मिसिर

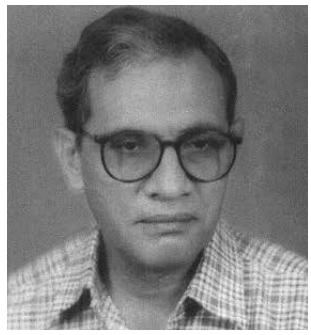

कुष्ण कुमार

पुरुबी के बादशाह महेन्द्र मिसिर के काव्यात्मक दर्पण के निहरनी। हमार वजूद हमरा के धिक्करलसि। त सोहरन के कड़ी में आज हम एगो ओइसन क्रांतिकारी, कवि, गीतकार, संगीतज्ञ आ वाद्यवादक के चरचा करे जा रहल बानी जेकर उदय काल महात्मा गांधी के उदयकाल के साथे घेरवटलसि,जे अपना गीत संगीत से पनिया के जहाज से पलटनिया बनि के देश– विदेश में भोजपुरी साहित्य के संवर्धन खातिर आपन पताका फहराई के हलफा कबार देनी, जे पूरबी गीत, भजन, निरगुन, गजल, दादरा, ठुमरी बारहमासा आदि में प्रेम,विरह आ भक्ति रस के चासनी में लबरेज क के अपना पहलवानी आ घोड़सवारी के बले– बुताते हरेक मंचन प, अखाड़ा आ महफिलन में लहर लूटनी,साथे ब्रिटिश हुकुमत के सोरि कबारे खातिर आ क्रांतिकारी भाई लोग के मदद करे खातिर जाली नोट छपनी,जेकरा लेखनी में बिरह, देशभक्ति, धर्मभक्ति के गीत–संगीत कविता सुने गावे के मिलल ऊ पूरबी के बेताज बादशाह आ आजादी के दिवाना रहीं बाबा महेन्द्र मिश्र जी....।

16 मार्च 1886 बड़ा शुभ दिन। ओहि दिने गायत्री देवीजी के गर्भ से जन्म लेनी बाबा महेन्द्र। छपरा जिला के जलालपुर प्रखंड के काहिं मिश्रवलिया गाँव के नामी–गिरामी जमींदार रहनी ऊहाँ के बाबूजी शिवशंकर मिश्र। बधाव वाजे लागल। दुआरि–दलान प गाँव जवार जुटि आइल। जे कबो दुआर प ना आवत रहे, उहो आइल। सोना में सुहागा। जमींदार रहले रहीं, शिवशंकर मिश्र। एकबाली बेटा पैदा भइल रहनी बाबा महेन्द्र जी। पूत के पाँव पलने में चिन्हा गइल। गुरू उपरोहित सभे आइल। जतरा–पतरा देखि लोग उचरल– "बहुत नीमन नक्षत्र में जनमल बानी बेटा जी। भविष्य ढ़ेर नीमन बा। नामी मरदाना होइहें आ ऊहें सभे नामकरण कइली बेटा के–महा+ इन्द्र=महेन्द्र (आ+इ=ए)। कुल खानदान के परिपाटी ढ़ोवे खातिर घर के परिवार मिश्र जोड़ि देनी। तब ऊहाँ के हो गइनी– महेन्द्र मिसिर...।

काएथ (लालाजी) के पढ़ावल, नेटुआ (हरिजन) के लड़ावल आ सरदार (पंजाबी) के पिआवल एक पीस अस–तस ना, युनिक होला। ओकरा पीठि केहु धुरी नइखे लगा सकतऽ। अंदाजन अपना एहि सोच के तहत ऊहाँ के बाबूजी अपना बेटा के पहलवान बनावे खातिर छपरा जिला भ के नामी पहलवान भाई लोग जोरे आखड़ा में उतरले रहीं। बितत उमिर के साथे बाबा महेन्द्र एगो नामी पहलवान आ घोड़सवार दूनों में उठान लिहनी। सुन्नर–सुभेख रहले रहीं। जमींदार के बेटा। दूध–दही से घर लबरेज़। कुल मिलाके अपना जमाना के एगो सजाह नवहा। छपरा जिला के का कहल जाउ, पूरा शाहाबाद में नामी हो गइनी। ई वृतांत हमार बाबा जीउत लाल मरे से कुछ दिन पहिले बतवले रहीं। ऊहाँ के जवानी के एगो आखड़ा के दस्तान सुनवले रहीं–गोबरधन पूजा के दिन रहे। बाबु के जगदीशपुर (भोजपुर) के बाबू कुंअर सिंह के हाता में कुश्ती के प्रतियोगिता चलत रहे। पूरा शाहाबाद जिला के का कहल जाउ, उत्तर प्रदेश के गोरखपुर, देवरिया, बलिंया के एक से एकईस पहलवान के जुटान रहे। मचल दंगल।

आवऽ तऽ आवऽ। ओह जगदीशपुर के दंगल से आपन पताका फहरवले रहीं महेंद्र बाबा। ओह घरी हम प्राथमिक स्कूल के छात्र रहीं। महेंद्र बाबा के ऊ कथा आजुओ हमरा जेहन में में कुलांच मारऽता आ हमरा मन में मलाल बा कि हमहूँ एक नजर निहरले रहितीं महेंद्र बाबा के...। देखतीं महेंद्र के गरदन में सिंकरी...।

ओह घरी बाप–मतारी बेटा के जवान होते गोड़ में पैकड़ पहिरा देत रहन। एह से बाँचि ना पवनी महेन्द्र बाबा। रूपरेखा देवी से सेनुरबंध हो गइल। ऊहाँ के देंहि से एगो बेटा जनमलें हिकायत मिसिर। बिआह के गठजोड़ ढ़ेर दिनन तक साथ ना देलसि। घरनी से टीपन ना बइठल। अनबन हो गइल। कुछ दिनन खातिर घर दुआर से अपना के विरत क लेनी महेन्द्र बाबा आ भीतर के राग सुनावे खातिर कलम उठा लेनी...।

एइजा हमार आपन कलम उठावे वाली साक्षातकार इयाद आवऽता। एक बे एगो पत्रकार हमार साक्षातकार लेबे खातिर हमरा घरे अइनीं। ऊहाँ के पूछनीं "रावा काहे लिखे लगनी...?काहे खातिर कथा–उपन्यास लिखतानी..?"

हमार दो टूक जबाब रहे, "खाता–पीता किसान के बेटा हईं। तब हमार नौकरी ना लागल रहे। बाकिर बियाह हो गइल रहे। एगो बेटा पुष्कर आ दू गो बेटी पूजा आ प्रीति पैदा हो गइल रही। शिक्षित बेरोजगार। नोकरी ना लागे से अनमनस्क के जीवन जीअत रहीं। राति में त सुतते रही,दिनों में उहे हाल। जीवन से हारि चुकल रहीं।ओहि दरम्यान एक दिन दुपहरिया में हमार बड़की बेटी पूजा नंग–धडंग होके हमरा सोझा आइल आ कच्छी किने के फरमाइस कइलसि। ओहि दिने हम कलम उठा लेनी।

हम अंदाजतानी,त हमरा इहे बुझाता कि हमरे वाला दुख महेन्द्र बाबा के दबवले होई। बाबा के विरासत से संस्कृत के ज्ञान आ पास–पड़ोस के समाज से आभाव के जीवन मिलल रहे। एहि से ऊहां के रचनन में देशानुराग से लेके भक्ति, श्रृंगार आ वियोग के किसिम–कसिम के फूल खिलल बा। जीवन के जेवना क्षेत्र में ऊहां के उतरनी, ओह सभ में अव्वल।गीत रचे के शुरू कइनी त धुंआधार...। भोजपुरी गीत–संगीत के अइसन कवनो विधा नइखे, जेवना प महेन्द्र बाबा कलम ना दउरवले होखीं। जइसे पूरबी, भजन, निर्गुण, गज़ल, दादरा, ठुमरी आ बारहमासा आदि...। गीतन के रचना क के ओह सभ के लयबद्ध करत रहीं आ ओकरा में संगीत के झालर झुला देत रहीं। एह खातिर साज–बाज बजावे के साधना में डुबुकी लगवनी। करीब–करीब आधा दर्जन वाद्य–यंत्रन के मास्टर हो गइनी।कईअक गो शिष्य–शिष्या के गीत–संगीत में निपुण कइनीं...।

बिन धरनी घर भूत के डेरा। एइजा महेन्द्र बाबा के जवानी के कथा कहे से पहिले हमार आपन बुढ़ौती के कथा कहल जरूरी बुझाता। हमार घरनी 12 अप्रैल 2016 के गुजरि गइली। तब हमार उमिर अंदाजन पैंसठ साल के होत रहे। उनुका मुअला के बाद अनेक लइकिन–मेहरारून के बिआह खातिर ऑफर आइल। हीत–नाता, संघतिया सभे कहल,षबिआह क लीं, अबहि जीवन लम्बा बा। देंहि–मुद्रा दूनों से अबहीं ठीक बानी। साठा त पाठा...।"

हमरो मन रहे।बाकिर हमरा कपार प ओह घरी बोझा रहे। हमार दू गो बेटी प्रीति आ जया आ एगो बेटा जय कुंआर रहन। कहाब हऽ –ष्भूख आ सेक्स एह दूनों के जिजीविषा जिनिगी भर अमर रहेला। ई जीव के साथे जाला...।"– एह से हम संतोष क लेनी ।

19 अप्रैल 2019 के दिन हम एह तीनों लोग के ब्याह–शादी से मुक्त हो गइनी। सभ लोग के सरकारी नोकरी धरवा देनी। तब हमरा के बियाह के लहर जोतलसि। रोवे के मन रहे, तले अंखियो खोदा गइल। तब हम अपना जीवन के एक मंजिला मकान में लिफ्ट लगवावे के सोचि लेनी। हमार बड़की बेटी पूजा कहली, "हमरा ससुरा में एगो हमार चचिआ सासु बाड़ी। ऊ विधवा बाड़ी। एको बाल–बच्चा नइखे। अपार धन–संपति बा। रउए लेखा उनुको सरकारी पेंशन मिलेला उहो स्कूल–टीचर से रिटाएर कइले बाडी...।"

बेटी के सुनि हमहूँ अपना के रोकि ना पवनी। जरसी गाय उनकर चचिया सासु भेंटात रही। बेटा–बेटी–घरनी से असथिराह भइला के बाद हमरो जीवन अकेला रहे वाला हो गइल रहे। दाई– नोकर से विश्वास खतम हो गइल रहे। हमरो दू गो रोटी के जरूरत रहे। आइल आम कि मारऽ झटहा। एह से हम पूरा मन से बिआह करे के मन बना लेनी। नयकी घरनी के पढ़े खातिर बेटी से आपन किताब भेजववनी। तीन–चार महीना तक एह आशा में रहनी कि सुरुज उदय होइहे। बाकिर तितिर ना धराइल। उनकर चचिया सासु आग– पाछ करे लगली। अंत दाव में हम उबिया के अपना बेटी–दमाद के 31दिसम्बर 2024 एगो फिक्सड डेट दे देनी। बाकिर काम फते ना भइल। हानी–लाभ, जीवन–मरन, जस– अपजस विधि हाथ...।

एइजा से महेन्द्र बाबा के कथा आगे बढ़ावे खातिर हम ऊहां के जिगरी संघतिया हलिवंत सहाय जी के चरचा करऽतानी। हलिवंत सहाय जी छपरा जिला के

एगो नामी–गिरामी जमींदार रहनी। ऊहों के हमरे वाला हाल से गुजरत रहनी। फरक अतने बा कि हम चउथा पन में बानी आ हलिवंत सताय जी दूसरा पन में रहनीं। हमहूँ विधुर आ ऊंहो के...।

जब महेंद्र बाबा के दोस्ती हलिवंत सहाय जी से भइल त दूनों आदमी एक–दोसरा के अपना दिल के बात बतवनी सभे। कहाब हऽ–"जवन गुप्त बतकही अपना घरनी के भी ना बतावे, ऊ अपना संघतिया के बता देला। गीत–गवनई के बइठकि हलिवंत सहाय जी के दलानी प रोजे–रोज होत रहे। दूनों आदमी में दोस्ती गहिराड़ होत गइल, दिन दोगिना, राति चौविगिना। तब अपना मन के राज खोललें हलिवंत सहाय जी। महेन्द्र बाबा से फुसफुसइलें –"ए महेन्द्र,एगो बात बा...!"

"का बात बा, ईयार जी...?"

"कहब,त कहबि...!"

"कहीं–कहीं, निधड़क कहीं...।"

अपना मन के राज उगिललें हलिवंत सहाय जी, "सुनऽतानी कि मुजफ्फरपुर चतुर्भुज स्थान के एगो नर्तकी के बेटी ढ़ेलाबाई बहुते सुन्नर बिया। जहाँ–तहाँ सट्टा प नाचहूँ जातिया। कवनो बुद्धि लगा के ओकरा के उपरिया द। हम ओकरा से बिआह करबि।हमार प्रबल इच्छा बा..।"

संघतिया के बात रहे। रेलि हो गइनी महेन्द्र बाबा। संघतिया के काम खातिर लोग–बाग गरदन कटवावे खातिर तइयार हो जा तारें। मोछि अइठिं के कहनी महेन्द्र बाबा, "अच्छा त कुछ दिन सबुर धरीं। बहुत जल्दिये राउर काम हो जाई। लगन आवे दीं। अगर छपरा के कवनों सट्टा नाचे आ जइहें ढ़ेलाबाई त राउर कल्यान हो जाई साथे उनुको...।"

कुछ दिन बितल। नियति जुटान करवा देलसि। माई के साथे ढ़ेलाबाई नाचे खातिर छपरा अइली। सांझहिं से कुछ संघतिअन के साथे ढ़ेलाबाई के फिराक में लागि गइनी महेन्द्र बाबा। सामियाना–रेवटी के घोरवटि मरनी। पुलिसिया रेड...। आधा राति बिति गइल रहे। बराती सराती के पंघत हो गइल रहे। बाकिर ढ़ेलाबाई के मंडली अपना नाच– गान से मशगूल रहे। आजुओ ई जनता– जनार्दन के कानून आ परिपाटी नचनिया–बजनिया के साथे कायम बा कि नाच–गान पूरा खतम भइला के बादे ओह लोग के खिआवल–पियावल जाला। ढ़ेलाबाई तब ले नाच चुकल रही। सभ समाजी आपन कला मंच प देखावत रहन। मंच के पीछा रेवटी में अकेला ढ़ेलाबाई आराम करत रही। देहि के हाल बड़ा अजूबा होला। आंखि लागि गइल। "चार बांस चौबिस गज, अंगुल अष्ट प्रमाण। एते पर सुलतान है, मत चूको चौहान...।" मछरी के मटकी मल्लाह चिन्हेला। महेन्द्र बाबा तब तनिको देरी ना कइनी। बिलाइयो ओइसन दाव ना लगा पइहें। गोड़ दबले महेन्द्र बाबा रेवटी में पइसलें। सिंकियो ना डोलल। तनिको आवाज समाजी लोग के ना मिलल। तालाबंद आ माल गायेब। संघतिया लोग रेवटी के बहरसी पहरेदारी कइलें। गोड़ दबले ढ़ेलाबाई के देंहि लगे पहुंचि गइले महेन्द्र बाबा। ठिहुनिअइलें। बांया हाथे ढ़ेलाबाई के जबलक बरिआर हाथे पकड़नी आ दाहिना हाथे उनका के टांगि के कान्ही पर पार लेनी आ डांड़ नववले रेवटी से बहरसि निकलि गइनी। हाथ–गोड़ बड़ा जोड़ लगा के ढ़ेलाबाई चलावत रही। जवानी के उनको उठान रहे। बाकिर कुछुओ ना उजिआइल। पहलवान से पाला परल रहे। रेवटी से बाहर निकलते अपना कान्हि से जुआठि फेंक देनीं महेन्द्र बाबा । आगे के करमठ इयार संघतिया कइलें। हम रावा के बता देतानी कि ढ़ेलाबाई के अपहरण के पछतावा महेन्द्र बाबा के जिनिगी भर सालत रहि गइल। हलिवंत सहाय के मुअला के बादो ढ़ेलाबाई के सहायजी के धन संपति में हक दियवावे खातिर ऊहां के परिवार के विरुद्ध खाड़ रहनी महेन्द्र बाबा।

इयार संघतिया लोग ढ़ेलाबाई के बान्हि–छान्हि के रते–राति हलिवंत सहाय जी के घरे पहुँचा देलें। नियति आ महेन्द्र बाबा के संघतिअन के छोड़ि केहु एह दुर्घटना के ना जानि पावल। बड़ा विवेकी रहनी हलिवंत सहायजी। ओहि राति आपन सुख–दुख बतिया के, गोड़–हाथ परि के,अरज–विनती क के ढ़ेलाबाई के अपना क्लच में क लेनी हलिवंत सहाय जी। असल में महेन्द्र बाबा से अपना दिल के इच्छा बतावे से पहिलहिं ढ़ेलाबाई के आपन घरनी बनावे के सोचि लेले रहनी हलिवंत सहाय जी। एह से तनिको तुल तबालत ना भइल। होत बिहाने हलिवंत सहाय जी के कुल गुरु–उपरोहित जी लोग अइनी। फेरू–

"मंगलम् भगवान विष्णुरू मंगलम् गरुणध्वजरू।
मंगलम् पुण्डरीकाक्षरू मंगलाय तनोऽहरि।।"

होत पराते नाच मंडली आ छपरा शहर के लोग ढ़ेलाबाई के अपहरण के बात जनलें। बाकिर केहु कुछुओ ना कइल। पुअरा के आगि लेखा बम दे लहकल आ फेरू झटकाहे बुता गइल।जमींदार के बात रहे। मारेला आ रोवहूँ ना देला...। हमरा ई कहे के गुरेज बा कि जइसे गनिका, अजामिल, गीध, सेवरी के जीवन सुधारि देनी रघुराई ओसहि ढ़ेलाबाई आ हलिवंत सहायजी के जिनिगी संवारि देनी महेन्द्र बाबा। कोठावाली के बेटी ढ़ेलाबाई कोठेवाली बनती आ हलिवंत सहाय जी बंड

के बंडे रहि जइतिं। ओइसे ऊहां के जमींदार रहनी। घरनी दोसरो– तीसर मिल जइती बाकिर ढ़ेलाबाई लेखा सुन्नर घरनी महेन्द्र बाबा के चलते भेंटइली...।

पुरबी गीत बिरहनी मेहरारून के करेजा के हूक ह। जइसे आजु लोग रोजी–रोटी के जोगाड़ में गुजरात, बम्बई, दिल्ली से लेले सउदी अरब विदेश तक के दौड़ के हामा– हामी में अझुराइल बा ओसहिं महेन्द्र बाबा के समय में कलकाता के ओरे लोग पेयान करत रहन। कलकत्ता हमनिन के राज्य बिहार के पुरुब ओरे बा। एहि से अपना नयका सुर–ताल के नामकरण महेन्द्र बाबा पूरबी कइनी। कल प कलकात्ता आ पेंच प हमनिन के। ओइजा चटकल में नोकरी आसानी से मिल जात रहे। अतने ना,कलकतिया लइकी– मेहरारू भी बहुत कम दाम पर...। एह से अधिकांशतः लोग कलकात्ता के बरमूदा त्रिकोन के चकोह में अझुरा जात रहन आ अइसन डुबकी लगावत रहन कि अपना माई–बाबू के का कहल जाउ, इहां तक कि अपना घरनी,बाल–बच्चा सभका के विसार देत रहन। घरे उनका घरनी के दुख महेन्द्र बाबा से ना देखल गइल तब ऊहां के पूर्वी गीत लिखे गावे खातिर कलम उठा लेनीं। अंदाजन महेन्द्र बाबा के पूरा पूर्वी गीत मेहरारूअन के बिरह के लोर से लबरेज बा...।

एइजा लइकाई के एगो गीत हमारा इयाद आवऽता –

"बबुनी बीड़ी पिअत जात रहली डोली में,आगि लगवली चोली में ना।।टेक।।

बबुनी के बाप–मतारी सौखिन,देलें बीड़ी–सलाई किनी। बबुनी...

देखि के धुँआ के धुधुकार बोलल पिछिला कहार,

बबुनी धुँआ निकलल जाता तोहरा ड़ोली से आगि लगवलू चोली में ना...।"

हमार पार्वती फुआ बड़ा बीड़ी पिअत रही।समझीं कि चेन स्मोकर। उनकर बीड़ी जरावत जब हम देखत रहीं त बीडी के ई गीत गुनगुनाये लागि। ऊ बीड़ी में दियासलाई बारल रोकि देत रही। आजु समय बदलि गइल। बीड़ी–सलाई के जगह मोबाइल ध लेलसि। शायद अइसन केहु बिरले बाप होई जे अपना बेटी के बिदाई के बेरा मोबाइल ना देत होई। आजु बेटा–बेटिन के जिनिगी चबा जाये वाला सबसे बड़का जहर मोबाइल बा।

कहे के लब्बोलुआब ई बा कि सामाजिक बिसंगतिअन आ जलवन्त मुद्दन प कलम दउरावल लेखक कवि के धर्म ह। ओह धर्म के निर्वाह कइले बानी,महेन्द्र बाबा। पुरबी के आलाप तान–धुन रउआ पसन से जानऽ तानी। भोजपुरी गीतन प पहिले लौंडा के नाच आइल, बाद में तअवाएफ अइली। महेन्द्र बाबा जब पूरबी तान के जनम देनी आ गीत रचनी तब पूरबी गीतन के अलाप लौंडा लोग ले लेत रहन बाकिर तअवाएफ ओह आलाप में सकान ना ले पावत रही। लेत रही,बाकिर बहुत कम संख्या में। समझीं,उहे हाल। 1857 के सिपाही विद्रोह वाला। ब्रिटिश सरकार के गोड़ उखाड़े खातिर हिन्दु, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, मरद–मेहरारू सभे भिराई कइले रहे। झांसी के रानी लक्ष्मीबाई आ बेगम हजरत महल त इतिहास में अमर बानी सभे। बाकिर सही वास्तविक मूल्यांकन होई त ओह लड़ाई में मेहरारून लोग के संख्या मरद लोग से कम रहे...।

पूरबी के तान जब महेन्द्र बाबा देनी आ गीत रचनी त होड़ मचि गइल।नया सुर–ताल रहे। जनकपुर के धेनुहा तुरे वाला हाल। बाकिर सभे सफल ना हो पावल। एकर इतिहास हमार गांव भदवर –बराढ़ी(बक्सर) के गांधी जी मिश्र, बंगाल चम्पिअन, तबला बादक बतवले रहीं। भदवर के रहवइया बंसरोपन पासवान (लौंडा नाच) जब महेन्द्र बाबा के पूरबी **"सासु मोरा मरली रामा, बांस के छिकुनिया ए ननदिया मोर हो, सिसुकत पनिया के जासु, ए ननदिया मोर हो, सिसुकत पनिया के जासु।।टेक।।"**–के आलाप लेलें त भरि मुंहे खून फेंकि दिहलें। पूरबी गीतन के आलाप बहुते कड़ेर परेला। नाभी से जोड़ ना लगाईब त गवइबे ना करी। भोजपुरी गीतन के राजा। महाआलाप। सभे पूरबी ढंग से ना गा सके। अगर पूरबी गीतन के नरम स्वर में ना उठाइबि त ई गीत पूरा ना गा सकीं। आलाप के डिमांड बड़ा कड़ेर परेला। बसंत, फगुआ,चइता लेखा...।

महेन्द्र बाबा जीवन के जवना क्षेत्र में उतरनी सभ में नम्बर वन। पहलवानी आ घोडसवारी में शाहाबाद जिला में नामी भइला के बाद तीसरा दौड़ गीत–संगीत में लगवनी । ओइजो अउअल। पूरबी गीतन के जनमदाता महेन्द्र बाबा के बारे में हम नइखी कहत दुनिया– शाहाबाद कहऽता। ऊहां के करतब के बखान प भारतवर्ष से लेले विदेशन तक के अनेक तेज–तर्रार लेखक–कवि आ हमनिन के पूर्वज अपना–अपना जानकारी के तहत आपन–आपन कलम बड़ा नीमन आ आकर्षक ढंग से कलम दउरवले बानीं सभे। जइसे पांडेय कपील–फूलसुंघी, रामनाथ पाण्डेयजी–बिंदिया, डॉ जौहर साफियावादी पूर्वी के घाट, जगन्नाथ मिश्रा–पुरबी के पुरोधा, तीर्थराज शर्मा–गीत जो गा न सका, भगवती प्रसाद द्विवेदी–महेन्द्र मिसिर पूरबी के ज्ञाता...आदि।

तब महेन्द्र बाबा अपना रोजी–रोटी आ गीतन के प्रचार–प्रसार खातिर कलकात्ता के ओरे पेयान कइनी– "जिला हिलऽतारें हाबड़ा आ कलकाता में ,

कहीं–कहीं चटकलवा में ना...।" शाहाबाद जिला से लेले पूरा बिहार के नवहा पुरुब ओरे भगलें त महेन्द्र बाबा काहे पिछुआवसु...?मोहल्ला–जगहा अदलि–बदलि के आपन गवनई गावे–बजावे के शुरु कइनी। महीना पूरा होते–होते कलकाता के बाजार–हाट में छा गइनी महेन्द्र बाबा। लोग– विदेशी–देशी सभ जुमे लागल बाबा के गवनई में। दिल खोलि के रोपेया लुटावे लागल लोग। महेन्द्र बाबा सुराज व्यक्तित्व के मरदाना रहीं। गावे–बजावे के बेरा रोपेया बटोरे के चक्कर में तनिको ना। अपना साज–बाज–गीत गावे में मशगुल रहत रहीं। गवनई सुनवइया–देखनवइया रोपेया बटोर लेते रहन। ओइसे महेन्द्र बाबा प अंग्रेज अधिका रोपेया लुटावत रहन स। बाबा के गीत– साज–बाज प अंग्रेज अफसर बहुत मोहित आ प्रभावित भइलें सऽ। एगो अंग्रेज अफसर त ऊहां के बहुत बड़ मुरीद बनि गइल। उनका कान में सुनइला भर के देरी रहत रहे। कलकाता के कवनो कोना में महेन्द्र बाबा के प्रोग्राम होखे जुमि आवत रहन ऊ अफसर...।

समय करवट मरलसि। ट्रांसफर सरकारी नोकरी के श्रृंगार हऽ।लंदन से ओह अंग्रेज अफसर के बदली के पतरी आ गइल। पतरी पढ़ते ऊ झँवा गइले। करेजा प सांप लोटि गइल। भारत छोड़े के उनका मन में मलाल तनिको ना रहे। भेंड़ि के भसुर रहनी महेन्द्र बाबा। महेन्द्र बाबा के गीत–गवनई उनुका के अपना गिरफ्त में गिरफ्तार क लेले रहे। ऊ कलकाता से अपना के अलगा कइल ना चाहत रहन। बाकिर अंग्रेजन के कानून से रावा वाकिफ बानी। आर्डर सिर्फ आर्डर। कवनो आवेदन आ पैरबी ना। हारि–थाकि उनका कलकात्ता छोड़े के परल। लंदन जाये से एक दिन पहिले सांझि के बेरा पहुंचि अइले महेन्द्र बाबा के कुटिया प। आंखिन से लोर ढ़ारत गलगलइलें, "महेन्द्र बाबू अब हम लंदन जा रहा है। आगे अब भारत लौटेगा कि नहीं, इसका कोई ठिकाना नहीं। इसलिए ये लो नोट छापने वाली मशीन और नोट छापने के लिए का.। रूपया बटोरो। इससे अधिक मेरे पास कुछ नहीं। यह मेरा आखिरी उपहार। अपने देश चले जाओ। लुक–छिप कर यह काम करना। हमारा प्रेम अपने दिल में हमेशा बनाये रखना...।"

ई कहत ऊ अंग्रेज अफसर महेन्द्र बाबा के पाँवलगी कइलसि आ अपना बंगला के ओरे चोर लेखा नव–दू एगारह भइल।

कहाब हऽ–"मारि के टरि जा आ खा के परि जा...।" बिहान होते सुकवा उगे से पहिले जागि गइनी महेन्द्र बाबा। कलकाता के कुटिया छोड़ि अपना गांवे के गाड़ी पकड़नी। बिहान होते अपना गांवे चलि अइनी महेन्द्र बाबा। ओहि राति जब संउसे गांव सुति गइल तब सुतली राति के भाई लोग साथे नोट छापे में भिरनी। भोर होत आलमगंज नोटि छापि देनी बाबा...। नोट के बाजार धरावे के जोगाड़ मे दिमाग खपवनी। मन बड़ा बादशाह ह। उपाय लउकि गइल...।

ब्रिटिश से अस्त्र गहाऊं, अब समर भूमि में...। "गुलाम भारत में भी आपसी गुटबंदी रहे, बाकिर आजु लेखा ना। ओहु घरी सामान्य भारतीय लेखा भिखारी भाई लोग के भी आपसी गुटबंदी रहे। बाकिर आजु के रंगदारी लेखा ना। हम अपना शहर आरा (बिहार) के भिखारी भाई लोग के रंगदारी रोज आंखिन से देखत आ रहल बानी। हमरा शहर के सेठ–साहुकार–दुकानदार भाई लोग दोकान खोलते पइसा के रेजकी काउन्टर पर कटोरा में राखि देलें। तब भिखारी अकेले भिक्षा मांगत रहन। जेकरा इच्छा होखे से दे दे,ना त कवनो बात ना। जय सीताराम...। मुगल के शासन काल से भी पहिले से देव युग में स्वयं बावन रूप ध के भगवान बलि राजा से आ बाह्मण के भेष बना के कृष्ण हमरा आरा (बिहार) के बहादुर राजा मोरध्वज से क्रमशः तीन डेग धरती आ ताम्रध्वज बेटा के भीक्षा मंगले बानी।ई प्रथा हमनिन के देश में सदियन से चलल आवऽता। एकर उन्मुलन कहिया होई दईब जानसु –"तुम्हीं ने दर्द दिया है, तुम्हीं दवा देना...।

एइजा हमरा एगो कथा मन परऽता। सी.आई.डी इन्स्पेक्टर जटाधरिया आ सुरेन्द्रलाल घोषवा लेखा एगो सी.आई.डी. इन्सपेक्टर के भिखारी के भेष बना के एगो कवनो क्रिमिनल के पकड़े खातिर ब्रिटिश सरकार भेजलसि। ओह क्रिमिनल के दुआरी प पहुंचि गइल ऊ इन्सपेक्टर। संयोग नियति अइसन जुटवलसि कि ऊ क्रिमिनल ही ओकरा सोझा मोखातिब भइल। ओकरा के देखते इन्सपेक्टर साहेब के करेजा प सांप लोटि गइल। देहिं हवा हो गइल।लाज बजावत कहलें इस्पेक्टर, "भरल रही दरबार,कुछ दान पुन करऽ बचवा...! सीताराम हनुमान...। सीताराम हनुमान...।"

"हम नेहा के पूजा करे जा तानी। दोसर दुआरि देखिं...।"

अब के ठहरेला ओकरा दुआरी प...? कपार प गोड़ धइलें इन्सपेक्टर साहेब जान छोड़ा के परइलें। ऊ सोचि लेलें, नोकरी रहि भा जाई,बाकिर दोबारा एह रंगदार बाघ के दुआरी प सपनों में ना आइबि। ओह गांव के छोड़ि अगल–बगल के गांवन में भीक्षा मांगे के काम लगवलें । चाउर, गहुँम, धान, खेसारी से झोरी

लबरेज होखे लागल। रोपेया–पइसा से थइली–बगली फाटे के ठेकान...। मन–मिजाज बढ़े लागल। मन बढ़ल सबसे नागवार बात हऽ। तब ब्रिटिश सरकार के आदेश ऊ तड़िया देलें। आ हिम्मत बान्हि के एक दिन अपना कार्यालय में उपस्थित भइलें आ अपना नोकरी से रिजाइन मारि देलें। ई ह भिखमंगई...। वाह रे भिखमंगई, तोर गुन गावलो ना जाला...।

आजु त एह भाई लोग के रंगदारी देखले नइखे देखात। ट्रेन से सफर करे के बेरा एह लोग खातिर सई–पचास अंगऊंग निकालि के ऊपरवाला जेबी में ध ली ना त एह लोग थप्पर खाये खातिर गाल तैयार राखबि ना त धोखा हो जाई।हमरा शहर के दोकानिन प झुंड के झुंड भिखारी भाई पहुंचेलें। दोकानदार लोग कटोरा में राखल रोपेया–पइसा देहें–देहें बांटेलें। एह लोग के संगठन आजु ओइसन बरिआर हो गइल बा कि एगो न अनेको एम.एल.ए.आ एम.पी.के वोट में बहुमत करा के सचिवालय आ संसद तक पहुंचा देले बाड़े...।

ह, त महेन्द्र बाबा आपन नोट खपावे खातिर भिखारी लोग के नेता के पटवनी। आहि दादा। होत भिनसहरे। भिखारी लोग के हजूम रोजे – रोज, जुटे लगलें दुआर प। एइजा हमरा बतावल ई जरूरी बुझाता,कि अंग्रेजी सरकार के जड़ कबारे खातिर भिखारी लोग में देश–भक्ति के बीज बोअनी महेन्द्र बाबा। एगो बरिआर संगठन भिखारी भाई लोग के तइयार क देनी। रोपेया के बदलइया भारत के आजाद करावे वाला एगो मजबूत संगठन बनवनी। वाह जी महेन्द्र बाबा...।

संगी साथी संग जुरि। भारत के आजाद करावे खातिर अनेको आन्दोलन गांधी बाबा चलवले रहीं। खेड़ा आंदोलन, स्वराज आ नमक सत्याग्रह, दलित आन्दोलन, द्वितीय विश्वयुद्ध, भारत छोड़ो आंदोलन, खिलाफत आन्दोलन...आदि। ओह आंदोलन में गांधी जी के सहयोगी विदेशी से लेले भारतवासी सभे रहे। जइसे, कालेन बाख, मीराबेन हरमन, सरला देवी चौधरानी, चार्ल्स एंड्रयूज, राजेन्द्र प्रसाद, अनुग्रह नारायण सिन्हा, जवाहर लाल नेहरू आदि। ओह लोग के साथ देबे खातिर एगो तोयाएफ लोग के दल अपना गीतन के बल पर पहिलहीं तइयार क देले रहीं महेन्द्र बाबा। ओहि घरी से महेन्द्र बाबा,गांधीजी के साथे हो गइल रहनी। तोआएफ लोग लगे इश्कबाजी के सवख पुरावे खातिर अंग्रेज अफसर आवत रहन स। तोआएफ लोग ओहनिन के करेजा में पइसि के ओहनिन के गतिविधि धीरे–धीरे जाने के काम लगवली। जवन जानकारी तोआएफ लोग से महेन्द्र बाबा के मिलत रहे ऊ सभ गांधी जी लगे पहुंचि जात रहे। भोजपुरी गीतन के रचि के महेन्द्र बाबा पहिले गांधी बाबा लगे पहुँचनी।

जाली नोट छापि के जब भिखारी भाई लोग के क्रांतिकारी के रूप में महेन्द्र बाबा आजादी के लड़ाई के मैदान में उतरनी तब संउसे भारत में क्रांति के एगो अजूबा आग लाग गइल। एह चिंगारी के आग ब्रिटिश सरकार के का कहल जाउ पूरे दुनिया के फायर ब्रिगेड्स आ एयर ड्रोन्स सभे मिलजुल के भी ना बुता सकल। आजादी के दूसरका तीर सीधे ब्रिटिश सरकार के नाभी प मरले रहीं महेन्द्र बाबा।हमरा ई कहे में तनिको गुरेज नइखे कि 15अगस्त 1947 के भारत आजाद भइल। महात्मा गांधी जी के राष्ट्रपिता के उपाधि मिलल। अगर महेन्द्र बाबा जिअत रहितीं त हमार दादा परदादा ऊहां के राष्ट्र भाई के उपाधि दे के जरूर सम्मानित कइले रहितें। महात्मा के उपाधि चम्पारण आंदोलन के सफलता के बाद हमरा राज्य बिहार से ही गाँधी जी के मिलल रहे। तब से ऊहाँ के कहाये लगनी महात्मा गाँधी। आरा हिले, छपरा हिले, बलिया हिलेला। छपरा खाली हिलेला ना हिलइबो करेला। धन्य ह छपरा जिला, आ धन्य ह ओइजा के माटी। जहंवा से दू गो भोजपुरी विद्वान, कवि, नर्तक, संगीतकार, नाटककार, वादक ब्रिटिश के महाभारत काल में पैदा कइली महेन्द्र मिश्र भा भिखारी ठाकुर के। सामाजिक विसंगतिअन आ जलवन्त मुद्दन प आपन कलम दउरा के भोजपुरी साहित्य के मजबूत बनवनी। गीतन में आमजन के प्रेम, आमजन के पीड़ा, संघर्ष सभ से भरल–पूरल बा। गीत सिर्फ आवाज के बटोरल ना ह।ई सभ्यता आ संस्कृति के सार तत्व ह। लोक आ शास्त्र के संगम ह। बम,तोप,तलवार से भी अधिका शक्ति साहित्य आ संगीत में पावल जाला। सदियन से गुलामी के बेडियन में जकड़ल हमनिन के साहित्य–संगीत के पटरी प ले आवे के काम हमरा देश के ई दूनों इतिहासिक मरदाना, विद्वान क्रांतिकारी कइल लोग –महेन्द्र बाबा आ भिखा री काका...।

तब महेन्द्र बाबा के नोट छापे वाला काम पूरा दुनिया में उजागर हो गइल। ब्रिटिश सरकार महेन्द्र बाबा के फिराक में लागि गइल। अपना जासूसी तंत्र के सक्रिय कइलसि। महेन्द्र बाबा के पकड़े खातिर सी.आई.डी. जटाधारी प्रसाद आ सुरेन्द्र लाल घोष के भिरवलसि। सुरेन्द्र लाल घोष आपन भेष आ नाम बदलि के महेन्द्र बाबा के घरे नोकर बनि के तीन साल खटलें। तब उनका महेन्द्र बाबा के नोट छापे वाला मशीन आ जगह के पता चलल। गोपीचंद के इशारा प 16 अप्रैल 1924 के आधा रात के समय में शिवमंदिर में

महेन्द्र बाबा अपना भाई लोग के साथे गिरफ्तार भइनी। तीस साल के सजाइ भइल। बक्सर (बिहार) जेल में सजाई के अवधि कटनी महेन्द्र बाबा।बाकिर ओइजो अस्थिर ना। भोजपुरी साहित्य के नींव जेल में सजाइ काटत मजबूत कइनी। अनेक भोजपुरी किताबन के रचना कइनी–महेन्द्र मंजरी, महेन्द्र विनोद, महेन्द्र चन्द्रिका, महेन्द्र मंगल, महेन्द्र प्रभाकर, महेन्द्र दिवाकर, भगवत दशम स्कंध, भीष्म प्रतिज्ञा, अपूर्व रामायण आदि। कविता कोश– भारतीय काव्य के बहुत बड़ संकलन हऽ। जेवना में हिन्दी, उर्दू, अवधि, राजस्थानी, भोजपुरी के अलावे भारत के पचास से अधिका भाषा के गीत–कवित संकलित बा। ओहू में धमहेन्द्र बाबा के पूर्वी, भजन संकलित बा। जइसे कुछ गीत–पढ़े छवो शास्त्र ओ अठारहो पुरान देखे,कइसे जाईं ससुरारी, खेलइत रहनी हम सुपुली मउनिया, हे पिंजरे के मैना भजन कर राम के,लोक में अविद्या के अनेक बकवाद भरे,सभका के तरल रामजी हमरा के तार,एके गो मटिया के दूई गो खेलवना, सखी हो प्रेम नलगरिया हमरो छूटत जात बा,माया केतनो बटोरब एक दिन जाहीं के परी, टिकुलिया तरके बिंदिया हजार जीउआ मारे राम, अंगुरी में डंसले बिया नगीनिआ, सास मोरा मारे रामा बांस के छिकुनिया, जेठ बइसाखवा के तलफी भुभुरिया ए ननदिया मोर हे, कइसे दिन बीती राम,आधी–आधी रतिया के बोले कोइलिया...आदि। महेन्द्र बाबा अपना अपूर्व रामायण के अंत में आपन परिचय देले बानी– "मउजे मिश्रवलिया, जहाँ विप्रन के ठट्ट पसे,सुन्दर सोहावन जहां बहुते मालिकाना है... ।"अपूर्व रामायाण 3 मई 1929 मंगलवार के समाप्त कइनी महेन्द्र बाबा।

जेल में ऊहां के रहन–सहन देखि जेलर बड़ा खुश रहन। जेलर अपनो दू गो बेटियन के गीत–संगीत के शिक्षा महेन्द्र बाबा से दिअववलें। बक्सर सेन्ट्रल जेल के काया–कल्प कऽ देनी महेन्द्र बाबा। एह संस्मरण आलेख के लिखे के दौरान शाहपुर (भोजपुर) ओझा के सेमरियां गाँव के तेजस्वी कवि आ गीतकार श्री जन्मेजय ओझा 'मंजर' जी द्वारा महेन्द्र बाबा के जेल के एगो प्रसंग सुने के मिलल। उहो सुनिये लीं–"बक्सर जेल में राति के चउथा पहर रोजे–रोज भैरवी गावत रहीं महेन्द्र बाबा। एक दिन त अइसन घटना घटल कि जेल के सभ कैदी चिहा गइलें । महेन्द्र बाबा भैरवी के आलाप लिहनी–"बिहान भइलें तोता हो, सीताराम बोलऽ...।" जेलर साहब के क्वाटर में महेन्द्र बाबा के आलाप पइसल। रोज भोरे जाग जात रहे जेलर साहेब के परिवार महेंद्र बाबा के भैरवी सुने खातिर। तब ओह दिन भोरहरिआ के बेरा अपना के ना रोकि पवलीं जेलर साहेब के घरनी। पहुंचि अइली कैदियन के वार्ड में, जहँवा से महेन्द्र बाबा गावत–बजावत रहीं। ऊहाँ के देखते महेन्द्र बाबा गवनई बंद क देनी आ ई शेर सुनवनी–

तकदीर में लिखा नहीं,तदवीर क्या करे।
जिसको न माने बादशाह,वजीर क्या करे।।
राजा के राजदंड में कैदी पड़े हैं लाखों।
जिसके करम में जेल है,जंजीर क्या करे।।
मारा था बाण दशरथ ने,मृगा को जानकर।
सरवन की कजा आ गई तो तीर क्या करे।।"

कचरे में मोर हीरा भुलइलें। महेंद्र मिश्र के सैकड़ो–हजारों अइसन–अइसन प्रसंग, शेर, कवित, गीत ,गजल नेपथ्य में धुकधुकी ले रहल बा। हमनिन के ई कर्तव्य बनता कि ओकरा के ऊपरिआईं जा आ महेन्द्र मिश्र जी के व्यक्तित्व आ कृतित्व के समाज के सोझा प्रस्तुत करीं जा जेवना से भोजपुरी साहित्य के खोंइछा लबरेज होखे। हमरा विश्वास बा, युवा तेजस्वी कवि आ गीतकार श्री जन्मेजय ओझा जी "मंजर" जी लेखा अवरु लेखक–कवि समाज में जनम लिहें आ महेंद्र मिश्र जी के अमर करिहें।

तवाअएफ आ जनता के हल्ला–गुल्ला, विनती आ अपना लोक गीत आ शास्त्रीय संगीत के गायन–बादन के बल बुतात प महेन्द्र बाबा के सजाइ दस साल से घटि के सात साल हो गइल। जेल से सजाइ पूरा भइला के बाद महेन्द्र बाबा अपना गाँवे मिश्रवलिया लवटि अइनीं।

जीवन के आखिरी समय में मात्र आठ दिन महेन्द्र बाबा बेमार रहीं। कविता, गीत से प्रेम, आँखिन के रोशनी आ लोगन के पहचाने वाला शक्ति ऊहां में सोरहो आना मरे के समय तक ले कायम रहे। प्रसाद गुण आ माधुर्य गुण से लबरेज, रामकथा के व्याख्याता पं० महेन्द्र मिश्र जी के मृत्यु भारत के आजादी मिले से मात्र एक साल से पहिले 26अक्टूबर1946 मंगलवार के भोरहरिया में हो गइल। अपना अगिला पीढ़ी के अपना मेहनत के फल भोगे खातिर महेन्द्र बाबा छोड़ि गइनी जइसे ऊहाँ से पहिले हजारों–हजार स्वतंत्रता सेनानी भाई लोग के परिवार भोगि रहल बा...। आजादी के लड़ाई में अलग पहचान बनावे वाला महेन्द्र मिश्र आजुओ स्वतंत्रता सेनानियन भाई लोग के सूची से गायेब बानी जइसे चम्पारण के स्वतंत्रता सेनानी बतख मियाँ। जइसे लकड़ी में छिपल आगि,बीज में छिपल वृक्ष,ओइसे महेन्द्र मिश्र प्राणियन के चोला में छिपल बानी। काश, महेन्द्र मिश्र आ भिखारी ठाकुर हमनिये के हो जइतीं जा।

••

❑ **महावीर स्थान के निकट, करमन टोला,**
आरा-802301 (बिहार), मो०–9693228474

हमार गाँव

स्व0 केदारनाथ सिंह

पर किस तरह मिलूँ
कि बस मैं ही मिलूँ,
और दिल्ली न आए बीच में
क्या है कोई उपाय!
—'गाँव आने पर'

जहाँ गंगा आ सरजू ई दूनो नदी क संगम बा, ओसे हमरे गाँव के दूरी लगभग आठ किलोमीटर होई। दूनो नदी क बीच में पड़ला के वजह से एह इलाका के 'दोआब' कहल जाला। एक तरह से ई इलाका उत्तर प्रदेश आ बिहार के सीमा—रेखा पर बा, बाकिर सांस्कृतिक दृष्टि से ए इलाका के संबंध बिहार से अधिका बा, खाली नाता—रिश्ता ना, बल्कि खान—पान आ बोलियो—बानी बिहारे से अधिक मिलेले। एह क्षेत्र के भोजपुरी गाजीपुर आ बनारस के भोजपुरी के अधिका निकट पड़ेले जवन अपने बनावट में आरा जिला के भोजपुरी के अधिका निकट ह। हमरा गाँव से चार किलोमीटर दक्खिन गंगा बाड़ी आ करीब—करीब ओतने उत्तर सरजू। कहल जा सकेला कि ई दूनों नदी के माटी—पानी से ई इलाका बनल बा। पहिले जब बाँध ना बनल रहे त जुलाई—अगस्त के महीना में ई दूनो नदी मिल के एक हो जात रहल। हमरा इयाद में ऊ छोटकी नदी बहुत गहराई में कहीं आजो मौजूद बा जवन हमरा चबूतरा के सामने बहेले आ एक ओर जहाँ ओकर एक छोर गंगा से मिलेले त दूसर सरजू से। शायद एही वजह से नदी के साथ हमार मन के बहुत गहरा जुड़ाव बा।

जवना गाँव में हम पैदा भइल रहनी ओकर नाम ह चकिया। एकर ठीक—ठीक इतिहास त हमरा पता ना बा, बकिर एक सम्बन्ध में कई तरह के कहानी सुनल जाले जवने के सार इहे ह कि एह गाँव के मूल निवासी कहीं बाहर से आइल रहें आ नदी के किनारा देख के इहें बस गइलें। पहिले जब आवागमन के साधनकम रहे त एह नदी क उपयोग व्यापारिक काम खातिर होत रहे। धीरे—धीरे एकर उपयोग कम होत गइल आ हालत ई बा कि नदी अब नाममात्र के नदी रह गइल बा। कभी केहू के एह विषय पर खोज करे के चाहीं कि देश के दूरवर्ती भाग में बहे वाली अइसन असंख्य नदियन के आज का हालत बा। सभ्यता के विकास के साथ—साथ नदी काहें सूखत जात बाड़ी स? ई हमनी के समय के एगो बड़ा सवाल बा, जवना के उत्तर हमनी के खोजे के चाहीं।

लगभग पचास साल पहिले चकिया छोड़ले रहलीं, हालाँकि चकिया से सम्बन्ध अभिनो छूटल नइखे, बीच—बीच में जात रहीलें, बाकिर अब गइला पर बुझाला जइसे कवनो परदेसी लेखा भा जादे से जादे कवनो मेहमान लेखा। ई स्थिति बहुत तकलीफदेह होले आ एकरा दंश से बचल मुश्किल होता। सब गाँवन के तरह हमारो गाँव ऊ नइखे रह गइल जवन हम छोड़ले रहलीं। हवा—पानी से लेके विचार—व्यवहार तक बहुत बड़ बदलाव देखल जा सकेला। एगो बहुत प्रत्यक्ष बदलाव त ईहे बा कि गाँव क आबादी बढ़ कइल बा, साक्षरता बढ़ गइल बा, लेकिन सबसे बड़ विडम्बना ई बा कि गाँव के जवन तथाकथित शिक्षित वर्ग बा शायद उहे सबसे अशिक्षितो बा। असल में जवना तरह से ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा के विकास हो रहल बा, ई बुनियादी दोष ओकरे में निहित बा, बाकिर इहाँ ओ प्रसंग के विस्तार में गढ़ले के जरूरत नइखे।

पहिले हमरा परिवार में खेती—बारी होत रहे, अब ऊ बन्द हो गइल बा। खेती जादे ना रहे, बकिर खाए—पीए लायक हो जाए— ओमें से कुछ खेती आजो बाँचल बा। ओकरा के हम बचा के रखले बानी। एह पवित्र मोह खातिर कि कभी—कभी एही बहाने गाँवे जात रहीं।

अब गाँव गइले पर सबसे बड़ समस्या ई होला कि बतियाईं केकरा से। हमरा अपना उमिर के जतना संगी—साथी बाड़े ऊ अपना—अपना काम में व्यस्त रहेलें, आ ओमें से कई लोग बाहर चल गइलें। बहुत लोग त ए दुनिए में अब नइखे। एह समस्या के समाधान हम एह तरह से खोजले बानी कि गाँव में जेतना दिन हम रहेलीं—हिंदी भुला जानी। कभी केहू पढ़ल—लिखल हिन्दी बोलबो करेला त हम धन्यभाग से भोजपुरिए बोले के कोशिश करेलीं। एकर दू गो फायदा बा— जहाँ भोजपुरी के अभ्यास ताजा हो जाला उहें एक बार हिन्दी के एक तरफ रख देला

के बाद गाँव के छोट–से–छोट आदमी से बतियइले में कवनो बाधा–व्यवधान ना रह जाला। भोजपुरी के सहज आत्मीयता हमरा एक अहसासो के तार–तार क देले कि हम परदेसी हो गइल बानीं। तबो गाँव के चीज आ अपना सम्बन्ध के बीच जवन एगो अन्तराल आ गइल बा ऊ कई बार साफ दिखाई पड़ेला। ए सम्बन्ध में एगो छोट घटना क जिक्र करब। एगो हमार बचपन के साथी, जेकर एही साल निधन हो गइल ह, हमरा रास्ता में मिल गइल त ए अनचीन्हारपन के अउर तीखा बोध भइल। ओकर नाम जगरनाथ रहे आ आज के भाषा में ओके दलित कहल जाई। त काफी लमहर अन्तराल के बाद मिलला पर हम जगरनाथ से कहनी कि साँझ के तोहसे भेट होखे के चाहीं। साँझ के जगरनाथ अइले, आवते सवाल कइले– "बताईं कौन काम बा?" हम जगरनाथ के कौनो काम खातिर ना बोलवलें रहीं, असहीं मिले खातिर बोलइलें रहीं। बाकिर उनका सवाल के बाद हमरा पहिला दफे ई महसूस भइल कि एतना दिन गाँव से बाहर रहला के बाद खुद गाँव के लोगन से हमार संबंध चुपचाप बदल गइल बा। ई ए गो आघात नियन रहल लेकिन एकरा बावजूद हम लगातार ई कोशिश करत रहलीं आ आजुओ करीलें कि गाँव जाईं त ओकरा चौहद्दी में ओसहीं प्रवेश करीं जइसे आज से पचास साल पहिले करत रहीं। लेकिन ई पचास बरस के टाइम के नकारल ना जा सकेला, अब त कई बार गइला पर ईहो सोचे के पड़ेला–जइसन अपना एगो हिन्दी कविता में हम लिखले बानीं– /आ तो गया हूँ/पर क्या करूँ मैं?/–गाँव आने पर.../

ए अनुभव से बचल ना जा सकेला, काहे से कि गाँव के जिन्दगी के एगो जवन आपन लय बा ओकरा साथ शहराती जिन्दगी के लय क संगत बइठावे में कई बार दिक्कत होले। एसे कई दफे ओ अनचीन्हारपन के बोध अवरू तीखा हो जाला जवना के हम पहिले जिक्र कइले रहनीं।

लेकिन गाँव के एगो अउरी लय बा जवना के ग्रामीण प्रकृति के लय कहल जा सकेला–ऊहाँ के नदी, नाला, खेत, खरिहान, टोला, कछार, पेड़–पौधा इहाँ तक कि कीड़ो–मकोड़ा में, ईहो लय अब गाँव में ओही लेखा नाहीं रह गइल जवना के हम पहिला दफे गाँव में छोड़ के आइल रहीं। सबसे जादे तकलीफ आज ओ गाँव के नदी के देख के होला जवन हमरा घर के ठीक सामने बहेले। बहेले– ई खाली एगो मुहावरा के रूप में कहल जाला असल में अब ओकर बहाव खतम हो गइल बा। अपना देश के बहुते नदियन लेखा हमरो गाँव के नदी भरा रहल बिया। ऊ अब नदी से एगो जबदल पानी वाला पोखरा बन गइल बिया जवना में थोड़के भर गति खाली बरसात में आवेले। लेकिन सबसे दुखद बात त ई बा कि आज गाँव के लोगन के स्मृतियो से धीरे–धीरे ऊ नदी हट रहल बिया। अगर हमरा से पूछल जाई कि पिछला पचास साल में हमरा गाँव के सबसे बड़ दुखद घटना भा त्रासदी का रहल बा, त हम कहब – हमरा नदी क मृत्यु!

जइसे माई के गोदी में बच्चा पलेला, हम आ हमार बहुते समउरी लोग ओ नदी के गोदी में ओहीं लेखे पलेला। सँउसे वैज्ञानिक प्रगति के बावजूद ई केतना तकलीफदेह बा कि गाँव के नदी मर रहल बाड़ी स आ ओकुल के बचावे खातिर कवनो उपाय केहू के पास ना बा।

लेकिन गाँव में सबकुछ एही लेखिन नाही बा। बहुत कुछ टूट बिखर गइल बा, बहुते गीत जवना के हम लरिकाईं में सुनले रहलीं उहाँ केहू के याद ना बा, शायद बहुत–सा कीड़ों–मकोड़ा अब बहुत कम दिखाई पड़ेलन स, लेकिन ए सबकुछ के साथ–साथ गाँव के जिन्दगी के बाँधे वाली एगो चीज हम अबहियों पावेलीं। ओकरा के ठीक–ठीक नाम देहल हमरा खातिर मुश्किल बा। बाकिर ई बात अबहियो बाँचल बा कि एक आदमी दूसरा आदमी के इहाँ बिना कामो के जा सकेला, कुछ देर हँस–बोल सकेला आ सारी पंचाइती राजनीति के बावजूद एगो अपना गाँव खातिर चिन्तित भा परेशान होइ सकेला। ई बात हमरा के एगो खास ढंग से प्रभावित करेले आ शायद हम बार–बार गाँव जाईलें त ओही के खोजे खातिर जाईलें। कई बार ई डर जरूर लागेला कि ऊहो कहीं नदी लेखा धीरे–धीरे खतम न हो जाये। ऊ कइसे बचल रही, ई हम ना जानेनी। कबो–कबो ईहो डर लागेला कि अगर नदी ना रही त गाँव के अस्मितो के ना बचावल जा सकेला। एकाध बेर गाँव के कुछ उत्साही युवक लोग नदी के बचावे खातिर उत्सुक दिखाई पड़ेला त भीतर थोड़ा ढाँढ़स होला कि शायद गाँव के अस्मिता चाहे जतना जर्जर हो गइल होखे, बचावल जा सकेला। फिर ईहो बुझाला कि खाली एगो गाँव के बचावे के सवाल ना ह। एह देश के सगरो गाँव धीरे–धीरे आपन अस्मिता खो रहल बाने स आ एकरा ओर प्रायः सोच–विचार क प्रक्रिया बन्द हो गइल बा। ई सब परिस्थिति परेशान करेला, लेकिन गाँव अबहियो बार–बार खींचेला त उहाँ कुछ त होई जवन ओ परिवेश में न मिले, जवना में अब रहे खातिर हम आ हमरा जइसन लोग अभिशप्त बा। ●●

अशोक कुमार तिवारी

एक)
सुविधा शुल्क बढ़ावत जा।
बिगड़ल काम बनावत जा।।

काना-फूसी कइ-कइके,
भरम-जाल फइलावत जा।

लोगन के भरमावत जा,
निज के लाभ उठावत जा।

जरे-मरे सब आपस में,
अइसन आग लगावत जा।

स्वारथ साधल एऽक बिधा,
दुबिधा दूर हटावत जा।

दू)
जात-धरम में बाँटत जा।
अपने माजा काटत जा।।

जन जल जमके बर्फ बने,
तूँ बादर अस फाटत जा।

अनका मुँह पर जाब मढ़ऽ,
माल-मलाई चाटत जा।

लोग मरे खइले बेगर,
धन से कोठर पाटत जा।

दोसरा बदे बिधान रचऽ,
आपन सुबिधा छाँटत जा।

तीन)
सवाई के कीमत, अढ़ाई के कीमत।
निपढ़ का बताई, पढ़ाई के कीमत?

सरे साँझ होखे जे खम्भा हिलावत,
करी का उ अध्धी पवाई के कीमत?

रहल बाण-बण्ठा,बजावल जे घण्टा,
उ का बूझी घर के,लुगाई के कीमत?

उड़ावल जे धन, बाप-दादा के अरजल,
समझ का सकी ऊ कमाई कीमत?

जे थेथर मतिन बा कहीं दाँत फारत,
न ओकरे बदे जगहंसाई के कीमत।

खुजावत-खुजावत बितल रात जेकर,
उहे जाने खुजली-दिनाई के कीमत।

अमीरन क का फर्क बा खर्च का बा?
गरीबन से पूछ ऽ दवाई के कीमत।।

चार)
दुनिया का हऽ? खेल-तमाशा।
छन में तोला, छन में माशा।।

कतहूँ मातम रुदन जनाजा,
कतहूँ बाजत ढोलक ताशा।

कभी कुसुम कुंढियात कली तऽ,
कभी नीर भिहिलात बताशा।

सुख भूवा ना धरे-धराला,
दुख चिपटे जस पकड़े लासा।

दिहलऽ जनम त पालऽ-पोसऽ,
बाकिर जिन राखऽ कुछ आशा।

लेत घरी सब बांह पसारे,
देत सकेत करे सब गांसा।

ओम धीरज'

(एक)

हमार भोजपुरी ह माथे के रोरी।

सुन्दर सरस मधुर अति कोमल,
सीतल जइसे कुइयाँ के जल,
बोली लागे मन में केहू,
देला मिसरी घोरी।।

भाषा भाव छन्द मन मोहे,
सुर लय ताल अंग में सोहे,
करि सिंगार खाड़ चउकठ पर,
जइसे गाँव के गोरी।।

घर-घर होखे संझा पराती,
तुलसी चउरा दियना बाती,
बिरहा ठनके सीवाने में,
अवर पलानी में होरी।।

चम-चम चमके रात अँजोरिया,
रसे-रसे पलना खींचे गोरिया,
हमरी लाल के आऊ निनरिया,
मधुरे गावें लोरी।।

माथे पगरी कान्हें चदरिया,
दाबत राह मरद भोजपुरिया,
बात-बात में मोछिया अईंठे,
बहियाँ देत मरोरी।।

आईं भाई बहिना आईं,
भोजपुरी के पढीं पढ़ाईं,
माई के बोली ना बिसरे,
बिनती बा कर जोरी।।
सुभाष कहें कर जोरी।।

(दू)

कहिया से हो गइलऽ एतना गुमानी।
करेलऽ काहें ए बदरा तू मनमानी।।

तोहसे जिनिगिया के जनमें के नाता,
लागता ई बतिया ना तोहरा बुझाता,
कइसे भुला गइलऽ बतिया पुरानी।।

तोहरे भरोसे फसलिया लगाके,
केतने सपनवाँ नयन में सजा के,
तोहके निहारे लें सगरो परानी।।

जरेले धरतिया आ तपेला गगनवाँ,
बरसेले अँखिया ना बरिसे सवनवाँ,
निरमोही कइसे कहालऽ तू दानी।।

चिरई चुरुंग सब जल बिनु तरसे,
काहें नाहीं पनिया बदरवा से बरिसे,
भूखिया रोकाई पियसिया ना मानी।।

तनिको दरदिया जो जनितऽ हिया के,
रखितऽ जिनिगिया तू पनिया पिया के,
करितऽ ना कबहीं तू एतना नादानी।।

कतहीं सुखार बाटे कतहीं दहाता,
दूनू ओर दुखवा ना सहले सहाता,
का तोहरी मनवाँ में बाटे ना जानी।।

देसा देसी घूमि के जरावऽ जनि जियरा,
देखऽ तनि हलिया सुभाष आके नियरा,
सरमें से हो जइब तू पानी पानी।।

अभिज्ञान शाकुन्तलम, सा -14/96-55,
सारंगनाथ कालोनी सारनाथ वाराणसी 221007

भोजपुरी भाव-भूमि पर लोक लय के गीत 'आखर'

['आखर'– कवि–डा0 रामसेवक 'विकल', कोहबर प्रकाशन लखनऊ। प्रथम संस्करण–2005 मूल्य–249/–]

डा0 अशोक द्विवेदी

भूमिका– भोजपुरी लोक का कवि–परम्परा में कविताई करे वाला कवियन में राम सेवक 'विकल' एगो चर्चित नाँव रहल बा। 'विकल' जी बलिया, उ0प्र0 का उर्वर का क्रान्तिकारी भूमि में (01 जुलाई 39 में) जनमल रहले, इहाँ बी0ए0 तक पढ़ला–लिखला का बाद झारखण्ड चलि गइले। गिरिभारती, हल्दी पोखर, सिंहभूम में शिक्षक बनले आ राँची वि0वि0 से एम0ए0, पी–एच0डी0 कइले शिक्षण से अवकाश का बाद 1999 में अपना गाँव इसारी सलेमपुर, बलिया चलि अइले। साहित्य आ संस्कृति से अगाध अनुराग राखे वाला एह रचनाधर्मी कवि के नवम्बर 2002 में निधन का बाद उनकर सुपुत्र आदित्य 'अंशु' आ सुपौत्र आनन्द कुमार उनका रचना–भण्डार से पचहत्तर–छिहत्तर गीतन का संकलन–सम्पादन कइले छपल किताब के नाँव रखाइल 'आखर'। इहाँ 'विकल' जी के एगो अउर सुकृति श्रीमद्भागवत गीता के भोजपुरी पद्यानुवाद के जिकिर जरूरी बा, काहें कि उनका एह सुकृति के एगो जमाना में खूब चर्चा आ प्रशंसा भइल रहे। इहो किताब दुबारा छपल।

कवि–प्रतिभा से संपन्न, सुधी, सहृदय रामसेवक 'विकल' जी के रचनात्मक भाव–भूमि अपना लोक आ ओकर जीवन–संस्कृति से जुड़ल बा। उनका गीतन में लोकराग आ ओकरा लय के पकड़ के अपना भावाभिव्यक्ति के स्वर देबे के अंतरंग कोशिश साफ लउकत बा। लोकस्वर 'विकल' जी का कविताई के संजीवनी हऽ।

भोजपुरी संस्कृति खेतिहर आ खेतिहर–मजदूर के संस्कृति रहल हियऽ–जवना के बुनियाद कृषि–पशुपालन आ ऋतु–चक्र वाली प्रकृति पर खड़ा त भइल रहे, बाकि ओकरा सरोकार में देश–काल आ सगरी जीव–जगत समाहित रहे। प्रेम, करुणा आ जीव–जगत के रागात्मकता से सउनाइल नेह–नाता, श्रम–संघर्ष आ पीर में उछाह भरल उत्सवधर्मिता एह लोक–संस्कृति के पहिचान रहे। कवि रामसेवक 'विकल' एसे भला कइसे अलगा हो जइतन? उनका गीतन का भाव–भूमि पर उतरि के देखला पर सहजे पता चल जाता कि ऋतु–चक्र पर संचालित प्रकृति का साहचर्य में भोजपुरी लोक के जवन रूप–सुघराई आ रस–गन्ध बा, ऊ दाम्पत्य आ पूरा गृहस्थ जीवन में पूरल–पागल अनुभूतियन से भरल बा। कहीं हुलास भरल मिलन कहीं विरह के पीर बा। खेती–बारी का साथ बसन्त–फागुन का रंग–गंध आ पावस के लय बा–

आइल बसनत मनवा बढ़ाइ
बीतल बसन्त जियरा सुखाइ। (पृ० 95)
XX XX XX
हहरि-हहरि रहि जाला जियरवा
बेधे उर पछुआ बयार!' (पृ० 99)
XX XX XX
पतरी सँवरिया के लहरे अँचरवा
बहे पुरवइया सजोर। (पृ० 60)

भोजपुरी जीवन–संस्कृति के एगो अउर विशेष पहलू बा, जहाँ भारतीय दर्शन आ आध्यात्म के बड़ा महता बा। आस्था, भक्ति में व्रत–उपवास, भजन–कीर्त्तन लोकजीवन–परम्परा हवे। हमनी किहाँ भौतिक शरीरी–जगत के आत्मा आ मानसिक शक्ति से जोरि के देखल जाला। आत्मिक शक्ति खातिर आध्यात्मिक चेतना आ भाव के साधना के कवि–परम्परा आदिकाल से चलत आइल बा। रामसेवक 'विकल' जी के कई रचना अइसन बाड़ी स ऽ, जवना में एकर

अभिव्यक्ति आ भाव–निरुपण बा। निरगुन आ संकेतिक–रहस्यवादी भावन से भरल कई गीतन में एकर प्रत्यक्षीकरण होत बा– गीत सं0–7,9,10,11,18,20 आदि गीत एकर साखी बाड़न सऽ।

बिना गाँछ के फल हो जाला
फल बिन स्वाद से हिया जुड़ाला
सद्गुरु के महिमा अइसन जे
हंसा हरदम हुलसे
कि जहवाँ अमरित रस बरिसे। (पृ० 44)

XX XX XX

साज-सिंगार मोरा मनहीं न भावे
भीतर उनकर आग जरे
ओही से उजियार इ पिंजरा
तवनो पर ना बूझि परे
हमरा विरह के अगिनिया हो
केहू का करिहें राम। (पृ० 42)

चेतना के सँगेरत कवि के दृष्टि समय–सन्दर्भ आ देश–काल से समम्पृ होके व्यापक विस्तार पावेले। 'विकल' जी समय–सापेक्ष रचनाकर्म में अपना मातृभाषा आ देश के ऊँच पीढ़ा देले बाड़न। देश का दशा–दिशा–पाक आ चीनी आक्रमण जइसन आसन्न संकटन पर उनकर ध्यान बा, एकर साखी उनका कुछ गीतन में व्यक्त उनका प्रखर तेवर आ ताप के महसूस कइल जा सकत बा। जागत रहऽ, चेतना में रहऽ, सावधान रहऽ–

"भारत माता के अपन जानि के जिनिगी के करिहऽ तूँ भोर
जागऽ हो भइया नगरी में आइल चोर!" (पृ० 20)

XX XX XX

नैपाल-लद्दाख में सइंयाँ घोर अनर्थ मचल बा
भारत-माता की अँखियन में आँसू आज भरल बा
करे भारत-माँ रोदनवाँ, घेरि आइल बदरी। (पृ० 33)

समाजवाद, गरीबी हटाओ आदि बनावटी राजनीतिक एजेन्डा वाला आन्दोलन पर नागार्जुन से लिहले भो. जपुरी में कवि गोरख पांडे, मोती बी0ए0 आदि अनेक कवि लिखले– "आन्ही से आई। गान्ही से आई, टुटही मडइयो उड़ाई। समाजवाद ए बबुआ धीरे–धीरे आई।"

– साम्यवाद आ समाजवाद का खोखला आ बेइमानी से भरल नारा के पोल खोले में ओह समय से लेले आज का समय तक के कवि सजग रहल बा। रामसेवक 'विकल' जी लिखलन–

कइसन समाजवाद, साम्यवाद भाई?
.....गाँधी के चेला पुरनका ओरइलें
खात-पियत मंत्री सब अपने मोटइलें
केहू ना पूछे गरीबवन के भाई।।

XX XX XX

तोहसे ना सपरे त तूँ गद्दी छोड़ऽ
त्यागी तपस्विन के शासन से जोड़ऽ
तोहसे ना गाँधी के सपना पुराई।।

संक्षेप में अतने कि स्व0 रामसेवक 'विकल' जी के गीतन के ई सम्पादित संकलन "आखर" भोजपुरी काव्य–परम्परा के जाने–समुझे का दिसाईं त महत्वपूर्ण बटले बा, कवि का रचना धर्मिता का विविधता के समग्र–सोगहग–आस्वादन का लेहाज से उपयोगी बा।••

बिर्हनी का छत्ता पर ढेला मारल

डा0 ओम प्रकाश सिंह

आजु के लेख के मथेला बहुत पहिले एगो भोजपुरी विद्वान से भइल बातचीत का दौरान उनुकर सलाह से लीहल गइल बा। ओह दिन हम उहाँ से एह विषय पर बात करत रहीं कि भोजपुरी के मानक तय ना रहला का चलते हमरा जइसन मनई के बहुते मुसीबत झेले के पड़त बा. साहित्य से हमार हितई बहुत दूर के ह आ इंटर का बाद साहित्य से कवनो संपर्के नइखे रहल. आ शुरु कर दिहले बानी दुनिया में भोजपुरी के पहिलका वेबसाइट ंदरवतपं.बवउ. विद्वान लोग के रचना आवेला आ हम दुस्साहस देखावत ओह लेग का रचना में आपन कलम चला दिहिलें आ थोड़ बहुत बदलाव कर दिहिलें। अधिकतर लोग त एहसे अनसाव ना बाकिर कुछ विद्वान लोग से मथकुच्चन हो जाला. त ऊ विद्वान हमरा के सलाह दिहनीं कि जइसे चलत बा चलावत रहीं, चलत रहे दीं ना त ई बिर्हनी का खोता पर ढेला मरला जइसन हो जाई आ रउरा आपन बचाव कइल मुश्किल हो जाई। तब त हम एह बात के ओहिजे रोक दिहले रहीं. बाकिर जब तब ई कीड़ा कुलबुलाए लागेला आ मन बेचौन हो जाला भोजपुरी के मानक बनवावे खातिर. व्याकरण आ साहित्य से हमार भवह–भसुर वाला नाता हवे से हम चाहत बानी कि कबो कवनो संस्था भा सम्मेलन एह विषय पर एगो बड़हन कार्यशाला आयोजित करो आ भोजपुरी के मानक तय कर लीहल जाव. एह से कृत्रिम विद्वता (Artificial intelligence) आ सभका ला सुभीता हो जाई. भोजपुरी के मानक तय हो जाव त एकरा प्रकाशन में एकरूपता आवे लागी.

ekudhdj.k uk jgyk dk pyr gk[kr leL;k vk ekudhdj.k d t:jr

भोजपुरी दुनिया भर में करोड़ों लोग के बेवहार में आवे वाली भाषा ह। भारत, नेपाल, मॉरीशस, सूरीनाम, फिजी से लेके कैरेबियन आ खाड़ी देशन तक भोजपुरी बोलइयन के समुदाय पसरल बा। आ तीन कोस पर पानी बदले पाँच कोस पर बानी वाला सिद्धान्त मानत भोजपुरी के अतना स्वरुप हो जाला कि आम आदमी ला मुश्किल हो जाला. ई एगो बड़हन कारणो बा जवना चलते भारत में आजु ले भोजपुरी के संवैधानिक मान्यता नइखे मिल पावल. अब एकरा पाछा भोजपुरिए इलाकन के हिन्दी साहित्यकारन के साजिश का बारे में चरचा दोसरा तरफ ले के चल जाई। एहसे आजु अपना का मानकीकरण के विषये ले सीमित राखब।

ekud r; uk jgyk l gk[kr leL;k

भाषा जवना लिपि में लिखल जाला ऊ ओकर एगो बड़हन पहचान होखेला. पुरनका जमाना में भोजपुरी कैथी लिपि में लिखात रहुवे. अपना लइकाईं में देखत रहीं कि हमार बाबा कैथी में लिखल चिट्ठी आराम से पढ़ लेत रहीं जबकि हमरा कुछऊ ना बुझा पावत रहुवे। अब भोजपुरी देवनागरी लिपि में लिखाए लागल बा जइसे कि संस्कृत, हिन्दी, मराठी, अवधी, मगही, वज्जिका, अंगिका, मैथिली वगैरह लिखाले।

भोजपुरी इलाका बहुते बड़हन विस्तार में पसरल बा आ एह चलते एकर शब्द–भंडार में आ उच्चारण में विविधता देखे के मिलेला. बनारस, गोरखपुर, छपरा, आरा, बलिया, चंपारण, नेपाल तराई–सभे इलाका में भोजपुरी के अलग–अलग ठाठ बा। आ सभे के अपना वाला भोजपुरी से छोह बा। बाकिर एकरा चलते किताब, समाचार आ परीक्षा में एकरूपता ना मिल पावे।

मानक तय ना रहला का चलते भोजपुरी भाषा के शैक्षणिक उपयोगो में समस्या आवेला। कई एक विश्वविद्यालयन में भोजपुरी पढ़ावल जाला बाकिर उहो लोग आजु ले तय नइखे कर पावल कि भोजपुरी के कवना स्वरूप के मानक मानल जाव भा मानक भोजपुरी के स्वरुप का होखे; मीडिया आ प्रकाशनो में समस्या आवेला. अखबार, पत्रिका, रेडियो भा टीवी कार्यक्रम में अलग–अलग उच्चारण आ लेखन–पद्धति का चलते पाठकध्श्रोता कन्फ्यूज हो जालें।

मानक ना रहला का चलते भाषा के सरकारी मान्यता का राह में बड़हन रोड़ा आ जाला. जब ले भाषा के एगो मानकीकृत रूप तय ना होखी, सरकार भा संवैधानिक संस्थानो ओकरा के "शिक्षण आ प्रशासन" के भाषा माने में संकोच करिहें।

ekudhdj.k l gk[k okyk Qk;nk

मानकीकरण हो गइला का चलते भोजपुरी बोलइयन सभे के बीच एगो साझा पहचान बनी जवना चलते भोजपुरी भाषा के वैश्विक मंच पर मजबूती मिले लागी.

अगर एगो तयशुदा व्याकरण, शब्दकोश आ लिपि होखी, त भोजपुरी में किताब लिखल आसान हो जाई। आ विद्यार्थियन आ शोधकर्तन के काम सहज हो जाई.

मीडिया आ तकनीक में भोजपुरी के उपयोग के विस्तार होखे लागी. ए0आई का जमाना में भोजपुरी डिजिटल मीडिया में तबहियें टिकी पाई जब एकर एगो मानक तय हो जाव. हो सकेला कि भोजपुरी विद्वान लोग ताकते रहि जाव आ एआई वाला सभ मिल के एगो मानक तय कर लीहें. कम से कम हमरा त एहसे बहुत खुशी होखी. सही भा गलत। हम बाकिर हम शुरु से एह दिसाईं सचेत रहल बानी कि पूरा अंजोरिया पर भोजपुरी के एकही अन्दाज देखे के मिले।

vkf[kj e &

भोजपुरी सभ्यता आ संस्कृति के गहिरा जड़ वाला लोक भाषा ह. अगर हमनीं चाहतानी कि ई भाषा आवे वाली पीढ़ियन ले जिन्दा रहे, मजगर बनल रहे, आ एकर विस्तार होखत रहे त सबले पहिले भोजपुरी के मानकीकरण पर काम कइला के जरुरत बा. अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, 2025 के आयोजकन से हमार निहोरा बा कि लिपि (देवनागरी), व्याकरण आ शब्दकोश पर विद्वान लोग आपसी सहमति बनावे. एकरा ला एगो कार्यशाला के आयोजन होखे. सभका एह दिसाईं सोचला आ काम कइला के जरूरत बा. एह काम में विश्वविद्यालय, साहित्यकार, मीडिया आ समाज – सभे के साझा पहल जरूरी बा।••

❑ अजोरिया डाट काम

Anjoria.com
पहिलका भोजपुरी वेबसाइट

आकृति विज्ञा 'अर्पण' के दू गो कविता

(एक)

पढ़ ललमुनिया तोरे पढ़ले
घोर अन्हारे दीप जरी ।
बढ़ ललमुनिया तोरे बढ़ले
एक दुनिया के डेग बढ़ी ।

ऊ दुनिया जेकर बोली
दबा गइल कहले से पहिले
ऊ जीवन जेकर तरुणाई
बुढ़ा गइल बढ़ले से पहिले
आपन सपना खुदे भुलवलस
ओकरे आँखिन जोत जरी ।
एक दुनिया के डेग बढ़ी ....।
घोर अन्हारे दीप जरी।

सजिहऽ सुंदर खोंता चिरई
ताना बाना नेह डोर के
शाख से अपना छूटे ना ऊ
कसि के बनिहऽ शीर्ष छोर के ।
जेकर सोरि धरा धारेले
ओकरे नवकी सोर धरी
एक दुनिया के डेग बढ़ी....।
घोर अन्हारे दीप जरी।

ते नदिया जेकर धारा
रूप धरेले अनघ अनघ
सब सभ्यता तोरे से ही
ऊपराइल बा पनग पनग ।
हँस ललमुनिया तोरे हँसले
तिमिर कलश में भोर भरी ।
घोर अन्हारे दीप जरी....।
एक दुनिया के डेग बढ़ी ।

(दू)

माथ लगा के चन्नन अइसे
ए बबुआ ई सोना माटी
बीज लक्ष्य के जम के साधऽ
दुनिया देखी हिम्मत खांटी ।

कदम बढ़ावऽ धीर धरऽ तू
धीरे धीरे सब हो जाई
तोहरे साथे बरम बाबा
तोहरे साथे काली माई
खटिया जस जो होई दुनिया
याद रखऽ कि तूंही पाटी।

दुनिया देखी हिम्मत खाँटी.....
मेहनत रथवा कबो न रोकिहऽ
इनके उनके जिन तूं तकिहऽ
साध साध के शब्द खरचिहऽ
आला बाला मत तू बकिहऽ
याद रखऽ कि करम के खेती
जे जो बोई ऊहे काटी
दुनिया देखी हिम्मत खांटी....

तू ओह धरती से बाड़ऽ कि
जेह पर गोरख गाथा गइलें
वीर कुंवर के चौड़ा सीना
जियक् कबीरा अलख जगइलें
जेकरे टिकुली में हो लासा
ऊहे त माथे पर साटी
दुनिया देखी हिम्मत खाँटी।.....

■ बसंत बिहार कालोनी,
रानीडहा, गोरखपुर, 273010

रजि0 नं0 – आर0एन0 3548/79 (वर्ष 1979) ISSN-2456-9372 पाती संयुक्तांक 109-10 जनवरी 2026

BIG SEA MEDIA PUBLICATION

F-1118, GF, C.R.PARK, NEW DELHI-110019
Ph.: 08373955162, 09310612995
Email: ashok.dvivedipaati@gmail.com, plyreportersubscription@gmail.com

स्वामित्व, प्रकाशक, सम्पादक डॉ० अशोक द्विवेदी, टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया (उ०प्र०)
खातिर माडेस्ट ग्राफिक्स प्रा० लि०, डी०डी० शेड, ओखला इन्ड० एरिया, नई दिल्ली से मुद्रित
आ एफ 1118, आधार तल, चित्तरंजन पार्क, नई दिल्ली-19 से प्रकाशित।